।। श्री गोकुलेशो जयति ।।

।। श्री रमणेशो जयति ।।

# श्री कल्लोल जी ग्रन्थ

दशम्, ...

(श्रीमद् गोकुलेश लीलायां रसाब्धी सुधासिंधौ)

-: मूल :-

श्री कल्याण भट्ट मठपति जी

-: टीकाकार :-

पंडित लोकनाथ जी (गोकुलिया)

लैया वासी

श्री महामहोत्सव संवत् २०५८

# दशम् कल्लोलजी

# दसमो कल्लोलजी

## अनुक्रमणिका

श्री गोकुलेशो जयति

श्री रमणेशो विजयते

# कल्लोल जी दशम

## प्रथम तरंगः ।।1।।

श्री गोकुलेशो जय जयति ।। अथ प्रथम तरंग लिख्यते ।।

श्लोक -- **नत्वा श्री रमणाधीशोत्कृपा बलतो मुदा**

**कल्लोले दसमे भाषा व्याख्याणं विदध्यामहं** ।।

याको अर्थ -- मूल रसात्मक शुद्ध पुष्टि प्रभु श्री गोकुलाधीशजी को दिन चरित्र श्री कल्याण भटजी दशम कल्लोल में वर्णन कियो है, सो श्री गोकुलाधीश के अनुराग अग्निरूप महदवर श्री रमणलाल जी महाराज अपने कृपापात्र समाज को यह रसपान करायवे लिये महाउदार करुणा सूं याकूं भाषा व्याख्या करवे की आज्ञा करी है, तासूं याकूं भाषा व्याख्या हों करूं हूं ।। तामे प्रथम श्री कल्याण भट्ट जी मंगला चरण रूप -- श्री कल्लोल जी के श्रवण रस की विशेषता को दिखावत मनको मनोहर उत्साह प्रकट करें हैं -- कि श्री गोकुलेश लीला सुधासिंधौ, ''**गोकुलेयेऽलं तैस्तैस्तथा तथा तंतदात दात्र रसिकेशं**'' ।।1।। श्री कल्याण भटजी कहें हैं -- कि श्री गोकुलेश लीला सुधासिंधु रूप कि श्री कल्लोल जी रूप गोकुल में प्रवेश करवे वा वा श्रेष्ठ भक्तन के संग वा वा समय में कि वा वा सुन्दर नयना, व्रज सुन्दरीन के संग वा वा समय में वैसे वैसे विहार कर रहे रसिक राय वा श्री प्राणनाथ जी को आदर, प्रेम पूर्वक जे कानरूप नयननसु दर्शन करें हैं वे अत्यंत भाग्यवान हैं ।। विनके चरण कमल की रज हू सर्वोपर विराजमान है ।। वैसे भाग्यवान सूं हू वे जन तो अत्यंत बड़भागी है ।। जे श्री गोकुलरूप -- श्री गोकुलेश लीला सुधासिंधु में प्रवेश करके वैसे श्रेष्ट भक्तन के संग कि वैसी सुंदर नयना व्रज सुंदरीन के संग वैसे वैसे वा वा समय में विहार कर रहे वा रसिकराय श्री प्राणनाथ जी को आदर प्रेम सूं नयन रूप दृष्टि सूं दर्शन करें हैं । तामें प्रथम कहे

श्री गोकुलेश लीला सुधा सिंधु रूप श्री गोकुल में जो प्रकार है सो तो स्पष्ट ही है ।। और अत्यंत की दूसरे की श्री गोकुलरूप श्री गोकुलेश लीला सुधा सिंधु में जो प्रकार है सो वैसो स्पष्ट नहीं है ।। तथापि -- येहु अत्यन्त बड़भागी है ।। विनसु वे बड़भागी हैं जे नेत्ररूप श्रवणन सूं दर्शन करें हैं तब तो जे अंत्य दूसरे प्रकार वारे हैं विनके भाग्यन की कहा कहें ? तथा जे श्रवणरूप नेत्रन सूं सुने ही है विनको बड़भागी भाव तो अत्यंत ही विशेष है ।। तामें हू जे श्रवणरूप कानोसूं श्रवण कि विशेष आशक्ती सूं रोम रोम में होय रहे अलौकिक कानो सूं जे सुने ही है विनको बड़भागी भाव तो सबन सूं ही विशेष है ।। विनकी विशेषता सो विशेषता हू कहा कहे ।। ऐसे श्रवणानुराग अग्नि की विशेषता दिखायके श्री कल्याण भट जी प्रसंग को कहे हैं ।। कि वा रसिकराज श्री गोकुलाधीश प्रिय को तथा आपके भक्तन को जो वैसे परस्पर प्रेम रूप सुवर्ण सूं अत्यंत शोभा भर्यो मंगलरूप आनंदमय कि मनोहर सूं हू मनोहर शुद्ध दीन, दीन को जो कृत्य, जात है कि बिहार समूह है अब वाकूं संक्षेप सूं वर्णन करूं हूं ।।६।। अब वा प्रिय श्री गोकुलाधीश के जे भक्तजन है वे रात्रि समय में अपने स्थान में स्थित है ।। दिन में या प्राणनाथ के जे गुण अनुभव किये हैं, घर में जायके प्रेम समूह सों विनको गान करके की कीर्तन करके कि श्रवण करके समय निकारे हैं ।। अथवा दिन में प्राण प्रिय जी ने जे वार्ता प्रेम पूर्वक कही है, विनको प्रेम सूं अनेक वार अनुवाद कर रहे हैं ।। कि विनको प्रेम सूं मनन हू कर रहे हैं ।। अथवा प्राणनाथ के, कि विनके वर्णन किये भक्तन के सुंदर शील की, रूप की, तेज की, स्वरूप की, सिद्धांत विचार की, वाछल्य की, माधुरी को सौंदर्य कूं ही विचार कर रहे हैं ।। अथवा मनोहर जिनको उत्तर फल है ऐसे बहुत ही बड़े बड़े मनोरथ ही विचार रहे हैं ।। अथवा वियोग संवंधी दुःख समुद्र के उछलन को अनुभव कर रहे हैं ।। कि वैसे और और हू विकलता ताप हाहाकारादि को हू अनुभव कर रहे हैं ।। के जे बड़े यत्न कर कर सोय रहे हैं कि स्वप्न में हू या प्रिय की मधुर लीला को ही देख रहे हैं ।। कि जे नींद को हू नहीं प्राप्त भये हैं कि उदासी रटना जे मन में आयी है सो ही अत्यंत ही बढ गयी है ।। तासूं ही प्राण प्रिय के वा मनोहर मुख कमल को कब दर्शन करेंगे -- या विचार सूं उत्कंठा कि उदासीनता सहित है ।।१२।। तथा कितने तो या विचार

सूं की जब प्राण प्रभुजी जागेंगे तब आपके मुख चंद्रमा सूं उदय होय रहे निस्तुष कि शुद्ध चांदनी के शीतल प्रवाहन सूं अपने विरह के ताप को दूर करत ही, हम अनेक प्रकारन सूं याकी सेवा करेंगे ।। ऐसे वारंवार उठ उठके जागवे के समय के देखवे लिये नक्षत्रन को देख रहे हैं ।। तथा कितने और तो असंख्यात कि गणना में नहीं आयवे वारे और और प्रकारन सूं ही जे स्थित हैं कि समय गुजारें हैं वे सगरे ही प्राण प्रभु के जागरण समय सूं दोय तीन घड़ी पहले ही या या अपने अपने घरन सूं उठके आयके देखे है ।। कि रत्न चौक के द्वार के किवाड अभी लगे है यह देखके पहले यहां ही बैठ गये हैं ।।१७।। वैसे और कितने तो उत्कंठा के वश होयके आधी रात्रि के गुजरते ही वा रत्न चौक के द्वार पर ही आयके ठहरें हैं ।। और कितने तो प्रथम स्नानादि करके ही अत्यंत सुगंधी भरे शुद्ध वस्त्रन कूं पहिरके जैसे घर में स्थित हते वैसे ही उत्कंठा सूं वेग ही उठके दौड़के ही वहां आवे है ।।१९।। मार्ग में गिर रहे अपने वस्त्र भूषणन की हू संभार नहीं करें हैं ।। अहो सघन हू अंधकार होय कि मार्ग में कीच हू होय, कि मेघ हू जोर सूं वर्षत होंय, कि शीत हू अधिक होय, कि पवन हू चल रह्यो होय, तोहू श्री प्राणनाथ जी के दर्शन की माधुरी के प्यासे वे सगरे ही जन यहां रत्न चौक के द्वार आगे ही ठहरें हैं ।। फिरके तो घर में कबहू नहीं जाय हैं ।। स्त्रीजन डेढ़ प्रहर रहे हैं तब तो प्रायः सगरे ही अत्यंत भक्त स्त्री पुरुष या रत्न चौक में परिवार सहित उत्कंठा पूर्वक आयके द्वार के आगे ही या प्रिय के दर्शन की लालसा सूं उच्छलित होय रहे कि करोडन अर्बन निमर्याद समुद्रन सूं भरे होवत ही बैठ रहे हैं ।। कछुक समय पीछे या किंवाड के उघाड़ने पर हों प्रथम जावुं "हौं प्रथम जावु" या प्रकार की उत्कंठा सूं भीतर प्रवेश करके वे सगरे ही लदाव नाम सूं प्रसिद्ध द्वार को, किवाड़न सूं बंध भयो देखके यहां ठहर जाय है ।। विन में कितने भक्त तो या प्रिय के वियोग अग्नि की तीक्ष्ण अनेक हजारन ज्वाला सूं मन में अत्यंत जरत ही या प्रिय के आगे या रीति सूं अत्यंत ही प्रार्थना करें हैं सो प्रबोध रूप प्रार्थना दीखे है । जय जय जय हे गोकुलेश प्रभो. शयन सुख को उदय कि अनुभव करवे वारे प्रभो राज आपकी जय हो, हे प्रभो जय जय जय अब जागीये ।। दर्शन के लिये उदास होय रहे अपने जनन को अनुमोदन करिये ।। हे प्रभो जय जय जय

-- निद्रा सूं भरे दोनों नयनन को उघारीये ।। हे प्रभो जय जय जय दर्शन अर्थ आये अपने जनन को निरखिये ।।२०।। जय जय जय हे प्रभो सगरी रात्रि भर रस भोग सूं सुखी होय रहे हृदयवारे आपकी जय हो ।। जय जय जय हे अपनी सुंदरीन के नाथ कि विनके मुख चंद्रमा के चकोर रूप प्रभो, आपकी जय जय जय होय ।। जय जय जय हे गोकुल प्रभो अब शयन को छांडीये ।। कांती सो कामराज को विजय करवे वारे प्रभो राज की जय होय ।। हे निजजन के जीवन प्रभो -- आपकी जय होय ।। अव जागीये ।। रति रस सूं भर्यो हे स्वरूप जिनको हे ऐसे प्रभो आप जागीये । हे प्रभो रस सों भर्यो है स्वरूप जिनको, हे ऐसे प्रभो आप जागिये ।। हे प्रभो आपकी जय हो अब नयनों के मूंदन को बेग खोलिये रस सुख को अनुभव करके सुंदर निद्रा सुख को अनुभव कर रहे आप की जय होय ।।३०।। हे प्रभो आपकी जय हो मधुर मंद मुसकान सो मनोहर प्रसन्न श्री मुख को दर्शन कराईये आपकी जय हो ।। हे प्रभो राज की जय हो श्री मुख कमल के रसपान करवे लिये मत्त होय रहे हैं भौरां रूप भक्तगण जिनके, ऐसे प्रभो राज की जय हो ।। हे प्रभो राज को जो श्री गोकुलनाथ एसो मंगलरूप नाम है सो हू स्वरूप जैसे ही मनोहर आनंद मंगलरूप है ।। राज की जय हो ।। या प्रकार सो कितनी विज्ञापना करें हैं ।। वैसे और कितने जन तो महामंगल रूप आपके अमृत को हू विजय करवे वारे रात्रि लीला संबंधी माधुर्य को ध्यान करत ही मौन गहि रहे हैं ।। वैसे और कितने तो अहो आज का कारण सूं प्राणनाथ के जागरण में इतनो विलंब होय रहयो है ।। ऐसे उछल रही चिंता करत ही ठहरें हैं ।। वैसे और कितने तो यह विचारें हैं कि चित्त कू हर रहे प्रिया के विलासन सूं प्राणनाथ जी सगरी ही रात्रि जागे हैं ।। अब नींद को आदर करें हैं तासूं अब आपस में बोलनो नहीं, की हंसनो हू नहीं केवल मौन ही गहि के यहां बैठे रहो, या प्रकार सूं औरन को सीख देवे हैं कि समजावे हैं और कितनी सुनयना सुंदरी तो अहो करोड़न अर्बन रस समुद्रन सो भरे या प्राणनाथ को निद्रा कहा? ।। यह तो वा निद्रा के बहाने सूं भाग्यन सूं भरी मनोहर नायिकान सो ही रमण करें हैं ।। हमकु तो दर्शन हू दुर्ल्लभ है तो स्पर्श करवो कि आलाप करवो कब मिले या प्रकार सूं ध्यान करत ही अत्यंत श्वासन कू भरें हैं ।। वैसे और सुंदरी तो ऐसे विचारें हैं, कि अहो जे व्रज सुंदरी गुरु जनादि

के भय सुं या प्रिय को सबके सामने प्रथम मिल नहीं सके हैं ।। वा सुंदरीन को वा प्रिय के संग मिलाय रही कि विनमें प्राणनाथ को प्रसन्न कराय रही जो या राज की निंद्रा है सो या रीति सूं हमारी शत्रु है या सूं या निद्रा की निवृत्ति कूं ही चाहना करें हैं ।। वैसे और सुंदरी तो यह कहें हैं कि यह प्राणनाथ पोढ़े नहीं है यह तो हौं निःसंशय ही जानु हू कि जो प्रिया आज मिली है सो जाने है कि यह प्रिय को संगम फिर मेरे को अत्यंत ही दुर्ल्लभ है ।। तासूं बड़ी उत्कंठा सूं दोनो भुजान सूं दृढ़ आलिंगन कर रही है ।। अहो या प्रियवर को कटाक्ष को लेश हू हमकूं तो दुर्ल्लभ है एसी हम सबन पर, सो प्रिया हू निर्दय है -- कृपा नहीं करें हैं -- केवल अपने अर्थ को ही सिद्ध करें हैं ।। अहो प्राणनाथ जी तो अपने दर्शन विना अत्यंत दुःखी होय रहे अपने दीन जनो में कृपा समूह सूं अपने श्री मुख कमल के दर्शन दान अर्थ उठवे की इच्छा हू करें हैं पर उठ नहीं सके है ।। हा हा हम अब का करे, या प्रकार विचार करें हैं ।।४३।। तथा और व्रज सुंदरी तो यों विचारे हैं, कि वा प्रियको जो मुखकमल है सो शरद ऋतु के अनेकान चंद्रमान की शोभा को विजय करवे वारो है तथा प्रफुल्लित कमलो के वन हू जाके दास होयवे की अभिलाषा करें हैं ।। तथा परम शोभा समूह के एक किरण सूं हू कामदेवन को हू मर्दन करें हैं ।। वा कामदेवने हू सब लोकन के आगे अपने मुख चंद्रमा के काजरन सूं जामे अपने जय को विरुद वृंद कि विजय पत्र लिख दियो है ।। तथा जाके कपोलन पर अनेक चतुर नायिका ने दंत क्षत किये हैं-- वा नायिका ने वारंबार जो चुंबन कियो है तासूं विनके मुख कमल संबंधी तांबुल को रंग जामें लग्यो है तासूं इत उत सुंदर लाल होय रहयो है ।। तथा स्वयं नायिकान के नेनो को चुंबन बहुत कियो है, तासूं जो कलंक वारो होय रहयो है ।। यद्यपि इर्ष्या के भारसुं कि यह मेरे सूं सहयो नहीं जाय है तासूं क्रोध सूं या मुख कमल को हौं देख नहीं सकू हू तथापि या प्राणनाथ के वैसे कटाक्षन में, और सुंदरीन के लिये दुर्ल्लभ मेरे आगे स्पष्ट ही कहे रह्यो मेरे लिये कोई छिप्यो भयो प्रेम है यासूं उदासीनता के सहित जो कोई अत्यंत उत्कंठा है, सो या श्री मुख कमल के दर्शन विना मोकू बैठवे नहीं देवे है ।। बल सूं मोकू खेंच के ही यहां लावे है ।। इत्यादि प्रकार सूं कितनी अत्यंत विचार करें हैं ।। तथा और कितनी सुंदरी तो यों विचारें हैं कि श्री

प्राणनाथ जी अब उठके अपनो श्रीमुख मेरे को दिखाय के मेरे को कृत कृत्य तो कर ही देवेंगे यह सत्य ही है, यामें संशय नहीं है ।। परंतु याके मनोहर दर्शन विना मेरी इतनी रात्रि वृथा गयी है ।। सर्व समर्थ हू यह प्रभु वाकूं कैसे सफल करेगो इत्यादि प्रकार सूं विचार के अत्यंत श्वासन को भरत ही यहां ठहरें हैं ।।५२।। तथा और कितनी व्रज सुंदरी तो यह विचारें हैं कि अनेक गुणन को सिंधु हमारो प्राणनाथ जी वो अपने श्री मुख को हमकू अवश्य ही दर्शन करावे कि जाकी किरणे चारो ओर अत्यंत प्रसरत ही अहो शरद ऋतु के चंद्रमा की चांदनी के समूहन सूं कबहू न दूर होयवे वारे गाढ अंधतम अंधकार को जोर सूं ही सिद्ध कराय देवे है ।। चारो ओर अंध अंधियारो हू प्रतित होय है ।। कि हमको निर्भय स्वतंत्र रस विलास में स्वतंत्रता ही होय है -- ऐसो अपनो श्री मुखचंद्र अवश्य दर्शन करावे, परंतु जिनको उतरनो कठिन है, जे दीर्घ जीवी है, ऐसे जे वियोग के कितने क्षण रूप कल्प है वे ही निरंतर वैरी बने है ।। वा प्राणनाथ के श्रीमुख के दर्शन कू रोके है -- सो वा क्षण रूप कल्पना हम कैसे कर तर जाय कि उल्लंघन कर जाय, इत्यादि प्रकार सूं चिंता उदय होय रही है ।। तासूं निश्चल होयके उदय होय रही है ।। तासूं निश्चल होय के बैठ रही है तथा कितनी और ब्रजसुंदरी तो यह विचारें हैं कि कटाक्ष रूप बाणन सूं विदारण कियो जो रसिक सुंदरीन को धैर्य समूह है वाके रुधिरन सूं भरे स्थान में विराजमान होयवे सूं अधिक लाल रंग को प्राप्त भयो जो वा प्राणप्रिय को चरण कमल को तल है जाके पोंछवे को पल्लवन सूं कितनेक वृक्ष कल्पवृक्ष रूप होय गये हैं ऐसे प्रियके चरण कमल तल को हौं कब दर्शन करोगी, कि राज को चरण कमल तल कोमल है लाल है अनेक धैर्यवतीन के धैर्य को खंडन करें हैं, यह भाव है ।। ऐसे कितनी इत्यादि श्रेष्ठ मनोरथ समूहन को अत्यंत चातुरी सूं करें हैं तथा और कितनी व्रजसुंदरी तो यह विचारें हैं कि चंद्रमा दश रूप धरके जा प्राणनाथ के चरण कमल संबंधी नखरूप होयके प्रणाम करवे लिये आय रहे सगरे राजान के मुकुटमणीन की किरण समूहन सूं लाल रंग को धारण करें हैं विनके फूल मालान सूं तो सुगंधी भाव को धारण करें हैं ।। तथा वा माला संबंधी भ्रमरन सूं तो स्तुती को प्राप्त होय रहयो है ।। ऐसे वा प्राणनाथ के दशो हू दिशान को सुगंधित कर रहयो जो श्री मुख रूप सुंदर प्रफुल्लित बड़ो कमल

है वाकूं बेग कब देखोगी ॥ ऐसे बहुत प्रकार सूं अत्यंत विचार करें हैं ॥६१॥ वैसे और कितनी व्रज सुंदरी तो यह विचारें हैं कि अपने में धारण किये हैं वा वा अंग रूप अलौकिक रत्नगण जामे एसी श्री प्राणनाथ जी की श्वेत कोमल सूत की धोती रूप दूध के समुद्र में सुंदर वदनवारी ब्रज सुंदरीन के दृष्टिरूप जे मछली है वे अत्यंत डूबके ऐसे वा दुर्ल्लभ अमृत को पान करें हैं कि जाके ऊपर वारणे करवे लिये चतुर सुंदरी विचार करें हैं ॥ तामें प्रथम हम वारे जाय या विचार सूं कहे अभिप्राय वारे आय रहे जे मधुर मादक मध कि मधु सहित कि मिसरी आदि की सुंदर द्राक्षा के रससागर समूह में वे तो तृण जैसे हू नहीं देखे है ॥ नहीं गिने है ॥ जामे अत्यंत निकट आयो जो प्रसिद्ध अमृत है सो हू यद्यपि झापटन सूं अत्यंत ताड़ना करके अत्यंत दूर ही कियो गयो है तोहू मेरी ओर इन सुंदरीन ने झांक्यो तो सही, प्रहार समूहन सूं शिक्षा तो करी या विचार सूं हू अपने को धन्य माने है, रोम हर्ष वारो हू होय है ॥ ऐसे अनिर्वचनीय विशेष मधुर रसवारे महा अमृत को जाके धोती रूप क्षीर सागर में, सुमुखीन की दृरूिप मछली डूब के अत्यंत पान करें हैं ॥ वा दीर्घ भुजावारे श्री प्राण प्यारे को दोनो भूजान सूं कब हौं आलिंगन करोगी यह विचार करत एकांत में निश्चल होय के बैठ रही है ॥६७॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीला सुधासिंधौ दिन विश्रामावधी विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे प्रथम स्तरंगः ॥१॥

### कल्लोल जी दसम

## द्वितीय तरंगः ॥२॥

श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ प्रथम तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **अथ रजनेश्वशिष्टे यामे प्राणेश्वरः सचरणेसः**

**ऐत्सुक्य रमहार्ति बुद्धी स्वजन ब्रजस्य सर्वज्ञः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि सर्वज्ञ सो प्राणनाथ जी याके अनंतर रात्रि के बाकी रहे पीछले पहर में अपने स्वजन समूह कि उत्कंठा समूह बड़ी आर्ती को जान कर वाकूं सहन करवे में समर्थ न होय के, कछुक

क्षण सूं अंगीकार करीहू वा हर्ष निद्रा को छांड के परम भाग्यभरी श्री प्रियाजी सूं बहुत प्रकार सूं अत्यंत विलास करके विलास पूर्वक लाल नयन कमल धूर्णित होय रहे हैं, ऐसे उठके नक्षत्रन को देखके अपने योग्य समय को विचार के अपने ही पलंग पर विराजमान होयके यहां दूसरे ही पलंग पर विराजमान जो प्रिया जी है, निद्रा सूं जाके नयन मुदे है एसी वा प्रियाजी को जगाय के या रीत सो आज्ञा करें हैं कि प्रिया समय भयो है अब यहां सूं उठ के वेग ही अपने घर को अलंकृत करिये ॥ यह सुनत सो प्रियाजी हू वेग ही उठके लीला समूह सूं मर्दित होय रही अपनी साड़ी को भली भांति सो पहीर के आलस्य कि विलास की आर्ती पूर्वक पधारें हैं ॥ श्री प्राणनाथ जी हू रात्रि भर अनुभव किये या प्रियाजी के वा वा गुणन सूं कि विलास समूहन सूं खिंचे भये ही हर्ष शय्या सूं उठके वाके पीछे चलत ही वेगी वेगी होम घर के द्वार की सांकल को उघाड़े हैं ॥ रात्रि में प्रसादी भंडार के आगे सदा सोय के विराज रही जो भक्तिवारीन में मुख्य श्री भलीबाई जी है -- सो समय को जान के उठके ठाड़ी भई है ॥ दीपक को हाथ में धरके आगे चालती मार्ग दिखाय रही है ॥ वा मार्ग सूं यहां सूं निकस के श्री प्रिया जी को अपने घर में पहुंचाय के पीछे बगद के पधारें हैं ॥ आगे चलत भलीबाई जी मार्ग दिखाय रही हैं वा मार्ग सूं होम घर केद्वार सूं अकेले ही आप पधारके सांकल सूं किंवाड कूं लगाय के सो निजजन जगतपति श्री राज अपनी शय्या को फिर अलंक्रत करें हैं ॥१२॥ श्री प्राणनाथजी सर्वज्ञ हू है परंतु शास्त्र अनुसार हू सुंदर लीला वारें हैं बड़े कौतुकी है तासूं वा शैया पर बिराजमान होय के फिर फिर ही समय को जानवे लिये नक्षत्र को देखे है ॥१३॥ श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि **हौं भलीबाई जी को प्रणाम करूं हूँ ॥ जो भलीबाई जी अपनी प्राणप्रिया जी के पीछे मुरक मुरक के फिर फिर देख रही है ॥ श्री प्राणनाथ जी की सुंदर पाग ढीली होय रही है ॥ निरावरण स्वरूप है, एक तनीया ही पहेरें हैं ॥ नल राजा कि अश्विनी कुमार कि वैसे और और हू सुंदरन कूं निरादर करके करोडन काम के हू विजय सूं सबन के ईश्वरेश्वर है, कि सवन सुं स्तुति किये, या समय के दर्शन दान सूं या भलीबाई की महिमा को हू दुर्ल्लभ वडी बनाय रहे हैं ॥१५॥ अब श्री कल्याण भट्ट जी वा समय की मनोहर शोभा भरे श्री प्राणनाथ को प्रातः स्मरण करवे लिये**

प्रातः स्मरण के तीन श्लोक कहें हैं ।। ''उनीदे आलस भरे जाके लोचन है ।। रस के वश सूं प्राण प्रिया जी को आलिंगन किये हैं ।। तासूं वा प्रियाजी के कर्ण फूलन सूं आपके भुजदंड चिन्हीत है ।। बारंबार बीडी के आरोगवे सूं आपको अधर सुंदर लाल रंगवारो होय रहयो है पलंग सूं उठे है ।। अपने भक्तन को ही सुलभ है शोभा भयौं मंगलरूप आपको नाम है ऐसे श्री गोकुलेश प्रिय को हम प्रातः स्मरण करें हैं ।।१६।। धीरे नाच रही आलस भरी आपकी दृष्टि है वेष विशेष सुंदर है ।। सुख शय्या सूं उठे है दास भाव में आसक्त विलासनी जन सगरे इन्द्रीयन सूं आपके श्रीमुख रूप अमृत को आस्वादन कियो है, निद्रा सूं आलिंगन किये हैं -- वा निद्रा सूं भोगे है -- वांछीत फल रूप है -- कामना के देने वारे हैं, श्रृंगार रस के मुख्य निधान है जिनके समान हू और कोऊ नहीं है ऐसे श्री वल्लभ जी को हम प्रातः स्मरण करें हैं ।।१८।। शय्या सूं उठे हे सुन्दर अंगवारी ब्रज सुंदरीन के मिलन सूं अगंराग थोड़ो लग्यो है तासूं प्यारे लगे है -- शोभा भरे ब्रज सुंदरीन के कुच कुंभ सूं आपको स्वरूप चिन्हीत है -- नैनन के कोण आलस भरे लाल लाल है, काम रस के संपूर्ण भोग को सूचना करवे वारे अंग अंग सूं शोभायमान है प्रभात समय में ही सुख के लिये प्रतिदिन ही गोकुलेश प्रभु को हम प्रातः स्मरण करें हैं ।।१९।। अब चालतु प्रसंग कहै है कि -- श्री प्राणनाथ जी के उठवे के क्षण सूं पहेले दोय की तीन घड़ी में प्रियवर को प्रिय पुत्र जो गोपालजी है -- और भक्त जैसे प्रेम भारसूं प्रथम ही दर्शन लिये आयके सदा सूं सिंह द्वार के आगे वा द्वार पे पहेरेदार विश्नुदास के पास ही बैठे है ।। वहां सदा बैठवेवारी प्राणनाथ जी की अत्यंत अनुराग भरी भक्त भलीबाई जी तो लालजी कहे कहे के याकु बहुत प्रकार सूं लालन करत याके संग वार्ता करें हैं कि लालजी तुम भले आये ऐसे प्रेम सूं कहें हैं ।। श्री गोपालजी हू यह जाने है कि मेरे प्रभुन की यह श्रेष्ठ भक्त है ।। मेरे को बहुत आदर देवे है कि मेरे ऊपर अत्यंत प्रसन्न होय है तासूं आज मंगल वधाई है यह मानके या भलीबाई जी में अत्यंत प्रसन्न होय है तथा मैं प्रभुन को बडो पुत्र हू प्रभुन को प्यारो लगुं हूं यह अभिमान सूं रहित है ।। प्राणनाथ ने दान करी भक्ती रूप कोष्ट अमृत रससिंधू के पानसूं पुष्ट संतुष्ट मनवारो है ।। और यह भलीबाई जी मार्ग के कि स्वरूप को भागवत के श्लोकन को कि तथा औरहु छूटक श्लोकन को

जो जो तत्वभाव पूछे है सो श्री गोपालजी हू प्राण प्रभु के वचन समूहन सूं ही सो सो सुनावे है ॥ खवास जी को बुलायके ऐसे कहें हैं कि प्रभुजी यदि तुमसूं पूछे कि यह गोपाल कब आयो है तब तो कहेनो कि अब ही आयो है ॥ जासू प्रभुजी मेरो श्रम सर्वथा सहे नहीं है ॥ तासूं यह यहां पहले ही आयके बैठयो है यह कबहू नहीं कहेनो ॥ श्री कल्याण भट्ट जी प्रथम प्रसंग कहें हैं कि श्री प्राणनाथ जी श्री प्रियाजी को अपने घर में पहुंचाय के अपने हर्ष पलंग को फिर हू शयन सूं जब अलंक्रत करें हैं तब बड़ो चतुर जो आपको श्री अंग सेवक खवास जी है सो निद्रा को छांड के अपने शयन स्थान अटारी सूं वेगी उतर के नीचे आवे है या प्रभुन के जल घर मे वेग प्रवेश करके वहां जा अग्नि ऊपर पवित्र जल सूं भर्यो ढांकना सूं ढांक्यो ताम्र को करवा पहेले ही धर्यो हतो चुल्हा में प्रथम सूं ही धरी वा अग्नि को प्रज्वलित करके वामें काष्ट और धरके वहांसूं निकर के देहली के आगे प्रणाम करके मंदिर में प्रवेश करके दीपक को जगावे है ॥ प्रथम तिवारी में कि होम घर में वैसे और स्थानन में कि एकांत घर में चोखंडी में हू दीपक जगावे है ॥३३॥ ता पाछे जलघर में धरें हैं ॥ एक दंत शोधन लिये चौखंडी में धरें हैं ॥ याही समय में श्री प्राणनाथजी के अभिप्राय को जानवे वारो यह खवासजी जल घरा में जायके श्री गोपाल के पास ही बैठे है वहां सिहद्वार के पहिरेदार विश्नुदास को कहें हैं कि प्रभुन को उठवे को समय अब निकट है तासूं लदाव के द्वार की सांकल उघाड़ दे ॥ सो हू सुनके वैसे ही द्वार उघाड़े है ॥३७॥ अब लदाव के वा द्वार सूं प्रवेश करके वे सगरे भक्तजन कि मृगनयनी ब्रजसुंदरी हू दौड़के आयके देखे है तो वा मंदिर को अत्यंत सुन्दर तीसरो सिंहद्वार तो अबहु वंद है -- तब वहां "हों पहले" हों पहेले" बैठु या विचार सूं आगे आगे होयके बैठ रहे वा सबन्न को बड़ो सम्रध्ध होय है ॥ कि बडो संघट भीड़ होय है ॥ तब अनुपम करुणा के सागर सो प्रिय भगवान श्री प्राणनाथजी वा सबन के सहन किये ताप आर्ती को आछी रीत सो जान के रात्रि के पीछले पहर में निद्रा को छांडे है ॥४०॥ जैसे जैसे रात्रि बडी होय है वैसे वैसे प्राणनाथजी वेगी वेगी जागे है ॥ जैसे जैसे रात्रि छोटी होय है वैसे वैसे गोकुल के अधीश श्री प्रियवर विलंबसु जागे है ॥ तामें श्री गिरिधारी जी में प्रेम सूं श्री गिरिधारी जी के निद्रा हर्ष को नित्य भावना करें हैं ॥ बड़ी रात्रि

होय तो अब वे जागे होयगे यासूं वेगी जागे है ॥ रात्रि छोटी होय तो अबी पोढ़े होयगे यासूं बिलंब सूं जागे है यह भाव है ॥४३॥ या प्रकार जाग के श्री शय्या पर पलमात्र विराजमान होयके कछुक भावना करें हैं या समय में श्री अंग सेवक खवास जी दंत काष्ट को लेकर वाके आगेवारे भाग को कूटके कोमल कूर्च बनावे है तब बाहिर ठहरे भक्तजन हू वाके कूटन के अवाजसूं अब हमारे प्राणनाथ जी उठेंगे यह विचार के सगरे ही एक, या समय अत्यंत प्रसन्न होय जाय है ॥ कि बड़े उत्साह वारे होय जाय है ॥ वेग सूं उठे है ॥ पहले पहले जायवे के विचार सूं आगे आगे जाय है ॥ बड़ो संम्रब्ध बढ़ जाय है वामें कितने धक्का खाय है, कितने गिरें हैं कितने परें हैं, मर्दित होय है ॥ कितने तो कहें हैं कि हमतो भिचड गये हमको देखो तुमतो बड़े ऊधमी हो कि देखो हू नहीं हो ॥४८॥ कितने तो विनके वैसे प्रलाप को सुने हू नहीं है ॥ प्राणप्रिय के दर्शन अर्थ हृदय में उत्साह बढ़ायो है तासूं गिरे वस्त्र कि भूषणादि की अत्यंत उपेक्षा ही कर दे हैं कितने तो खिंचे जाय रहे हैं ॥ कितने तो आगे खेंचत ही आप आगे जाय है ॥ वामें कितने की तो सोना मोती आदि की माला हू टूट जाय है ॥ कितनी स्त्रीन के कर्णफूल गिरें हैं ॥ औरन की मणी जटित मुद्रिका हू गिर जाय है ॥ ओरन के कंठाभरण, ओरन के सीसफुल गिर जाय है ॥ अतुल कृपासिंधु भगवान श्रीजी भक्तन के अनेक प्रकार के भावन को कि आरत को, हृदय में धरके अपने पलंग सो उठके विलास पूर्वक भूमि पर चरण कमलन को धारण करे हैं ॥ अपने घर के सन्मुख होयके प्राणनाथजी आगे सुंदर प्रकाशमान पडगी-कि तृष्टि में अपने सुंदर श्रीमुख सो प्रसादी बीडी पधरावे है ॥ रात्रि में धारण किये तनीया को बडो करके श्री अंग सेवक खवास जी ने शय्या के ऊपर एक और पहले धर राखी धोती को उठाय के पहिरें हैं ॥ श्री अंग सेवक खवास जी या समय में पास आयके आपके आगे दंडवत् प्रणाम करके विनय पूर्वक आपके आगे ठहरें हैं ॥ प्राणनाथ जी पाग को बडो करके शय्या जी पर धर के हस्त कमल सूं मनोहर उपरना को उठाय के श्री मस्तक में बाँधे है ॥ शीत ऋतु होय तो खवास जी रूईदार छोटो नीमो लावे है वाकूं पहिरें हैं ॥ और समय में चादर दुपट्टा ओढ़े है ॥५९॥ गरमी के दिनन में तो धोती उपरना ही ओढ़े है ॥ तब यह प्राणनाथजी अपने मंदिर के सन्मुख होय के ऐकवार श्री नाथजी को प्रणाम करें हैं तब

उठके दंतधावन अर्थ विलास पूर्वक चरणकमलन को आगे धारण करत अपने विलास सूं तिवारी को सुगंधित करत वा अपने आंगण को हू सुगंधी करत चौखंडी में धारण किये पीढे को आप अलंकृत करें हैं ॥ कि वा पर विराजे है ॥६२॥ अहो जा वृक्ष के काष्ट को बनो यह पीढा है सुन्दर विछोना सूं शोभायमान है वा पर अपनी विलासवारी विराजवे की लीलासूं और सगरे भाग्यन सूं पूजनीय जाके चरण कमल है ऐसे भाग्य को जो अत्यंत पधरावे है ॥ वाके वा भाग्य कू वर्णन में कोन समर्थ होय सके है ॥ ता पाछे या समय में सो अंग सेवक खवासजी या प्रभु को वा दंत काष्ट कू देवे है ॥ तब प्राणनाथ जी या पीढा के बाये ओर धरे जलके बड़े करवासु वा दंतकाष्ट को पखार के जलसु कोगला हू करके वा दंतकाष्ट को श्रीमुख में धारण करके तासूं दंतशोधन करें हैं ॥६६॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलाया सुधासिंधौ दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे द्वितीय स्तरंगः ॥२॥

### कल्लोल जी दसम

## तृतीय तरंगः ॥३॥

श्री गोकुलेशो जय जयति ॥ अथ प्रथम तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **अंग निषेवी समये द्रागस्मीन् जवनिका क्षीश्वा-**
**त्रीछारिका मनु पृथंसिह द्वारा रंगत्या ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि या समय में श्री अंग सेवक खवास जी वेग ही तिवारी में बडे टेराको लगाय के वेग ही जायके सिंहद्वार की सांकल उघाड़े है ॥१॥ तब सगरे भक्तजन "हौं पहले हौं पहले" या उतावल सूं भीतर प्रवेश करें हैं ॥ या प्राणनाथ के श्रीमुखचंद्र को टक टकी लगायके निरखे है ॥२॥ कोई पास है ॥ कोई अत्यंत ही पास है ॥ कितने दूर है ॥ कितने तो अत्यंत ही दूर है ॥ ठहरके कि बैठके रहे हैं ॥ वा समय में जो अत्यंत सुख विनको होय है ॥ वा सुख के स्वरूप को कि प्रमाण को तो वे ही जाने है और नहीं जाने है ॥ प्राणनाथ जी को अनुभव तो भाव अनुसार प्रायः सबन को ही होय है ॥ कृपा समूह सूं तो कोई को

कहां सूं कबहू हू वासूं अधिकी हू होय है ॥ निकट आये इनको तो भगवान प्राणनाथ जी अत्यंत गूढ़ कृपारससू भरी दृष्टि सूं वारंबार निरखे है ॥ सो रघुनाथदास कि मालजी पंचोली कि भक्तराज श्री भाग्यराशी जी को जो भृत्य है जो बड़े प्रतिष्ठीत परम भाग्यनिधि है जो प्रेम भार सूं जय महाराज ऐसो बारंबार कहें हैं ॥ प्रणाम हू करें हैं ॥ विनकूं प्राणनाथ जी "आवो बैठो" ऐसे कहें हैं ॥ इनको तथा दूर सूं आये भक्तन को हू समाधान हू करें हैं ॥ या समय में सारंगी बजायवे में बडो चतुर सो ध्यानदास जी प्रभुन के निकट ठहर के सारंगी को अत्यंत मीठी रीतसू बजावे है जासू प्राणनाथ जी प्रसन्न होय है ॥ या सुंदर समय में कितनेक भक्तजन तो निश्चल होयके गुप्त रीति सूं भक्ति सूं श्री कृष्णराय जी ने किये वा रूचीराष्टक को पाठ करें हैं जाकू मैं करूं हूँ ॥११॥ अब रूचीराष्टक को भाषा में कहें हैं **कि जो हरी भक्तन के दुःखन को हरवे वारो मूलरूप रसात्मक प्रभु वा भूतल में सबन के आगे अपने छेहो गुणन को प्रगट करत श्री विट्ठलनाथ स्वरूप सूं प्रकट भये हैं -- नित्य सर्वरूप सो परिपूर्ण गुण स्वरूप श्री वल्लभ प्रभु को हौं निरंतर भजन करूं हूँ ॥१॥ अपने सेवा शील जनन के प्रति या भूतल में अपने स्वरूपामृतन को दान करवे लिये जाने अत्यंत सुंदर अलौकिक मनोहर देह, कि मनोहर मनुष्य स्वरूप जाने प्रगट कियो है आनंद मात्र ही जाके सगरे स्वरूपात्मक अंग है ऐसे महासुन्दर श्री गोकुलेश प्रभु को हौं भजन करूं हूं ॥२॥ तथा कूंदादि फूलन के योग्य कि वैसे फूल समान मंद मुसकान सूं शोभायमान नूतन सुन्दरी रूप लतान सूं जो आलिंगन कियो है, अपने जनन के वांछित श्रेष्ठ फलन को जो समूह रूप है ऐसे वा श्री गोकुल में परिपूर्ण सर्वाधिक सुख रूप श्रृंगार रसरूप कल्पवृक्ष जो श्री गोकुलेशजी है, वा श्री वल्लभ प्रभु को हौं निरंतर भजन करूं हूँ ॥३॥ व्रजसुंदरी जन -- अद्‌भुत इन्द्रीय रूप पात्रन सूं जाके परिपूर्ण रस स्वरूप रस कूं पान करें हैं -- ब्रह्मादिकन को जो अत्यंत ही दुर्ल्लभ है केवल अनन्य जननको जो पात्र होय है ऐसे वा सुंदरवर श्री वल्लभ जी को हौं निरंतर भजन करूँ हू ॥४॥ सौभाग्यरूप भूमि में जो प्रकट भयो है -- तीनों जगत की नव सुंदरीन के सौंदर्य समुद्र को लहरीन सों जाको श्री अंग सिंचन कियो है श्रृंगार रूप पल्लव वारे अनंत यशरूप फूलवारे श्री गोकुल में सुन्दर फलवारे वा श्रृंगार रसात्मक कल्पवृक्ष**

रूप श्री वल्लभ जी को हौं निरंतर भजन करूं हूँ ॥५॥ सुन्दरता सूं जो तुंदील है -- भरपूर है, पूर्ण मकरंद के पान सूं मत्त होय रहे व्रज सुन्दरीन के नयनरूप भौरान सूं जो आस्वाद योग्य है कि वे नयनमधुप जाके रसकू पान करे हैं ऐसो आनंद को कंद कि कमलदल सूं विशाल लोचन वारे श्री गोकुल भूमि में प्रकटे श्री वल्लभ रूप कमल को निश्चल होय के हों भजन करूं हूँ ॥६॥ श्रृंगार रसके साररूप निज्जन के पान करायवे लिये ही यहां प्रगटे है, सुन्दरता की सीमा कि कसोटी रूप अपने मनोहर वेष को धारण कर रहे वा श्री गोकुलेश प्रभु को हों भजन करूं हूँ श्रृंगार रस ही जोवन वारी स्त्रीन के अर्थ मूर्तिमान उत्सव स्वरूप है कोऊ अनिरवचनीय भाग्यन सूं ही या भूतल में प्रगट भयो है विट्ठलनाथजी के पुत्र अपने कुल के मुगटमणी हैं ऐसे प्रभु गोकुलेशजी को हौं निरंतर भजन करूं हूं ॥८॥ या रीति सूं उपमा रहित अतुल मातुलरूप श्री वल्लभजी को यह रूचिराष्टक श्री कृष्णराय जी ने कियो है ॥ मनोरथन को सिद्ध करवे वारो है ॥ जाको हृदय या श्री गोकुलेशजी के चरणारविंदन में लग्यो होय सो वाको सदैव ही आदर सूं याकूं जाप अवश्य करवे योग्य है ॥९॥ या प्रकार को कितने तो रूचीराष्टक गावे है ॥ श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि गढवे विश्नुदास नाम को जो श्रेष्ठ चारण हे सो अब आयके चारण भाषा में बनाये कीर्तन गीतन को प्रगट करें हैं -- तासूं प्राणनाथ जी अत्यंत प्रसन्न होय है ॥२१॥ कितने भक्त तो गुणसागर के किये कीर्तनन को पढे है और कितने तो लघु गोपाल के किये कीर्तनन को गावे है ॥ वैसे और और भक्त जन तो श्री विट्ठलनाथ जी श्री गोस्वामीजी के कितने श्री नाथजी के और कितने तो मेरे प्रभु श्री गोकुलेश जी के ही यश को या समय में ही प्रगट करें हैं ॥ तथा कितने भक्त तो अपने कार्यवश सुं पहले नहीं आय सके है वे हू अब वेग ही आयके मिले है ॥ श्री प्राणनाथजी के मुखचंद्र को निरखे है ॥२४॥ या अवकाश में श्री अंग सेवक खवासजी तिवारी में ही या प्रिय को सगरी शयन की उपयोगी सामग्री को वेग उठावे है ॥ तूल, कि बिछोना के वस्त्र तकिया मुड बंधा के गट्ुवा तनीया पलंग पोश सेजबंध मनोहर चौकी जलसु भरे जलपात्र, मनोहर बडी चौकी चरणधारण की -- कि शय्या पर चढवे उतरवे में उपयोगी छोटी चौकी, कि कंबल -- कि बिछोना को वस्त्र यह सब उठाय के मंदिर में उचित स्थान में धरें हैं ॥ पडगी कि तष्टी को

उठाय के वा स्थान में पोतना करके वा पड़गी को या जलादि सुं आछी रीतसों पखारके सगरे भक्तन को चरणामृत लेवे लिये वांछीत है तासूं वाकूं चौखंडी में धरें हैं ॥ ता पाछे वा हर्ष शय्या जी को बडी चादर सूं ढांपे है जासूं यह मलीन न हो जाय ॥३२॥ वाके उपचरणन को तो कोई गवाखा में धरें हैं ॥ अब यह खवासजी मेरे प्रभुन के पास आवे है ॥ इतने में बड़ी चतुर भलीबाई जी हस्त कमल सूं बुहारी सोहनी उठाय के सोहनी वेगा करें हैं ॥ प्रभुन की तिवारी तथा मुख्य मंदिर को हू गोबर कि जलन सूं सुंदर लेपन करत ही भीतर भीतर जलसू बहुत ही कोगला करें हैं ॥३५॥ दंतन को शुद्ध करके दंत काष्ट के दो फाल कर विनमें ऐक वाम श्री हस्त की अंगुली में धरके दक्षिण हस्तसु जिह्वा शोधन करें हैं ॥ बीच बीच में जलसु शोधन करके या रीति सूं अस्सी ८० वार करें हैं ॥ पीछे वा फाल को धरके दूसरो फाल लेकर फिर जिह्वा को वासु ७० सीत्तर वार शोधन करें हैं ॥३८॥ जासुं जिह्वा में बीड़ी को लालरंग रंच हू न रहे ॥ फिर गले के भीतर कि रसना में वाके कुर्च को दस कि नौबार वेगा भ्रमावे है ॥ या के छोटे कोमल सींकन सो दांतन की संजिन को हू शोधन करें हैं ॥ जासू या दंतन के बीच सुपारी को टूक हू न रहे जाय, सगरे जगत की शुद्धी के करवे वारे प्रभुजी अत्यंत शुद्धी की चाहना सू ऐसे करें हैं ॥ फिर दंत काष्ट के दोनों फालन को आछी रीतसो धोय के भूमि पर डारें हैं ॥ फिर श्री हस्त कमलन को पखार के श्री प्राणनाथजी बहुत ही जलसु हर्ष पूर्वक बारंबार बहुत ही कोगला करें हैं ॥ यामें कारण श्री आप ही जाने है और कोई नहीं जान सके है ॥ ईश्वरेश्वर श्री प्रभुजी या रीतिसु दंतादि शोधन करके पीछे उपरनासू श्री हस्त कमल को श्रीमुख चंद्रमा को पूंछन करें हैं ॥४४॥ ता पाछे वेगा उठके यज्ञोपवित को दक्षिण कान में चढ़ाय के श्री मस्तक में विलास पूर्वक उपरना को वांध के अपने जनन के चित्त को चोरत ही एकांत घर में पधारे हैं ॥ पधार रहे वा श्री प्राणनाथजी के लाखन पूर्ण चंद्रमा को विजय करवे वारे शोभायमान श्रीमुख को उतावल सो हों पहले हों पहले ऐसे आगे आयके निरखत ही प्रेम सूं वा पर अपने आत्मा कू हू वार वार डारें हैं ॥ जीव जीव सदा जीव ऐसे मनमें आशीर्वाद हू करे हैं ॥ श्री प्राणनाथजी हू वामें पधार के वाके किंवाड लगायके वाकी सांकल हू लगाय के वा ऐकांत घर के कोणे में स्थित पनहीं

को दोनो चरणन सूं अंगीकार करके शीत काल होय तो हंसंती सूं यह स्थल प्रकाशवारो गरम ही रहे हैं ॥ उष्णकाल में शीतल ही रहे हैं ॥ मनुष्य लीला में आपको मन लग्यो है तासूं मनुष्य नाट्य कर स्वयं भगवान प्राणप्रियजी यहां विराजमान होय है ॥५०॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीला सुधासिंधौ दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे तृतीय स्तरंगः ॥३॥

**कल्लोल जी दसम**

# चतुर्थ तरंगः ॥४॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ अथ दसम कल्लोले चतुर्थ तरंगः लिख्यते॥

श्लोक -- **भक्तास्त्यं स्मिन्समये बंहिरुव विश्यसते प्रायः**

**के चितु समुत्थायैव स्वंभावं समनुयांत ॥२१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि या समय में प्रायः कितने भक्तजन तो बाहिर बैठ जाय है ॥ कितने जो उठके अपने भाव के अनुकूल चलत ही आवश्यक वा वा सेवादि सिद्धी उद्देश सूं अपने घर में वेग ही जायके वेग ही आयके यहां ठहरें हैं ॥२॥ जे कितने भक्त तो या प्रिय के वियोग सूं रात्रि में अत्यंत क्लेश को पावत ही निद्रा को प्राप्त नहीं भये हैं ॥ किंतु या रात्रि में अंत में कोई प्रकार सूं आय गई वा गाढ़ निद्रा सूं विवश किये घर में ही रहे हैं उठके यहां आयवे में समर्थ नहीं भये हैं ॥ सर्वज्ञन के मुकुटमणी रसिकवर कृपासागर अपने जनन में परम वात्सल्य भरे भगवान श्री गोकुल वल्लभ प्रभु ने विनको वा निद्रा में ही अबके समय को अपनो सगरो लीला चरित्र ही अनुभव कराय दियो है ॥ जब वे जागरण को प्राप्त भये हैं तब तो या रीति सूं पश्चाताप करत ही आज तो हम प्राणनाथ के निकट न गये तासूं आज प्राणनाथ की वा वा लीलान को दर्शनादि सूं हम ठगे ही रहे गये या रीति सूं क्लेश पावत ही वेग ही यहां आयके उदासीनता सुं भरे होयके अपने मित्रन सूं पूछे है कि प्राणनाथ जी आज कैसे विहार कियो विनके मुख सो सुनके प्राणनाथजी ने मोकू अपनो चरित्र जो जो घर में अनुभव करायो है सो सोही कियो है ॥ यह मनमें विचार के वा प्राणनाथ पर प्रसन्न होयके

वारंवार अपने सर्वस्व तथा प्राण समूहन को हू वारणो करत ही रह्यो हूं ॥१९॥ श्री अंग सेवक खवास जी तो श्रीराज के श्री चरणारविंद युगल के पखारवे अर्थ जलनसु भरे बड़े करवा को विराजवे के पीढा के आगे ही धरें हैं ॥ दक्षिण ओर कोगला करवे कू जल सूं भरी काष्ट के सुंदर ढांके मुखवारी पीतल की कलशी को धारण करें हैं ॥ आचमन अर्थ जलपात्र कूं धरें हैं तथा सुन्दर जलपान में उपयोगी जलपात्र को धरें हैं ॥ श्री नाथजी के तथा श्री तात चरणन के चरणामृत सूं भिजोय के सुखायी मृत्तिका को थेलीन में भरके श्रीमुख में चरणामृत लेवे लिये दोय थेली धरें हैं ॥ चरण पखारवे लिये दक्षिण भाग में काष्ट को मृत्तिका भर्यो पात्र धर्यो है ॥ वामें सूं पवित्र कोमल मृत्तिका लेकर जितनी चहिये सो यहां धरें हैं ॥ तथा नखन के शुद्ध करवे में वांछित सींकन के टुक हू गवाखा सूं उठाय के यहां राखे है ॥ तब एकांत घर सूं श्री हस्त में जल के बड़े करवा को लेकर बाहिर पधारत ही श्री प्राणनाथ जी एकाा में पनहीं जी को धरें हैं ॥ वा किवाड के छिद्रन सो पधार रहे प्राणनाथ जी को देख रहे पहले आये कि अबके आये हू सगरी स्त्री पुरुष भक्तजन "हों पहले हों पहले" वा प्रिय के श्रीमुख को दर्शन अर्थ उतावल सूं उत्कंठा भरे होयके आगे आगे होवत परस्पर प्रेरणा करें हैं ॥ प्राणनाथ जी हू किवाड की सांकल को निकार के किवाड को उघाड़ के बाहिर पधारत ही शोभायमान वेदि के ऊपर दक्षिण भाग में वा जल के करवा को धरें हैं ॥ फिर आगे पधारें हैं ॥२०॥ विलास समूहन सूं वा भक्तन के नयन दोनामें-निष्तुस अमृत के समुद्रन को वर्षा करत ही चोखंडी में पधारके रत्न जटित पीढा पर बिराजमान होय है ॥ श्री कल्याण भटजी कहें हैं कि कोई समय में तो या रीति सूं एकांत घरसू बाहिर पधारके चौखंडी में पीढा पर विराजमान इश्वरेश्वर प्रभुन के आगे ध्यान दास ने विज्ञापना करी "कि महाराज महाप्रभो एकांत घर में पधारत आप वाके किवाड को सांकल सु बंध नहीं करे ॥ वामें कोई मर्यादा रहित होय के साहस सूं प्रवेश तो नहीं करें हैं वहां यह संभावना होय है कि शीत काल में अंगारन सूं भरी भीतर अंगीठी पास ही रहे हैं, कोई कबहू प्रमाद न होय जाय तासूं सांकल नहीं लगामनी ॥" यह सुनके तब श्री प्राणनाथ जी मंद मुसकान वारे श्री मुख चंद्र सूं विलास पूर्वक यों कहत भये हैं कि "तुम ऐसे विज्ञापना करो हो तब तो हों अब ताला हू दृढ़

हों अब ताला हू दृढ़ लगावूगो'' यह सुनके प्राणनाथ जी के आगे ध्यानदास जी ने मंद-मंद हंसत फिर विज्ञापना करी की ''आप स्वतंत्र है, राजा है, आपके साथ कोई की हू कछू हू नहीं चले है'' ॥ फिर कितने दिन गुजरने पर भक्त वत्सल कृपासिंधु प्राणनाथ प्रियजी याकी वा विज्ञापना को स्मरण करके एकांत घर में सांकल देवे के नियम को छांड देते भये हैं ॥ यह बीच में प्रसंग कह्यो है ॥ अब सुजान जन चलते प्रसंग को सुनवे में सावधान होये ॥२८॥ श्री प्राणनाथ जी रत्न पीढा पर विराजमान होय के आगे धारण किये चरणों के मध्य में धरे बड़ो जलपात्र करवा को देखके उठाय लेवे है ॥ गवाखा सूं सींक के खंड को लेके पखार के वासू नख शुद्धी करे हैं ॥ पीछे जलपात्र को दोनो श्री हस्त कमलों के बीच राखके दक्षिण हाथ सूं मृत्तिका लेके करवा नमाय के वाके जलन सूं तीन वार वाम हस्त को पखारें हैं ॥ ता पाछे दोनो हस्त कमलन कूं सात वार पखारे हैं ॥ या जल पात्र सूं दक्षिण चरण को तीन वार पखारे हैं ॥ करवा को नमाय के जल लेवे है ॥ वाम हाथ सूं मृत्तिका लगावे है ॥ या प्रकार तीनवार वाम चरण कमल को हू पखारें हैं ॥ खवास जी तो पहेले ही तष्टी धर राखे है तासूं प्रभुन के चरणामृत को लेकर वारंवार प्रार्थना कर रहे कोऊ भक्त के हाथ में देवे है ॥ सो भक्त आप हू लेवे है ॥ प्राणनाथजी के चरणामृत लेवे लिये आय रहे भक्तन की बड़ी भीड़ होय है ॥ ''हों पहले हों पहले'' या उतावल सो सो मनोहर अधिकी होय जाय है ॥ खवास जी तो जब प्राणनाथजी चरण कमल पखारें हैं तब वाके नीचे हाथ धरके वा चरणामृत को पान करें हैं, बड़े आदर सूं मस्तक में हू धरें हैं तथा या प्रभु के पास बैठे प्रार्थना कर रहे कितनेक भक्तन प्रति हू देखे है ॥३९॥ श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि प्राणनाथजी के श्रेष्ठ भाग्यवारे वा भक्तन के आलिंगन करवे लिये मेरे में कोऊ बड़ी प्रबल उत्कंठा ही बढ़ रही है ॥ कि जे आनंद निद्रा पलंग सूं उठे सगरे श्रेष्ठ गुणन के समुद्र अपने प्राण प्रभु के दर्शन करवे में उत्साह वारें हैं -- बेटा बहु स्त्री मित्र परिवार दासन सूं मिले ही बड़े आदर सूं डेढ़ प्रहर रात्रि रहे, उठके घरसूं आयके जे या प्रभु की द्वार भूमि की रजकी सेवा करें हैं ॥ वा रसात्मक मृगनयनी की चरणरज तो बड़ेन कू हू दुर्ल्लभ है ॥४३॥ जे सदैव ही रात्रि में जागरण करत ही वा समय की वाट देखे है कि जा समय में सो प्राणनाथ जी भक्तन के नयनन

में हर्ष के समुद्रन को वर्षा करत ही स्वयं जागे है ॥ तथा बाकी रही रात्रि में पत्ति को तीनका जैसे, पुत्रादिकन को राख जैसे छांड के वेग ही रससागर अपने प्यारे भूषण हू गिर रहे हैं, विनको देखे हू नहीं है, वैसे लौकिक वैदिक सबको तृण जैसे हू नहीं माने है ॥ विनकी तुल्यता हू दुर्ल्लभ है ॥ जाकी प्राप्ति लिये बड़ो भाग्यवारो हू मनोरथ करत हू प्राप्त होय है ॥ तथा किंवाड के उघड़ते ही जे प्राणनाथजी के सुख निद्रा के घर में पहले ही प्रवेश करें हैं ॥ वा बडभागिनी को नाम तो भाग्यराशी भक्तन के कान में प्राप्त होय के अमृत के समुद्रन को वरसावे है ॥ तथा अत्यंत प्यारे के मंद मुसकान वारे श्रीमुख कमल के श्री स्वरूप को जो भाग्यवती नयनन सूं पान करें हैं ॥ वा मनोहर भाग्यवती सुंदरी के चरणन को आश्रय करत सर्वोपर विराजमान होय है ॥५०॥ अहो प्राणनाथ जी पलंग सूं उठत ही प्रतिदिन प्रातःकाल या गिरिधारीजी के आगे प्रणाम करें हैं ॥ सो प्रणाम हू जैसे सहस्त्र मुख होयके चौदह लोकन में कि वैसे वैकुंठ वासीन में हू गिरिधारीजी की महीमा को व्याख्यान करें हैं ॥ वैसे वेद शास्त्रादि हू सगरे वा गिरिधारी जी की महिमा कू लेश सूं हू सूचना करवे में समर्थ नहीं होय सके है ॥५३॥ जे भाग्यनिधि भक्तजन प्रतिदिन ही या प्राणनाथ जी के चरण कमलन को पखार के वाके गिरे अद्भुत कि स्वादु समूहो के चक्रवर्ती रूप अमृत रस को स्नेह सहित पान करें हैं विनके उच्छलित अर्बन खर्बन तरंगवारे समुद्रन को हौं नैन रूप पात्रन सूं पान करवे की चाहना करूं हूँ ॥५६॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीला सुधासिंधौ दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे चतुर्थ स्तरंगः ॥४॥

**कल्लोल जी दसम**

## पंचम तरंगः ॥५॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ अथ दसम कल्लोले पंचम तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **चरण क्षालन विदतौवग्मस्यो परिस चरणस्य तोयं**

**विकिरती सुचिरंसृ विभ्रमं भ्राम्य माणस्यः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि चरण पखारवे के विश्राम

मे श्री प्राणनाथजी विलास पूर्वक भ्रमाये बाये चरण के ऊपर चिर पर्यंत ही विलास पूर्वक जल डारे हैं ।।१।। जो या चरण की वा समय की शोभा को वा समय के वे भक्तजन ही रोम हर्षपूर्वक अनुभव करत भये हैं ।।२।। ता पाछे स्वतंत्र इच्छावारे प्राणनाथ जी चरण कमल के पखारवे के मृत्तिका वारे, स्थान को अपने ही श्री हस्त कमल सूं वेगी पखारें हैं ।।३।। यामें कोईने पूछ्यो की यामे का कारण है ।। तब कृपा सिंधु आप आज्ञा करी की यह अशुद्ध स्थान को अब ही जो वेग पखार्यो न जाय तो यहां असुरावेश वेग ही होय जाय तासूं वेग पखारयो जाय है ।। ता पाछे प्राणनाथ जी बाये ओर धर राखे पीतल की कलशी के जलसु असंख्यात कोगला करके और हू जल लेकर तासूं हू अनंत कोगला करके श्री मस्तक सूं उपरना उतारके शीतल-शीतल जलन सूं नयनन को बहुत वार सींचन करके छोटे जलपात्र में ठहरे जलसूं छे वार आचमन करके कोहनी पर्यंत श्री हस्त कमल को पखार के श्री कर्णसूं जनेऊ को उतार के प्रथम जैसे धरें हैं ।।८।। श्री हस्त कमल सूं कान नासा क्षेत्र हृदय को स्पर्श करके दोनो घोंटुन में स्थित उपरना को श्री हस्त सूं खेंच के तासूं नयनन को कि श्रीमुख कमल को पोंछे है ।। ता पाछे कछुक फिरके वा पीढा पर विराजे है ।। तब खवास जी चरणामृत मृत्तिका की दोय थेली देवे है ।। प्राण प्रभुजी बाये श्री हस्त कमलसूं लेके वामे सूं वा चरणामृत को रंच लेके रसना के ऊपर डारें हैं ।। वाको स्वाद अनुभव करें हैं ।। पीछे खवास जी दीये जलपान के पात्र सूं जलपान करें हैं ।। तब प्रायः गंधक गुटिका कि श्रेष्ठ वैद्य ने समारी अजमायन क्षार को श्रीमुख सूं अंगीकार करें हैं ।। श्री राज कोगला करें हैं ।। खवास जी तो शीतकाल होय तो होमघर में की वेदघर में कि मुख्य घर में तैलाभ्यंग की सेजा बीछावे है ।। और समय होय तो तिवारी में कि आंगण में तैल सेजा बिछावे हैं ।।१५।। मालती चंबेली के तेल कि केवड़ा, के गुलाब, के सुगंधी वारे तैलन के तैल को कि अथवा और फूलन की सुगधी वारे कि विना सुगंधवारे तिलन के सुंदर तैल सूं भरे सुन्दर पात्र कू धरें हैं ।। वा पर कांकसी हू सुन्दर धरें हैं ।। शीतकाल होय तो तैल सेज्या के पास सुन्दर अंगारन सूं भरी अंगीठी हू धरें हैं ।। तब यह खवास जी उत्साह सूं श्री प्राणनाथ जी के निकट आवे है ।। श्री प्राणनाथ जी हू वेग ही तैलाभ्यंग लिये पधारें हैं ।। या प्रभु के श्रीमुख को सगरे हू भक्तजन

निरखे है ॥ उत्साह समूह पूर्वक या प्रभु के पीछे ही चले है ॥ प्राणनाथ जी माणिक जटित कंबल ऊपर बिछायत बिछी है तामे रूईदार तकीया है, श्वेत वस्त्र सूं वेष्टीत है, वाके सहारे आसन पर बिराजे हैं ॥ वा आसन के आगे सुन्दर चरण वस्त्र धर्यो है तासूं चरण कमलन कूं पोछें है ॥ शीत ऋतु होय तो रूईदार छोटे नीमा को उतारके, और समय में तो चादर ओढ़ के बिराजे है ॥ धोती उपरना को वड़ो करके छोटी धोती को पहरें हैं ॥ वाके आगे वारे पल्लु कों ऊपर खोसे है ॥ धोती को हू संकोच कर लेवे है ॥ पीछे जनेऊ को कंधासूं उतार के कमर सूं बांध के विराजमान होय है ॥ भक्तजन हू बहुत ही उछलित प्रेम सूं टक-टकी लगाय के या प्रिय के श्रीमुख चंद्रमा को निरखत ही सन्मुख बैठ जाय है ॥२४॥ श्री प्राणनाथ जी बिराजमान है उघाड़े नीतंब है वा तैल सूं एक श्री हस्त कमल के नख को अभ्यंग करके श्री हस्त सूं विलास पूर्वक कांकसी को उठावे है ॥२५॥ श्री हस्त में केशन को लेकर हृदय के आगे सवन को धरके विनके आगे वारे भाग में तीस (३०) वार कांकसी फेरे हैं ॥ फिर चंद्रवदन श्री प्राणनाथ जी वा सगरे वारन को श्री हस्त कमल सो पीछे करके मूल कूं लेकर सबन में कांकसी को फेरत सत्तर (७०) वार कांकसी फेर सजावे है ॥ या समय में ही दोय सेवक हाथ सूं तेल लेकर वाके दोय तीन बिंदु वाछल्य विशेष सूं भूमि में डारके फिर या प्राणनाथ को अभ्यंग प्रारंभ करें हैं ॥२९॥ पहेले घोंटू के आगे अभ्यंग करें हैं ॥ पीछे याके ऊपर पीछे नितंबबिंबन को, पीछे जंघा कि चरणन को कि विनकी तली को हू अभ्यंग करें हैं ॥३०॥ प्राणनाथजी एक चरणारविंद को द्विगुनो करके वा चरणासन में धरें हैं ॥ दूसरे चरण को, चरण वस्त्र पर ठाड़ो करके धरें हैं ॥ केश हस्त कि सुन्दर समग्र वारन को समारनो जब होय जाय है तब तो खवास जी तेल के पात्र को हाथ में लेकर वेग उठे है ॥ प्राणनाथजी हू खीसे तब वारन को वा कांकसी में ही लपेटा देके या कांकसी को हू धर दे है ॥३३॥ पीछे दोनो हस्त कमलन को तेल के रोकवे लिये श्री मस्तक में कोई कोट के प्रकार सूं धारण करें हैं ॥ तब खवास जी तो वामे तीन चुलक तेल डारे हैं यामें जब चोवा डारे हैं तब श्री प्राणनाथ जी स्वयं हूं हूं हूं ऐसे कहें हैं तब तो खवास जी तेल डारवो छोड़ देवे है ॥ वा तेल को पात्र हाथ में लेकर और तरफ जाय है ॥ फिर वा पात्र को भूमि

में धरें हैं ।। श्री प्राणनाथ जी तो वा तेल को दोनो श्री हस्त कमलन सो चारो ओर पसार के एक श्री हस्त को मस्तक पर धरके दूसरे श्री हस्त सूं वारन के अग्र को सगरे ही श्री मस्तक में भ्रमावे है वा तेल सूं पीछे वारे वारन कूं अभ्यंग करें हैं ।। ऐसे सवन को तेल सूं मर्दन करें हैं ।। जब तेल थोड़ो है ऐसे जाने है तब तो तेल के पात्र सूं थोड़ो तेल वाये श्री हस्त सूं लेकर विनमें डारे हैं ।। पीछे दोनो श्री हस्त कमलन सूं सगरे वारन सूं मिले श्री सिर को सुन्दर प्रकारन सूं अभ्यंग करत ही दोनो कानो की पट्टी में कि पीठ में कि मस्तक में गिर रही वा तैल की धारान को उपरना के मनोहर वा अंचल सूं पोंछे है ।। या रीति सूं केशन को अभ्यंग करके तैलसूं प्रसन्न करके जूरा को बांधे है ।। फिर दोनों श्री कमलन सूं धोती जी के भीतर विराजमान रस विशेषरूप मनोहर श्री अंग को अभ्यंग करके फिर चंद्र कूं विजय करवे वारे श्रीमुख कमल को प्राणनाथ जी अभ्यंग करें हैं ।।४३।। पीछे वे दोनों सेवक दोनो भुजान में कि पीठ में हृदय में कि उदर नाभी दोनों पसवाड़े की कमर में बड़े प्रेम सूं तेलाभ्यंग करें हैं ।। वैसे और हू भक्तजन आयके वा प्रिय के दोनों चरण कमलन को कि वाकी तली में कि जंघा में की घोटून के आगे वैसे और और हू अंगन में तेलाभ्यंग करें हैं ।। भगवान श्री प्राणनाथ जी तो एक मन होय के धीरे धीरे भगवत् स्तोत्र को पाठ करें हैं ।।४६।।

इति श्रीमद गोकुलेश लीला सुधासिंधौ दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे पंचम स्तरंगः ।।५।।

**कल्लोल जी दसम**

# छठमो तरंगः ।।६।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति ।। अथ दसम कल्लोले छठमो तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **अंग निषेवी गत्वासचुल ही स्यात विपुलात्ता**
**म्रोद घटादाय जलं घटध्वये नेह ।।१।।**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं -- सो खवास जी जलघरा में जाय के चुल्हा पर ठहरे तांबा के बड़ा कलशा सूं दोय कलशा सूं जल

लेकर वा अत्यंत ताते जल में करवामें ठहरे शीतल जल को मिलाय के समोय करके स्नान के स्थान में धरे हैं ॥ प्रभुन की इच्छानुसार और हू जल डारवे लिये और घड़ा में शीतल जल हू पास धरें हैं ॥ होम घर में कि आंगण में राज स्नान करवे की इछा करें हैं तो वहां स्नान अर्थ काष्ट की एक चौकी धरके दूसरी चौकी हू धोयी धोती की थेली धरवे कू धरें हैं ॥ जलघरा में स्नान की इच्छा करें हैं तो वहां स्नान अर्थ तो वेदी है ही, वाके लिये चौकी नहीं धरें हैं ॥ दूसरी चौकी तो धरे ही है ॥५॥ धोती-सेवा को अधिकारी जी पहले ही अपरस में धोती उपरना दोय अंग वस्त्र धोय के सुखाय के घड़ी करके एक उनकी थेली में धरें हैं ॥ ऊपर पट्ट के डोरा सूं बांध के गवारवा में घर जाय है ॥ वा स्थान सूं वा थेली को लायके यहां चौकी पर धरे हैं ॥ प्रायः काहू काहू समय में भक्त स्त्री कि पुरुष हू अपने मनोरथ अनुसार स्वेत कि केसर रंग सूं रंगित कि चित्रित कोरवारी नवीन धोती उपरना लायके वा चौकी पर धरें हैं ॥ खवास जी तो प्रभुन के तिलक अर्थ कुंमकुम चंदन सहित सीप लायके धरें हैं ॥ आचमन करवे कूं शीतल जलसूं भरे सुन्दर जलपात्र कूं हू धरें हैं ॥ शीतकाल होय तो प्रज्वलित अग्निवारी लोहा की अत्यंत सुन्दर अंगीठी हू धर राखे है ॥ वाके उपयोगी सुन्दर सुखे लकड़ी के खंड हू राखे है ॥१२॥ जा पर मखमल की कोमल गादी सुन्दर वस्त्र सूं लपेटी है ऐसे विराजवे के सुन्दर पीढा को हू धरें हैं ॥१३॥ फिर प्रभुन के आगे विज्ञापना करें हैं ॥ कि महाराज स्नान करवे लिये पधारिये ॥ सो श्री प्रभुजी हू वेग ही उठके ठाड़े होय है ॥१४॥ श्री कटि देश में बांधे जनेऊ को छोड़ के भली भांति रीत सूं पहिरे या अवकाश में कोई भक्त तेलपात्र सूं तेल कूं लेकर प्राणनाथ के नितंबन को तेल मर्दन करत ही अभ्यंग करें हैं ॥ या समय में प्राणनाथ के सगरे अंगन को कोऊ अद्भुत चमत्कार उछले है ॥ तब भक्तजन टक-टकी लगायके देखे है । प्राणनाथ जी हू स्नान करवे कूं जे उतावल करें हैं तथा अनेक मनोरथ वारे वा वा भक्तन के प्रति स्नेह रस भरी दृष्टि सूं वा वा मनोरथन को जो गुप्त रीति सों दान करें हैं वे सब अनुभव करवे वारे जा जा भक्त ने अनुभव कियो है ॥ वे हू भली भांति सूं कहिवे में समर्थ नहीं है ॥ तो विनकूं हौं भली भांति सूं वर्णन करत अपराध वारो होवू का कि भलीभांति वर्णन करवे में कोऊ समर्थ नहीं है ॥१९॥ अहो

चिरकाल पर्यंत तेलाभ्यंग रूप सुख के अंगीकार रूप बहाने सूं जा भक्तजनन को अपने श्री अंग के स्पर्श रूप अमृत समुद्रन के समूहन सूं कृपासिंधु प्राणनाथ जी मनोहर हस्त कमलो में अभ्यंग करें हैं -- कि जा भाग्यवानो के हस्त कमलो को अपने श्री अंगन को जो स्पर्श है सो निधी समूह रूप है ॥ सो अत्यंत ही दुर्ल्लभ है ॥ वैसे वे भक्तजन ही या प्रकार के रस के वर्णन में संकोच भरे चित्तवारे मोकू स्नेह पूर्वक रक्षा करें हैं कि मेरे भली भांति वर्णन में अपराध नहीं होयवे देवे है ॥ अब चलतो प्रसंग कहें हैं ॥ श्री प्राणनाथ जी स्नान की चौकी पर बिराजमान है श्री अंग सेवक खवास जी आयके आपके दक्षिण श्री हस्त में समोई जलसूं भरी मनोहर पीतल की कलशी देवे है ॥ वासूं पहिरे वस्त्र को गीलो करत ही कमर पर्यंत स्नान करके वा चौकी पर पद्मासन बांध के बैठ जाय है ॥ खवास जी तो दूसरी पीतल की कलशी को वा जलसू भर देवे है ॥२५॥ तब प्राणनाथजी धोती के पहले अग्रभागन को एक हाथ सूं कछूक ऊंचो करके दूसरे हाथसूं विलास पूर्वक नाभि को सिंचन करें हैं ॥२६॥ खवास जी फिरही वा कलशी को जलसूं भरें हैं ॥ वाकू हाथ में लेकर ही ठहर जाय है ॥ तब खवास जी यह बहुत तातो होयगो यह जानके वामे शीतल जल मिलावे है ॥ कबहू तो उष्णोदक के कलशा में हू शीतल जल मिलावे है ॥ तब वा जलसूं जगतपति श्रीजी अपने कंधन कूं सिंचन करें हैं ॥ फिरहू भरी वा कलशी सूं प्रथम जैसे ही सिंचन करें हैं ॥ ऐसे वारंबार वा जल कलशी सूं स्नान करत ही प्राणनाथ जी वा कलशी के आधे जलसूं कछुक ऊंचे किये चरण कमलन की अंगुलीन को सिंचन करत ही सब भक्तन के नयन कमल हू दलों में वा अंगुलीन सूं अमृत के हजारन अर्बन समुद्रन को वरषा करें हैं ॥ तब भक्तजन प्राणनाथ के चरणामृत को लेवे है, पान करें हैं, मस्तक में हृदय में धारण करें हैं ॥ नैनन में हू लगावे है ॥ विनमें कितने तो दोयवार कितने तीनवार हू लेवे है ॥ कितने लेकर हू तृप्त होय नहीं है ॥ कितने तो प्राणनाथ की वा स्नान की चौकी के नीचे मुख को पसार के धरके चिर पर्यंत वैसे स्थित होयवे की अभिलाषा करें हैं ॥ और तो यह विचारें हैं -- प्राणनाथ के दोनों चरण कमल सूं एसो अमृत गिर रह्यौ है सो सगरो ही पनारासो वृथा ही जाय रह्यो है यामे यदि हों पनारा बन जावु तो यह सगरे चरणामृत को लेकर वेग ही पान कर जावूं ऐसे उत्कंठा

सूं भरें हैं ।। और तो यह कहें हैं कि एक वार ही रंच ही यह पान करके इतने सूं ही हमतो कृतार्थ होय गये हैं ।। अधिक याके पानसूं कहा है, या प्रकार भाव धरें हैं ।।३७।। प्राणनाथजी तो ऐसे श्री अंग में सिंचन करके और हू जलसूं न्हाय के श्री अंग स्नान के जलसूं कछुक शीतल जल सूं भरी कलशीन सूं न्हाय के फिर वाके जल को चुल्लुन में लेकर वाम कान को सिंचन वारंवार करें हैं ।। फिर वाम हाथ में धरी वा कलशी के चुल्लुन सूं दक्षिण कान को सिंचन करे हैं ।। वाकी जलसू, मुष्टि कि नखन कों सिंचन करें हैं ।।४०।। फिर आछी रीत सूं वा कलशी को सम्पूर्ण भरके कछुक काल औरन सूं जान्यो जो नहीं जाय है वैसे भावसूं कितनेक पल विचार करत ही विराजमान होय है ।। ता पीछे मनोहर शोभा भरे श्री प्राणनाथ जी वा कलशी के जलसू मस्तक को सिंचन करत नैन कमल तथा आपसमे ओष्ट दोनों को मिलाय के विनको सिंचन करत कछुक ऊंचे कर दोनो घोंटू तथा श्रीमुख कमल, और सगरे हू अंगन को न्हवावे है या समय में गाढ़ सुन्दर भाग्य भरे महारस मय कोई अनिर्वचनीय भाव को धारण करवे वारे कि भक्तजन तो "जीव सदा जीव" न्हाते आपके वार को लव हू नहीं खसे, ऐसे श्रेष्ठ आशीर्वाद करें हैं ।। तथा और हू वा वा विज्ञापना को मनसूं करें हैं ।। इनके भाव के विवश सगरे भक्तन के प्रभु जब सगरे जगत के हू सगरे मनोरथन को पूरण करें हैं ।। तो ऐसे अपने कृपा पात्रन के मनोरथ कैसे न पूरण करे ।। ऐसे भक्त तो विरले है, यह तो प्राणनाथ के निकट रहे हैं ।। अपने अत्यंत प्रिय है यह तो पलमात्र वियोग नहीं पावे है ।। वा प्राणनाथ के ही मुख चंद्र को ही निरखे है ।। अहो या प्राणनाथ के स्नान अर्थ जे जल है वे तो प्राणनाथ के उच्छलित सर्वांग स्पर्श को अनुभव करके अपने ले आने वारे तथा राखवे वारे तथा तपायवे वारे कि अर्पण करवे वारे तथा पान करवे वारेन कू हू चौदह लोकन के कि सगरे बैकुंठ को हू पान करवे वारो कहें हैं ।। विनको भाग्य हू सब वैकुंठन को हू दुर्ल्लभ है ।। बड़े भाग्यन सूं ही मिले है ।।५०।।

इति श्रीमद गोकुलेश लीला सुधासिंधौ दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे छटा स्तरंगः ।।६।।

## सप्तम तरंगः ॥७॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ अथ दसम कल्लोले सप्तम तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **अथ तां पित्तल घटिकां भ्रमयित्वा हंतस विलासं ।**

**सुंदर वर्या निदधात्य धोय धोत्रस्युगिका ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं -- ऐसे स्नान करके सुन्दर वर प्राणनाथ जी वा पीतल की कलशा को विलास पूर्वक भ्रमाय के भूमि में धरें हैं ॥ तब खवास जी धोती की थेली को मुख उघाड़ के दूसरी चौकी पे धरें हैं ॥ श्री प्राणनाथ जी तो अपनी चौकी में विराजत ही बाये श्री हस्त कमल को वा थेली ऊपर धर के दक्षिण श्री हस्तसूं अंग वस्त्र को छोड़ के उघाड़वे सूं समान करके श्रीमुख ऊपर धरके नयनन को मर्दन करके मूछन के सहित सगरे श्री मुख कों पोंछे है ॥ वा ओष्टन को पोंछ के पीछे उघाड़े है वासू हृदय को कछुक कछुक भुजान को हू पोंछके उठके वा अंग वस्त्र का डेढ़ गुणो करके मस्तक पर धरके आगे दोनो पल्लव धरके दोनों श्री हस्त कमलों को पीछे करके सगरे वारन को आगे लायके वा अंग वस्त्र में धरके वेगा लपेटा लगाय के मस्तक ऊपर एक बार फेरके धरके वा अंग वस्त्र के पल्लू को वा लपेटा में खोसे है ॥ बाकी कछु रहे हैं तो सो श्वेत कमल के दल जैसे बहूत प्रकार सूं शोभायमान होवत ही या प्रिय के भक्तन के नयन कमलो में हर्ष के समुद्रन को वरसावत ही बहुत शोभायमान होय है ॥८॥ ता पाछे नम के वा थेली सूं दूसरो अंग वस्त्र पहले जैसे निकार, केवल खोल के दोनों पल्लू समान क्ररके चौगुनो करके पीछे ग्रीवा को पोंछे है ॥ पीछे दुगुनो करके पीठ को कोऊ विलक्षण प्रकार सूं पोछे है ॥११॥ पीछे पीठ में ठहरे वा अंग वस्त्र सूं पीठ कूं नीचे नीचे पोंछे है ॥ पीछे दोनो हस्त कमलन को ऊंचो नीचे पीछे तुलसी माला के गुछा को पोंछे है ॥ पीछे श्याम पट्टमय डोरा को पौंछे है ॥ पीछे महा सुंदर वर जी श्वेत सुन्दर तीन जनोउ को पोंछे है ॥ ता पीछे या अंग वस्त्र को दोनों श्री हस्त कमलन सूं कमर में बांधे है ॥ पहले जो धोती कि परदनी पहेरी हती सो भूमि पर श्री चरणकमलन

सूं आगे डारें हैं ॥१५॥ पीछे वा पहीरे ही अंग वस्त्र सूं श्री प्राणनाथ जी युक्ति सूं नितंब बिंबन को कि उदर को हू चतुरता सूं पोंछे है ॥ पीछे नम के एक वार दोयवार जंघान को श्री हस्त के फेरवे सूं फिर नितंब को हू पोंछे है ॥ नासा को बाहिर कि भीतर हू अंगुली को फेरके पोछे है ॥ श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं, कि कपास ने सुन्दर क्षेत्रन में अहो कोऊ अत्यंत बड़ो तप कियो है जे तंतुरूप होयके फिर या प्रिय के श्री अंग वस्त्र भाव को प्राप्त होय के जे दुर्ल्लभ औरन को न मिलवे वारे या प्रिय के सगरे श्री अंगन के गाढ़ आलिंगन के हजारन परमानंद के समुद्रन को प्रतिदिन वारंवार पान करें हैं ॥ जाको बिंदुमात्र हू सगरे बड़े भक्तन को हू मिले नहीं है ॥२०॥ श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि ता पाछे नम के वेगी प्रथम जैसी धोती उपरना को वा थेली सो निकार लेवे है ॥ अथवा नवीन लाय के अपने भक्तन ने वा चौकी पर धरी है ॥ तीन वार कुंकुम चंदन के बिंदुन सूं मिली है अथवा सुन्दर श्वेत ही है कि कुंकुम रंगीन अग्रभाग कोर वारी है अथवा कुंकुम रसके बिंदुन सूं मनोहर है अथवा चौवा के टपकान सूं मनोहर है कि चंदनी रंग सूं रंगी है कि कुंकुम सूं रंगी है कि चौवा, कस्तूरी, मेद, गोरोचन, जवाद आदि सुगंधिन सूं सुगंधित करी है ऐसी सुन्दर धोती को चतुरता सो धरें हैं ॥ जा धोती को भक्त ने लायके धरी है ॥ वाकूं श्री हस्त सूं प्राणनाथ जी लेकर प्रथम हृदय सूं ही लगाय के फिर धरें हैं ॥ **तासूं यह शिक्षा हू अपने जनन कूं करें हैं जो प्रभुन को समर्पन करी न होय वाके अंगीकार करवे में वाको बाधक होय है तासूं अवश्य ही प्रभुन को समर्पण करके फिर अपने काम में वस्तु लगायनी ॥ तामे यदि प्रभु प्रकट होय तो विनकूं समर्पण करनी परंतु सो तो दुर्ल्लभ है तो हू या प्रभु को निवास स्थल जो हृदय आदि है वामे ही अर्प्पण करनी ॥ प्रभु कृपानिधि है या हृदय आदि में ही अंगीकार कर लेवेंगे ॥ तथा वा धोती के हृदय में धरवे सूं वा भक्त गुण सागर प्रभुजी यों गुप्त रीति सों धैर्य हू देवे है, कि तुम सर्वात्मभावी भक्तन की भक्ति सूं हों संतुष्ट भयो हू ॥ तुमको मैंने हृदय में ही धर्यो है ॥ सो तुम निश्चिंत होय के रहो यह शिक्षा हू करें हैं ॥२९॥** तव प्राणनाथ जी वा उपरना कू बाये कंधा में धरके वा धोती को पहिरें हैं फिर अंग वस्त्र को श्री मस्तक सूं छोड़े हैं कंधा सूं उपरना उतार के पहिरे हैं ॥ ता पाछे बाये हस्त में धारण किये सगरे केशन

को दक्षिण हस्त सो समार के जूरा बांधे है सो अत्यंत ही शोभायमान होय है ॥ **अहो श्रृंगार रस महासागर को जो कोऊ सार है सो अनेक रूपवारो होय के प्राणनाथ के श्री अंगन में अत्यंत उछले है सो भीतर न समाय के सोई ही बाहिर मनोहर श्याम केशरूप होय के हरिण नयना ब्रजसुन्दरीन के समूह को आर्द करत ही आपस में मिलके अत्यंत मधुर जूरारूप होय है ॥** या समय में श्री प्राणनाथ जी कछुक अप्रगट अत्यंत मधुर पाठ करत ही कबहू कबहू मंद मंद हास्य कूं प्रकट करें हैं ॥ तब तो भक्तजन तो हृदय में विचार करें हैं कि अब प्राणनाथ जी कछुक कहे के हमारे कानों में रसिकराज कोई मधुर सुधा को परोसेगे तब श्री प्राण प्रिय जी हू वैसी ही करें हैं ॥ कि कबहू कछुक कबहु कछुक मधुर मधुर वचनन को प्रकट करके वा सगरे भक्तन को कि सगरी हरिण लोचना व्रजसुन्दरीन को अपने स्वरूप निष्टासूं विलक्षण कोऊ अनिर्वचनीय रस चक्रवर्ती समुद्र राज में निमग्न करें हैं ॥ तब या प्रकार विनकूं मधुर सुधा परोसे है ॥ वे हू वाकू हृदय रूप मुख कमल सूं भोजन करें हैं ॥ तब कितने बड़भागी भक्त प्रवर तो वा प्राणनाथ के अत्यंत प्यारें हैं तासूं प्रेम नम्र सूं मनोहर फिर फिर विज्ञापना करके वैसो परोसनो करावे है ॥ यह अत्यंत उचित है ॥ ता पाछे श्री प्राणनाथ जी अपने चरण कमल के पास गिरे वा अंगवस्त्र को वा चरण सूं ही विलास पूर्वक दूर करके वा खवास जी ने पधराये मनोहर पीढा पर बिराजमान होय हैं ॥ या खवास जी सूं वा पीढ़ा में बाये ओर धरे जलपात्र को श्री प्राणनाथ जी बाये श्री हस्त सूं लेकर दक्षिण श्री हस्त सूं लिये जल सूं तीन वार आचमन करें हैं वा श्री हस्त को पखार के वाकी मध्यमा अंगुली सूं दक्षिण कान को रसिकवर परस करें हैं ॥ फिर तीन आचमन करें हैं ॥ फिर अधर को, नासा को, नेत्रन को, कंधा तथा दोनों भ्रु को, कि भाल को, कि मस्तक के मध्य को परस करें हैं ॥ फिर दक्षिण हस्त को पखार के श्री कृष्ण ऐसे कहे कर पीढा पर कुंकुम चंदन की सीप धरी है वाकू दक्षिण हाथ सूं उठाय के बाये हाथ में धरके दक्षिण हाथ की तर्ज्जनी सूं कुंकुम चंदन वासु लेकर तीन वार मस्तक में तिलक करें हैं ॥ वा अंगुली को ग्रीवा में कि कानो के नीचे लगावे है ॥ वा तिलक के मध्य में तर्ज्जनी अंगुली सूं तीनवार वेगी शून्य करें हैं ॥ चिरयो तिलक करें हैं ॥ सूधी दोय, रेखारूप करें हैं ॥ **श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि**

प्रियाजन जब मान करें हैं, जा मस्तक में विनके अत्यंत धन्य चरण कमल संबंधी पावन की महावर कबहू आलिंगन करें हैं ॥ अब वा श्री मस्तक को जे कुंकुम चंदन तिलक रूप धरके आलिंगन करें हैं, कि शोभायमान करें हैं ॥ ऐसे वा कुंकुम चंदनन सूं जा भाग्यवानन के मस्तक न कूं कृपालु प्राणनाथ जी कृतार्थ करें हैं जिनके मस्तकन में यह लगावे है वे कृपासिंधु भाग्यवान भक्तजन अपने दर्शन दान सूं मेरे नयनो में कब परमानंद के समुद्रन को वर्षा करेंगे ॥५१॥ ऐसे प्राणनाथ जी तिलक लगाय कर धोती के एक देशसूं वा हस्तकूं पोंछे है ॥ अथवा जल पात्र के जलसूं वाकूं पखारें हैं ॥ तब प्राण प्रिय जी चौकी के ऊपर खवास जी ने धरी अपनी मुद्रिका को पहिर के संध्यावंदन को आदर करें हैं ॥ यदि श्री नाथजी के मंदिर में पधारवे की उतावल होय तो वेग सूं उठके या मुद्रिका को पहिरें हैं, आगे पधारें हैं ॥ आगे सेवक दंड दीप लेकर मनोहर मार्ग को दिखाय रहयो है ॥ भक्तन के समूह जय जय शब्द कर रहे हैं ॥ विनकू हू प्राणनाथ जी सुनत जाय है ॥। पूर्ण मुखी जन तो उछलता चाहना समुद्रन सूं "हो पहले हों पहले" ऐसे उतावल सूं आयके प्रेम विशेष सूं आपके श्री मुखारविंद की शोभा के उच्छलन को निरख रहे हैं ॥५६॥ भक्तजन हू सगरे आपके ऊपर सगरे सर्वस्व को वार रहे हैं ॥ तथा श्री अंग की ज्योती सूं बढ़ रहे सुन्दर दंड दीप की प्रभा समूहन सूं अत्यंत चमक रहे सुन्दर स्निग्ध श्री अंगन की शोभा समूह आपके उछल रहे हैं ॥ उतावल सूं उठ रहे विलास समूहन के, समुद्र समूह पूर्वक आगे पीछे चारो ओर ऊपर की तले जहां कहां ही अपने श्रृंगार रस सार के समुद्र समूहन की अत्यंत वर्षा सूं ऐसो आर्द कर रहे हैं ॥ कि जाकू सबन सूं प्रवल काल हू नहीं सुखाय सके है ॥ कि वे वे अत्यंत दुष्ट संगादि हू जाकू सुखाय नहीं सके है एसो सबन को आर्द्र कर रहे हैं ॥ तथा चारो ओर प्रसर रहे कृपा कटाक्ष के रूप क्षीर सागरन के अर्बन तरंगन सूं जो सबन की जहां कहां भीतर बाहिर की ही मलीनता को दूर करके अत्यंत धवल कर रहयो है ॥ कोऊ जो जड़ कर रहयो है ॥ कितनी में स्वेदु कि कोऊ में रोम हर्ष कि कोऊ में गद्-गद् कंठ कि कोऊ में कंप ओरन में विवर्णता कि कोऊ में अश्रु वर्षा कि ओरन में मूर्छा को हू करत अपने वा आंगण को कि द्वार को सुगंधित करत कि श्रीनाथ जी के जगमोहन भवन को कि वाके बाहिर

तथा वाके द्वार को कि गली को हू सुगंधित करत श्री प्राणनाथ जी पनारा के पास विराजे हैं ॥ तब श्री अंग की सेवा में आशक्त हृदयवारो सेवक खवास जी पीतल की कलशी सूं जल लावे है ॥ प्राणनाथ जी अपने चरण पखारें हैं ॥ या समय में हू कितने भक्त तो या प्रिय के चरणामृत को पान करें हैं ॥ **खवास जी यह विचारें हैं कितने मूढ़ जन तो या चरणामृत चिह्न पर अपने पावन को वेग सूं धरके अर्बन नरकन में गिरेंगे तासूं दया करके वा पर जल डार के वाकूं दूर करें हैं शुद्ध करें हैं** ॥ प्राणनाथजी तो आगे पधार के श्री नाथजी के मंदिर की सांकल उघारें हैं ॥ अहो गली में जो प्राणनाथ जी के चरणन के चिह्न तब प्रकट होय है कितने भक्त तो रोम हर्ष पूर्वक विनको वंदन करें हैं ॥ कितने भक्त तो विनमें शिर धरके चिर पर्यंत ठहरें हैं, ऐसे उच्छलित प्रेम सूं अहो ब्रह्मादिकन को हू दुर्ल्लभ या प्रिय के चरणन सूं यह भूमि चिह्नवारी होय रही है तासूं यह भूमि धन्य है ऐसे माने है ॥७०॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीला सुधासिंधौ दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे सप्तम स्तरंगः ॥७॥

**कल्लोल जी दसम**

# अष्टम तरंगः ॥८॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ अथ दसम कल्लोले अष्टम तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **अतः श्रीमन्नाथागारं बत संप्रविश्यालं**

**प्रेयस्थलं कृतवति प्रायोभक्ता निवर्तते ॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि जब श्री प्राणनाथ जी श्रीनाथ जी के मंदिर को भीतर प्रवेश करके अलंक्रत करें हैं, तब प्रायः सगरे भक्त वा वा सेवा उपयोगी कार्य करवे लिये कि अपने हू आवश्यक कार्य करवे लिये कि आवश्यक कार्यन को वेग करके श्री नाथ जी के मंगल आर्ती समय में या सुन्दर वर के श्रीमुख कमल को अवलोकन करवे लिये वाकू देख के अपने नैनन कूं कृत्य कृत्य करिवे लिये पीछे फिरें हैं ॥ कि घरन में जाय है ॥३॥ श्री प्राणनाथ जी की जो, स्त्री गणन की मुकुटमणी श्री पार्वती बहु जी है सो अपने घर में स्नान करके वा श्री गिरिधारीजी के घर में सामग्री

करवे लिये सेवा में चतुर और स्त्री जनन के संग ही प्रवेश करें हैं ॥ श्री प्राणनाथ जी श्री नाथजी के मंदिर भीतर प्रवेश करके वहां अपने विराजमान सिंहासन के आगे प्रणाम करके शय्याघर में पधारके वहां हर्ष निद्रा पलंग पर पोढ़ रहे या श्री नाथजी को निरख के सब ठोर में वेगा दीपक करें हैं ॥ फिर खली जल सूं श्री हस्त कमल को शुद्ध करके सोहनी लेकर दक्षिण हस्त सूं समार्ज्जन करत, सोहनी करत, वा सगरे स्थल को शुद्ध करके यहां के छोटे मोटे सगरे स्थल गवाखान को हू जगत्प्रभु शोधन करें हैं ॥ श्री गोपाल जी तो या समय में स्नान करके यहां वेग आय जाय है ॥ अहो यह धन्य श्री गोपाल जी तो अपने अत्यंत प्यारे पिता श्री महाप्रभुन में महावाछल्य भर्यो है ॥ आपके ऐसे सेवा के यत्न समूह को सहन नहीं कर सके है ॥ और प्रभुन के आगे भय सूं स्वयं हू विज्ञापना नहीं कर सके है तासूं प्रभुन के अत्यंत कृपापात्र भक्त पुरषोत्तमदास के मुखसो पहले यों विज्ञापना करावत भयो है कि हे राजाधिराज कृपासिंधो श्री आप पुरषोत्तमोत्तम हैं आपको जो पुत्र श्री गोपाल है सो प्रणाम करके हाथन को बाँध के मेरे मुख सो ही यों विज्ञापना करें हैं कि मेरी इछा है कि श्री आपसो पहले ही हौं स्नान करके श्रीनाथ जी के मन्दिर में वेगी वहां के कार्यन को करवे लिये प्रवेश करूं यह सुनके मंद मुसकान करत प्रभुन ने जाके लिये यह उत्तर दियो कि पुरषोत्तमदास श्री नाथजी के मंदिर में यह श्री गोपाल ही सगरी सेवा करें है यदि पहले न्हायके हों सेवा में जावु तो तासूं का कमती होय है ॥ तथापि यह जाऐ सो इछा करें हैं कितने दिन पीछे करेगो ही, अबतो हों ही प्रथम न्हाय के मंदिर में प्रवेश करूं हूँ ॥ मेरे पीछे न्हाय के यह आवे, अब तो ऐसे ही ठीक है यह कृपा समूह सूं जाकू उत्तर आपने दियो हो ॥ पीछे कितने दिन गुजरने पर जा श्री गोपाल को आपने सो मनोरथ पुरण कर दियो है ॥ श्री कल्याण भट्टजी या प्रकार सूं श्री गोपाल को मनोरथ प्रसंग सुनाय के अब चलतो प्रसंग कहें हैं ॥ सो श्री गोपाल जी शीतल जल लेके सगरो भूमि को सिंचन करें हैं ॥ श्री प्राणनाथ जी तो वस्त्र को दुगना चोगुना करके श्री हस्त कमल सूं लेके वाकू पोंछे है ॥ पीछे सिंहासन पर वस्त्र बिछावे है ॥ वाके ऊपर रूई से भरा मखमल की गादि बिछावे है ॥ वा पर हीरा मुक्ता सुं जटित सुन्दर तकीया धरें हैं ॥ श्री नाथजी के जागरण को समय अभी

नहीं भयो है, यह जानके दोल तिवारी में पधारके श्री राज बैठे है ॥ पहले दिन श्री नाथजी के पहिरवे लायक जे वस्त्र, पाग, जामा, कमर पटकादि बनाय के धरें हैं ॥ श्री नाथजी की प्रियान के जे चोली साड़ी आदि रूप वस्त्र कि भूषण धरें हैं ॥ विनसूं न्यारे न्यारे करके चोकी पर धरें हैं ॥ जो वैसे वस्त्रन के उपयोगी आभरण है विनकूं आभरणन सूं न्यारो करके धरें हैं ऐसे करवे में हू श्री नाथजी के जागवे कूं समय नहीं भयो होय तो प्रेम उत्साह आदर भर सूं श्री गोपाल जी के संग शास्त्र रसमार्ग कि भगवत्प्राप्ति के प्रकार सूं बढ़े संवाद को धीरे धीरे चलावे है ॥ यहां और अनधिकारी जन कि अयोग्य जन होय नहीं है ॥ तासूं विना संकोच ही प्रसंग होय है ॥ जामे प्रभुन सूं पहले कोऊ समय में सुने हू प्रसंग को पुत्रवर फिर हू पूछे है तब श्री राज हू आज्ञा करें हैं की यह प्रसंग तो मैंने तुमको पहले कह्यो है ॥ सो फिर हू मेरे सूं यह पूछो हो का ? तब सोहू विनय करें हैं कि हां राज सत्य है ॥ पहले आपने कह्यो ही है परंतु मेरे को भूल गयो है तासूं फिर पूछू हूं ॥ तब सर्वज्ञ के मुकुटमणी प्राणनाथ जी बड़े उत्साह सूं पहले सू हू विशेष कर प्रसंग सुनावे है ॥ जामें श्री पितृचरण श्री राजने प्रकट किये अक्षर अक्षर में उछल रहे अमृत के समुद्र समूह में सो श्री गोपाल जी डूब जाय है वासूं बड़े यत्न सूं निकरें हैं तोहू फिर पूछे है ॥ तो फिर फिर हू डूब जाय है ॥ तब प्राणनाथ जी हू वाकू स्नेह पूर्वक निरखे है ॥ फिर श्री नाथ जी के ही जागरण के योग्य समय में आपको मन लग्यो है तासूं प्राणनाथ जी श्री गोपाल सूं पूछे है कि "समय अब भयो है का ?" तब सोहू विनय सूं प्रभुन कूं विज्ञापना करें हैं "कि हां भयो है ऐसे ही प्रतीत होय है ॥३६॥" तब प्राणप्रिय जी आदर प्रेम पूर्वक वेगि उठे हैं ॥ श्री नाथ जी की सेवा के जे भीतरिया आदि सेवक है वे तो या समय में सगरे ही अपरस मे न्हाय के वेगा शुद्ध उज्ज्वल अपरसके वस्त्रन कूं पहिर के यहां आय जाय हैं ॥ विनमें जो गोकुलदास भीतरिया है सो तो प्रभुन को बड़ो कृपा पात्र है ॥ श्री नाथजी के मंदिर को कृत्य प्रभुन को रूचे है सो सो करें हैं ॥ प्राणनाथ के परिश्रम में याको द्वेष रहे हैं ॥ कि राज को परिश्रम नहीं करवे देवे है ॥ तासूं प्राणनाथ में प्रेम विशेष सूं पहेले ही न्हाय है ॥ सगरे काम के चतुर है तासूं प्रसन्न होय के प्राणनाथ जी ने अपने प्रभु श्री गिरिधारी जी के अत्यंत

दुर्ल्लभ हू श्री अंग स्पर्श में याकू अधिकार दियो है ।। दूसरो जो प्रसिद्ध ज्ञानी जगन्नाथ भीतरिया है याकूं श्री नाथजी के परसवे कूं अधिकार नहीं है तासूं न्यारो रहे के सब कार्य करें हैं ।। सब कार्य में यह हू चतुर है ।। जब यह गोकुलदास जी लीला में पहुच्यो है पीछे प्रभुन की आज्ञा सूं श्री गिरधारी जी के स्पर्श कूं यह हू प्राप्त भयो है ।। आपकी आज्ञा सूं वाके सगरे हू कार्यन कूं करें हैं ।।४४।। तथा भगवानदास नाम वारो जो भीतरिया है यामे हू भगवान गोकुलाधीशजी प्रसन्न रहे हैं जासू यह हू रसिक जन के महाराजा प्राणनाथ कू तब तब वैसे हास्य नकल टोक वचनन सूं प्रसन्न ही कर रहे हैं ।।४६।।

इति श्रीमद गोकुलेश लीला सुधासिंधौ दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे अष्टम स्तरंगः ।।८।।

### कल्लोल जी दसम

## नवमः तरंगः ।।९।।

### श्री श्री गोकुलेशो जयति ।।

अथ दसम कल्लोले नवम तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **अथस श्रीमन्नाथ स्यांगारे प्रविष्टः सन प्राबोधीका**

**लृनादमा ज्ञापयतेथ तां यगृह सेवीः ।।१।।**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि तब श्री प्राणनाथ जी श्रीनाथ जी के भीतर प्रवेश करत ही प्रभुन के जगायवे को शंखनाद करें हैं तब जलघर को सेवक कि भीतरिया कोऊ वा शंखनाद को करें हैं ।। वाकू सुनके जे कोई कारणवश पहले नहीं आये हते वे हू स्त्रीजन कि पुरुष हू आर्ती को समय निकट भयो जानके बड़े उत्साह सूं वेग ही दोड़त ही आवे हैं ।।३।। तब श्री गिरिधारी जी के जगायवे अर्थ जे गद्य-पद्य प्रबोध नामसूं श्री गोस्वामीजी ने प्रगट कियो है विनको मधुर प्रकार सूं पढ़े है ।।४।। या श्री नाथजी के मंदिर के द्वार की सांकलो के छेदों में कानो को धरके प्राणनाथ जी के वदन कमल के शब्दन सूं उदय होय रहे कोऊ अनिर्वचनीय जा मधुर रस को मृग लोचन सुंदरीजन पान करें हैं ।। वाको एक कणिका मात्र हू

माध्वीक मधुर मधु, शहद में हू नहीं है कि द्राक्षादि में हू नहीं है कि बूरा में हू नहीं है ।। कि आंब के फलन में हू नहीं है ।। कि अहो अमृत के सिंधु को वस्त्र सूं निकार्यो रस जामे डार्यो होय ऐसे दुग्ध सागर सूं प्रगटे हू अमृत में हू जा मधुर रस को कणिका हू नहीं है ।। ऐसे मधुर रस कूं वे पान करें हैं तासूं वा श्री प्राणनाथ के श्री मुखारविंद में निवास सूं सुगंधित वचनामृत के चक्रवर्ती भाव को प्राप्त होयके उच्छलित होय रहे की करोडन अमृत के समुद्रन को विजय करवे वारो या गद्य-पद्य मय प्रबोध कूं हों वर्णन करूं हूं ।। हे रसिकजना अपने कानरूप नैननसूं विनको तुम दर्शन करिये ।।८।। प्रबोध को प्रारंभ करें हैं ।। **श्री नाथजी अपनी रस सुंदरीन के संग रस विलास रात्रिभर करके सुख सेजा पर पोढ़े है ।। जागरण को समय आय रहयो है, तामे श्री गोस्वामीजी जगायवे लिये प्रार्थना करत कहें हैं कि हे भद्र, मंगल सुखरूप कि हे समुद्राग्रज सुभद्रा के बड़े भैया कि समुद्र जो महामंगल परमानंद तासूं हू आगे बिराजमान महामंगल पूर्णानंद रस स्वरूप प्रभो आपकी जय हो ।। कि आपकी जय होय ।। कि आप सबन सूं उत्कर्ष सूं विराजो कि रमण संग्राम में सबन को जय सहित शोभायमान होवो ।। हे प्रभो चंद्रमा के उदय होयवे में वाकी किरण समूह सूं कमल पंक्ती मुद जाय है ।। वामें जे भौरा समूह रसपान करवे कूं रहे हैं वे हू फस जाय है ।। तासूं अत्यंत मधुर जो विनकी उद्धृतनाद है सोहू निवृत होय जाय है ।। तासूं निर्विघ्न करी है व्रज में निद्रा जाने हे ऐसे प्रभो आपकी जय हो ।। यामें रात्रि मयी पूर्णचंद्र वदना श्री स्वामिनी जी को पधारवो भयो ।। तब कमल जैसे सब गोप सोय गये विनके नैन भौंरा हू वामे फस रहे हैं ।। वे चुपचाप है तासूं रस विलास सूं आनंदित होय ।। श्रीनाथजी हू श्री स्वामिनीजी के हृदय उदर अंक में सूख सूं पोढ़े हैं ।। कि तासूं आपकी जय की चाहना करें हैं यह भाव है ।। विशेष भावादि तो प्रबोध की बड़ी टीका में है ।।१।। फिर हू संबोधन करत विनय करें हैं कि हे गोविंद, गायन के इन्द्र, पालक कि निस्साधन भक्तन के, कि सगरे इन्द्रीयन के सब सुखदायक प्रभो आपको श्रीमुख है अनेक अलकान सूं मिल्यो है ।। अलका है सो स्वामिनीजी की अलका, कि नैन मनरूप भौंरा, श्री मुख की मुख्यता, माधुरी को पान करवे लिये कमल भौंरा जैसे चारो ओर लिपटे है परंतु भौरा तों गुंजार करें हैं, यह गुंजार नहीं करे हैं ।। तामें कारण उत्पेक्षा सूं करे**

हैं ।। कि निजराज को जो श्रीमुख कमल है वाकी निर्मल परिमल रमण संबंधी महामधुर रस के पान सूं सुख विशेष भयो है ।। तासूं झंकार नहीं करें हैं ।। अथवा राज कूं निद्रा आय रही है यह निवृत्त न होय जाय या भय सूं झंकार नहीं करें हैं ।। अथवा राज के नयन है चंचल खंजन चिरैया जैसे है वे नहीं जाग परे वे जागे तो हमको ऐसो निर्विघ्न सुख नहीं मिलेगो तासूं झंकार नहीं करें हैं ।। हे ऐसे प्रभो आपकी जय हो सबन सूं उत्कर्ष सूं आप विराजमान होवे यामे हू श्री स्वामिनीजी श्री मुख पर मुख निरखवे कूं कि चुंबनादि करवे कूं धरें हैं तामें अलकान को पांपर विराजवो होय है ।। अलका नहीं है रसपान के लिये भौंरा है ।। ऐसे कहे कर फिर हू संबोधन करें हैं, कि हे प्रभो आपकी जय जय होय कि सर्वोत्कर्ष सूं राज बिराजे, तामें रात्रि में उदय भये पूर्ण चन्द्रमा की किरणन सूं कुमोदिनी प्रफुल्लित भई है तासूं सब भंवरी जे दिन में सूर्य के किरण समूह सूं कुमोदिनी के मुदे, समय रही हैं और दिन भर अनिर्वचनीय मधुर मधुपान कियो है तासूं मद सूं प्रसन्न है ।। वे भौरान की स्त्री भौरीन ने प्रारंभ कियो जो अत्यंत मधुर नांद है तासूं अब तो आपकी निद्रा हू दूर दौड़ गयी है ।। हे ऐसे प्रभो तथा अपने निकुंज में सगरी गोपीजन हिडोरा में आपको झुलामे है तामें झोटा को देवे में चंचल जे निर्मल सुन्दर कंकण, विनके झनकार सूं कि मधुर शब्द वारे जे वीणा गीतादि है विनसूं हू श्री राजके नैनरूप खंजन युगल है सो जाग परें हैं ।। हे ऐसे प्रभो आप सबन सूं उत्कर्ष सूं विराजो, यामें दिनभर व्रजसुन्दरीन के नैन मन हृदय. कुमोदिनी में, वियोग सूर्य सूं छिपे रहे हैं ।। रात्रि में मुख्य स्वामिनीजी के संग विलास कर पोढ़ रहे प्यारे को वे रात्रि में अवसर पाय प्रिय के मिलाप में दिन में वियोग में जे रास भावना सूं पान कियो है, सो अब वारंबार उराहना खंडीतादि उद्दत वचन कहें हैं ।। तासूं आपके वे मधुर वचन रसपान करवे कूं निद्रा दूर होय गई है ।। हिंडोरान में हू झुलायवे में कंकणन के नांद होय हैं ।। कोऊ वीणा बजावे है ।। कोऊ गावे है तासूं नैन खंजन हू चंचल होय रहे हैं यह भाव है ।।३।। अब फिर संबोधन करत कहें हैं कि खुले रसभरे लाल नयनन सूं व्रज नितंबनीन की ओर आप झांक रहे हो, ऐसे आप सर्वोत्कर्ष सूं विराजें ।। तामे अब रस भरे नैनो के खोलवे में देखवे में उत्प्रेक्षा करत कहें हैं कि तासूं प्रथम कहे प्रकार सूं नैनो के कछुक खोलवे में ऊंचो होय

रहयो जो भ्रू-लता रूप काम को धनुष है वासो गिरे मानो काम के पुष्प बाण हैं अथवा गोपीजनन के श्रीमुख पर शरद चंद्रमा के भ्रमसूं संचार कर रहयो मानो दो खंजन है अथवा हिंडोरा गोपीजन झुलामे है वामे सौभाग्यवती ब्रज सुन्दरीन के निर्मल कपोलन पर कर्णफूल चंचल होवत चमके है ॥ विनको सूर्यरूप जानके मानो दोय कमल फूले है ॥ अथवा श्री मुख्य स्वामिनीजी हंसे है तामें निर्मल लाल अधर की किरणनसूं मिल्यो जो मंद हास्य, प्रगट होय रहे दंत पंक्ती की प्रभा है, कांती है चंद्रमा की विजय करवे वारी है तासूं वाकूं शरद चंद्रमा को उदय मान के मानो दोय कुमुद फूल फूले हैं ॥ ऐसे प्रगट होय रहे दोय नयन सूं सुन्दर नितंबवारी ब्रज सुन्दरीन कों आप निरख रहे हो ऐसे आप सबन सूं उत्कर्ष सूं विराजमान होवो ॥४॥ फिर हू संबोधन करके कहें हैं कि ऐसी प्यारी ब्रज सुन्दरी आपको विहार कराय रही हैं, ऐसे प्रभो आप सबन सूं उत्कर्ष सूं विराजो ॥ अब वे ब्रजसुन्दरी कैसी है सो कहें हैं ॥ कि आपके जे कटाक्ष परें हैं वे मानो सो पान है कि सीढी है विनके द्वारा चढयो है काम जिनमें, तथा आपके श्री मुखरूप पूर्ण चन्द्रमा के दर्शन सूं प्रफुल्लित और प्यासे चंचल होय रहे हैं नयन कुमोदिनी जिनके, बहुत ही भूषणन सूं जे शोभायमान है, तथा अपने नितंबन सूं अलंक्रत करी है सुधाकर चंद्रमा की किरणन सूं हू उज्ज्वल निर्मल सोभाग्यवती शय्या जिनने, तथा काम पीड़ा के हरवे वारे, आपने जे श्री हस्त संबंधी नखरूप बाण लगाये हैं कि नखक्षत किये हैं तासूं विजय करी है काम की सेना जिनने, ऐसे नखक्षतन को कि श्याम होय रहे अधर कों कि सुन्दर कुंकुम के जैसे लाल होय रहे श्रीमुख को निरख के आपके जे सखा हैं वे तो आपके संबंध सूं नागर हैं अत्यंत ही चतुर हैं ॥ तुमारी या प्रकार की नवीन रचना को रमण चिह्नन को देखके सभा में सगरे मिलापी, समाज में कहवे में रुकेंगे नहीं, अवश्य कहेंगे ही ॥७॥ अब चन्द्रमा अस्त होय रहयो है यह उत्पेक्षा सूं कहत जागवे की विज्ञापना करें हैं ॥ अहो शोभायमान आपके श्रीमुख कमल कूं शोभा सूं निवृत्त होय गयो है, अपनी सुन्दरता के गर्व को पर्वत जाकूं ऐसो यह चंद्रमा आपके नख चंद्रमान की छटान सूं तुच्छ कियो हू अब लाज सूं क्षीर सागर में डूबे है ॥ कि अस्त होय रहयो है ॥८॥ अब वैसे सूर्य के उदय को, वाकी पूजा के अंगीकार करवे कूं कहत विनय करें हैं ॥ कि अब यह

सूर्य उदय होय रहयो है ॥ किरण रूप करन कूं उंचो करके आपके चरण कमलो की कमलन सूं पूजा करवे लिये आय रहयो है याकी पूजा को अंगीकार करिये ॥९॥ अब यमुनाजी को आपके दर्शन की अभिलाषा है यह कहत विनय करें हैं कि -- हे करोडन कामदेवन सूं सुन्दर प्रभो यह कलिंदजा मान अभिमान विरह कलह के मीटायवे वारी यह कालिंदि जी आपके श्री मुखारविंद के दर्शन अर्थ नयनरूप कमलन को प्रफुल्लित करें हैं, देखवे लिये पसार रही है प्रफुल्लित कमल सूं निकरे जे भ्रमर समूह रूप गायक है वे हू आपके दर्शन अर्थ आपके यश को विस्तार कर रहे हैं ॥१०॥ हे हरे, सबन की आरत को आप तो हरो ही हो ॥ अपने लीला संबंधी जगत के नयनन को हू दर्शन देकर सफल करिये, तथा अपने चरण कमलन के सेवक-विट्ठल कि निःसाधन जनो पर कृपा करवे वारे, कि रस विशेष सूं अनुसंधान रहित प्रियागण तथा प्रियवर के प्रति रस योग्य कि अयोग्य समय को जतायवे वारे श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी में हू दर्शनादि दान सूं कृपा करिये ॥११॥ ऐसे श्री प्रबोध समाप्त भयो है ॥ श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि या प्रकार श्री विट्ठलाधीशजी ने श्री गोवर्धननाथजी के जगायवे लिये जगत को मंगलकारी यह प्रबोध रूप स्तोत्र कह्यो है ॥ इति ॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीला सुधासिंधौ दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे नवम स्तरंगः ॥९॥

### कल्लोल जी दसम

## दसम तरंगः ॥१०॥

### श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥

अथ दसम कल्लोले दसम तरंगः लिख्यते ॥

शलोक -- **एतत्पठन् पठन्नयमी शस्तच्छयन पल्पंकं अभितोधृता**

**निपूर्व वस्तुन्यादाय पुत्र रत्नस्य ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि ईश्वरेश्वर महाप्रभुजी यह प्रबोध पढ़त पढ़त ही श्री नाथजी के शयन पलंग के चारों ओर जे वस्तु धरी हती सो पहले उठाय के पुत्र रत्न श्री गोपालजी के और भीतरिया के हाथ

में यथा योग्य देवे है ।।१।। वे दोनों हू वा वा वस्तुन कूं ले लेके वाके वाके स्थान में वेगा वेगी धरें हैं सो विनको हों कहू हू सो सुनिये ।। रात्रि में श्री गिरधारी जी के भोग लिये घृत पक्व भक्ष्य मठरी लड़वादि तथा जलपान को पात्र, बीडान को पात्र, तथा फूलन की माला, और भूषणन की अनेक प्रकार की पेटी, तथा गिरधारी जी तथा आपकी दोनों स्वामिनीजीन की साडी अंगिया चंडातक आदि वस्त्र के पात्र, तथा अतरादि सुगंधी द्रव्यन के पात्र, मनोहर अनेक रंगों के सोना, रूपा तथा हाथी दाँत, कि काष्टन के हू बने सुन्दर, काच के बने सुन्दर रत्न जटित मनोहर, अनेक नामवारे खिलोनान के पात्र, तथा दर्प्पण हू अनेक प्रकार के, और अनेक प्रकार के मधुर फल, ऐसे सब वस्तुन को यथा योग्य स्थानों में ले लेके धरें हैं ।। अब प्राणनाथ जी श्री हस्त कमलन को पखारें हैं ।। शीतकाल में तो श्रीनाथजी में उछलित प्रेम सूं वा श्री हस्त कमलन को अंगारन सूं भरी अंगीठी के ऊपर ताते करें हैं ।। मनोहर सुगंधी द्रव्य अतरादि के संयोग सूं कि अंगराग के संयोग सूं विनको अत्यंत ही सुगंधित हू करें हैं ।।१०।। ता पाछे श्री नाथजी को तथा दोनों प्रियाजी के स्वरूपन को श्री हस्त कमल सूं पधराय के प्रेम सूं सिंहासन पर विराजमान करें हैं ।।११।। शीतकाल होय तो प्राणनाथ जी वेग ही रूईदार नीमा कि बड़ो गद्दर पहिरावे हैं ।। भीतर और वस्त्र हू पहिरावे हैं ।। आगे अंगीठी तैयार धरें हैं ।। गरमी को समय होय तो परम कोमल वस्त्र उपरनादि उढ़ावे हैं ।। वर्षा समय अनेक प्रकार के सुन्दर रंगीन वस्त्र पहिरावे हैं ।। ता पाछे विनके आगे प्राणनाथ जी प्रणाम करें हैं ।।१४।। फिर आगे पड़गी पधरावे हैं ।। ता पर भोजन को थाल पधरावे है ।। तामें प्रेम सूं उज्वल बाल भ।। सो सुन्दर पक्के तीस माठ धरें हैं ।। अथवा वितने कोमल प्रियांक, कि गूंजा धरें हैं ।। कि सेव के लड़वा धरें हैं ।। अथवा मनोहर बुंदी के लड़वा धरें हैं ।। सुन्दर घी मिसरी ताती सुन्दर पूरी धरें हैं, कि बड़ा है, कि खंडमंडा है कि सुन्दर पापड़ कि खीचरी कि गुड़ सहित अंगाखरी, बाटी भोग धरें हैं ।। कि दूध भात कि वैसे और हू सुन्दर सिद्ध करी सेम आदि सूं भोग धरें हैं ।। अघोटा सुन्दर दूध धरें हैं ।। कि सुन्दर मिसरी सहित माखन धरें हैं ।। दही धरे हैं, बासोंदि धरें हैं वैसो तातो दूध मिसरी मिल्यो धरें हैं ।। ऐसे बालभोग में श्री नाथजी के आगे सदैव भोग धरें हैं ।।२०।। श्री गोपालजी तो या समय में वेगि

तो या समय में वेगि ही शय्याजी के मंदिर में प्रवेश करके पलंग के बिछोनान को उठावे है ।। फिर सोहनी सूं यहां आछी रीत सों मार्ज्जन करें हैं ।। फिर गीलो वस्त्र या सगरे शय्या घर में वेग फेर फेर के वा शय्या जी पर बिछोना बिछावे है ।।२२।। याके पास अब तो एक प्राणनाथजी रहे हैं ।। कि एक भीतरिया रहे हैं ।। ओर तो कबहू कोऊ हू नहीं देख्यो है ।। प्राणनाथजी तो श्री नाथजी के आगे बालभोग को समर्पण करके आगे टेरा लगाय के आरोगवे को भावना करत ही आप डोल तिवारी को शोभायमान करें हैं ।।२४।। वहां प्रसादी जल को कलशा रहे हैं वासूं अत्यंत छोटी लोटी सूं जल लेके सदा विलास पूर्वक प्राण प्रियजी जलपान करें हैं ।। यहां थोड़ेक समय विराज के फिर यहां सूं उठके जलघर की गली में संध्या विधी को आदर करें हैं ।। शीतकाल होय तो भीतरिया सेवक शिरके ढांपवे वारी चौरखी रथके ढांपवे को जैसे झूल होय है ऐसे दोहरी चादर कि झूल को लावे है ।। कि ताकूं सिर सूं आप धारण करें हैं ।। कानो कू हू वासुं ढांपे है ।। वाके ऊपर प्रथम सूं श्री अंग में विस्तार सूं धारण किये उपरना को हू शिर में जोड़के धारण करें हैं ।। तब भीतरिया जी रूईदार छोटो नीमो लावे है ।। वाकू दोनों कंधा पर धरके फिर पहिरके वाके बंधन को वेगि बांध के कमर पटका के बंधन सूं याकूं द्रढ़ करके अपनी शोभा को अनुभव करावत ही अपने भक्तन को अधिक प्रसन्न करें हैं ।। फिर सुन्दर पीढा पर विराजमान होयके वा पर बाये भाग में धरे शीतल जल सूं भरे जलपात्र करवा को नमायके वाके जल सूं दक्षिण श्री हस्त कमल को पखार के तीन वार आचमन करके श्री हस्त कूं पखार के दोनों ओष्टन को, ठोड़ी को पखार के श्री मुख नमाय के तीन कि चार वार पोंछके फिर या हस्त कमल को पखार के विलास पूर्वक मस्तक नेत्र कान घ्राण नासा भुज मूल कि हृदय को हू परस करें हैं ।। फिर दक्षिण श्री हस्त को पखार के फिर तीन वार आचमन करके शोभायमान है मणी जटित मुद्रिका जामे ऐसे श्री हस्त के विलास पूर्वक प्राणायाम को करें हैं ।।३४।। ता पाछे भगवान श्री प्राणनाथ जी संध्योपासन के संकल्प को करके जलपात्र के ढकना में ठहरे कि जलपात्र में ठहरे कि अथवा बाये श्री हस्त में ठहरे जलसूं मार्जन करें हैं ।। फिर दक्षिण श्री हस्त सूं जल लेकर श्री मस्तक के चारों ओर भ्रमाय के डार देवे है ।।३७।। फिर दक्षिण हस्त सूं जल को चुलुक लेकर "सूर्यश्च"

इत्यादि मंत्र को पढ़कर परम प्रभुजी वो जलपान करें हैं ।। फिर तीनवार केशव माधव नारायण ऐसे कहत आचमन करें हैं ।। फिर श्री हस्त कमल को पखार के पोंछके श्रीमुख कमल को हू पोंछ के फिर तीन वार आचमन करें हैं ।। फिर मार्ज्जन करें हैं ।। फिर जलको श्री मस्तक सूं भ्रमाय के डारें हैं ।। फिर चुलुक सो जल लेके घ्राण सूं स्पर्श करत ध्रुपदाध्वि या मंत्र को पढ़े है ।। कछुक उठके वा जलको डार देवे है ।। गायत्री मंत्र को पढ़कर भूमिपर तीनवार अर्घकर जल डारें हैं ।। श्री मस्तक के तीन वार आचमन करें हैं ।। फिर बाये कंधा पर बाये हस्त को धरके श्री कंठ को नमाय के दोनो कोहनी को दोनों घोंटूयों के अग्रभाग में धरके दोनों श्री हस्त कमल उंचे राखे है ।। अंगुल के चलन को भक्तन को अनुभव कराय के विराजवे की कोउ अनिर्वचनीय या मुद्रा को कृतार्थ करें हैं ।।४६।। फिर दक्षिण श्री हस्त को यज्ञोपवित के भीतर हृदय के आगे धरके उपरना सूं ढांप के गायत्री जाप करें हैं ।। बाये श्री हस्त कमल की अंगुलिन सो वाको गिणे है ।।४९।। फिर जल लेके किये जपन को भगवद दर्प्पण करें हैं ।। फिर वेगी उठके मनुष्य लीला को आदर करत मंत्रन को पढ़त सूर्य को उपस्थान करें हैं ।। फिर पूर्व आदि सगरी दिशान को प्रणमे है ।। विनके सन्मुख होय संध्यादि कालन को हू नमे है ।। फिर अनामिका अंगुली सों भूमि को स्पर्श करके भीतर भीतर मंत्र कूं पढ़त वा अंगुली को मस्तक में तिलक के स्थान में धरके फिर दक्षिण वाम कानों में दक्षिण वाम दोनों श्री हस्त कमलन को ऊंचे नीचे करत अपनो भारद्वाज गोत्र नाम उच्चार करें हैं ।। तथा प्रणाम हू करें हैं ।। श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि अहो या प्राणनाथ की सेवा रस के आवेश सूं प्रायः सगरे ही सेवकन ने यह संध्योपासनादि कर्म अत्यंत ही दूर किये हैं ।। और यह श्री प्राणनाथ जी तो मर्यादा मार्गी लोकन के उपकार लिये इन संध्योपासनादि कर्मन को आदर करें हैं ।। वे प्रभुन के आदर किये संध्योपासनादि कर्म सब प्रकार सूं सर्वोपर विराजमान है वे मेरे नैन को दर्शन सूं कब शीतल करेंगे । कब फिर वैसो दर्शन देवेंगे ।।५७।।

इति श्रीमद गोकुलेश लीला सुधासिंधौ दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे दसम स्तरंगः ।।१०।।

## कल्लोल जी दसम

# एकादस तरंगः ॥११॥

### श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥

अथ दसम कल्लोले एकादश तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **जलगृह निषेवकाये वे भृत्याश्धोतरास्तथान्यते ।**

**सर्वपिते निजं निजमाचर्यास्मिन्नरं समयेः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि जल धर के जे सेवक हैं तथा जे भीतरिया हैं वैसे और हू जे सेवक हैं वे सगरे ही अपने अपने कार्य को वेगि करके या समय में सुन्दर वर महाप्रभु की ओर निहारत ही ठहरें हैं ॥ गोविंददास जो जल घरिया है जो ''भायी जी'' नाम सूं प्रसिद्ध है सो प्रभुन के उठवे सूं पहिले ही चौथी घड़ी में, कि तीसरी घड़ी में जागे है शुद्ध होयके अपरस में न्हाय के सगरे पात्रन कूं पखार के और हू कार्य कूं सिद्ध करके अवकाश के होने पर दूध को अत्यंत औटाय के वासू सुन्दर दूध के लडवा, कि और हू भोग योग्य सामग्री कूं सुन्दर सुघरता सूं करे हैं ॥ और जो जल घरिया है जो सोमजी नामसूं प्रसिद्ध है सो तो थोड़ो विलंब कर न्हाये हैं ॥ भोजन के पात्रन को पखारें हैं ॥ पाक के सिद्ध होयवे पर श्री यमुनाजी में वेगि जाय के बारंबार जल लाय लाय के जल की अनेक गागरन को भरे, ऐसे वा वा समय में और हू छोटे मोटे कार्यन कूं करें हैं ॥ तथा तीसरो जो गोपालीया नाम जल घरिया है सो मंगलार्ती के मनोहर समय में आवे है वेगावेगी न्हाय के वेहिगी सूं, कि दोय कलशा उठायवे वारी अकासी सूं यमुना जी को, और कुवा को ही जल लावे है वैसे वा वा समय में और हू छोटे मोटे काम करें हैं ॥ तीनो यह जल घरा के कार्य करने वारे भाग्यवान है ॥ जब गोविंददास जी को अंतर्ध्यान भयो, तब याके ठिकाने प्रभुजी ने कान्हदास को राख्यो है ॥ सोमजी के अंतर्ध्यान में विश्रामभाई को राख्यो है ॥ श्रीमती श्री पार्वती बहू जी के घर में जो जल भरवे वारो गोपाल जी है सो तो अबहू श्री नाथजी के मंदिर में वा वा कार्यन कूं पहले जैसे करत ही दीखे है ॥ श्री नाथजी के जलघरा में यह सगरे सेवक है सो आछी रीत

सूं सगरे पात्रन को पखार के वस्त्र सूं जलन को छानके पवित्र करके सेवा लिये तैयार रहे हैं ॥ मन में डरपे है कि प्राणनाथ की होय रही या सेवा में हम सूं कछू हानि न होय जाय कि अपराध न होय जाय जासूं हमारे प्राण वल्लभ श्री गोकुलेश प्रभुजी को रंच हू खेद परिश्रम न होय तथा श्री प्राणनाथ जी की बैठक जी के जलघरा में जल लायवे कूं तो प्रायः सगरे ही सेवक भक्तजन कमर कसके तैयार ही रहे हैं ॥ कोऊ समय में उच्छलित भक्तिवारो गिरधर दरजी, और कोऊ समय में केशव फूल घरिया कोऊ समय में प्रेम उत्साह आदर सूं मिले और हू कितने भक्त तैयार रहे हैं ॥ तथा प्रबल जिनके भाग्य हैं, कि सुन्दर सुघर जे चतुर हैं तथा ऊंचे पुष्ट सघन कुचन की शोभा सूं जे चकवा को हू विजय करें हैं, कि जे स्वभाव सूं कोमल हैं कि कोमल जिनके उदर हैं कि कोयल की पंचम स्वरा को हू विजय करवे वारे जिनके आलाप हैं, कि सुन्दरता के सार कि जे निधान हैं, कि मंद मुस्कान सूं जिनके अधर शोभायंमान हैं कि सुन्दर कांती जिनकी शोभायमान है कि सुन्दर जिनके केश भूषण बेनी है कि कमल कंद जैसे उज्वल कोमल जिनकी भुजा है कि जिनको भाव हू अत्यंत द्रढ़ है कि सुन्दर कि इतर पुरुष मात्र के स्पर्श सूं हू रहित है कि परम काष्टा कूं प्राप्त होय रहयो है सबन सूं ऊंचो है, कि निर्दोष है ऐसे भाव सूं भरी है, हरिणन सूं सुन्दर जिनकी दृष्टि, पूर्ण चन्द्रमा जैसे जिनके वदन है कि सुन्दर सुगंधी फुलेल सूं जिनके अंग अभ्यंग किये हैं कि मनोहर अनेक प्रकार के उच्छलित सुन्दर सुगंधित उवटनान सूं जिनने श्री अंग में उबटनो कियो है ॥२३॥ कर्पुर कुंकुम अगरू, चंदन, कि कस्तूरी की प्रसरवे वारी सुगंधीन सूं मिले गरम सुहाते बहुत जलन सूं जिनने मंगल स्नान किये हैं ॥२४॥ सुन्दर सुगंधी भरे उज्वल वस्त्र सूं जिनने केश और श्री अंग पोंछे है ॥ सुन्दर चोवा अगर चंदन के धूपन सूं जिनने केश सुखाये हैं, कि भीतर अनेंक रंगवारे छोटे लेंहगान सूं मिली सुन्दर कोमल साड़ीन को पहिर के सुन्दर अंगिया को हू पहिर के निर्दोष सुन्दर रंगवारे सूक्ष्म सुगंधित स्पर्श सुखदायक कोमल चादर कूं जे पहिरें हैं ॥ अनेक प्रकार के फूलन सूं जिनके वार गुंथे हैं ॥ दिव्य फूलन सूं कि झनकार कर रहे वेनी भूषण झबीयान सूं जे मनकूं अत्यंत हरें हैं ॥ मोतीन सूं जिनकी मांग भरी है, सीस फूल को सुन्दर जे धरें हैं तिलक सूं जिनके भाल सुन्दर है ॥

माणिकन सूं जटित जिनके ताटंक कर्ण फूल है रत्न जटित अवतंस की कलंगी सूं जे मनकूं हरें हैं, जिनके उज्वल चंचल नासा मोती शोभायमान है, कि काजर सूं जिनके नैन भरें हैं, कि कंठाभरण सूं शोभायमान जिनके कंठ में अनेक हार है कि तुलसीमाला सुन्दर माणिक जटित सोना की माला जे पहिरें हैं हृदय पर जिनके पदक शोभायमान हैं जिनके अंगन में माणिक के फूलवारी अंगीया लसे है, रत्न जटित बाजू बंधन सूं जिन की भुजा लसे है कंकण कडा मनोहर मुद्रिकान सूं जिनके हस्त पल्लव शोभायमान है, सुन्दर कांची सूं मनोहर जिनके नितंब हैं तथा चरण भूषण की कांती कों नेपुरन के झनकारन सूं जे मनकूं हरें हैं, झनकार वारे रत्न जटित छल्लान सूं जिनके चरण कमल दल शोभायमान है हर्ष सूं बधाई मंगल के गान कर रही है रोमावली जिनकी, खिल रही है ऐसी भाग्यवती सुन्दर स्त्री जन प्राणनाथ जी के प्रायः जल भरवे आदि सगरे हू कार्यन में उछलित प्रेम सूं सदा उद्यमवारी रहे हैं ॥ इनके परिवार दास सेवक समाज हू ऐसे भाग्यवान है जे सदा सगरी सेवा में प्रेम सूं तत्पर रहे हैं ॥ तथा मथुरिया नाम जो तंबोली है पानघरिया है सो हू बीडान के समूह को बनावे है तथा मिसरी की अनेक मीठी सामग्री हू बनावे है वामे बड़ो ही चतुर है ॥ नकल, टोक के वचनन सूं प्राणनाथ कूं अत्यंत हंसावे है ॥ होरी के उच्छव दिनन में अनेक प्रकार के रूप वेष स्वांगन को बनाय के दिखाय के प्राणनाथ को अत्यंत प्रसन्न करें हैं ॥ तथा दूध घर को सेवक जो धनुवा है सो प्रातःकाल के शंखनाद सूं पहले ही वेंहंगी सूं कि काष्ट दंड के दोनों ओर बांधे छीकेवारे यंत्र सूं दूध घर सो दूध कि दही कि माखन मही जो चहिये हैं सो बाल भोग के समय में ही सदा लावें हैं ॥ याके अंतर्ध्यान में प्राण प्रभुजी ने बड़ो चतुर महीया नाम ग्वाल को राख्यो है ॥४०॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीला सुधासिंधौ दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे एकादस स्तरंगः ॥११॥

## कल्लोल जी दसम

# द्वादसमो तरंगः ।।१२।।

### श्री श्री गोकुलेशो जयति ।।

अथ दसम कल्लोले द्वादसमो तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **नाथु स्नानौ पयिकंतप्तं शीतं यते तोयं ।।**

**भृत्वा तत्रत्पात्रे दधते स्नान स्वपात्रय ।।१।।**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं भीतरिया आदि जे सेवक है वे श्री नाथ जी के स्नान में उपयोगी तातो जल तथा शीतल जल हू पात्र में भरके वा वा पात्रन को वहां धरें हैं ।। स्नान के योग्य पात्र थार हू धरें हैं ।। पीतल की चौकी तथा श्री अंग के पोछवे कूं वस्त्र हू घड़ी करके धरें हैं ।। शनिश्चर वार होय कि वा वा महोच्छव को दिन होय तो उबटना हू समारके धरें हैं ।। तामे चंदन, केसर घिस्यो हू वामें मिलावे हैं, कस्तूरी, बरास, अंबरादि हू मिलावे हैं ।।३।। सुंदर सुगंधित फूलन सूं सुगंधित श्रेष्ठ तिलन को तेल हू वहां धरें हैं ।। तब श्री प्राण प्रभुजी हू संध्या करके पीछे श्रीनाथ जी ने आरोग लीयो है ऐसे मन में विचार करके वेगावेगी मंदिर के भीतर प्रवेश करके श्री नाथजी के आगे पड़गी कि तष्टी धर के प्रेम सूं श्री नाथजी के श्री मुख हस्तकमल कों पखरवावे हैं ।। शीतकाल होय तो तातो जल, उष्ण काल होय तो ठंडे जल सूं पखरवावे है ।।६।। ता पाछे श्री नाथजी के वा भोजन स्थल सूं वाके नीचे ठहरी वा पड़गी को उठावे है ।। श्री नाथजी के आगे मुख पोंछवे को वस्त्र अर्प्पण करें हैं ।। तांबूल के, दोय बीडा हू अर्प्पण करें हैं ।। तब कोई भीतरिया श्री नाथजी के भोजन के थाल को जलसूं शोधन करके वेगा ही बाहिर जाय है ।। श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि श्री गोकुल भूमि के महेन्द्र श्री प्राणनाथजी ने प्रेम विशेष सूं यह सामग्री को थार धर्यो है यह जानके यह गिरिधारी जी सगरी सामग्री को आरोग के वाके समान और वे सगरी ही सामग्री प्राणनाथ के अंगीकार अर्थ प्रेम सूं भरके वामे धरें हैं याकूं महाप्रसाद कहें हैं ।। तामे स्वतंत्र इच्छावारे भगवान श्री गोकुलाधीश जी गिरिधारी जी में उछलित प्रेम विशेष सूं अवसर पायके वाकूं आप आरोगे

है या रीतिसूं कितने भक्तजन कहें हैं ।। वैसे और भक्तजन तो यों कहें हैं कि श्री गोकुलाधीशजी ने वा प्रेमसूं श्री गिरिधारी जी के लिये थार में आरोगवे अर्थ जो सामग्री सगरी धरी है वाकूं श्री गिरिधारी जी नहीं आरोगे है जासूं मेरे प्राण प्रियजी ने आरोगी नहीं है यह माने है तासूं वा सगरी सामग्री कूं अनुमोदन करके परंतु मेरे प्राण प्रिय श्री गोकुल राज के अंगीकार अर्थ, यह नीकी भयी है कि नहीं या विचार सूं कछुक कछुक वासू ले लेके अपने श्री मुख में धरके प्रेम विशेष सूं परीक्षा करें हैं -- जितनी लेवे वितनी वामे भरके वा थार कूं वैसे पूरण कर राखे है याकूं महा प्रसाद कहें हैं ।। वैसे और भक्त तो यों कहें हैं कि वैसे श्री गोकुलपती ने बड़े प्रेम सूं अर्प्पण तो कियो है परंतु आपने आरोग्यो नहीं है यासूं श्री गिरिरधारी जी आरोगे नहीं है-- किंतु प्रेम विशेष सूं अत्यंत अनुमोदन करें हैं तासूं ही सो थार पहले जैसे भोग सामग्री सूं भर्यो ही बहुत बड़भागी भक्त जनन ने बारंबार निरख्यो है ।। श्री गोकुलपति भगवान तो वा श्री गिरधारी जी ने अनुमोदन कियो है यासूं भक्ति सूं याकूं महाप्रसाद है ऐसे ही कहें हैं ।। यह सबको कहनो सब ही काल भेद सूं की भावों के भेद सूं हू योग्य ही है ।। श्री गिरधारी जी तो सब समय में आपके अर्प्पण किये भोग को आरोगे ही है ।। गिरधारी जी में प्रभुन को प्रेम बड़ो है तासूं वाकूं उल्लंघन नहीं कर सके है ।। तासूं कोऊ समय में तो श्री गिरिधारी जी प्रथम कही रीत सूं श्री प्राणनाथ के अंगीकार अर्थ कछुक मुख में धरके परीक्षा करें हैं ।। **कोई समय में तो प्राणनाथजी ने आरोग्यो नहीं है तासूं सर्वज्ञ श्री गिरिधारी जी प्रेम सूं रंच हू अपने मुखारविंद में नहीं धरें हैं जासू श्री प्राणनाथ जी को और श्री गिरिधारीजी को प्रेम आपस में ऐसो ही है कि परम काष्टा को प्राप्त भयो है जगत में प्रसिद्ध ही होय रह्यो है तासूं यामें रंच हू संदेह नहीं करनो** ।। श्री कल्याण भट्ट जी अब चलते प्रसंग को कहें हैं कि ता पाछे यह प्राणनाथ जी श्री नाथजी की मंगल आर्ती को करें हैं ।।२४।। या समय में या प्रभुन की श्री मुख्य स्वामिनी श्री पार्वती बहू जी तथा बेटी, कि बेटान की बहू कि वैसे और हू सगरी स्त्री जन यहां आवे है, कि प्राणनाथ जी श्री गिरिधारीजी की आर्ती करेंगे वामें वा श्री गिरिधारी जी को निरखेंगे ।। तथा वामे आर्ती करते प्राणनाथजी को निरखेंगे ऐसे अपने अपने प्रेम के अनुसार इछा करें हैं ।। श्री राजकी इछा

जानके भीतरियाजी बड़े द्वार की सांकल उघाड़े है ॥ वहां वे सगरे स्थित होय है ॥ कितने तो प्राणनाथ के गुणगान में आशक्त है ॥ कितने तो अब प्राणप्रिय वरजी अपने श्री मुखारविंद के दर्शन देवेंगे ऐसे उत्साह वारे हैं ॥ और कितने तो श्री नाथजी की आर्ती को करत प्रिय के श्रेष्ठ दर्प्पण को हू विजय करवे वारे दोनो कपोलन को देखेंगे ऐसे भावना कर रहे हैं ॥ और कितने तो श्री नाथजी की आर्ती को करत सुन्दर मुसकान कर रहे लाल अधर की शोभावारे सुन्दर चंचल लोचन कमलवारे मनोहर श्री मुख कमल सो सगरे हमारे मनोरथन को दान करेंगे या प्रकार सूं उच्छल रहे हर्ष बारें हैं ॥ आपके दर्शन में रंच बाधा पड़े तो उदास हृदय होय जाय है ॥ पल पल में ही या प्रिय के दर्शन की गाढ़ इच्छा जिनमें बढ़ रही है ऐसे है ॥ विनमें कितने तो याके स्त्रोत पढ़े हैं, और कितने तो आपके गुण समूहन को विचार करें हैं ॥ और कितने तो अपने अपने घर में आपकी सेवा के उपयोगी वा वा कार्य को करके दर्शन के रस सूं दौड़ दौड़ के आय गये हैं ॥३३॥ कितने तो जगमोहन में भर रहे हैं ॥ कितने तो अटारी के बाहिर है ऐसे "हौं पहले हौं पहले" ऐसे उतावल सूं आगे आगे होय रहे हैं ॥ या प्रकार भक्त स्त्री कि पुरुष हू भीतर आय के वा प्राणनाथ को निरखे है कि जाने अपनी परम शोभा समूह सूं श्री हस्त पल्लव सूं ही करोडान काम के अभीमान पर्वत हू दूर किये हैं ॥ कि घंटा झालर के ध्वनी सूं हर्ष समूह जिनने बढ़ायो है -- श्री नाथजी के दक्षिण ओर द्वार के किवाड़ पास ही जे विराजमान है ॥ तामें वर्षा ऋतु की गरमी के दिन होय तो श्री नाथजी तिवारी में विराजमान होय है तो श्री प्राणप्रिय जी याके दक्षिण में विराजे है ॥ ज्येष्ठ महीना होय तो श्री नाथ जी आंगण में विराजमान होय है ॥ श्री प्राणनाथ जी हू याके दक्षिण में विराजे हैं ॥ तब भीतरियाजी दीप जगाय के आर्ती आपके दक्षिण श्री हस्त में देवे हैं ॥ प्राणनाथ जी वाकू बाये श्री हस्त के ऊपर ही धरें हैं ॥ वा आर्ती के वैसे मनोहर ज्योति प्रकाश सूं आपको श्री मुख चंद्र विशेष चमके है ॥ तथा आपको सुन्दर स्निग्ध जे जूड़ा है वासूं तो जैसे श्याम श्री यमुनाजी के प्रवाह निकर रहे होय वैसे दर्शन होय है ॥ तथा सोना के जे जटित कुंडल हैं विनके रत्न प्रकाशन सूं सगरे लोकन को कि अपने दोनों कंधान को हू अत्यंत मंजीठो रंगवारो कि लाल लाल ही कर रहे हैं ॥ तथा

अपने कृपा रस भरे कटाक्षन सो सिंचन करके सगरे भक्तन को कि दीर्घ दृष्टिवारी सगरी भक्त सुन्दरीन को हू शीतल कर रहे हैं ॥ तथा वा सबन में ही केवल अनुभव सूं ही जानवे योग्य करोडन आनंद के समुद्रन को वर्षा कर रहे हैं ऐसे श्री गोकुलभूमि के महाइन्द्र श्री प्राणनाथजी को वे सब निरखे है ऐसे सो प्राणनाथ जी आर्ती को फेरवो हू समयानुसार सूं ही करें हैं ॥ तामे शीतकाल होय तो बहुतवार आर्ती वारें हैं, उष्णकाल ज्येष्ट अषाढ़ में तो थोड़े वार ही वारें हैं ॥ समान ऋतु में तो समानवार ही वारें हैं ॥४३॥ ऐसे आर्ती वार के श्री प्राणप्रिय जी तिवारी के मध्यम द्वार में पधार के भीतरिया के हाथ जलपात्र होय तासूं जल तो डारतो जाय है ॥५०॥ फिर हू आगे ठहरे भक्त तथा कमल नयना भक्त सुन्दरी सबन को कृपा पूर्वक उच्छलित रस विशेष सूं निरखे है ॥ फिरतो बनावटी रंच क्रोध दिखाय के "जावो रे यहां सूं वेग" ऐसे आज्ञा करें हैं ॥ तब या वचन के वश होय के वहां सूं वे सब वेगा निकसे है ॥ सो प्राणनाथ जी तिवारी के द्वार में टेरा कू खेंचत ही अपने देखने की इच्छा सूं न जाय रही कितनी हरिण बाल नयना ब्रज सुन्दरीन को देखके बनावटी क्रोध रंच करत प्रेम सूं सुन्दर निरखत यों कहें हैं कि "वेगा नहीं जावो हो तो क्यों रे कोई नहीं है ऐसो जो इनको यहां सूं वेगा निकारे" ऐसे कहत वा टेरा को लगाय के भीतर पधारें हैं ॥४९॥ तब सवन के निकरवे पर भलीबाई जी तो बड़े श्रेष्ट भक्त है प्राणनाथ जी के चरण कमल के निकट स्थिति को छोड़वे में समर्थ नहीं है ॥ राज के उछलित प्रेम सांकल सूं बंधी है तासूं सदैव ही या समय जल घरा में ही बैठ जाय हैं ॥५१॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीला सुधासिंधौ दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे द्वादसमो स्तरंगः ॥१२॥

कल्लोल जी दसम

# त्रयोदस तरंगः ।।१३।।

**श्री श्री गोकुलेशो जयति ।।**

अथ दसम कल्लोले त्रयोदस तरंगः लिख्यते ।।

शलोक -- **अथ भगवान्स चतुष्ध्यांनी चाथांत द्वितीयस्यां उपवेश्य तस्थ वस्त्रायेयुताश्यते सविभ्रमं प्रियान् ।।१।।**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्‌ट जी कहें हैं कि ता पाछे भगवान श्री गोकुल प्रभुजी दूसरी नीचे धरी छोटी चौकी पर श्री गिरधारी जी को पधराय के विलास पूर्वक प्रियवर वाके वस्त्र बड़े करें हैं ।।१।। पास हंसंती अंगीठी विराजमान है, वाकी अग्नि सूं हस्त कमल को तपाय के पास धरी पीतल की चौकी के ऊपर धरे बड़े पात्र द्वार में श्री गिरिधारी जी को पधराय के भीतरिया ने दिये समोये सुहाते जल सूं श्री नाथजी कू न्हवावे है ।। पीतल की कलशी भर भरके श्री नाथजी को न्हवावे है ।। या श्री नाथजी के मंगल समूहन को चाहना करत पीछे वारी कलशी को श्रीनाथजी पर तीन वार, वारके डारें हैं ।।४।। ता पाछे उत्तम अंग वस्त्र को लेकर श्री हस्त कमल सूं वा श्री नाथजी के अंगन को पोंछे है ।। ता पाछे वा छोटी चौकी पर पधरावे है ।। दूसरी चौकी पर पुत्र रत्न श्री गोपाल जी श्री नाथजी के आभरण कि वस्त्र न्यारे करके आपके पास धरे हैं ।। वाकूं श्री हस्त कमल सूं पास लायके श्रीनाथजी कूं वस्त्र आभरण धरावे है ।। वा श्री नाथजी के पास उछलित वाछल्य सूं चांदी की थारी में धरे सुन्दर बहुत फल भोजन अर्थ पधरावे है ।। श्री गोपालजी तो श्रीनाथजी की दोनो प्रियाजी को दूसरी चौकी पर पधराय के न्हवाय के अंग वस्त्र सूं श्री अंग पोंछ के एक को वस्त्र भूषणन सूं श्रृंगार धरावे है ।। दूसरी स्वामिनीजी को श्री विट्‌ठलराय जी जो दूसरो पुत्र है सो भली भांति श्रृंगार धरावे है ।।१०।। इनको श्रृंगार हू समय समय अनुसार ही होय है ।। शीतकाल में रेशमी रूईदार जामा धरावे है ।। सूथन रूईदार अंतर्वस्त्र कि आतम सुख धरावे है ।। सगरे वा वा अंगन में अलंकार धरावे है ।। तथा दोनों प्रिया जी को सुन्दर रंगीन रेशमी साड़ी शोभायमान होय है ।। नीचे छोटे लहेंगा

और मनोहर अंगिया हुलसे है ।। बेनी मनोहर मांग के आभरण सीस फूल शोभायमान होय है ।। नयनो में काजर मनोहर लसे है ।। नख सूं लेकर शिख पर्यंत आभरण हू वैसे शोभायमान होय है ।। श्री मस्तक में हिंगुल को तिलक कि कस्तुरी को कि चंदन को तिलक शोभायमान होय है ।। दोनों प्रियाजी की साड़ीन के ऊपर मनोहर चादर शोभायमान होय है ।। सगरे स्वरूपन पर सुन्दर रूईदार बड़ो गद्दर उठावे है ।।१७।। तथा भुजमूल आदि अंगन में कृष्णागरु को सार चोवा लगामे है तथा बड़े मोलवारे और हू सुगंधी द्रव्य हू अंगीकार करावे है ।।१९।। माघ शुक्ल की पंचमी वसंत पंचमी सो श्री प्राणनाथ जी उछलित प्रेम सूं तीनों स्वरूपन को रूई के कोमल श्वेत वस्त्र ही पहिरामे है ।। अथवा रूई विना दोय वागा पहिरावे है ।। कि दोहरावागा पहिरामे है ।। शीत न होय केवल गरमी के आरंभ में बड़े मोलवारो अत्यंत सुक्ष्म वस्त्र को वागा पहिरामे है ।। गरमी होय तो चंडातक कि सूथन कि जामा नहीं पहिरामे है ।। श्री नाथजी को बड़े मोलवारो श्वेत सूक्ष्म पिछोरा ही पहिरावे है ।। तथा वा दोनो स्वामिनी को बड़े मोलवारी सूक्ष्म साड़ी ही पहिरावे है ।। अलंकार भूषण हू तीनो स्वरूपन को सूक्ष्म ही पहिरावे है ।। वर्षा ऋतु में तो चतुरवर प्रियजी अनेक प्रकार के सोना के छापावारे कसुंभी कि मंजीठे अनेक प्रकार के साड़ी पीछोरादि अत्यंत सूक्ष्म ही बड़े मोलवारे वस्त्र धरावे है ।। शरद ऋतु में तो श्री नाथजी को मुकुट काछनी धरावे है ।। और समय में उज्वल जामा धरावे है ।। शीतकाल में तो पहले कहें रूईदार वागा धरावे है ।। ऐसे श्रृंगार धराय के प्राणप्रिय जी तीनो स्वरूपन को सिंहासन पर पधरावे है ।। भीतरिया आदि जे सेवक है वे तो सगरे और कार्य करके अब प्राणप्रभु की आज्ञा को निहारत ठहरें हैं ।। श्री गोकुलराज जी प्रभु को सिंहासन पर पधराय के आगे गोपीवल्लभ भोग समर्पे है ।। सो प्रथम प्रकार कह्यो है तामे भोग योग्य सामग्री को नाम कहूं हूं ।। खींचड़ी कि खीरवड़ा कि पापड़ बहुत खडमंडा कि ताती पूरी कि सुन्दर मिसरी सहित बड़ा ।।३०।। बडी सूं मिल्यो भात धरें हैं ।। शीतकाल में तो मनोहर मिसरी घृत सूं मिले गेहू कि मेदा के अनेक प्रकार के लड़वा मठरी आदि पकवान है वैसे चणा के चून सूं सिद्ध किये लड़वा पूरी आदि धरें हैं ।। सघन दही की मही कि गाय को घृत सद्य तपायो कि मिसरी श्वेत ऐसे भोग धरें हैं ।। यहां टेरा लगाय के जगन्नाथ कृपा सिंधु प्रभू जी यहां

सूं पधार के दर्शन दान सूं भक्तन के प्रसन्न करवे की इछा करत सुनवे वारेन के कानों में अमृत के समुद्रन को वर्षा करत ही सुन्दर स्वभाववारे श्री गोपाल को आज्ञा करें हैं ।। "तुम प्रेम पूर्वक यहां सावधान रहो, हौं बाहिर पधारु हूँ" ।।३५।।

इति श्रीमद गोकुलेश लीला सुधासिंधौ दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे त्रयोदश स्तरंगः ।।१३।।

### कल्लोल जी दसम

# चतुर्दशः तरंगः ।।१४।।

**श्री श्री गोकुलेशो जयति ।।**

अथ दसम कल्लोले चतुर्दशः तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **निसृतमेनं श्री मन्नाथनिके तान्महा प्रभुसदनेतो**

**यस्य वर्तमाना तस्या गमन प्रतिक्षया सततं ।।१।।**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं ।। श्री महाप्रभुजी श्री नाथजी के मंदिर सूं बाहिर पधारें हैं ।। आपके पधारवे की वाट देख रही जो जल घरा में श्रीराज के चरण पखारवे योग्य सुहाते ताते जल सूं भरी पीतल की कलशी, को हाथ में लेके वर्तमान कि बैठ रही भक्त भलीबाई जी है, कि सो राजबाई है सो पहले प्रभुन को यह दर्शन करें हैं ।। पीछे हू चले, ता पाछे जगमोहन नाम बड़े घर में विराजमान जे असंख्यात भक्तवरन को आनंद के रोम हर्ष पूर्वक निरखे है प्रणाम हू करके आगे पीछे इत उतकूं होयके श्री राज के संग ही चले है ।। बहुत प्रकार सूं जय जय नाद को हू कर रहे हैं ।। विन सबन के मध्य में तारागणन में चंद्रमा जैसे ही महाप्रभुजी शोभायमान होय है ।। शीतकाल होय तो श्री अंग में रूईदार छोटो नीमा धारें हैं ।। और समय में तो धोती तथा चंचल जाको छोर है ऐसे श्रेष्ठ उपरना कूं धारण करें हैं ।। सुन्दर श्याम स्निग्ध चमकनो निर्मल आपको जूरा विलासवारो है ऐसे श्री प्राणनाथ जी हम सबन कूं कि अकाश भूमि को हू अत्यंत आर्द्र कि सुगंधित कि शोभायमान करत ही विलास रस पूर्वक चल रहे हैं ।। तामें प्रथम श्री प्राण प्रियजी बड़े भैया बालकृष्ण जी के घर में जायके

वहां की बहू बेटीन के तथा और हू सगरे भक्त सुन्दरीन के नयनों में अपनो दर्शन दान करत असंख्यात अमृत सागर रूप अधीर निमर्याद आलिंगनन को बीज बावे हैं ।। कि विनके नयनों में दर्शन सो अमृत रस वरसावे है ।। श्रेष्ठ भगवत मार्ग की रक्षा में उद्यमवारे प्रिय जी वहां विराजमान पितृचरणन के सेव्य श्री नाथजी के द्वारिकानाथ स्वरूप को प्रेम सो दर्शन करें हैं ।।१०।। फिर छोटे भैया रघुनाथजी के घर में पधारके वहां के सब स्त्री पुरुषन को अपने दर्शन दान सूं करोडान निधी के लाभ सूं अधिक हर्ष को दान करके पितृचरणन के सेव्य श्री गोकुल चंद्रमा जी को दर्शन करके यहां सूं वाहिर पधारके मार्ग में स्थित सगरे जीवन को बहुत प्रकार सूं कृतार्थ करत अपने श्री मंदिर में पधारें हैं ।। वैसे चरण कलम के धारण सूं वहां आंगण कूं शोभायमान करके तिवारी को हू सुगंधित करत भूतल पर रत्न कंबल विछो है वाके ऊपर चरण पोंछवे को स्वेत वस्त्र शोभायमान है वहां विलासपूर्वक सुन्दरवर प्रभुजी चरणन को धरण करके बायीं ओर भींत को सहारा लेकर उछलित प्रेम सूं असंख्यात अपने सगरे ही भक्तजन आपके सन्मुख खड़े है ।। तामें कितने तिवारी में है कितने तो अट्टारी को भरते ठहरें हैं ।। कितने तो उतावल सूं आगे आगे होय रहे हैं ।। सबन के हृदय दर्शन सुख में निमग्न हैं ।। और श्री विग्रह की माधुरी में आशक्त हैं ।। और परम शोभा भरे श्रीमुख की परम शोभा समूह के अनुभव लिये ही ठहरें हैं ।। और श्री राज के कटाक्ष समूह कल्लोलन में खेल रहे हैं, विन सबन को परिपूर्ण काम सिद्ध करत ही प्रियवर जी गवाखा में धरे तिथी पत्र पंचांग को लेकर तिथि नक्षत्रादि वांचे है ।। तासूं वा वा कार्यन के समय को निश्चय करके तब और हू वा वा कार्य को करें हैं ।। या समय में बुद्धिमानों में श्रेष्ठ खवासजी तो श्री राज के श्री यमुना स्नान में उपयोगी कार्यन को करें हैं ।।२१।। सुंदर अपरस की शुद्ध धोती उपरना जामे धरें हैं ।। श्री अंग पोंछवे के अंग वस्त्र जामें धरें हैं, ऐसी उनकी थेली है ।। सुन्दर चंदन कुंमकुम सूं मिली सुन्दर सीप है, तीर्थ के कि घाट के बनायवे वारे खनित्र कुद्रालक है ।। मार्ग में छाया करवे लिये मोरपंख को छत्र है, आचमन अर्थ जल पात्र है तथा शुद्ध सुन्दर पनही जोड़ा है, यह संग ले जायवे लिये सजावे है ।। तामें शीतऋतु होय तो दोय अंगीठी और वामें उपयोगी सूखि लकड़ी के टूक, और काश्मीर देश में सिद्ध भयी रोमवारी निर्दोष बड़ी मोलवारी दोय

चादर जाकू पामरी ऐसे कहें हैं सो, तथा ताते जलसूं भर्यो तांबाको बड़ो कलशा स्नान करवे की कलशी, शनिवार होय तो केसरी जल सूं भर्यो कलशा होय है, वर्षाऋतु होय तो रोम के पट्ट सकलात नाम सूं प्रसिद्ध बड़े मोलवारी चादर तथा वर्षा के जल को निवारण करवेवारी शिरमें धरवे लायक मोम जामा की छत्री और हू जो जो उचित होय सो स्वयं आप लेवे है ॥ तथा सावधान वा वा वैष्णवन सूं लिवावे है ॥ श्री प्राणनाथ जी तो विलास पूर्वक पनही जोड़ा पहिर के असंख्यात अपने भक्त और पूर्ण चंद्रमुखी भक्त सुंदरीन के संग सिंहद्वार के पास विराजमान सीड़ी को उतरके बाहिर पधार के लदाव के द्वार सूं छोटे भैया घनश्यामजी के घर में विराजमान श्री पितृचरण के सेव्य स्वरूप श्री कृष्णरूप मदनमोहन जी को प्रेम सूं निरख के प्रणाम करके, राजा नाम सूं प्रसिद्ध श्री गोविंदराय जी के घर श्री विट्ठलेश राय जी को निरख के प्रणाम करके वहां के निवासी सबन को अपनो दर्शन दान देकर ॥३४॥ रतन चौक में आयके यहां सेवक ने सजाय के सुन्दर पल्याण साजवारो जो घोड़ा राख्यो है सो रत्नचौक की सीड़ी के पासही श्री प्राणनाथ जी ऊंचो कूद के वहां सूं घोड़ा पर विराजे है ॥ श्री यमुना जी यदि निकट होय तो श्री गोकुल के भूमिपति महाराजाजी श्री चरणन सूं ही वेगी वाके तट पर पधारें हैं ॥३६॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीला सुधासिंधौ दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे चतुर्दशः स्तरंगः ॥१४॥

### कल्लोल जी दसम

## पंचदस तरंगः ॥१५॥

**श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥**

अथ दसम कल्लोले पंचदस तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **सुख यति समभक्तजन तां तुरंगराजं प्रणर्तयस्तेयः**

**निदधाति तस्य मानस मनु सृत्यैव क्षितो वंज्पीन ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं श्री प्राणनाथजी वा घोड़ा राज को नचावत ही सगरे भक्त समूह को सुखी करें हैं ॥ सो घोड़ा राज

हू श्री राज के मन के अनुसार ही भूमि पर चरण धरें हैं ॥१॥ या समय में ही श्री महाप्रभुजी की जो श्री मुख्य स्वामिनीजी श्री पार्वती बहुजी है सो श्री यमुनाजी में न्हाय के अपने घरन में पधारें हैं ॥ पुष्पावती के घर के पास की यासूं आगे पीछे होय है ॥ रेशमी साड़ी पहिरें हैं ॥ बड़े मोलवारे चादर सूं शोभायमान है ॥३॥ मनोहर चपल अंचल सूं श्रीमुख कमल को घुंघट सूं आपने छिपाय राख्यो है ॥ श्री प्राणनाथ जी के सन्मुख ही आय गयी है ॥ दक्षिण सूं होय रही है ॥ अनेकान लक्ष्मीन की शोभा को विजय कर रही शोभावारी है तथा दासी सेवक भक्तीभरी सखी की सहेली कि वा वा कार्यन के करवे वारी स्त्रीन के अनंत जूथ ही आपकी प्रेमसूं सेवा कर रही है ऐसी सो हरिण नयना सुकुमारी सुन्दर दंतनवारी श्री मुख्य स्वामिनीजी प्राणनाथ की ओर गुप्त रीति सूं मंद मुसकान कर निरखत ही प्राणप्रिय के नयनों में हजारन अमृत के समुद्रन को अत्यंत वरसावे है ॥ **यद्यपि या प्राणनाथ के वैसे श्रेष्ठ घोड़ाराजने जो अत्यंत मधुर विलक्षण नृत्य कियो है, जो वामे कि सबन में अनेक प्रकार सो हर्ष समूह को विशेष कर धारण कर रहे ऐसे स्वरूप सौंदर्य समूह सूं मार्ग की भूमि को कि वामे प्राप्त सगरे लोकन को कि सगरी दिशान को वा जीवन को कि वा श्री यमुना जी को वा समय को कि वा प्रियवर को कि याकी चंद्रमुखी प्रियाजी को हू विलक्षण बनाय के सबन को सर्वोपर विराजमान ही कर रहयो है ॥११॥** तथापि वा प्रिया प्रियके गुप्त रीतिसूं मिल रहे नयनों के चंचला युगल ने जो मनोहर क्षण कि मनोहर सुख हर्ष प्रकट कियो है वाकूं तो वे आपके कृपापात्र ही भक्त सुन्दरी ही जाने है ॥ और कोन जान सके है ॥ या समय में मार्ग में दोनों ओर ही प्राणनाथ के शोभाभरे श्रीमुख के निरखवे लिये वहां वहां वे वे मृगलोचना भक्त सुन्दरी जन ही ठहरें हैं ॥ वामे यशोदा घाट में विराजमान कुवा के पास, कि सगरी गलीन में हू अटारीन में कि वृक्षन में हू अनेक ही ठहरें हैं ॥१४॥ ता पाछे ईश्वरेश्वर प्राणप्रभुजी मनोहर उपरेना को विलास पूर्वक श्रीमस्तक पर लपेटा देके वा उपरना को एक अंचल पल्लव जैसे ऊपर प्रफुल्लित होय रहयो है ॥ तामे सो ऐसे प्रभुजी पवन के वेग को ही विजय करवे वारे घोड़ाराज को चार की पांच वार दमान देवावे है ॥ ता पाछे वा घोड़ाराज कूं बहुत वार उत्साह पूर्वक दोनों हस्त कमलन सूं दोनों कंधा पर थापड़ी देवे है ॥ धैर्य

देवे है ।। फिर वाकूं बहुत प्रकार सूं नचावत ही ठकुराणी घाट पर्यंत पधारें हैं ।। वाके पास भक्त जनन ने खनित्र खोदवे को कुदाल लेके चतुरता सूं सुन्दर घाट स्थल बनाय राख्यो है ता पर घोड़ा सूं उतरें हैं ।। तब आधी दैविक रूप सूं पधारी श्री यमुना जी पर कृपा रस भरी नजर डारें हैं ।। तब प्रिया जी वाके तट पर विराजमान होयके विलास पूर्वक कुशा समूह लेकर प्रथम जैसे तीन आचमन करें हैं ।। या समय में भक्त समाज स्त्री कि पुरुष हू टक-टकी लगाय के या प्रिय को निरखत ही पास ही स्थल में कि जल में प्रवेश करके चारो ओर ही ठहरें हैं ।। श्री प्राणप्रिय जी हू चाहना पूर्वक वा सबन को देखत ही जल में प्रवेश करके नैनों को मूंद के दोनों श्री हस्त कमलों के अंगुष्टन सूं कानों को हू बंध करके याकी अंगुलीन सूं नासिका को मर्दन करत ही श्री प्राणनाथ जी श्री मस्तक सूं ऐकवार गोता लगामें है ।। फिर तीन आचमन करके फिर प्रभुजी दक्षिण श्री हस्त सूं जल लेके स्नान को संकल्प करें हैं ।। फिर नासिका को अंगुलीन सूं पकर के जल में भाल को परस करावत अघमर्षण को करें हैं ।। फिर सुंदरवर भगवान श्री गोकुल प्रभुजी प्रथम जैसे नैनो को मुंद के नासिका और कानो को हू बंद करके तीन बार कि पंचवार गोता लगामे है ।।२६।। शनिवार होय कि उच्छव को दिन होय तो श्रेष्ठ भक्त केसर जल को कलशा लावे है, वासू जल लेकर पीतल की कलशी सूं दोय चार वार स्नान करें हैं ।। फिर वो कलश उठायवे वारो भक्त कि खवास जी सगरो जल आप पर डारके आपकूं स्नान करावे है ।। कुंकुम जलन सूं न्हाय रहे या प्रभु की जो शोभा उछले है वाकूं तो वेई ही जाने है जिनको यह प्रभु अनुभव करावे है ।।२९।। ता पाछे श्री प्रियवर जी स्नान के अंगरूप तर्प्पण को जल के बीच ही करें हैं ब्रह्म यज्ञ हू वहां करें हैं ।। शीत ऋतु होय तो स्नान के पीछे भक्त श्रेष्ट तातो जलको कलशा लावे है, सो ऊपर सूं डारतो जाय है वासूं आप स्नान करें हैं ।। फिर जलके बाहिर पधारें हैं ।। तीर पर वा कुशान कूं डारें हैं ।। तीन अंजली भर जल हू डारें हैं ।। फिर प्रथम जैसे आचमन करें हैं ।। श्री प्राणप्रभुजी कंधा पर विराजमान उपरना को हू भूमि पर डारें हैं ।। फिर खवास जी के हाथ में विराजमान थेली सूं प्रथम जैसे अंग वस्त्र लेकर अंगन को पोंछे है ।। फिर वा थेली सूं प्रथम जैसे धोती उपरना को निकार के विलास पूर्वक पहिरें हैं

।।३५।। फिर जगत्प्रभु पीढा के पास विराजमान होय के तीन आचमन करें हैं ।। प्रथम जैसे फिर नेत्रादि को, परस करें हैं ।।३६।। फिर पीढा पर बिराजमान दक्षिण हाथ सूं चंदन की सीप लेके बाये हाथ में लेकर श्रीमस्तक में कि कानों में भुज मूल में कि कंठ तथा पीठ पर कि हृदय में कि स्तनों के ऊपर नाभी के ऊपर की पसवाडा में की मस्तक मे की वाके नीचे अत्यंत सुन्दर प्रकार सूं कृपानिधि तिलकन को करें हैं ।। शीत विशेष होय तो ब्रह्म यज्ञ तट पर करें हैं ।। जलसूं तर्प्पण हू तट पर ही करें हैं वामे प्राण प्रिय जी श्री हस्त में कुशन को विधी अनुसार लेवे है ।। वाम चरण पर दक्षिण चरण को धरके बाये हस्त के पीठ को दक्षिण घोंटू के अग्र पर धर के वाके तल पर दक्षिण हस्त के तल को धारण करके वा वा मंत्रन को पढ़त ऐसे आद्य की प्रथम ब्रह्म यज्ञ को करें हैं फिर संकल्प करके दूसरो ब्रह्म यज्ञ करें हैं ।। वामें आदर सूं देवता, ऋषि कि मनुष्य पितृन को तर्प्पण करें हैं ।। फिर प्रभुजी धोती के नीपीडन जल को देवे है ।। फिर तीर पर कुशान को डार कर तीन अंजली भर जल को हू डारें हैं ।।४५।। फिर मध्यान्ह संध्या को प्रभुजी करें हैं ।। यहां दोयवार अर्घ्य देवे है ।। ऊंचो ठहर के उपस्थान हू करें हैं ।। अंत में गायत्री जाप करें हैं ।। फिर उठे है ।। दोनों हस्त कमलन को मस्तक में धरके नयनों को मूंद के भाव पूर्वक श्री यमुनाजी को मान देकर समाधान करके, परिक्रमा करें हैं ।। दक्षिण फेरा लेके भूतल में गिरे अंगवस्त्र पर चरण कमलो को धरके मनोहर रीति सूं पोछे है ।। सेवक जन प्रेम पूर्वक आपको निरख रहे हैं ।। भक्तवर शुद्ध पनहीं जोड़ा को आगे धरें हैं ।। आप चरणन में धारण करें हैं ।। श्री महाप्रभुजी के चरणचिह्न श्री यमुनाजी के तट पर होय है ।। वहां सूं रेती को उठाके कितने सुजान जन तो प्रेम सूं सिर में कि माथे पर कि हृदय में लगावे है ।। और कितने जन तो वा तीर को बड़े आदर सूं दंडवत प्रणाम करें हैं ।। और कितने जन तो वा तीरके जल को सिर में कि माथे में धरें हैं कि पान हू करें हैं ।।५२।।

इति श्रीमद गोकुलेश लीला सुधासिंधौ दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे पंचदश स्तरंगः ।।१५।।

कल्लोल जी दसम

# षटदसम तरंगः ॥१६॥

**श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥**

अथ दसम कल्लोले षटदसम् तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **पऽभ्यामेव स्वतंत्रे छः प्रयाति निजमंदिरमं**

**अन्वियमानश्चं दास्यावृंद कोऽयर्बुदा बुदैः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं -- स्वतंत्र इच्छावारे रससागर सुन्दरवर श्री चरणन सूं ही निजमंदिर में पधारें हैं ॥ चंद्रवदना ब्रज सुंदरीन के अनेकान समूह पीछे चल रहे हैं ॥ भक्त श्रेष्ठ सेवक दास हू असंख्यात ही पीछे चल रहे हैं ॥ बंदीजन समूह हू राज के यश की स्तुती कर रहे हैं ॥ प्रभुजी उतावली चांल सूं चले है ॥ कृपा समूह सूं मनोहर रीति सूं पीछे आय रही सगरी अपनी सेवक सृष्टि को निरखत जाय है ॥ कितने भक्त तो स्नेह पूर्वक मोदसूं श्री राज के आगे दौड़ रहे हैं ॥ कितने तो आपके चारों ओर चल रहे हैं ॥ कितने पीछे चले है ॥ कोई भक्त तो आपके चरण पखारवे योग्य जल सूं भरी पीतल की कलशी लेके आपके आगे ही उतावल सूं चल रहयो है ॥५॥ जे स्त्री जन के जे पुरुष वेग सूं या प्रिय सूं आगे चले है वे सब फिर फिर के वारंवार या प्रिय के श्रीमुख कमल को बड़े प्रेम सूं निरखे है ॥ रोम हर्ष सूं शोभायमान है श्री आपतो उतावल सो चल रहे हैं ॥ कितने भक्त जन तो उत्साह सूं पीछे दौड़ दौड़ के हू बड़े यत्न सूं ही आपके मिलवे में समर्थ होय सके है ॥ श्री राजने महा सुन्दर अद्‌भुत विलास भरी कोई शोभायमान गति प्रगट करी है, जो सगरे भक्तन के नयन कमल रूप दोनान को अमृत के समुद्रन सूं भर रही है ॥ कि अनंत चिंतामणिन सूं शोभायमान कर रही है ॥ कि कामधेनु के दूध सूं न्हवाय रही है ॥ कि कल्पवृक्ष के सुन्दर पक्व फलन सूं निकस रही निस्तुष रसधारा को निरंतर चिरपर्यंत पान कराय रही है ॥ कि जो गती या भक्तन में जटित होय रही है कि वज्रलेप होय रही है ॥ और सर्व श्रेष्ट को हू विस्मरण कराय रही है ॥ ऐसी मनोहर गति को प्रकट करके सुन्दर वर जी सगरे ही जगत को कृत्य कृत्य कर

रहे हैं ॥ तामे आपकी धोती अत्यंत उज्वल है ॥ उपरना हू वैसो मनोहर है ॥ तथा आपके श्री अंग है वे हू शोभा भरें हैं ॥ सुन्दर चमकने है ॥ विन की सुगंधी हू चारो ओर प्रसर रही है ॥ कुंकुम सूं मिले चंदन के रस सूं सुंदर उर्ध्व पुंड्र तिलक है ॥ मस्तक पर तिलक के बीच स्वभाविक श्याम रेखा है ॥ इन सबन सूं जे मन को हरें हैं तथा मनोहर चमकन अत्यंत स्निग्ध कारे दीर्घ लंबे केशन सूं रचना कियो मनोहर जुरा कों, कंठ के पीछे धारण करें हैं ॥ तथा रत्न हीरा सूं जटित की चंचल होय रहे कि दीप्ती की धारान सूं सब जगत को अत्यंत रंग रहे कि मनोहर ऐसे कूंडलन को कानो सूं जे शोभायमान कर रहे हैं ॥ तथा एक लर की कि दुलरी कि तिलरी ही तुलसी मणीमाला को जे आदर सूं जे कंठ में धरें हक ॥ तथा मनोहर स्वेत कि लाल गुंजान सूं रचना करी मनोहर गुंजा हार को हू जे धारण करें हैं तथा निर्मल जनेऊ को जे धारण करें हैं ॥ तथा दक्षिण श्री हस्त में अमूल्य हीरा रत्न सूं जटित सुवर्ण की शुभ केवल अकेली मुद्रिका को हू जे धरें हैं की गरमी के दिन होय तो भक्तजन हाथ सूं मोर के पंखन की छत्री धरें हैं ॥ वाकूं श्री मस्तक सूं जे आदर कर रहे हैं तथा शीतल मंद सुगंधी जो मनोहर पवन है जो ऊंचे पुष्ट स्तनवारी कि मनोहर बांके भ्रु वारी चंद्रमुखीन के घूंघट तथा हृदय के अंचल को वारंबार निवारण करें हैं ऐसो पवन हू श्री आपको आनंदित कर रहयो है ॥ वर्षा ऋतु होय तो श्री राज की इच्छानुसार चलवे वारी जे स्निग्ध अत्यंत श्याम सुन्दर ऊंची उछल रही जो मेघ घटा है जो मृगनयनी ब्रज सुन्दरीन के मन में उत्कंठा को प्रगट करें हैं, सो मेघ घटा आपको प्रसन्न करें हैं ॥ तथा वामे अत्यंत उज्वल शोभायमान मनोहर बगलान की जे पंक्ती है जे वहां वहां विराजमान है ॥ कि इत उत को जाय कि आय रही है ऐसी बग पंक्ती हू आप कूं प्रसन्न करें हैं ॥ तथा पारावत कबूतर, चकवा, सारस, चातक, पोपट, मैना को दल वैसे और हू अनेक प्रकार सूं मधुर आलाप कर रहे पक्षी है वेहू आपकूं प्रसन्न करें हैं ॥ तथा बगीचान में विराज रहे कि श्री यमुनाजी को तट पर सदा विराजमान वा वा वृक्षन में ठहरे मोरन की जे उच्छलित होय रही कुहुक है, कि विनके जे मनोहर नृत्य है वेहू श्री राज को प्रसन्न कर रहे हैं ॥ मेघ घटा के गर्ज्जन है कि विजुरीन की जे चमकार है, कि मोतीन की शोभावारे मेघन की बुंदन के जे समूह है वे सब ही आपको

प्रसन्न करें हैं ।। वामें कदंव के फूल समूहन की, कि केतकी के समूहन की प्रसर रही जे सुगंधी है सो आपकू प्रसन्न करें हैं ।। भक्तन के मुखन सूं उछल रहे जे मल्हार राग के गान है तथा रस सूं भरी हरिण लोचना व्रज सूंदरीन के जे विलास है कि मंद मुसकान है वे प्राणनाथ को अत्यंत ही प्रसन्न करें हैं ।। तामें बड़े मोलवारे सुन्दर कोमल रोमवारे अनेक गुणन सूं मिले मनोहर जे पट्ट सकलात ऐसे नाम सूं प्रसिद्ध सुंदर चादर हैं तथा वर्षा के जल को निवारण करवेवारी जे मस्तक पर धरवे योग्य वा सकलातादि वस्त्रन की छत्री है वैसे और हू जे समय समय अनुसार सुख दायक वस्त्रादि है विनकूं श्री राज अंगीकार करें हैं ।। तथा चेष्टा हू राज की भक्तन के ही सुख को देने वारी है ।।३३।। शीतकाल होय तो मनोहर कोमल रोमवारो जो काश्मीर देश को बड़े मोल वारो शीत को दूर करवे वारो गरम चादर है जो पामरी नामवारो है सो दोय चादर ओढ़े है ।। ऐसे शोभायमान तथा सुंदरता धर्म शुद्धि, चतुरता रस गंभीरता, प्रेम दया धैर्य तेजस्वी आदि सगरे गुणन सूं जे सदा मिले है विराजमान हैं ।। वहां कितनेक सुजान जन आय आयके आपके आगे अनेक प्रकार के रसभाव अलंकार भरी भाषा कि संस्कृत श्लोक दोहा कवितादि पढ़े है ।। विनकूं सुन सुनके अत्यंत प्रसन्न मंद मुसकान वारे श्रीमुख कमल सूं वा वा गुणीजन पर अपनी बड़ी प्रसन्नता कूं प्रकट करें हैं ।। बड़े सुजान जन जाकूं प्रणाम करे ऐसे यह रसिक वर सुन्दर प्राणनाथ जी है ।।३७।। सो प्रभुजी अपने मंदिर में आयके सीढ़ी के पास सेवकजन चरण कमल के पखारवे योग्य जल की मनोहर पीतल की कलशी लावे है ।। वाके जल सूं श्री प्राणनाथ जी चरणन को पखार के होम घर में पधारें हैं ।। या समय में हू कितने भाग्यवान जन या श्री राज के चरणारविंद सूं गिर रहे चरणामृत को पान करें हैं ।।३९।। ता पाछे धर्मधुरंधर श्री महाप्रभुजी होमघर के द्वार में किवाड को लगाय के श्री राज की इच्छा जान सगरे भक्तजन बाहिर ही रहे हैं ।। श्री राज तो अग्नि कूंड के पास धरे पीढा पर विराजमान होयके यहां भरके धरी अग्नि को भली भांति सूं धुखायके या अग्नि में पांच छे काष्ट के टूक डारें हैं ।। फिर वंश के फुकने सो फूके है ।।४२।। फिर श्री प्राणनाथ जी जलकूं परसकर प्राणायाम करें हैं ।। फिर जल लेकर होम के संकल्प को करके दक्षिण हस्त कमल सूं कूंड तट में चारो ओर सिंचन करें हैं ।। फिर दक्षिण

हस्त सूं पीरे अक्षत लेकर कूंड के चारों ओर डारत कछु वा कूंड कूं अलंकृत करें हैं ।।४५।। फिर वा कूंड को सिंचन करके फिर अग्नि को उपस्थान करें हैं ।। काष्ट पात्र में स्थित चावरन को दक्षिण मुष्टि प्रमाण लेकर वाये हस्त में धारण करें हैं विनमें आधो लेकर दक्षिण हस्त सूं होम करें हैं ।। वाकी रहेन कू हू दक्षिण हस्त सूं लेकर गोकुलाधीश जी होम करें हैं ।।४७।। दो आहुती के संबंध में कमल नयन प्रभुजी संकल्प करके यत्र इत्यादि मंत्र को पढ़त ही प्रभुजी वनस्पति होम करें हैं ।। मौन सूं एक काष्ट को हवन कर फिर दूसरे काष्ट को हू हवन करके फिर अग्नि के चारो ओर सिंचन करें हैं ।। फिर संकल्प करके दशवार गायत्री जप करें हैं ।। फिर मंत्र को पढ़त ही दक्षिण हस्त की श्री अंगुली सूं भ्रू के मध्य में की कंठ में विभूती की बिन्दु करें हैं ।। फिर प्राण प्रभुजी प्रार्थना करके अपने गौत्र भारद्वाज को कहत अपने प्रवरन को हू कहत विलास पूर्वक प्रणाम करें हैं ।।५२।। अग्नि, गोवर्द्धनधारी देव, देव तथा अंगीरा, वृहस्पती, भारद्वाज यह प्रभु के प्रवर है ।। ऐसे उच्छलित हर्षवारे सुजान विद्वान कहें हैं ।।५३।। आहुती पाक के होयवे पर जगत्प्रभुजी अग्नि की रक्षा अर्थ सूखे उपलान को वामे डारके बाहिर पधारें हैं ।। यदि आहुती पाक भयो न होय तब बाहिर पधार के सब कार्यन में सावधान प्रभुजी श्री अंगन में धरवे लायक चक्रादि मुद्रान को धरें हैं ।। प्रतिपदा के दिन नित्य होम को करके फिर दृष्टि को करें हैं ।। वामे प्रथम संकल्प करें हैं ।। पीछे पीरे अक्षतन को लेके वा कुंड की सीमा में तल में विलास पूर्वक अलंकृत करें हैं ।। पीछे पूर्व कि उत्तर अग्रवारे सोलह कुशान कों धरें हैं ।। विनको धरके उत्तर दिशा में शास्त्र रीति सूं ६ छे पात्र स्थापन को करें हैं ।। फिर हमारे प्राणनाथजी दक्षिण दिशा में ब्रह्मा को स्थापन करें हैं ।। कुंड के मध्य में लोहे की चुल्ही धरें हैं ।। वामें जल सहित पान धरें हैं ।। जब जल तातो होय जाय वामें चार मुठी प्रमाण तंदुलडारें हैं, पकावें है ।। या समय में कबहू श्री प्रियवरजी श्रीनाथजी के मंदिर में पधार के वहां कोई सेवा कार्य करके वेगा फिर आवें है ।। भात के सिद्ध होने पर पात्र को उतार नीचे धरें हैं ।। तीन वार सकोरा में डारें हैं ।। विनसूं भरे सकोरा को ले ले भात सूं होम करें हैं ।। फिर घृत सूं जयादि होम करें हैं ।। पीछे श्री मुख्य स्वामिनीजी यहां पधारें हैं ।। अपने श्री हस्त सूं पूर्ण पात्र में ठहरे जल को

वा प्रियाजी के श्री हस्त में डारें हैं ॥ वा जल सूं अपने श्री मस्तक में तथा श्री बहूजी के मस्तक में मार्ज्जन करें हैं । फिर श्री बहूजी रसोई घर में पधारें हैं ॥ तब अग्नि को प्रार्थना करें हैं ॥ फिर अपने गोत्रादि को कहकर अग्नि को प्रणाम करें हैं ॥ ता पाछें वा भात को रसोई घर में ले जाय है ॥ श्री बहूजी वामे सूं रंचक विलास पूर्वक लेवे है ॥ श्री कल्याण भट्टजी कहें है कि जब प्रभुजी श्री गोवर्द्धनजी में पधारें हैं तब प्राणनाथजी अग्नि को काष्ट में मंत्र सूं लगाय के वंश के खंड बीच धरकें ले जाय है ॥ शुद्ध ब्राह्मण लेके जाय है ॥ वहां लौकिक अग्नि धरके वामें याकूं धरकें श्री प्राणनाथजी होम करें हैं ॥ ऐसे प्रतिदिन ही वामें अग्नि धरकें वामें होम करें हैं । जब प्रभुजी श्री गोकुल में पधारें हैं तब हू ऐसे ही काष्ट में लगाकर ले जाय है ॥ यदि वा अग्नि को कोऊ अशुद्ध परस कर लेवे है तब तो सगरे धर्मन के रक्षक प्राणप्रभुजी मंथन कर अग्नि को प्रगट करके वामें यथाविधि शास्त्र अनुसार होम करें ॥६८॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदये दशम कल्लोले भाषानुवादे षोडश तरंगः ॥१६॥

दशम कल्लोलजी

## सप्तदश तरंगः ॥१७॥

अथ दशम कल्लोले सप्तदश तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **अथ होम गृहाभ्दगवान निसृस्तैतत्पुरः पीढे**

**त्रिछारिका मनुमुदोष विशति मुद्राविधारणं कर्त्तुं ॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें कि भगवान गोकुलाधीशजी ता पाछे होम घर सूं बाहिर पधारके होम घर के आगे तिवारी में पीढा पर हर्ष सूं मुद्रा धरवे लिये विराजे है ॥१॥ वहां खवासजी वायें हाथ की हथेली पर दक्षिण हाथ सूं गोपीचंदन कों घिसके अत्यंत छोटे पात्र में धरे हैं ॥ वैसे ओरहू छोटे पात्र में चक्रादि मुद्रा धर राखे है ॥ प्राणनाथजी तो बाये श्री हस्त की तली में या गोपीचंदन को धरके गहरो होय तो दक्षिण श्री हस्त सूं पास धरी पीतल की कलशी सूं जल लेकर वाको विशेष गीलो करके मुद्रा को लेकर

वा वा अंग में विलास चतुरता सूं सुन्दर ही लगावे है ।। श्रीनाथजी की आर्ती को समय गुजर न जाय या विचार सूं हृदय उत्साह सूं साहस करे हैं ।।६।। श्री हमारे श्री महाप्रभू जी की आज्ञा सूं श्री रघुनाथ लाल जी के पुत्र देवकी नंदन जी ने अपने किये श्लोकन सूं मुद्रा धरवे को प्रकार कह्यो है ।। फिर महाप्रभुजी ने वे श्लोक सुने हू है तासूं आदर पूर्वक हौं कहू हू ।। दक्षिण भुज मूल में ऊंचे चार चक्र लगावे नीचे दोय नाम मुद्रा लगावे ।। विनके बीच एक शंख लगावे ।। पीछे वाके पसवाडो में दोय दोय कमल लगावे ।। वाये भुज मूल में चार शंख लगावे ।। दोय नाम मुद्रा नीचे लगावे बीच में चक्र लगावे दोनों ओर दोय दोय गदा लगावे ।। मस्तक में एक गदा लगावे ।। नाम मुद्रा लगावे ।। हृदय में तीन तीन चक्र लगावे मध्य में दोय दोय शंख लगावे ।। हृदय के पाश्र्वो में की स्तनों के ऊपर भुजा जैसे गदा और पद्म लगावे ।। दोनो कानों के नीचे तीन तीन चक्र लगावे ।। वैसे और तिलको में एक एक चक्र लगावे ।। संप्रदाय मुद्रा तो शिष्टानुसार इच्छानुसार लगावे परंतु यामे नियम नहीं है ।। इतने समय सूं गोपी वल्लभ नाम भोग को समर्पण करके श्री प्राणनाथ जी श्रीनाथजी को जो अत्यंत प्यारो है ऐसो ग्वाल भोग को हू समर्पके अपने भक्तन के मनोरथ को पूरण करते बाहिर पधारे हैं ।।१५।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे सप्तदश तरंगः ।।१७।।

### दशम कल्लोलजी

## अष्टदश तरंगः ।।१८।।

अथ दशम कल्लोले अष्टदश तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **वस्तू नितस्या सिहासन निकट स्थापितान्युपानीय**
**आंतर मृत्येन वदाम्य वधत्त सुबुद्दयः साधु ।।१।।**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें है कि अयि सुबुद्धयेः हे सुन्दर बुद्धिवारे श्रोताजन, भीतरिया ने लायके जे वस्तु श्रीनाथजी के सिंहासन पर धरे हैं सो वर्णन करूं हूं तुम सावधान होवो ।।१।। दोय मनोहर छोटी सोना की थारी कि चांदी की धरे हैं ।। एक काष्ट को छोटे पीढ़ा धरे हैं ।। सुंदर

दोय पोंछवे के वस्त्र धरे हैं ।।२।। दूध की फेन करवे लिये तीन मथ काष्ट रई हू धरे हैं ।। दूध को पीत्तल को बड़ो पात्र और एक चांदी को हू धरे हैं ।। सुंदर मिश्री सूं भर्यो एक सोना को पात्र धरे हैं ।। एक पंखा धरे हैं ।। एक पीतल को बड़ो उत्तम पात्र धरे हैं ।।४।। श्रीनाथ जी के आगे धरे गोपीवल्लभ भोग को सराय के ठाड़ो रहे हैं ।। श्री गोकुलपती उछलित प्रेम सूं श्रीनाथजी को दोय बीड़ा अरुगाय रहे हैं ।। दूध लाने वारे गोप जो रात्री के चोथे प्रहर में खिरक में जाय के गायन को दूह के वा दूध को छन्ना सूं छान के पवित्र वा दूध को दूधघर में ऊपलान की आंच के ऊपर बड़े पात्र में धरके चिर पर्यंत सुन्दर ओटावे है ।। सो सुन्दर ओट जाय है ।। सो ग्वाल न्हाय के शुद्ध वस्त्र पहिर के अशुद्ध के स्पर्श को न करत ही अपने समय को जानके वा दूध को लायके आय जाय है ।। वा दूध के बड़े पात्र को लेके जल जलधरा में बाहिर ठाड़ो राजाधिराज जय जय जय जय राजाधिराज ऐसे कहत अपने आने को जतावे है ।। श्री महाप्रभुजी वाके शब्द को सुन कर वेग ही वाकूं भीतर बुलावे है ।।१०।। सो ग्वाल तो वितने सूं ही अपने को कृतार्थ मानत ही भीतर जायके श्री नाथजी के दक्षिण ओर धारण करे टेरा के अत्यंत पास ही काष्ट के सुन्दर पीढा पर वा दूध के बड़े पात्र को धरे हैं ।। अत्यंत छोटे सुन्दर सिंहासन पर विराजमान श्री नाथजी के पास ही सन्मुख हमारे प्रियवर जी विराजे है ।। वा श्रीनाथजी के नासा मोती को बड़ो कर लेवे है ।। एक थारी सोना की कि चांदी की वा गोप के आगे पीढ़ा पर धरे हैं ।।१४।। कोई भीतरिया सेवक तो टेरा के पास ही ठहरे हैं ।। अपने कूं ओट में राख के बैठ रहयो जो गोप है सो तब सावधान होय के सोना के पात्र मे स्थित उज्वल मिसरी कों, वा दूध के पात्र में डारके वा पात्र कूं वारंबार हिलोरे हैं ।। फिर मंथसोरई सो आछी रीत सों दूध को मथे है ।। तासूं भली भांति सूं सघन फेन कि घैया को उठाय के वासूं ही श्री नाथजी की थारी कूं भरे हैं ।। भीतरिया सेवक तो वा थारी को प्रभुन के श्री हस्त कमल में समर्पे है ।। प्राणनाथ जी तो श्री नाथजी के आगे धरके सो घैया श्रीनाथजी को प्रेम सूं पान करावे है ।। बाकी रहे को पीतर के बड़े पात्र में डारे हैं ।। फिर वा थारी को पीढ़ा पर धरे हैं ।। ग्वाल तो दूसरी थारी में घैया करके परोसे है ।। तब भीतरिया वा थारी को प्राणनाथ के श्री हस्त

में पधरावे है ।। सो प्रभुजी श्री नाथजी के आगे धरे हैं ।। वा घैया को पान करावे है ।। बाकी रहे को पीतल के बड़े पात्र में डारे हैं ।। प्रभुन ने पहली थारी पीढ़ा पर धरी हती वाकू भीतरिया वस्त्र सूं पोंछे है ।। तामें सो ग्वाल फिर परोसे है ।। भीतरिया श्री राज के श्री हस्त में पधरावे है ।। सो श्री राज वा थारी को पहले जैसे श्री नाथजी के आगे धरे हैं, पान करावे है ।। भीतरिया तो पोंछवे के वस्त्र सूं पोंछी दूसरी थारी में घैया ग्वाल सूं परोसवावे है ।। फिर प्रभुन के श्री हस्त में पहले जैसे पधरावे है ।। प्रभुजी हू प्रेम सूं श्री नाथजी को घैया पान करावे है ।। बाकी पीतल के बड़े पात्र में डारे हैं ।। चिर पर्यंत अनेकवार ऐसे घैयापान करावे है ।। या समय में वा ग्वाल के संग वा वा गाय बैल बछरा आदि की कि भैसन की तथा और हू वार्ता कृपा विशेष सूं प्रिया जी करे हैं ।। ऐसे मथन किये दूध को पीतल के पहले कहे बड़े पात्र में राखे है ।। वाकूं पीतल के पात्र सूं शीतल करे हैं ।। फिर चांदी के कटोरा में वाकूं धरे हैं ।। वामे सोने को पात्र डारे हैं ।। तब प्रभुजी जो जो नहीं चाहिये वा सबकू दूर करे हैं ।। दूध तो श्री नाथजी के आगे पान करवे कूं प्रेम सूं अर्पण करके वा स्थान सूं उठके श्री हस्त कमलन को पखार के पुत्रवर श्री गोपाल जी को आज्ञा करे हैं कि तुम यहां सावधान रहियो हों बाहिर पधारू हूं ।।३१।। जब इतनो घैया को अरूगावनो श्री राज आप नहीं करे तो श्रीराज को प्यारो पुत्र श्री गोपाल जी ही आपकी आज्ञा सूं उच्छलित प्रेम सूं करे हैं ।। बाकी दूध सूं धरे पात्र को कछुक क्षण पीछे सराय के हाथ सूं जल देके वा सगरी भूमि को भली भांति सूं मार्ज्जन करे हैं ।। हाथ फेरे हैं ।। प्रथम कहे वा सगरे प्रकार को करके दोय बीड़ा अरुगवाय के श्री नाथजी को बड़ो सिंहासन पर पधरावे है ।। नासा मोती हू फिर पहिरावे है ।।३५।। फिर प्राणनाथ जी प्रेम सूं धरायो श्रृंगार भोग ही श्री नाथजी के आगे आवे है ।। वाकी सामग्रीन को हों कहू हू ।। कि तंदुल सहित मनोहर खीर आवे है ।। सो पड़गी के ऊपर धारण कियो है सुंदर घृत और स्वेत मिसरी के सहित है ।। सोना रूपा के वासनन में धरे मीसरी में पगे अनेक पकवान आवे है ।। यह सब पीरे रेशमी वस्त्रन सूं ढापे है ।। यह श्री गिरिधारी जी के दक्षिण दिशा में धरे हैं ।। सिंहासन के पास बाये भाग में जल पात्र झारी जी विराजमान रहे हैं ।। जो भोग, भोग में बड़ी करके फिर सुन्दर शीतल जलसूं भरी जाय

है ।। जा पर भीतर श्वेत वस्त्रन सूं मिले लाल वस्त्र सूं मनोहर नेवरा रहे हैं ।। या अवकाश में जलघरिया जी तो राजभोग में वांछित वा वा पात्र में धरे दूध दही आदि को सबको विहंगीकासूं छीक्केन सूं लेके या जलघरीया के संग ही आवे है ।।४२।। प्रायः प्रियपुत्र श्री गोपाल जी कि विट्ठलराय जी वा भोग सामग्री को सरावे है ।। गिरधारी जी को आचमन करामे है ।। श्री मुख पोंछवे को कोमल वस्त्र समर्पे है ।। सुन्दर दोय बीड़ा अरुगावे है ।।४४।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोद भये दशम कल्लोले भाषानुवादे अष्टादस तरंगः ।।१८।।

### कल्लोल जी दसम

## तरंग ।।१९।।

अथ दशम कल्लोले उन्नीसमो तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **प्रायोथाम्ये तिहरिः कृत मुद्रा धारणः स्वयं भगवान्**
**श्री नाथस्य विद्यातुं श्रृंगारात्रीकं प्रेमणा ।।१।।**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि प्रायः या समय में ही स्वयं भगवान श्री प्राणप्रभुजी मुद्रा धारण करके प्रेम सूं श्री नाथ जी की श्रृंगार आर्ती को करवे लिये यहां श्री नाथजी के मंदिर में पधारे हैं वहाँ कितने तो राज के मनोहर यश सूं खिंचे आये हैं ।। और कितने तो प्रिय के वा वा गुणन सूं बांधे ही आये हैं ।। कितने तो राज के कटाक्ष रूप बाणन सूं विंधे ही आये हैं ।। और कितने तो श्री राज के वियोग अग्नि सूं ही जराये हैं ।। और कितने तो श्री राज के मिलाप के रटना सूं पकड़े है और कितने तो श्री राज के प्रेम रूप प्रचंड पवन सूं कंपाये हैं ।। और कितने तो प्रबल उत्कंठा सूं जबर सूं ही अनंत वार विकल होय रहे हैं ।। ऐसे जे पूर्ण चंद्रमा के हू विजय करवे वारे जिनके मुख हैं हरिण सूं हू सुन्दर जिनके नयन है ऐसी कोमल श्री अंगवारी अनेकान भक्त सुन्दरी की संख्या सहित अनेकान भक्त सुन्दर दास है जे आपके अटारी में कि मार्ग में कि सीड़ी में कि द्वार में कि अटारी के नीचे श्री जगमोहन में कि जलघर में वैसे और और हू स्थानों में या प्रभु के दर्शन अर्थ ही ठहरे

हैं ।। विन सबन कू श्री प्राणनाथजी अपने दर्शन रूप कल्पवृक्ष के सुन्दर पके फलन के श्रेष्ठ रस सागरन सूं सिंचन करके जीवनदान कर रहे हैं ।। कि मंद हास्यरूप अमृत के समुद्रन सूं न्हवाय रहे हैं ।। कि विनके कानों में वचन रूप अमृत के समुद्रन को निरंतर जटित कर रहे हैं ।। कि विनके मनोरथ समूहन को श्री मुख की प्रसन्नता रूप हस्त कमलन सूं पूरण कर रहे हैं कि आनंद के समुद्र समूहन में बिहार कराय रहे हैं ।। इनके मुख कमल के सुगंधी सूं सुगंधित अनेक बार उदय होय रहे जय जय जय शब्दन को सुन रहे हैं ।। अनिर्वचनीय प्रकार सूं इन सबन को ही चमत्कारवारो कराय रहे हैं ।। या रीति सूं श्रीनाथजी के मंदिर में प्रभुजी पधारे हैं ।। तब खवास जी पीतल की कलशी के जल सूं श्रीराज के श्री चरण कमल पखारे हैं ।। तब कृपा रस सूं भरे वेगावेगी मंदिर के भीतर पधारे हैं ।।११।। वहां श्री हस्त कमलन को पखार के सुन्दर श्वेत वस्त्र जामे बिछायो है ऐसे सुन्दर सिंहासन पर बिराजमान शोभायमान श्री नाथजी को निरखे है ।। श्री नाथजी के आगे सोना रूपा माणिक के काष्ट के कि हाथी दांत के कि अनेक प्रकार के चक्री, भ्रमरी, गेंदू, चातक, चरक आदि तथा चोपड़ शतरंज गंजफादि अनेक प्रकार के खिलोना धरे हैं ।। विनकी ओर हू आप निरखे है ।। तब महाप्रभुजी की इच्छा को जानके कोई भीतरिया सेवक किंवाड़ उघाड़े है ।। तब जे प्राणनाथजी की बैठक में कि अटारी में कि भंडार में कि जलघरा में जगमोहन में कि गलीन में जे ठहरे हैं वे सगरे ही वेगावेगी मंदिर में आय रहे हैं ।। और कितने भाग्य भरे तो श्रीनाथजी को कि श्री प्राणनाथजी को निरखत ही और ठौर में ठहर के ही अछे रहे हैं ।। सब श्रेष्ठ बुद्धिवारे हैं ।। प्रेम नम्रता सूं सुन्दर शोभायमान है ।। उत्कंठा उत्साह सूं उज्वल प्रकाशवारे हैं ।। तब गुणनिधि श्री प्राणनाथ जी प्रसर रही सुगंधी वारी रायवेल, चंबेली आदि की कि बसंती फूल कुंद कि चंपादि की माला को प्रेम सूं श्रीनाथजी को पहिरामे है ।। या समय में विट्ठलराय जी कि कोई भीतरिया सेवक कि पुत्रवर सो श्री गोपाल जी ही दर्पण को बड़े आदर सूं उठाय के श्री प्राणनाथ जी के श्री हस्त कमल में अर्प्पण करे हैं ।। सो श्री प्राणनाथ जी के दक्षिण ओर आप विराजमान है ।। चतुरता सूं अपनो प्रतिबिंबित श्री मुख को निरख के फिर श्री नाथजी को सो दर्प्पण दिखावे है ।।२२।। प्रिय श्री प्राणनाथ जी या दर्प्पण में श्री नाथजी

को प्रेम सूं अपनो श्री मुख प्रतिबिंब दिखावत ही वा श्रीनाथजी के प्रतिबिंब को स्वयं हू निरखे है ॥२३॥ रस भरे भ्रू वारी ब्रज सुन्दरी जन जैसे अपने मुखसूं हू सुन्दर श्रीराज को मुख है यह जाने है ॥ वाके देखवे की इच्छा राखे है, ऐसे श्री नाथजी हू अपने श्री मुख सूं हू सुन्दर तो श्री गोकुलाधीशजी को ही श्री मुख है सो वाके ही देखवे की इच्छा राखे है ॥२४॥ जासू यह ब्रज सुन्दरी जन सुन्दर विराजमान मुख को दर्प्पण में देखके परीक्षा करे है ॥ तासूं चतुर वे वा दर्प्पण को हू प्रभुन के सन्मुख करे हैं ॥ हमने यासूं परीक्षा कियो है हमारे मुख सूं तुमारो मुख सुन्दर है यह तुम हू देखो ॥२५॥ अथवा दर्प्पण ही ऐसो विचारे हैं कि जा श्रीराज को परम कोमल हस्तकमल को स्पर्श रसिक चंद्रमुखीन के कपोलन को हू सुलभ नहीं है ऐसे वा श्री हस्त कमलन में श्री राज ने मोकूं उठाय के कृतार्थ कियो है ॥ तासूं उच्छलित हर्षवारो होय के स्वयं तथा और सब यह जाने है कि सब पुरुषार्थन को मुकुटमणी तो श्रीराज के मुखारविंद को दर्शन है यह जानके तब ही वा सब ब्रजजन के आगे वा श्रीराज के श्रीमुख के दर्शन को ही भेट करे हैं ॥ तब वे ब्रज भक्त जन वा दर्प्पण को हू अपने ऊपर प्रसन्न होय रह्यो जानकें अत्यंत प्रसन्न होयकें वा प्रिय के प्रति हू वा दर्प्पण को दिखावें हैं कि यह दर्प्पण ऐसो उपकारी है तासूं गुणसागर श्री प्राणनाथ जी हू या दर्प्पण पर प्रतिबिंब के बहाने या पर अत्यंत प्रसन्न होयके सगरे अंगन सूं ही अत्यंत गाढ़ आलिंगन वेगी करे हैं ॥ फिर देयवेवारे के हाथ में वा दर्प्पण को देवे है ॥३०॥ तब भीतरिया श्रीनाथ जी के सिंहासन के आगे तीन चौकी धरे हैं ॥ तब भगवान श्री प्राणनाथजी मध्य की चौकी पर चोपड़ के गोटी पासा हाथी दांत के धरे हैं ॥ अथवा शतरंज गोटी धरे हैं ॥ या चौकी के एक चौकी बाये और तथा ऐक चौकी दक्षिण और धरे हैं ॥ वा दोनों चौकी पर बड़े मोलवारो वस्त्र बिछाबे है ॥ ता पर लाल मखमल की बड़े मोलवारी गादी बिछावे है ॥३४॥ श्रीनाथजी के पीछे, पीछे की भींत पर हू सुन्दर मनोहर चित्रवारी पिछवायी बड़े मोलवारी बाँधी, शोभायमान है ॥ भक्तन के नैनन को आनंदित करे हैं ॥३६॥ वर्षा समय में कि गरमी के दिनन में श्रीनाथजी तिवारी में विराजमान होय है ॥ याके आंगण में प्राणनाथ जी वर्षा की गरमी के निवारण अर्थ अनेक चित्र वारो बड़ो मनोहर चंदवा बंधावे है ॥ **महावन के रहवे वारे मीठे कंठ स्वरावारे कबहू**

और गाम के हू बहूत कीर्तनिया ब्राह्मण प्रभुन के प्रसन्न करवे लिये, परमानंद, कि सूरदास, कि कुंभनदास, कि गोविंदस्वामी के रचना किये भगवत् लीला के वर्णन वारे मनोहर पद कीर्तन गावे है ॥ तब गुणनिधान श्री प्राणनाथजी के हस्त कमल में सजाय के भीतरिया आर्ती देवे है ॥ श्रीराज श्रीनाथ जी के आगे आर्ती वारे हैं ॥ घंटा झालर संग बजे है ॥ श्रीराज तो कृपारस सूं भरी अपनी दृष्टि सू अपने सगरे जनन को सिंचन करें हैं ॥४२॥ तब प्रथम जैसे शोभा भरे श्री मुखारविंद सूं कि दोनों कपोलन सूं कि हृदय स्थल सूं कि दोनों कुंडलन सूं कि दोनों भुज दंडन सूं कि अधर पल्लव सूं कि अंगुलीन सूं कि मुद्रिकान सो ऐसो कोऊ बड़ो चमत्कार उछले है ॥ जा बड़े या चमत्कार को अबलोंहू सगरे हू भाग्यवान नयनों सूं भीतर धरके ही शोभायमान होय रहे हैं ॥४४॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे एकोनवीस तरंगः ॥१९॥

दशम कल्लोलजी

## बीस तरंगः ॥२०॥

अथ दशम कल्लोले बीसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **अथ सतदांतर सेवक हस्ते प्राणेश्वरः समर्प्पद्राकु**
**प्रणमती भूमि शिरसा स्पृशन कृपां भो निधिर्नाथम् ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि ता पाछे श्री प्राणनाथ जी आर्ती को भीतरिया सेवक के हाथ में देके सिर सूं भूमि के परस करत ही कृपानिधि जी श्रीनाथजी के आगे प्रणाम करे हैं ॥१॥ ता पाछे प्राणनाथजी दोनों ही हस्तकमलन को पखार के रसोई घर में पधारे हैं ॥ वहां श्री प्राणप्रभुजी अक्षर अक्षर में हजारन अमृत समुद्रन को वरसावत ही विलास सूं सुन्दरता पूर्वक परम मंगलरूप श्रीमती श्री बहूजी सूं पूछे है ॥ अहो सामग्री करवे में अती चतुर शुभवती श्रीमती जी ने आज का का सिद्ध कियो है ॥ ऐसो वचनामृत पान कर सो श्री प्रिया जी हू उछलित प्रेम नम्रता पूर्वक जो जो कियो होय सो सगरो ही विनय कर जनावे है ॥ तब हू तीनो लोको के प्रभु श्री प्राणनाथ

जी मंदमुसकान सूं शोभायमान श्रीमुख कमलसूं कछूक और हू सिद्ध करवे लिये वा प्रिया जी को मान देकर आज्ञा करे हैं ॥ यह आज्ञा सुनके वाकूं मान देके प्रसन्न चित्त सूं यह श्री पार्वती बहूजी हू वा वा सामग्री को करवे लिये प्रारंभ करे हैं ॥ हर्ष सूं भरी बेटा कि बेटान की बहू पार्वती बहूजी को साहस करावत ही परम चतुर विनके संग वेग ही वा वा सामग्री को तैयार ही कर लेवे है ॥ आपके विलास भरे सुन्दर आगमन को देखकर प्रसन्न होय रहे भक्तजन सुन्दर मुख कमलन सूं जय जयकार कर रहे हैं ॥ तब श्री प्राणनाथ जी वेगा श्रीनाथ जी के मंदिर में पधारे हैं ॥ वहां श्रीराज जी अपने श्री हस्त कमल में माखी निवारण करवे वारे वस्त्र को लेकर या श्रीनाथ जी के आगे माखीन को निवारण करे हैं ॥ कबहू तो मोर पंख को पंखा लेके या श्रीनाथ जी को पंखा करे हैं ॥ श्री नाथजी के आगे धरे खिलोना समूह सूं कबहू चक्री को उठाय के वाको अनेक प्रकार सु फेंकत ही बहूत प्रकार सूं खेल करे हैं ॥ दोय चिरैया को बजावे है ॥ कि कबँहू झून झुना को बजावे है ॥ कोई समय तो मधुर शब्द कर रही बग्गी को फिरावे है ॥ पात्र में मनोहर दोय तीन भ्रमरी को फिरावे है ॥ कोयल को आलाप करामे है ॥ चातक को अत्यंत मधुर आलाप करामे है ॥ मनोहर कूंजन सूं मिली चुह चुही को बजावे है ॥ कमल नयन प्रभुजी चतुरतासूं हस्त भ्रमरी को भ्रमावे है ॥१३॥ यह प्रभुजी बांये घोंटू के अग्र को तथा बांये चरण को भूमि में गिराय के दूसरे चरण को भूमि में धरके घोंटू को ऊंचो करके वग्गी भ्रमरी को लेके वग्गी में भ्रमरी को धरके दक्षिण हस्त कमल सूं भ्रमरी के डोरा को खेंच के या वग्गी कू फेरे हैं ॥ सो हू ऐसी फिरे है कि याके गुंजार ध्वनी सो सगरो मंदिर भर जाय है ॥ सगरे भक्तजन ही बड़े चमत्कार हर्ष को प्राप्त होय है ॥ श्री प्राणनाथ जी तो वा फिरती वग्गी को दक्षिण श्री हस्त में लेके श्रीनाथ जी के पास आयके दिखावे है ॥ या प्रकार सूं बहुतवार करे हैं ॥ पूर्ण चन्द्रमुखी तो चतुरता सूं उच्छलित कटाक्ष रूप अमृत के समुद्रन सूं राज को न्हवाय देवे है ॥१९॥ अहो अपनी मधुरता सूं लाखन अर्बन अमृत के समुद्रन को विजय करवे वारी सर्वोपरी विराजमान श्री गोकुल महा महेन्द्र को यह मनोहर स्वरूप है, याके अनुभव की इच्छा सगरे भक्तन कूं रहे हैं ॥ तथा सगरी हरिणलोचनान कूं रहे हैं ॥ तथा श्रीनाथ जी को हू रहे हैं ॥ सो ऐसो महा दुर्ल्लभ महा

रसात्मक स्वरूप रस सागर वा श्री राज ने या सबन के आगे ही प्रकाश कियो है ॥ मेरे द्वारा हू श्री आप महाप्रभुजी ही प्रकाश कराय रहे हैं ॥ और प्रकार सूं यह रसमय स्वरूप को प्रकाश नहीं होय सके है ॥ अहो हे मेरे प्राणप्रिय के प्यारे भक्तजन यह महाप्रभुजी अपनी श्री बैठक जी में कि कहूं अन्य स्थल श्री गिरिराजजी कि श्री वल्लभ घाट कि श्री हवेली जी में कि कोई निज्जन के घर में विराजमान तो होयगे ही ॥ तुम तो प्रभु के कृपापात्र हो ही तासूं अपने चरण कमल की रज पराग के सेवक, मेरे को वा प्रभु को अत्यंत दुर्ल्लभ सो महा रस मय स्वरूप फिरके दर्शन कराय देवो ॥२४॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे वीस तरंगः ॥२०॥

### दशम कल्लोलजी

## एकबींस तरंगः ॥२१॥

अथ दशम कल्लोले एकबीसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **एवमपरे रवि क्रीडन कैरेषदि व्यति श्रीमान्**
**हंत कदापि श्री मद्गोवर्द्धनाद्रिभृतः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं -- ऐसे और हू खिलोनान सूं यह श्री महाप्रभुजी कबहू खेले है ॥ कबहू तो श्री गोवर्द्धनधारी जी को वस्त्रन को ट्रंक यहां रहे हैं वाकूं लेके डोल तिबारी में प्राण प्रियजी विराजमान होय के श्री गोवर्द्धननाथ जी के पहिरवे लायक वस्त्रन को वहां पठायवे लिये विनको समारे हैं सुधारे है ॥ वा तिवारी में आपके विराजवे कूं भीतरिया ने धर्यो मनोहर बड़ो लंबो श्रेष्ठ काष्ट को वन्यो सुन्दर पीढ़ा सिद्ध रहे हैं ॥ वाके पास छोटे बड़े सुन्दर अनेक रंग के काष्ट के श्री गोवर्द्धनधारी जी के अनेक प्रकार के वस्त्रन सूं भरे ट्रंक पेटी हू वहां शोभायमान है तथा जिनसूं वस्त्रन को मर्दन कियो जाय है ॥ जासू सुन्दर कोमल होय है ऐसे बहुत शंख यहां रहे हैं ॥ कि कौड़ी हू कितनी रहे हैं तथा वस्त्रन के सुन्दर कोमल करवे में उपयोगी कि मर्दन करवे में उपयोगी बहुत पत्थर तथा कांच साधन बहुत ही रहे हैं ॥ छोटी मोटी छुरी तथा कतरनी हू रहे हैं ॥ वहां एक जल

को भर्यो पात्र हू रहे हैं ।। तथा प्रमाण को दंड हू रहे हैं ।। लोकन की दृष्टि यहां नहीं परे ऐसे आगे धरवे की पलंगडी हू यहां रहे हैं ।। यहां बिछे आसन पर पश्चिम मुख होयके प्रभुजी विराजे है ।। आपके सन्मुख श्री गोपाल जी कि अथवा कोई भीतरिया सेवक रहे हैं ।। श्री महाप्रभुजी पीढ़ा पर वस्त्र कूं धरे हैं ।। पात्र में स्थित जल को श्री हस्त में लेकर वा वस्त्र कूं सिंचन करे हैं ।। पाछे श्री हस्त सूं वा वस्त्र को एक अंचल लेके दूसरो अंचल गोकुलदास भीतरिया के हाथ में देकर वासू वा वा वार्तान को करत वा वस्त्र को मिलावे है, घरी करे हैं ।। गोकुलदास तो वा घरी को कुट्टन दंड सूं कूटे है ।। कबहू तो श्री महाप्रभुजी पीढ़ा पर वस्त्र को धरके वस्त्र मर्दन करवेवारे पत्थर सूं कि मनोहर शंख सूं सुन्दर कौड़ी सूं वा वस्त्र को ऊंचो नीचो मर्दन करे हैं ।। कबहू तो श्री गोवर्द्धन धर जी के सुन्दर बड़े मोल के वस्त्र के जामा सुथन आदि कतरनी सो कतर के सिद्ध करे हैं ।। ऐसे श्री गोवर्द्धन धारी जी के तकिया सुन्दर बिछोना पाग आदि के अनेक कार्यन को उछलित प्रेम सूं प्रियवर जी करे हैं ।।१०।। श्री गोपाल जी रसोई घर में जायके राजभोग के समर्पण योग्य समय को भयो विचार के वेगि आयके सिंहासन के आगे धरी एक चौकी को उठावे है ।। या समय में ही उछलील प्रेम सागर श्री गोकुलाधीश जी वा तिवारी सो उठके वेगा भीतर आयके दूसरी चौकी कि तीसरी चौकी को उठावे है ।। सगरे खिलोनान को उठावे है ।। रस सुन्दरीन को सगरे भक्तन कों हू या स्थान सूं नैन की सैन सूं वेगी जायवे लिये सूचना करे हैं ।। समय के जानवे वारे बेहू बड़े यत्न सूं मुरक-मुरक के प्रभु के श्री मुख चंद्रमा को फिर फिर निरखत ही वेगि निकरे हैं ।। जे पूर्ण चंद्रवदनी प्राणनाथजी के सर्वोपर विराजमान स्वरूप सूं निरंतर बंधी हैं वे तो निकासवे में समर्थ नहीं है तासूं बिलंब करे हैं ।। विनको हू वेगि जावो ऐसो प्रेम क्रोध सूं मिल्यो कि झूठे बांके भ्रु करवे सूं शोभायमान जो प्रिय को वचन है सो वेग निकारे हैं ।। श्री प्राणनाथ जी वेगि किवाड़ लगाय के सिंहासन के आगे वारे बिछोना वस्त्र के भाग को संकोच कर धरे हैं ।।२७।। या समय में भीतरिया रसोई घर सूं लेकर सिंहासन पर्यंत सगरे मार्ग को गोवर मिले जल सूं पवित्र करे हैं ।।२८।। फिर सिंहासन के आगे काष्ट की मनोहर चार चौकी राखे है ।। इनके ऊपर बहुत पातर धरे हैं ।। सिंहासन आगे चार कि पांच पीतल की कि काष्ट की

पड़गी धरे हैं ।। श्रीनाथ जी के बाये भाग में पान योग्य शीतल जल सूं भरी लाल वस्त्र के कंचुक नेवरा वारी सुन्दर झारी धरे हैं ।। पहेले जो श्रीनाथ जी के कंठ में जे फूल माला है वाकू बड़ो करे हैं ।। तब उछलित प्रेमसागर श्री गोकुल राज जी श्रीनाथ जी के आगे वेगि धूप उखेवे है तथा दीपक हू करे हैं ।। या प्रकार सूं प्राणनाथ जी राजभोग के प्रथम अंग को सगरो सिद्ध करके श्रीनाथजी के मंदिर सूं प्रेम सूं मक्षीकान को निवारण करके टेरा देकर भ्रु विलास सूं सगरे सेवक भीतरियान को हू बाहिर करके श्रीनाथ जी के मंदिर को अकेलो भयो देखके पत्रन के सहित रसोई घर में पधार के वहां श्रेष्ठ भाग्यवती श्री मुख्य स्वामिनी जी ने परोसे छोटे मोटे अनेक प्रकार के पात्रन को पुत्रन के संग स्वयं श्री महाप्रभुजी श्रीनाथ जी के घर में लावें हैं ।। प्रथम धरी चौकीन पर श्री हस्त कमल सूं रीति सो धरे हैं ।। घृत पक्व जो अनसखरी है सो न्यारो एक चौकी में धरे हैं ।। समयानुसार पड़गीन पर हू धरे हैं ।। अहो भक्त जनाः राजभोग में जे सामग्री आवे है सो सगरी सामग्री को तो कोई हू सुन्दर बुद्धिवारो कहवे में समर्थ नहीं होय सके है ।। विनमें कछुक तो हौं कहूं हूं ।।३९।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे एकविंश तरंगः ।।२१।।

### दशम कल्लोलजी

## द्वाविंश तरंगः ।।२२।।

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ।। अथ बीसमो तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **अस्मानेतु १ मंजुर्याल २ सेश श्री रत्रवत् ।।३।।**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि -- रसोई घर में श्रीराज पधारे हैं ।। "सब सामग्री यह प्रार्थना करे हैं कि हे ईश -- महाप्रभो जो शोभा अत्यंत मनोहर है सो शोभा आपके द्वारा हमकूं प्राप्त होय" ।।१।। चणा के तुष रहित चून को धारण कर रही जो सुन्दर पकायी मनोहर रोटी है, अत्यंत स्वच्छ गाय के घृत सो अत्यंत ही भरी है ।। तथा गेहू के चून सूं सिद्ध करी रोटी है सो घृत सूं अत्यंत ही स्निग्ध है ।। घृत सो भरी है तथा सुखी हू

है सो सब आवे है ।। यहां घृत ही आवे है ।। घृत हू गाय को होय सो सद्य ही आंच सूं तपायो होय अत्यंत सुगंधी भर्यो मनोहर होय, प्रभुवर को रूचकारी होय है ।। मनोहर अनेक प्रकार के श्वेत चावरन सूं कियो उज्वल मनोहर औदन है कि भात है तथा यहां, सुन्दर आखे पक्के मूंगन सूं सिद्ध करी दार हू आवे है ।। अत्यंत मनोहर मिरची वारी उची दोय के तीन चार प्रकार की कढ़ी होय है ।। तथा मंगल मनोहर उच्छव के दिन में सुन्दर ओटे जल में पकाय के जल को निकार के सुंदर सेव होय है ।। वैसे छाछ में डूबे चंद्रमा जैसे सुन्दर कांतीवारे बड़ा होय है ।। वैसे चित्रवड़ा होय है ।। कि छाछ के बिना बूरा मिले कोरे बड़ा होय है ।। सुन्दर दहीं बड़ा हू होय है ।। यह बड़ा हू कोई कोई उच्छव के दिन में ही बढ़ रहे प्रेम सूं श्री महाप्रभुजी धरावे है ।। वैसे खंडमंडा होय है ।। कि मूंग तथा उरद के चीला होय है ।। उड़द की पीठी भरी सुन्दर पूरी कचोरी होय है ।। वैसे दोय कि तीन प्रकार की पक्कवड़ी होय है ।। दूध बड़ी होय है ।। सोंठ कारी मिरच पीपर मिलि तीनकूड़ा होय है ।। कोई दिन प्राणनाथ जी सुन्दर भात पर बेढमी धरे हैं ।। कोई दिन शिखरन भात होय है ।। कि खाटो भात होय है ।। के केसरिया भात होय है ।। आंबको कि आमरान को मनोहर खाटो मीठो बिलसारू होय है ।। वेसे गुड़ को आंबको बिलसारू कि गुड़को आमला को हू बिलसारू धरावे है ।। मीठे पक्के आंब को रस वस्त्र सूं छान के मिसरी सहित कोई दिन एसो सुन्दर आंबरस प्रेम सूं धरावे है ।। वैसे पक्के आंब हू धरावे है ।। मिसरी मिल्यो अधोटो दूध हू धरावे है ।। वैसे उज्ज्वल बांध्यो दही आवे है ।। वैसे मिसरी बूरा मिली मनोहर श्वेत झके शीखरीन आवे है ।। तथा जीरा हींग सो मिली रुचिकारी यहां छाछ आवे है ।। जंबीरी को नीबू को कि सुन्दर आंबन को अदरख को सुन्दर रुचिकर संधानो हू यहां प्रभुजी धरावे है ।। तथा रुचिकारी मनोहर खाटो टेटी को संधाना हू सुन्दंर सरसों के तेल में सिद्ध कियो आवे है ।। नीबूं के टूक हू लोन मिले आवे है ।। सुन्दर जीरा की बुकनी करी मिरची की बुकनी हू तथा लोन हू आवे है ।। साठी के चामरन की खीर हू थोड़े घी कि बरास सूं मिल्यो कि मिसरी सो मनोहर आवे है ।। कि सेव की वैसी खीर हू आवे है ।। तथा दूध में धीरे धीरे पकायो गेहू को दलिया, सो मिसरी बरास, घी सूं मिल्यो ऐसो संजाव की खीर हू श्री महाप्रभुजी धरावे हैं ।। प्राणप्रिय

जी बहुत माठ धरावे है ।। मनोहर बहुत प्रियांक धरावे है ।। सुन्दर माखन वड़ा कि मनोहर जलेबी सेव के बूंदी के कि बेसन के लड्वा हू मनोहर आवे है ।। फैनी है, खाजा है, कि कपूर नाडी है, कि उडद की मनोहर नाडी है ।। कि सुन्दर मेदा के लडवा कि मूग के चून के मनोहर मगद हू आवे है ।। सुन्दर मिसरी बूरा सूं सिद्ध इनकूं प्राण प्रभुजी धरावे है ।। खीर पेड़ा हू मनोहर आवे है ।। अत्यंत मीठी लापसी आवे है ।। सुन्दर मिसरी सूं सिद्ध मनोहर मोहन भोग आवे है ।। सुन्दर सुख पूरी शोभायमान होय है ।। सुन्दर मालपूवा आवे है ।। कि खंड़पापडी हू राज धरावे है ।। अनुकूल अंद्रसा आवे है ।। दहींथरा आवे है तथा लुचई की पूरी आवे है ।। चणा के चून के सेव मनोहर आवे है ।। कि गुणसागर श्री प्रभुजी चणा के चून के मनोहर लडवा हू धरावे है ।। अनेक वैभव ऐश्वर्य वारे महाप्रभुजी और हू अनेक प्रकार के बड़े मोलवारे अनेक पकवान धरे हैं ।। यहां जे माठ आदि पकवान कहें हैं सो सब दिनन में नहीं धरावे है ।। किंतु कबहू कोऊ कबहू कोऊ आवे है ।। तथा ऋतु अनुसार पिडालू कि आलू कि रतालू कि जिमीकंद कि कचालू तथा शक्कर कंद हू यह सब आवे है ।। विनके चकता सुन्दर पकाय के और हू अनेक प्रकार के शाकादि धरावे है ।। सुन्दर कोमल काकड़ी आवे है ।। कि खरबूजा आवे है ।। कि केला फल है कि फूट है कि खीरा है सुन्दर गुड को आंबरस आवे है ।। घी में तली अनेक कचरीया धरावे है ।। दोय तीन प्रकार के पेठा के पाक शाक आवे है ।। दोय तीन प्रकार के घी सूं पकाये कि हींग मिले वैंगन के चकता भुजेना भरता तले मामरेमा अनेक प्रकार के धरावे है ।। दोय तीन प्रकार की तोरयी घीया भेंडी परवर कोमल तुबा करेला वन करेला के शाक धरावे है ।। सेम फरी, सेंगर फरी, कोमल सुखे करेला, कचरीया पखरहु सुखो कि घृत में तल्यो तथा करमद की कंकोडा के मनोहर शाक उडद की फली की भींडी कि कचरिया कचनार सोहांजना आवे है ।। नवीन हरे चणा की मूंगन की वडी, मिसरी मिली सुन्दर खाटी मनोहर आवे है ।। तथा मिरच, मेथी, रायी, बथुआ, चूक पालक, सरसो के शाक आवे है ।। उडद की नाड़ी तथा सुन्दर मनोहर स्वादु बड़ी हू पहले जैसी धरे हैं ।। ऐसे श्रीनाथ जी के आगे सुन्दर अनेक प्रकार है ।। बिन सबन को श्रेष्ठ बुद्धिवारो जो होय सो कहवे में समर्थ नहीं है तो या वर्णन में मंद

बुद्धि हौं कोन हू ? तथा उच्छलित प्रेमवारे श्री महाप्रभुजी श्री गिरिधारी जी के आगे सुन्दर लुचाई वारो गोपाल वल्लभ भोग हू या समय में ही धरे हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो दिन विश्रामावधी विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे द्वाविंस तरंगः ॥२२॥

**दशम कल्लोलजी**

# त्रयोवीस तरंगः ॥२३॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ त्रयोबीस तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **एवं समर्प्य भगवान्प्रेम्णा स्मैराजः भोगः मीशेशः**

**करकमले क्षालयते दसरुतौ विजयत्येनमः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि ईश्वरेश्वर भगवान श्री गोकुल प्रभुजी प्रेम सूं या रीति सूं श्री गिरिधारी जी के आगे राजभोग को समर्पण करके श्री हस्त कमलन को पखारे हैं ॥ पीछे उष्णकाल होय तो श्री महाप्रभुजी प्रेम नम्रता आदर पूर्वक नयन मूद के श्री गिरिधारी जी को भोजन अंगीकार पर्यंत पंखा करे हैं ॥ कबहू तो पुत्रवर श्री गोपाल जी कि बड़भागिन श्री पार्वती बहु जी को कि अथवा पुत्र की बहु गोपी देवी जी को कि अपनी बेटी जी को कि बैसे कोऊ और अपने कृपापात्र को पंखा करवे की आज्ञा करे हैं ॥ यह हू नयन मूंद के श्री प्राणनाथ जी जैसे विनय पूर्वक ही हलके हाथन सूं याकूं पंखा करे हैं ॥४॥ ता पाछे श्री प्राणप्रभुजी अपने जलघरा में यहां सूं पधार के याके आंगण में धराये पीढा पर विराज के वाकूं अलंकृत करे हैं ॥ वहां विराज रहे कितनेक जन प्रेम सूं आपश्री के श्री स्वरूप की शोभा को निरखे है ॥ या समय आपकी इच्छा को जान श्री अंग सेवक खवास जी प्रेम पूर्वक पात्र में धरके औषध लावे है ॥ श्री राजजी सोना की चीप सूं वाकूं आरोगे है ॥ औषध ही सूंठी को चूर्ण है सो कबहू भूनो होय की बिना भूनो हू होय है ॥ सो थोड़े घृत सूं मिल्यो है मिसरी के टूक सो फिर बूरा सो मिल्यो है ॥ खवास जी आंच लावे है, वामें रंच तपावे है वाकूं आरोगे है ॥ अथवा कबहू मिरची, पीपरी, सेंधा नमक, लाल जीरा, कि भूनी हींग सूं छीइन के चूर्ण को अरंड के मूल के छिलका कर ससो कि नींबू के

रस सो पापड़ी बनावे है ।। सोहू पाचन है ।। रुचिकारी है वाकूं आंच सूं तपाय के लावे है ।। भुनी कि बीना भुनी हरड़ तथा सेंधो लोन को चूर्ण अथवा सौंफ धनिया को चूर्ण कबहू आमरा को चूर्ण सितोपला मिसरी के टूकन सो मिल्यो होय है ।। कबहू क्षार हरड़ को चूर्ण कि वैसो कोऊ और हू चूर्ण कि अनेक प्रकार की गंधक वटी आदि गोली हू वाकूं श्रीराज आरोगे है ।। या अवसर में श्री प्राणनाथ जी अपनी मधुर मधुरता तथा सुन्दर सुन्दरता की मनोहर कांती की चतुर चतुरता की पंडीत-पंडीत भाव की कुशल कुशलता की लावण्ण भाव सूं मिले लावण्य को कि सुजान जन भाव की प्रफुल्ल-प्रफुल्लता की अत्यंत प्रबल बल की तरुण नवीन तारुण्य जोबन की धीर धैर्य की दयाभरी दया की प्रेम भरे प्रेम को सरस अद्‌भुत सरसता को कि अपने श्रीमुख कमल की प्रसन्नता को कि सुन्दर जुरा के चमत्कार को कि मणि जटित कुंडलन के अत्यंत चंचलता को कि प्रेम दृष्टि के चपलता समुद्र की हर्ष समुद्र के वर्षा को धोती उपरना की उज्वलता चमत्कार की महीन परम कोमलता सुन्दरता की श्रेष्ठता को भलीबाई जी के दोनों नयनों में बोय के कि पधराय के वा भलीबाई को तो प्राणनाथ जी सगरे भक्तन के शिरोभूषण रूप ही बनाय देवे है ।। या समय में ही श्री राज को भाणेज मधुसूदन भट्‌ट जी, कि माल जी पंचोली जी, श्री प्राणनाथ जी सो वे वे प्रश्न करे हैं सो कृपा सिंधु श्री प्रिय सुंदर वर जी श्री मुख रूप क्षीर सागर सूं प्रगट भये वचन रूप हजारन अमृत समुद्रन सो इन दोनों को सिंचन करत या भलीबाईजी को तो अपने वचनामृतन के हजारन समुद्रन में ऐसो निमग्न करी है जैसे फिर निकस हू नहीं सके है ।। भाव सूं भरी गुरु रूप होय जाय है भारी होय जाय है ।। सो भलीबाई जी तब प्राप्त भये वा भाव को दूर करवे में समर्थ नहीं होय सके है ।। अपने को हू नहीं जाने है कि यह को है ? हों का हू ? कि यह स्थान कौन सो है ? यह सब कौन है ? कि यह महा सुन्दरवर जी का कारण सूं यह दान करे हैं कि वर्षा करे हैं, कि सिंचन करे हैं ? कि बीज बोवे है, कि खोदे है कि लिखे है, कि धारणा करे हैं, कितनो धरे हैं कि कहा धरे हैं, यह रात्रि है कि दिन है, यह सुख है कि कछु और है यह कुछ नहीं जान सके है ।। प्रिय वर के स्वरूप सागर में निमग्न होय जाय है ।। कि वासू निकस के भूषणन की शोभा में डूब जाय है, कि वासू

निकस के जुरा रूप श्री यमुनाजी में डूब जाय है ॥ कि वहां सूं निकस के हारन की श्वेत शोभा रूप गंगाजी में डूब जाय है ॥ कि वासू निकस के माणिकन की कांति समूह रूप सरस्वती समूहन में डूब जाय है ॥ कि वहां सूं निकस के मंद मुस्कान की परम शोभा रूप क्षीर सागर के हजारन लाखन प्रवाहन में डूब जाय है ॥ कि वहां सूं निकर के प्रेम सूं तरल कटाक्ष रूप अमृत समुद्र की करोडन लहरीन में डूब जाय है ॥ वहां सूं निकर के वदनारविंद सूं झर रहे मधुरता के अपार सागर समूहन में निमग्न होय जाय हैं ॥ कि वहां सूं निकर के चरण नख चंद्रमान की सुन्दर चांदनी के महाप्रवाहन में डूब जाय है ॥ श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि या समय में स्वरूप सूं लाखन लक्ष्मी को हू जाने विजय कियो है ऐसी सो सर्वोपर विराजमान सर्वोत्कृष्ट श्री मुख्य स्वामिनीजी श्री पार्वती बहू जी अपने सौंदर्य सुगंधी की महा विलास की चतुरता की पवित्रता की प्रेम नम्रता गुरूभाव की प्रभुता की कांती आदि स्वभाविक अपने गुणन सो सब समाज को कि सब रसन को निरंतर ढांपत ही छिपावत ही प्रगट होय है ॥२८॥ श्री रसोई घर सूं बाहिर पधार के यहां के कार्यन की संभार करत ही वेगा जलघरा की कोण में एक वेदी है वा वेदी पर रसोई के पात्रन को धरे हैं ॥ अहो या समय में दोनों, श्री प्रिया जी कि श्री प्रियवर, के परस्पर मिल रहे जे कटाक्ष है वे अपने अपने हृदय के वा वा मनोरथ समूहन को कहे रहे हैं ॥ वामें आपस में मन में जे जे परमानंद के समूहन को वर्षा करे हैं ॥ विन को तो वे श्री प्रिया प्रिय जी ही जाने है ॥ कि कृपासिंधु श्री प्राणनाथ जी प्रसन्न होयके प्रगट करके जो भाग्यवान को स्वयं जतावे है वे ही वाकूं जानें हैं ॥ और तो बड़े भक्त हू नहीं जान सके है ॥ फिर सो कमल नयना श्री मुख्य स्वामिनीजी गती सूं गजराज को लजावत ही यहां सूं पधार के फिर रसोई घर को अपने सूं अलंकृत करे हैं ॥३३॥ जल घरीया तो यहां वेगा आयके वाही क्षण में ही पात्रन के मांजवे में उपयोगी एक पात्र में छाछ और भस्म की राख लेके बिन पात्रन को लेकर पखारवे लिये श्री यमुना जी के तट पर जाय है ॥ श्री प्राणनाथ जी तो ओषध को लेकर श्री मुख कमल को पखारे हैं ॥ बहुत ही कोगला करे हैं वासूं औषध को किणका हू मुख में न रहे ऐसे निकारे हैं ॥ या अवकाश में सुमति अधिकारी जी नम्रता सहित आयके हाथन को बांध के प्रभुन के आगे प्रणाम करके विनय करे

हैं ॥ कि हे महाप्रभो हे गुणसिंधो वा वा स्थान सूं आयके बहुत ही स्त्री की पुरुष श्री आपके श्री मुखारविंद सूं नाम पायवे कूं कि निवेदन हू करायवे कूं ठहरे हैं ॥ हे प्राणप्रभो चिर सूं राज की वाट निहार रहे हैं ॥ विन पर आप प्रसन्न होय ॥ श्री कृपासिंधु श्री प्राणनाथ जी हू यह सुनके वाकूं आज्ञा करे हैं ॥ कि "अवश्य विनको वेग ही ले आवो विलंब काहे को करो हो" ॥ सो अधिकारी जी हू यह सुनके प्रणाम कर जायके वेगा वेगी विनको लावे है ॥४१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे त्रयोवीस तरंगः ॥२३॥

### दशम कल्लोलजी

## चतुर्बीस तरंगः ॥२४॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ चतुर्बीसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **विहीता कफोणी श्रीमुख संक्षालनो भगवान**
**चरणारविंद लग्नानप्य तत्तोय विंहनि कशनसः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि भगवान श्री गोकुल प्रभुजी कोहनी पर्यंत श्री हस्त पखार के श्री मुखारविंद को पखार के चरण कमल में परे या जल के बिंदुन को जल मिले हस्त सूं निवर्त करके फिर दया सूं विन को बुलावे है ॥ वे हू श्री यमुना स्नान करके आये हैं ॥ शुद्ध उपरना धोती आदि अपरस के वस्त्रन को पहिरे हैं ॥ तिलक सूं जिनके मस्तक शोभायमान है ॥ कि कंठ में जिनके तुलसीमाला अलंकृत है, हाथों में प्रेम सूं मंगलमय नारियल की ऐश्वर्य अनुसार वा वा भेंट कूं हू ले रहे हैं ॥ अब श्रीमुख के दर्शन की इच्छावारे हैं ॥ कि चरण कमल संबंधी मकरंद के पान की इच्छावारे हैं ऐसे विन सबन को "आवो आवो" ऐसे आप दयालु बुलावे है ॥ तब आपके पास जे भक्त कि और हू स्थित हते वे सगरे ही आपकी इच्छा जानके वा स्थान सूं वेगि दूर होय के और एकांत स्थान में ही सावधान होय के बैठ जाय है ॥ तब वहां टेरा आय जाय है ॥ वामें ठहर रहे वा सबन सूं ज्ञाति कुल कि नामादि पूछे है ॥ वे हू एक एक ही अपने वा वा

नामादि यथार्थ उत्तर को देवे है ।। तासूं हू वे सुन्दर बुद्धि वारे अपने को नम्रता आदर पूर्वक कृतार्थ ही माने है ।। तब कृपा सिंधुजी पंचाक्षर कि **श्रीकृष्णः शरणं मम्** यह अष्टाक्षर मंत्र सुनायके फिर इच्छानुसार विनसूं वंचवावे है ।। या रीत सूं वेगा वेगी विनको सुयोग्य बनाय देवे है कि कृतार्थ ही कर देवे है ।। वामें हू ब्राह्मणन को तो प्रथम ही और ही रीत सूं यह उपदेश करे हैं ।। औरन कूं तो पीछे और ही रीति सो उपदेश करे हैं ।। यह निशदिन जप कर ऐसे विनको जगतपति प्रभुजी आज्ञा करें हैं ।। सगरे भूषणन सूं शोभायमान स्वामिनीजी सहित प्रभुन को ध्यान कर वा प्रभुन के आगे सब वस्तु समर्पण करके लेनो -- असमर्पित नहीं लेनो, अपनो सब कुछ प्रभुन को ही, सब प्रकार सो जाननो, इत्यादि प्रकार सूं गुण सागर श्री महाप्रभुजी कृपा सूं सबन को ही उपदेश करे हैं ।।१३।। श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि पांडरवाडा गाम के पास ऐक आंवेटी नाम उत्तम गाम में सदा निवास करवे वारी पुखाड (पोखाड) ज्ञाती वाणीया महथा (महेता) देवजी की स्त्री बड़े प्रेम सूं अपने गाम सूं यहां आयी ।। सो अकेली वृद्ध श्री राज के चरण शरण लेवे लिये कवहु श्री आपके निकट आयी वाकूं दीनजनों के बंधु, कृपासिंधु श्री राज ने कृतार्थ करत प्रथम मेरे कहे प्रकार सूं उपदेश दियो ।। वामे श्री महाप्रभुजी बारंबार कहे कि यों कहे यह कहे बहुत आग्रह सूं ही कह्यो ।। परंतु यह तो वैसे नाम कहवे में समर्थ नहीं भयी ।। और विनय करी कि "महा प्रभो आप जो आज्ञा करो हो वेसे कहवे में हौं तो बड़े यत्न सूं हू समर्थ नहीं होय सकू हू मैं का करूं मूढ़ हू प्रभो आप मेरी रक्षा करे" ऐसे वचनन को सुनके कृपा सिंधु प्रसन्न होयके स्पष्ट आज्ञा करी कि "अहो बड़ी भोली है, मेरो नाम तो तू जाने है ?" "हां हां सो तो आछी रीत सो जानू हू" यह सुनके हंसत ही श्री आपने वा बडभागीन कूं आज्ञा करी कि "तब तो जा तू मेरो नाम ही जपन कर" या प्रकार सूं श्री प्राणनाथ जी ने इनके द्वारा अपने कृपापात्रन प्रति अपने श्री नाम की ही सबन सूं विशेषता जताई है ।। वे सुन्दर भाग्यवान हू या आशय को जानके और नामन सूं या प्रभु के ही नाम में बडो आदर करत भये हैं ।।२१।। तथा वा भाग्यवती में रस सूं सुन्दर फलन के दान में श्रीराज ने मर्यादा कोई हू नहीं राखी है, ऐसे ही विचार करत भये हैं ।। कि हमारे महाप्रभुजी बडे उदार राय शिरोमणि

है ।। ऐसो श्रीराज के नाम को महत्व को प्रसंग सुनाय के श्री कल्याण भट्ट जी अब चलतो प्रसंग कहें हैं ।। कि आत्म निवेदन के लिये आये कितनेन को तो जानके, यहां अथवा श्रीनाथ जी के मंदिर में ही ले जाय है ।। वहां कृपा के महासागर श्री महाप्रभुजी वा श्रीनाथ जी द्वारा ही विनको निवेदन करामे है ।। वहां विलास पूर्वक पधारके चौक के बीच, चौखट के पास ही विराजमान होयके रस सागर महाप्रभुजी तुलसी को दल कबहू हाथ में लेकर कबहू विना लिये ही श्री आपकी आज्ञा सूं पहले दिन जिनने उपवास कियो है, की तासूं जिनके इन्द्रीय सब शुद्ध होय रहे हैं कि राज के श्री चरण कमल में जिनके चित्त स्थिर होय रहे हैं कि स्वरूप ज्ञान सूं जे अत्यन्त उत्साही है कि जे सुन्दर फूलन की सुगंधी वारे तैलन सूं अभ्यंग करके जिनने सुन्दर स्नान कियो है, कि सुन्दर बड़े मोलवारे कि प्रसर रही सुगंधी वारे रेशमी वस्त्र को जे पहिर के सुन्दर भूषणन सूं अपने को सुन्दर शोभायमान करके हस्त कमलो में सुन्दर नारियल के स्वच्छ उज्वल मिसरी कि अपने वैभव अनुसार भेट भूषण कि और हू धन कि रेशमी वस्त्रन को ले रहे हैं ।। कि श्री राज के श्री चरण कमलों की प्राप्ति अर्थ जिनके मन उत्साही है कि बहु बेटी बेटा की स्त्री सूं जे सहित है कि प्रायः जे अकेले नहीं है कि प्रणाम जिनने करी है श्रीराज की आज्ञा को पायके श्री राजके निकट बैठ रहे हैं ।। प्रेम आदर नम्रता कि भक्ति सो जे भरे हैं ऐसे कृपापात्रन को कृपापूर्वक निरख के अपनो मंगलरूप कि सर्वोपर विराजमान कि रससिंधु समूहन सो मिल्यो कि आनंदरूप जाके चरणकमल हस्तकमल उरु कि श्री मस्तक पीठ उदरादि सगरे अंग है जो अद्भुत है सर्वोत्तम है कि सबन सूं पर अतीत है कि सबन को जो मूल है कि स्वतंत्र है कि जो विलक्षण शोभा वारो है ऐसे अपने स्वरूप को प्रगट करे हैं ।। वहां विनके हाथन में कबहू तो तुलसीदल देके, कबहू विना दिये ही एकांत में बिन सबन के आगे अमृत समुद्र के लाखन अर्बन समूहन को अक्षर अक्षर में वर्षा करत ही निवेदन के श्लोक गण को महाप्रभुजी पढ़े है ।। वे सगरे स्त्री पुरुष तो वा समय में श्रीराज के स्वरूपानुभव सूं प्रगट होय रहे स्तंभ सात्विक भाव सूं जड़ रूप होय रहे हैं पढ़वे में समर्थ नहीं होय सके है ।। किंतु वा प्रिय के श्रीमुख को टक टकी लगाय के अद्भुत की संभ्रम उत्कंठा पूर्वक निरखत ही रहे हैं ।। श्री प्राणनाथ जी तो अपनी

कृपा रस स्नेह भरे कटाक्षन की वर्षा सूं इन सबन को सिंचन करके तथा पोषण करके भली भांति सो उत्साह भर्यो करके फिर मंत्र पाठ कराय के वा द्वारा वा सबन को वरे हैं ॥ भागवत बनाय देवे है ॥ या क्षण में इनमें जो जो जैसे जितनो विचार करे हैं वेसे ही वा वामे वितनो सो सो स्वयं ही निर्वाह करे हैं ॥ या प्रभु के या प्रकार के विचार को स्वयं ही यह जाने है ॥ अत्यंत बुद्धिवारो हू जन याकू जानवे में कोई हू समर्थ नहीं होय सके है ॥ हां या प्रभु के कृपापात्र सुजान जन ही या भक्त के अनेक प्रकार के कार्यन सूं ही कैसे कछूक अनुमान करे हैं कि यामे राजने यह भाव धर्यो है, यामे यह भाव धर्यो है ॥३५॥ या प्रकार श्री प्राणनाथजी वा सबन को योग्य बनाय के हृदय सूं विनके सर्वस्व कूं आप अंगीकार करे हैं ॥३६॥ विनके हाथ में जो तुलसी दल दियो हतो विन सूं मांग के अपने श्री हस्त में लेवे है ॥ फिर यह सब प्रथम कहे नारियल आदि भेट को आपके आगे हर्ष सूं अर्प्पण करे हैं ॥ फिर आपके आगे चरणन में प्रणाम करके आपके कृपापात्रन सूं विनय कराय के वस्त्र कि भूषणन को पहिरावे है ॥ हाथन कूं बांध के प्रेम दीनता उत्कंठा सूं आपके आगे प्रणाम करके मनको मनोरथ जो कछु कहें हैं ॥ यह श्री प्राणनाथ जी तो वासू हू अधिकी ही सिद्ध कर देवे है ॥३९॥ श्री प्राणनाथ जी मंद हास्य सूं कि रस भरी दृष्टि सूं की अमृत को वरसाय रही वाणी सूं वा सबन को नवीन कर देवे है ॥ कि आर्द कर देवे है कि सिंचन करे हैं कि अलंकृत करे हैं ॥ कि अत्यंत ही अपनाय लेवे हैं ॥ कि विनके हृदय कमलो में निरंतर निवास कर जाय है ॥ कि ईन सबन को अत्यंत ही कृतार्थ कर देवे है ॥ तथा भाग्य समूहन सूं भरी जे शोभायमान मृगनयना सुन्दरी जन है वे हू कृपारूप दूती के संग यहां आयी है ॥ या प्राणनाथ जी में अपने सर्वस्व को निवेदन करके चित्त सूं वैसे वैसे अपने को हू समग्र निवेदन करके वैसे अखंड अनुभव को प्राप्त होय है ॥ कि जो स्तंभ कंप अश्रु आदि सात्विक भाव की संपदा सूं भर्यो है ॥ कि विवर्ण रोम हर्ष गद्‌गद् कंठ कि स्वेद कि मूर्च्छा सूं शोभायमान है ॥ कि जो स्वरूप की सुन्दरता की महिमा सूं मनोहर है ॥ कि जामें आनंद समूह के तरंग उछल रहे हैं ॥ कि जामें वा प्रभु के स्वरूपात्मक भावों को अनुभव होय है ॥ कि जामे अन्य को संबंध गंध हू नहीं है ऐसी अनन्यता की मनोहर शोभावारो है ॥ कि जो

क्षण क्षण में बढ़तो जाय है ॥ रस सूं भर्यो है वाणी सूं हू जो अतीत है ॥ ऐसे अलौकिक परम अनुभव को प्राप्त होय है ॥ या प्रकार सूं यह गुण सागर श्री महाप्रभुजी अपनी कृपाशक्ति ने ही वा वा स्थल सूं खेंच के यहां लाये संख्या सूं रहित अनेकान स्त्री पुरुषन को सब प्रकार सूं सदैव ही कृतार्थ करे हैं ॥ ता पाछे सो प्राणनाथ जी नैन की सैनसूं जायवे लिये आज्ञा करे हैं ॥ तब तो वेहू प्राणनाथ जी को प्रणाम करके आलौकिक भाव सूं शोभायमान है ॥ कि हर्ष सूं प्रफुल्लित मुख कमलवारे हैं ॥ कि पूर्ण चंद्रमा कि सूर्य की अग्नि कि विजुरी के समूह की दुर्ल्लभ जो कांती है वा अत्यंत प्रकाशमान कि अपने देखवे वारे जन समूहन को पवित्र कर रही एसी कांती को धारण करत ही वे बाहिर आवे है ॥४५॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे चतुर्विंश तरंगः ॥२४॥

### दशम कल्लोलजी

## पंचवीस तरंगः ॥२५॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ पंचबीसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **समीहसे रसने ममत्वं प्राणेश तत्रत्दूण कीर्तनेन**
**जितामृतां मोधिचचेनमत्तम हासवेनेत्तर दुर्ल्लभेनः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी या तरंग में श्री प्राणनाथजी के आत्मनिवेदन संबंधी रसभावना के वर्णन में उतावल कर रही अपनी जिह्वा को समय की अयोग्यता दिखावत रोके है ॥ वाको वर्णन आवे है ॥ श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं "हे मेरी रसने अमृत के समुद्र समूहन को विजय करवे वारे औरन कूं दुर्ल्लभ अति करवे वारे ऐसे श्री प्राणनाथ जी के वा गुणन के कीर्तन रूप महा मधुर रस सूं तुम मत्त होय रही हो ॥ हे ऐसी रसने तू अब का करनो चाहे है ॥१॥ अहो जाके चरण कमल संबंधी रज हू लाखन खर्बन पुरुषोत्तमन सूं हू अधिक है ऐसे रस के सागरन के सागर रूप जो श्री गोकुलेश जी है जो चारो ओर लटक रहे उज्वल निर्दोष शुद्ध सुन्दर गुण समूह समूहन सो मिल्यो है तथा सगरे ईश्वरन के ईश्वर महेश्वर हू जाकू

थोड़ो सो हू निरख हू नहीं सके है ऐसी कोऊ दुर्ल्लभ अनिर्वचनीय शोभा उच्छलित हर्ष सूं कि उच्छलित रोम हर्ष पूर्वक जाकूं सदैव ही सब प्रकार सूं ही गाढ आलिंगन करके कबहू त्याग नहीं करे हैं ।। तथा जो अपने स्वरूप की सुन्दरता के लेश सूं सब प्रकार की मुक्तान को तृणरूप बनायके दूर ही डार रहयो है ।। ऐसे श्री गोकुलेश जी को जो स्वरूप है जो वाणी के विषय सूं अतीत श्रृंगार नाम महारस के सारन सूं भर्यो है ऐसे उदार लीलावारे वा स्वरूप कूं जे अर्बन खर्बन नरकन में गिरवे बारे महा बहीर्मुख महाखल दुष्टजन निंदा करे हैं ।। ऐसे महादुष्टन के समूहन सूं मिल्यो यह समय है या समय की विषमता को विपरीत भाव को तू जाने नहीं है तासूं इतनो बड़ो समय तो तोकूं मैंने रोक ही राख्यो है ।। परंतु तू तो राज को जो आत्म निवेदन है वाके भाव कूं हू जबर सूं प्रकट करवे की इछा करे हैं अहो जो आत्म निवेदन प्राणनाथ जी की जे सदा प्यारी है जिनके अत्यंत सुन्दर चमकने स्निग्ध केश है, कि जिनके श्रीमुख शरद ऋतु के कमल समूह को हू विजय करवे वारे हैं कि अत्यंत डरे हरिण जैसे जिनके नयन है कि बंदूक की शोभासूं हू मधुर जिनके अधर है ऊंचे पुष्ट जिनके कुच मंडल है कि रत्न जटित बाजू बंदन सूं शोभायमान जिनकी भुजलता है कि कृश जिनके उदर है कि गज जैसे गमनवारी है नितंबन की शोभासूं जे सुवर्ण के पर्वत संबंधी महा शिलानकूं विजय करे हैं कि रती को हू विजय करे हैं कि हजारन लक्ष्मीन को हू विजय करके विनके ऊपर ही जिनकी शोभा उछले है जे नित्य ही प्रभुन के अनुकूल ही रहे हैं कि जे प्राणनाथ की प्रसन्नता ही नित्य करे हैं कि जे श्रीराज के हर्ष सूं ही प्रसन्न होयवे वारी है ।। कि जे श्रीराज के ही चारों ओर ही रहे हैं ।। जे सदा संग विचरे हैं जे प्राणनाथ को प्राणन सूं हू अधिक प्यारी है ऐसी प्राणनाथ की वा प्यारीन को जो निवेदन सूं सिद्ध कियो भाव है जो शुद्ध है बड़ो ही निर्दोष है कि पूर्ण है कि स्थिर है कि सांचो है कि तेजस्वी है कि बढ़वेवारो है कि उत्साह सूं मिल्यो है कि अन्य संबंध सूं जो रहित है कि उत्तरोत्तर सुखरूप है कि जामें श्री मुखारबिंद के दर्शन की तृष्णा दृढ होय जाय है कि जो जामे अपने हृदय में प्रिय के गाढ आलिंगन की आशा होय है कि जामे महारस को उछलनो होय है कि जाने या प्रिय को भुज दंडन सूं अखंडित आलिंगन के मनोरथ होय है ।।१४।। कि जो अत्यंत ही

दुर्ल्लभ है कि सगरे मनोरथन के अंत में जो स्थित है ॥ कि जाको स्वरूप वचन में नहीं आय सके है जामें घात पात कि परिपीड़न ताड़न आकर्षण कि डसनो होय है कि जामे दंतक्षत कि अपराध कि केश हस्त कि स्तन कि अंचल कि उरु के ग्रहण परस की पीड़नादि होय है कि जामें लाज की मंद हास्य की कटाक्षन सूं देखवो हास मनोहर होय है ॥ कि जामें विलास दास भाव की द्वेष कि प्रेम कि क्रोध कि मान मनायवे आदि मनोहर सुख होय है कि जामे स्तंभ जडता हठ पसीना कंप, रोम हर्ष कि आंसू कि मूर्छा कि वर्ण बदलनो कि उदासीनता कि वैराग्य कि डर श्रम आदि कि उत्कंठा आदि हू होय है ऐसो जो उज्वल भाव है जो बड़ो उत्कृष्ट है उग्र है कि सगरे साधन समूह जाकू प्रगट नहीं कर सके है केवल कृपा सूं ही जो सिद्ध होय है ऐसे श्रीराज के भक्त सुन्दरीन के महा रसमय भाव को सो निवेदन ही प्रगट करत अहो पुरुषन में हू ऐसे भाव को क्रम सूं कि बिना क्रम सूं ही वेग ही प्रवेश कराय देवे है ऐसो भावदान कर देवे है ऐसे आत्म निवेदन को रस सागर श्री प्राणनाथ जी अपनी मंद मुस्कान सूं कि रस भरी नजर सूं कि अमृत के समुद्रन को वरसाय रही वाणी सूं कि कृपा समूह सूं जटित चित्त सूं कि वैसे मनोहर रसमय स्वरूप सूं विनमें स्थिर कर देवे हैं ॥ कि अपने भावरूप जलन सूं सिंचन करे हैं कि अत्यंत पल्लव वारी करे हैं ॥ कि फूल समूह वारो हू करे हैं कि और हू संख्या रहित प्रकारन सूं कि आत्मा के हू समर्प्पण सूं उत्कृष्ट फूल समूह वारो हू करे हैं ॥ कि जो वा सबन में ही अपने आनंद समूह, समूह स्वरूप गणना रहित गुणन सूं वा वा समय में वा निवेदन को रक्षा हू करे हैं ॥ अहो जब ऐसे आत्म निवेदन सूं पुरुषन में हू वैसे वा द्वारा भावदान कर पुरुषन में हू ऐसी अनिर्वचनीय कृपा करे हैं ॥ तो वैसी रस भरी अपनी प्यारी कमल लोचना जनो में जो जो करे हैं सो कब कह्यो जाय ॥ अहो वे भक्तजन पुरुष हू आपके निवेदन द्वारा भाव को प्राप्त होय के अमृत समुद्र रूप वा भाव सूं अंतःकरण विनको अत्यंत शुद्ध होय जाय है ॥ तथा देह हू सुन्दर होय जाय है ॥ तासूं दिव्य अंजन काजर सूं नेत्र कमल आंजे कि मनोहर होय जाय है ॥ प्राणप्रिय के निवेदन द्वारा वैसे भाव के कि वा भाव सूं प्रिय के स्पर्श रूप पारसमणि सूं बाहिर भीतर सुन्दर सुवर्ण रूप को पाय के इच्छानु सार ही आपके स्वरूपानुभव को प्राप्त

होय है ॥ कि रसलीला के योग्य स्त्री देह कू हु प्राप्त होय है ॥ कि क्रम सूं रस की लहरीन सूं सिद्ध वा वा रस अनुभव को हू प्राप्त होय है ॥ कि वामे प्रिय के आलिंगन दंतक्षत चुंबन अंग अंग स्पर्श हास अंचल ग्रहणादि को प्राप्त होय है ॥ कि हस्त अलक उरू जंघन स्तन भुज मूल कपोल कंठ चरण के परस मर्दनादि रस को हू प्राप्त होय है कि बांको कटाक्षन सूं निरखवो कि मंद हास्य पूर्वक बोलवो कि गान विश्वास रस कथादि को हू प्राप्त होय है ॥ कि नखक्षत कि अधर पान कि अनंत विहारनो प्राप्त होय है कि अद्‌भुत शोभावारी दृष्टि सूं रति की प्रार्थना की अनेक प्रकार के संकेत कर्मन को प्राप्त होय है ॥ कि बारंबार श्रीमुख को निरखनो कि ऐसे रस को उद्दीपन करनो कि रमण में अनेक प्रकार के वे रमण युद्ध कि रती में विपरीत रति कि मनोरथन की जाने समाप्ति होय ऐसे अत्यंत दुर्ल्लभ हू अनंत फलन कूं प्राप्त होय है ॥ अहो हे रसने ! तू अब या सगरे निवेदन सूं सिद्ध भाव रस के प्रकारन कूं स्पष्ट करवे लिये चाहना करे हैं ॥ अहो भली रसने तू बड़ी सुजान हो या प्रकार के रस को भली भांत सो सूचन करनो अब योग्य नहीं है ॥ याको सूचन तो तुमने वैसे वैसे अत्यंत ही बारंबार कियो है तासूं अब अधिक नहीं कहनो ॥२९॥ या प्रकार मधुरता समूह सूं अमृत के समुद्रन को विजय करवे वारे मनोहर या अर्थ के प्रगट करवे में फरक रही उछल रही अपनी रसना को निवारण करके रस के जानवे वारे भक्तवराः अब हम हर्ष सूं प्रसंग संबंधी जा अर्थ को वर्णन करे हैं ॥ तुम सावधान होयके अपने कानरूप हाथन सो लेके वा सगरे ही अर्थ को हृदयरूप मुख सो पान करिये यह भट्‌ट जी सावधान करे हैं ॥३१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे पंचवीस तरंगः ॥२५॥

## दशम कल्लोलजी

# षटबीस तरंगः ॥२६॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ षटबीसमो तरंगः लिख्यते ॥

**ते निसृताः प्रेक्ष्यमुदा महाप्रभो भक्तान्वहि स्तत्र तथा व्यवस्थितान्**
**भक्त्या पदा क्षेषुनमंति सर्वथा ते चापितान प्रेम भरेण सद्‌गुणाः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्‌ट जी कहें हैं -- श्री प्राणनाथजी की कृपा सूं आत्मनिवेदन गद्य पाठ सुनके तासूं राज की कृपा अनुसार भगवदीय होयके वा टेरा सूं निकस के हर्ष सूं बाहिर वैसे ठहरे प्रभु के भक्तन को निरख के भक्ति सूं विनके चरण कमलो में प्रणाम करे हैं ॥ श्रेष्ठ गुणवारे वेहु सब प्रकार सूं प्रेम भार सूं विनकूं प्रणाम करे हैं ॥१॥ मनोहर मंद हास्य सूं शोभायमान मुखारविंद वारे वे आपस में हर्ष सूं आलिंगन करे हैं ॥ हर्ष सूं परस्पर निरखे है कि अपने श्री प्राणनाथ जी के सगरे संबंध को सदा मुख्य जान के तासूं और संबंध को तृण जैसे जानके वे विनको करोडन हू प्राणन सों प्यारो जाने है ॥ श्री राजाधिराज श्री महाप्रभुजी तो या स्थल सूं उठके डोल तिवारी को अलंकृत करे हैं ॥ कि वामे विराजे है ॥२॥ तब श्री महाप्रभुजी वहां विराज के उछलित प्रेम पूर्वक श्री नाथजी की वस्त्र पेटी के कार्य को सिद्ध करे हैं ॥ यदि यह कार्य नहीं होय तो यहां बिछे सुन्दर आसन पर श्री राज विराजमान होयके भीतरिया पहले ही लायके सुन्दर श्री भागवत की पुस्तक को चोकी पर धरे हैं ॥ वाके वेष्टन पट्‌ट वस्त्र को खोल के पत्रन को श्री हस्त में लेके अक्षर अक्षर में अमृत के लाखन करोडन अर्बन समुद्रन को चारो ओर वर्षा करत स्पष्ट ही पढ़े है ॥ या अवसर में कितनेक गोकुलदास आदि भीतरिया भक्त कि ज्ञानी जगन्नाथ ऐसे प्रसिद्ध यह तो भीतर बैठके आपके शब्द रस को पान करे हैं ॥ और कितने बाहिर ठहरे भक्त तो वेग ही द्वार के किवाड़ के पास आयके ठहरके द्वार के किवाड़ के छेद में कान को धर के आपके शब्द रस को पान करे हैं ॥ वैसे स्त्री जन हू वा छेदन में नयनों को धरके सुन्दर कामदेव के हू अभीमान पर्वत समूह के चूर्ण करवे वारे महामनोहर या प्रिय के वैसे रूप रस को पान करे हैं ॥ या प्रकार कितने समय के गुजरने पर चारों और सूं आय आय के अर्बन लाखन भक्तजन वेगा वेगा सब स्थानों

में बैठ जाय है ।। आर्ती के समय में आयवे पर यहां प्राणपति के सुन्दर श्रीमुख कमल को नयन कमलरूप युगल अंजली सूं निरंतर पान करेंगे ।। या प्रकार सूं सबन के हृदयों में उत्साह है ।। या समय में श्री यमुना स्नान करके श्री गोपाल जी नाम जो पुत्र रत्न है वा कृपा सिंधु महाप्रभुजी के चरण कमलों में पास ही प्रणाम करे हैं ।। जलघर के जे सेवक है वेहू या क्षण में रसोई घर के सगरे पात्रन को मांज के जलसुं भरके लावे है ।। जल घर में धरे हैं तथा चंद्रवदना समूह के शिरके भूषण संबंधी माणिकन की कांति प्रवाह सूं आर्ती किये हैं कि प्रणाम किये हैं चरण कमल की शोभा जिनकी ऐसी सगरे गुण समूहन सूं भरी श्री पार्वती बहुजी हू बड़े उछलित प्रेम सूं रसोई घर के सगरे कार्यन को करके प्राणनाथ जी के आगे उपयोगी कार्य समूहन को करवे लिये कमर कस के तैयार रहे हैं ।। जल घर के सेवक तो सुन्दर जल सूं भरे जलपात्र कलशी को तथा पडगी को, कि तष्टि को हाथ में लेके आपके आचमन दान की वाट निहारे हैं ।। तांबुली मथुरिया हू सुन्दर बीडान को सजाय के लायके ठाड़ो है ।। जे फूलघरीया वे हू मिलके गीले वस्त्रन सूं ढांप के मालान सूं भरे वंश पात्र-वांस की छाब को हाथ में लेके सावधान ठाड़ौ है ।।१६।। वैसे और हू अपने अपने सब कार्यन को वेगि भली भांत सों करके राज की इच्छा को देखत प्रेम नम्रता सूं ही यहां ठाड़े होय है ।।१७।। स्वतंत्र कि जगतो के अधिपति श्री प्राणनाथ जी हू पुस्तक को बांध के भीतरिया के हाथ में देके राजभोग सरायवे लिये वेगि यहां सूं उठे है ।।१८।। सुन्दर जल सो श्री हस्त कमलन को पखार के अपने उपरना सो कमर कस के दोनों हाथ सूं आचमन करायवे को जल की कलशी तथा तष्टी लेके स्वयं अकेले ही भीतर जायके श्रीनाथ जी को सुन्दर भाव पूर्वक आचमन कराय के विलास पूर्वक बाहिर पधार के भीतरिया के हाथ में वे दोनों पात्र कलशी तष्टी देकर महाप्रभुजी भीतर पधारके श्री मुख को पोंछवे को वस्त्र श्री नाथजी को अर्प्पण करके श्री नाथ जी के आगे चौकी पर विराज रहे थार को वेगा बाहिर पधरावे है ।। वैसे और हू सब बाहिर पधरावे है ।। वामें श्री पार्वती बहुजी तथा पुत्र रत्न श्री गोपाल जी यह दोनों बड़े चतुर है ।। राजभोग को सरावत लीला परायण या प्रभु के सहायक होवे है ।।२२।। ऐसे श्रीनाथ जी के आगे भोग योग्य जो जो धरायो हतो सो सगरो ही सराय के रसोई घर में ले

जाय है ॥२३॥ फिर भीतरिया सेवक भीतर आयके सब वे चौकी कि पड़गीन को ले जाय के सबन को आंगण में धरे हैं ॥ सो प्राण नाथ जी पनारा में श्री हस्त कमलन को आछी रीति सूं पखार के भीतर पधारे हैं ॥ तब चतुर जलघरिया सेवक तो वा चौकी कि पडगीन को आछी रीत सों जल सो पखार के भली भांत सो शुद्ध करके विनके स्थान पर विनको धरे हैं ॥ तब ईश्वरेश्वर महाप्रभुजी श्री गिरधारी जी के आगे बीडान के समूह को धरे हैं ॥ वामें सूं एक बीडा लेके श्री हस्तकमल सूं वाकू खोल के मनोहर बीडी संवार के देते जाय है ॥ वा श्री गिरिधारी जी को अरूगावते जाय है ॥ विनमें पहली बीड़ी है सो अत्यंत महीन सुपारी चूर्ण सूं मिली है ॥ वामे काथे की हू गोली मिली है ॥ पहले यह अरुगवावे है ॥ पीछे तो और पान समारे ले ले के विनकी नस बीच की निकार के चूना लगाय लगाय के श्री गिरिधारी जी के श्री मुख निकट ले जाय के अरुगाय के फिर आपके पास पड़गी रहे हैं वामें डारते जाय है ॥ फिर सोना के पात्र से थोड़े बरास को लेके श्री गिरधारी जी के श्री मुख निकट ले जाय के आपको समर्प्पण करके उछलीत अनुराग वारे श्री प्रभुजी विलास पूर्वक वाकूं आगे धरे सोना के पात्र में डार देवे है ॥ या समय में कोई सेवक कि सुन्दर स्वभाव वारो सो श्री गोपाल जी पुत्र रत्न सिंहासन की आगेवारी भूमि को वस्त्र सूं धोवे है ॥ फिर वस्त्र सूं वाकूं पोंछे है ॥ फिर शरणागतन के पालक श्री महाप्रभुजी श्री गिरिधारी जी को बीड़ी अरुगवाय के फिर श्री गिरिधारी जी के सिंहासन के पास खंड पाटको लायके याके संग मिलावे है ॥ फिर लीला सिंधु श्रीराज जी बड़े मोल वारे परदेश सूं आये सुन्दर मखमल के वस्त्र सूं सिद्ध सुन्दर कोमल सूक्ष्म आसन बिछावे है ॥ सुन्दर फूलन की समारी मालान को श्री गिरिधारी जी को पहिरावत ही कृपा सागर श्री प्रभुजी भीतरिया को किंवाड के उघाड़वे कि आज्ञा करे हैं ॥ तब जलघरा की किवाड़ उघाड़ने पर कि जगमोहन के किंवाड़ उघाड़ने पर जे भक्त कि चंद्रमुखी भक्त सुन्दरी श्री प्राणनाथ जी के श्रीमुख निरखवे लिये आयके पहले ही ठाड़े हते वे सगरे ही प्रफुल्लित होवत ही भीतर प्रवेश करे हैं ॥ तब अगणित भक्त समूह तथा कमल नयना ब्रज सुन्दरीन को समूह हू वा प्राण प्रभु के दर्शन अर्थ अटारी पर चढे है ॥ वहां बहुत प्रकार सूं मनोहर लीला कर रहे कि कृपा सूं अपनो दर्शन दान दे रहे रस सागर महाप्रभुजी

को वे भाग्यवान भक्तजन टक टकी लगाय के अपने मनके अनुसार निरखे है ॥ शीतकाल होय तो धीर वीर ईश्वरेश्वर प्रभुजी के सिंहासन के आगे मनोहर उनके रत्न जटित बड़ो (तकिया) कंबलरूप सुन्दर बिछोना बीछाये हैं ॥ वाके ऊपर बड़े मोल वारे परदेशी सोना के जरी डोरा की किनारी सूं शोभायमान रोमवारे मखमल सूं सिद्ध भये मनोहर उत्तमोत्तम आसन को उछलित प्रेम सूं विछावे है ॥ शय्या घर में जो श्री गिरिधारी जी कि सुखदायक मनोहर निर्दोष सुन्दर शय्या बिछी है वा शय्या पर्यंत मार्ग को वेगी विछायत सूं सुन्दर शोभायमान करे हैं ॥ गरमी की वर्षा को समय होय तो मार्ग की बिछायत नहीं करे हैं, किंतु चौकी को ही बिछायत सूं समारे हैं ॥४०॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे षटबीस तरंगः ॥२६॥

**दशम कल्लोलजी**

# सप्तबीस तरंगः ॥२७॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ सप्तबीसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **अत्र क्षणे कोपिकरे प्रदिप्प समर्पयत्पांतर सेवकोस्य**
**आरस्त्रिकं चंचद मुख्य भक्तास्त दास मस्तांनितरां प्रहृष्यः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि या अवसर में कोई भीतरिया सेवक जगाय के आर्ती श्रीराज के हस्त कमल में अर्प्पण करे हैं ॥ तब श्रीराज के जे भक्तजन है वे सगरे ही अत्यंत प्रसन्न होयके समान एक समय में तीन लोकन को नाद से भर रही ऐसी सुन्दर जय जय ध्वनि को अत्यंत विस्तारित करे हैं ॥ तब सुन्दर मनोहर श्री प्राणनाथ जी प्रथम जैसे ही श्री गिरिधारीजी के आगे आर्ती वारे हैं ॥ वहां श्री मुख्य स्वामिनीजी तथा सगरी बहु बेटी बेटान की बहु सब ठाड़ी होय के भीतर बड़े हर्ष सूं बड़े आदर सूं प्राणनाथजी के स्वभाविक मंद हास्य की शोभावारे श्री मुखारविंद को निरखे है ॥ बाहिर खड़ी होय रही चंचल नयना ब्रज सुन्दरी की सगरे भक्तजन हू सगरे नयन कमलन सूं श्रीराज के श्री मुखारविंद की सौन्दर्यता के अमृत समुद्रन को पान करत हू तृप्त नहीं होय है -- यह आश्चर्य है ॥ कृपा सागर

श्री प्राणनाथ जी बारंबार मुरक के निहारवे सूं की वा कमल नयनान की दृष्टि सूं अपने नेत्रन के मिलाय वे सूं कि श्रृंगार रस सार सागरन में निमग्न करवे सूं कि अपने श्रीमुख संबंधी सुन्दरता के समुद्रन को वा सुन्दरीन के नयनों में कि चित्तों में प्रवेश करायवे सूं कि अधरामृत की शोभा अमृत के पान करायवे सूं अपने श्री मस्तक कि नासा कि मंद हास्य कि दंत पंक्ति कि कपोलन की सुन्दरता संबंधी अमृत के समुद्रन को विनके नयन और चित्तन सूं आस्वादित करायवे सूं कि वैसे और हू सुन्दर स्वादु प्रकारन सूं कि अंग सूं प्रगट होय रहे सुख सागर समूहन को वर्षा कर रहे ऊंचे प्रसर रहे सौम्य तेज समूहन सूं कि अमूल्य गुंजामाला, कि तुलसी माला कि उज्ज्वल धोती उपरना क अंगुली संबंधी मुद्रिकान के तथा माणिक जटित सुन्दर कुंडल कि कुमकुम के चंदन के किये उर्ध्वपुंड के कि नख पंक्तिन के कृपा सूं निरंतर दर्शन कराये चमत्कारन सूं वा कमल वदनी कि शरद ऋतु के संबंधी चंद्रवदनी ब्रज सुन्दरीन को कृपा समूह सूं अत्यंत कृतार्थ ही कर देवे है ॥९॥ या सूं ही सगरी शरद् चंद्रवदनी सुन्दरी जन अपने करोडन आवश्यक कार्यन को हू छांड के प्रभुन के स्वरूप में लोभ भरी होय के या क्षण में वेगी आयके यहां ही ठहरे हैं ॥१०॥ अहो जगत्पती रस सागर श्री महाप्रभुजी भक्तिभरे जनन ने करी और सगरी भेटन सूं या मृगलोचना सुन्दरीन ने जो करी रस सागर रूप भेट है वाको उच्छलित प्रेम सूं ही अंगीकार करे हैं ॥ अहो प्राणनाथ जी के श्रृंगार रसलीला के योग्य जो चंचल नयना ब्रज सुन्दरीन को समाज है सो अलौकिक आनंद के महासागर समूहन सूं मनोहर जड़ता अश्रु पसीना कंप रोम हर्ष मूर्छा कि विवर्णता कि गद्‌गद् कंठ सूं शोभायमान जा अवस्था को प्राप्त होय है ॥ वाकूं कछुक कहे तो सो प्राणनाथ जी ही कहें हैं ॥ और कोऊ जाने नहीं है तो कैसे कर कहे सके है ॥१३॥ या प्रकार सूं श्री महाप्रभुजी आर्ती करके श्री हस्त कमलन को कि सगरी मृगनयनी सुन्दरीन को गुप्त मंद मुस्कान सो सुन्दर चमकने श्री मुख कमल सो बाहिर जायवे लिये - - ''जावो'' ऐसे आज्ञा करके कृपा सागर श्री प्राणनाथ जी वा भक्तन के जावे पर तथा भक्त सुन्दरीन के हू थोड़ो थोड़ो विलंब करके बड़े यत्न सूं बाहिर जाने पर दोनो द्वारन को किंवाडन के सांकलन के देवे पर टेरा के लगाने पर शय्या के पास लाल वस्त्र सूं कंचुकवारे की नेवरा वारे पान योग्य जल

की झारी जी धरे हैं ।। सुन्दर बीडान के समूह कि सुन्दर फूलन की मालान को हू वा शय्या के पास जलपान के पात्र के पास अत्यंत गीले वस्त्र सूं आच्छादित वदनवारे जल सूं भरे माटी के कूंजा को धरे हैं ।। मोर के पीछन सूं सिद्ध कियो सुन्दर पंखा हू धरे हैं ।।१९।। लाहोर में भयो सुन्दर लाल दंडीवारो कोमल मनोहर पंखा हू पीछे धरे हैं ।। तब हमारे प्राणनाथ जी द्वारन में किंवाड लगाय के सांकलादि हू देके उछलित विलास सिंधु समूह पूर्वक जलघरा की गली सूं बाहिर पधारे हैं ।। वामे गजराज की सुन्दर गति चाल सूं हू मनोहर शोभायमान आपकी गति है ।। कितने भक्तजन आपके पीछे संग है ।। जय जय कार की ध्वनि को कर रहे हैं ।। मंद हास्य सूं आपको श्री मुखारविंद शोभायमान है ।। सुन्दरन के चक्रवर्ती महा सुन्दरवर कमल नयन प्रभुजी सुन्दर दृष्टि सूं सब जनन के मन को हरत ही कि श्रृंगार रस सार के समुद्र समूहन कूं चारो ओर वर्षा करत ही अपने मनोहर असंख्यात भक्तन सूं मिले बड़ी शोभावारे सिंहद्वार नाम द्वार को शोभायमान करे हैं ।। अपने श्री मंदिर में पधार के वाके वा आंगण में पधारके कि जो आंगण अनेकान भक्तन सूं मिल्यो है कि चंद्रवदनीन के श्री मुखन सूं प्रगट होय रहे लाखन हजारन जय ध्वनी सूं भर्यो है ।। कि जो इत उत सूं आय रहे हैं, असंख्यात भक्तन सूं कि निर्दोष मनोहर संपूर्ण भाव के समुद्र रूप कमल नयना ब्रज सुन्दरीन सो चारो ओर भर रहयो है ।। जो ब्रज सुन्दरीन के डर संताप कि वियोग चिंता रूप शर्करा सूं सिद्ध सुधा सूं जो उज्वल है ।। जो दशो हू दिशान में प्रसर रहे आपके श्री अंगरूप कमल सूं गिर रहे मकरंद प्रवाहन सूं सुन्दर द्योत है कि धोयो है जो भक्तराजन सूं जटित है ।। जो हरिणनयना सुंदरीन के कांति समूहन सूं सुवर्णमय होय रहयो है ।। कि जो विनके वैसे मनोहर रस भरे कटाक्षन सूं चित्रित कियो है ।। ऐसे आंगण में पधारके वहां अपने स्वरूप रूप श्री हस्त सूं हर्ष के समुद्रन को वर्षा करत ही भींत को सहारा लेकर वहां आप बिराजमान होय है ।।२८।। अटारी कि जलघरा के आंगण में ठहरे कि आयके तिवारी में ठहरे सगरे भक्तजन अपने नयन कमलरूप दोनों अंजली सूं श्रीराज के श्री मुखारविंद की मंगलमय शोभा को पान कर रहे हैं ।। ऐसे श्री महाप्रभुजी ठाड़े ठाड़े ही अपने कृपापात्रन के संग विराजमान मंद मुसकान सूं सुन्दर श्री मुख होवत ही छिपी हांसी टोक सूं भरी वार्ता

को करके श्री मस्तक में प्रथम जैसे उछलित विलास समूहन सूं प्रकाशमान अंग अंग वारे की असंख्य सुगंधी के तरंगन वारे ऐसे अपने उपरना को बांध के एकांत घर में पधारे हैं ॥ या अवसर में बड़े सुजान सगरे भक्त जन की सगरी स्त्री जन हू आपके पधारवे की वाट निहारत ही राज के अगणित गुणन को परस्पर वर्णन करत ही तिवारी में कि आंगण में बैठ जाय है ॥ कितने तो अपने घर सूं अब ही प्रिय के दर्शन करवे कूं आवे है ॥ और कितने तो दर्शन को पहले प्राप्त होयके अब घर में वेगी वेगा यहां आयवे कूं जावे है ॥३३॥ वेद स्मृती काव्य शास्त्र जिनने पढ़े है सुन्दर जिनके स्वभाव है बड़े बड़े पंडित समूह जिनने विजय किये हैं ऐसे असंख्यात बड़े पंडित ब्राह्मण आवे है ॥ कोई कर्णाटदेश के है ॥ कि गुजरात के है कि कितने श्रेष्ठ मथुरा के है कि कितने गौड़ देश के है और कितने कान्य कुब्ज के है कि मिथिला देश के है कि महाराष्ट्र देश के है कितने आन्ध्र देश दक्षिण देश के है ॥ कितने तो भिक्षा मांगवे वारे हैं बूढ़े है कि बाल है, कितने अनाथ है, कितनी स्त्री है, कि वीरागी है कि सन्यासी है कि विधवा, रांड है, देशांतर के कि नगरांतर है, कि श्रेष्ठ बंधीजन है कि सूत है कि चारण है, कि मागध है कि श्रेष्ठ गुणीजन है सो कृपासिंधु पूर्ण पुरुषोत्तम श्री गोकुलेशजी के शोभायमान मुखारविंद को निरखेंगे कि आपके उछलित शोभावारे श्री चरणारविंद को प्रणाम करके पूर्ण मनोरथन को प्राप्त होवेंगे या प्रकार सूं चित्त में विचार करत ही अनेक ही जन आवे है ॥३८॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे सप्तबीस तरंगः ॥२७॥

## दशम कल्लोलजी

# अष्टबीस तरंगः ॥२८॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ अष्टबीसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **अत्रांतरे योंग निषेवको स्वजगत्पतैरेष पदांबुजादेः**
**प्रक्षालना दावुपयोगी सर्वे प्रागूवन्निधन्ते जल मृत्तिकादि ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि जगत्पती प्राणप्रिय को जो खवास जी है सो या अवसर में श्री चरण कमलादि के पखारवे में उपयोगी जल मृत्तिकादि को वाके वाके उपयोगी वा वा उचित स्थल में धरे है ॥ फिर यहां सूं जायके देशांतर के बड़े मोल वारे कोमल मनोहर सुन्दर तृणन सूं सिद्ध भये मनोहर बिछोना को बिछावे है ॥२॥ उदार बुद्धिवारो यह खवास जी कबहू तो प्रभुन को विराजवे लिये नीचे मनोहर वस्त्र जामे ऐसे रूईदार लाल मखमल की गादि बिछावे है ॥ यदि शीत ऋतु होय तो धूपवारी तिवारी में देहरी के पास सुन्दर पत्थर के सहारे धूप में प्रेम सूं बिछावे हैं और समय में तो या तिवारी में बांये भाग में गवाखा के तले भींत के सन्मुख बिछोना बिछावे है ॥ भक्तजन या प्रकार सूं विचार करे हैं कि यहां ठहरवे में हमारे महाप्रभुजी को हर्ष समूह देने वारो दर्शन अछो होयगो ॥५॥ और यहां ठहरवे में या प्रभु की करोडान निधी सूं हू विशेष अभिलाषा योग्य दृष्टि हमारे पर परेगी तथा यहां ठहरवे में हृदय को दर्शन मिलेगो, यहां ठहरवे में भुजान को, यहां ठहरवे में चरण कमल को दर्शन होयगो, यहां ठहरवे में कमल समूह को विजय करवे वारे नेत्रन को दर्शन हमें विघ्न रहित ही प्राप्त होयगे ॥ यहां ठहरवे में तो परम दयालु हमारे प्रभुजी कछुक आज्ञा करेगे, यहां ठहरवे में तो आपके श्री मुखारविंद के दर्शन वचनामृतन को हम पान करेंगे या प्रकार सूं सगरे भक्तजन उत्साह भरे चित्तवारे होय के प्रथम ही अपने अपने योग्य स्थान को ले लेके वहां बैठ ही जाय है ॥ यह सगरे श्रीराज की सेवा में उत्साह भरे चित्तवारे हैं कि वचनामृत समूहन के पान की इच्छा वारे हैं ॥ कि श्री मुख में ही जिनके नयन आसक्त है कि श्री महाप्रभुजी की आज्ञा करवे में ही कमर कस रहे हैं इतने में ईश्वरेश्वर श्री प्राणनाथ जी वा एकांत घर सूं बाहिर पधारत ही चारों ओर सूं सहसा उठे सगरे वा भक्तन के नयनों

में अमृत के समुद्रन को चतुरता सूं वरसावे है ।। धर्म मर्यादा मार्ग के रक्षा करवे वारे उदार स्वभाव वारे श्री महाप्रभुजी श्री चरण कमल पखारवे आदि सगरे कार्य को प्रथम कहे जैसे करे हैं ।। शीतकाल होय तो आपके कृपापात्र सेवकजन प्रेम सूं यहां धूम रहित अंगारन की भरी अंगीठी धरे हैं ।। प्रथम जैसे अपने शरण आये जनो को यहां हू प्रथम जैसे नाम उपदेश करे हैं ।। तथा और समय में हू कृपासिंधु श्रीराज जी रंच हू बिलंब नहीं करे हैं ।।१३।। ता पाछे श्री प्राणनाथ जी यहां खवास जी ने आसन बिछायो है यहां जे श्रीराज के ज्ञातीवारे भट्ट है कि बंधूजन है वेहू नम्रता सूं श्रीराज के चरण कमलों कूं प्रणाम कर करके यहां बैठ जाय है ।। यह सगरे ही श्रीराज के ही आश्रित है, आश्रयवारे हैं और श्रीराज के ही शुभ मंगलन की चाहना करे हैं ।। श्रीराज की इच्छा को जानवे वारे सेवकजन मान देके आसन बिछाय देवे है वे सब अपने योग्य आसन पर बैठे है ।। कितने तो बालक हू आवे है ।। वे तो वा सबन के आगे आयके प्रभुन को प्रणाम करके वहां बैठ जाय है ।। बड़े, समाज में कौतुक सूं श्री राजाधिराज की श्रीमुख की शोभा को देखवे की इच्छा सूं आवे है ।। वैसे कितने तो और और कार्यन सूं हू आवे है ।। द्रढ़व्रत वारे हमारे प्रभु प्राणनाथ जी श्रीनाथ जी के मंदिर में श्री भागवत पढ़े है तो थोड़ो ही पढ़े है ।। यहां विराजमान होयके समग्र पढ़े है ।। भट जाती तो सदा कृपालु श्री प्राणनाथ जी के आसन के पास ही सदा बैठके आपके श्रीमुख रूप क्षीर सागर सूं प्रगट होय रहे शब्द रूप अमृत के समुद्र समूह को पान करे हैं ।। तब प्रणाम करके सुन्दर विद्वानजन मान पूर्वक बैठ रहे हैं ।। भिक्षुगण है सो आशीर्वाद दे रहे हैं ।। गुणीजन अपनो अपनो गुण प्रगट कर रहे हैं ।। गीत कला में जे चतुर है वे वैसे गान कर रहे हैं ।। आन्ध्र कि दक्षिणी है वे तो भोजन के लोभी मुख वारे हैं ।। कितने तो वस्त्र के लालची है ।। कितने तो पात्रन के लिये आये हैं ।। कितने तो धन की लालसा वारे हैं ।। कितने तो रोग निवृत्ति की इच्छा वारे हैं ।। और कितने तो शीत निवारण की इच्छावारे हैं और औषधी की चाहना वारे हैं ।। कितने तो विषगर्भ तैल की इच्छा वारे हैं ।। और कितने तो और और हू वड़ो बड़ो औषध चाहे है ।। कितने तो महाराज मृगांक की इच्छा करे हैं ।। कितने वेद पाठी ब्राह्मण है ।। और कितने तो बड़े शास्त्र के अभ्यास वारे हैं ।। और कितने तो अपने किये अनेक श्लोकन

को पढ़े है वैसे और हू वे वे कितने जन है ऐसे जे जे आवे है विनको कृपा महासिंधु श्री महाप्रभुजी धन वस्त्र रत्न सोना सूं कि पट्‌टु पामरी सूं ॥२३॥ कि सोना की मोहर समूहन सूं सुन्दर घोड़ान सूं कि विनकी इच्छानुसार सुन्दर रूपा की महोरन सूं कि रूपैयान सूं वैसे विनके वांछित भक्ष्य पकवान कि सुन्दर भोजनन सूं विनकूं प्रसन्न करे हैं ॥ वैसे बहुत दक्षिणान सूं कि शीत के निवर्त करवे वारे सुन्दर रूईदार श्रेष्ट कंचुक नीमादि सूं कि सुन्दर कमर पट्‌टान सूं विनको प्रसन्न करे हैं ॥ वैसे रसोयी के योग्य बहुत मोलवारे वस्तु समूह कि सीधा सामग्रीन सूं कि बड़े मोलवारे पात्रन सूं रहवे लायक सुन्दर घर मंदिर डेरान सूं कि वैसे महाप्रसादन सूं कि सुन्दर दूध गुड़ घी कि मिसरी आदि सूं विनको प्रसन्न करे हैं ॥ ता घोड़ा गाय बैलादि के लिये हू घास चारा चणादि देवे सूं विनको प्रसन्न करे हैं ॥ धोती उपरेणा कंबल पाग बड़े मोलवारे अनेक प्रकार के औषधीन सूं हू विनको प्रसन्न करे हैं ॥ वैसे वैसे वेग ही वारंबार ही मनोरथन सूं विशेष हू दान-सूं विनको आनंदित ही कर दे है ॥ वामें मंद हास्य कि मनोहर वचनन सूं कि मुख की प्रसन्नता सूं कि विनय सूं कि कृपा सूं की गुणन सूं की सराहना सूं ऐसे सबन को महाप्रभुजी यथा योग्य ही कृतार्थ ही कर देवे है ॥ या समय में हमारे प्राणनाथ जी चटायी को शोभायमान कर विराजमान है ॥ श्री महाप्रभुजी को श्री मुखारविंद है सो तो अर्बन पूर्ण चंद्रमान को विजय करे हैं, कि मंद मुस्कान जामे सदा शोभायमान है कि अमृत सिंधु समूह को हू विजय करवे वारे महामधुर वचनन को मनोहर रीति सूं जो प्रगट कर रहे हैं ऐसो मनोहर आपको श्री मुखारविंद है ॥ खूले श्री केश है दक्षिण श्री हस्त की अंगुलीन सूं की बाये श्री हस्त की अंगुलींन सूं विलास पूर्वक विनको निखार रहे हैं ॥ वामें मुद्रिकान की किरण उछल रही है ॥ दोनों कंधान पर केशन को पसार पसार के विनके आर्द्रपने को दूर कर रहे हैं कि सुखाय रहे हैं ॥ गान करवे वारेन के कि बड़े कविजनों के गीत पद्य श्लोक कवित्त छंदादि को सुन सुन के विनको अनुमोदन कर रहे हैं ॥ रघुनाथ दास आदि भक्तजन जो जो प्रश्न करे हैं सो मनोहर श्री गिरिधारी जी के वा वा लीला को, कि श्री भागवत के श्लोकन को व्याख्यान कर विनको उत्तर दे रहे हैं ॥ अनेक गुणन सूं मिले गुणीजनन के वा वा गुणन को सुन रहे हैं ॥ अत्यंत प्रसन्न होय रहे हैं ॥ कि अपने

हू कितनेक गुणन को प्रगट कर रहे हैं ॥ कि स्वयं वैसे वा गुणी को सो सो शिक्षा हू कर रहे हैं -- समजाय हू रहे हैं ॥ श्रेष्ठ ब्राह्मण पंडीत अनेक प्रकार के वेद मंत्र पढ़े है विनको आदर सूं सुन रहे हैं ॥ कि वामें शुद्ध पाठ करवे वारेन के संग तो स्वयं हू वा वा मंत्रन कूं पढ़ रहे हैं ॥ सुनवे वारेन के कान रूप दोनान में अपार गंभीर अमृत के सिंधु समूहन को वरसाय रहे हैं ॥ कि विन ब्राह्मणन को वा वा शिक्षा करत विनको अत्यंत ही पावन कर रहे हैं ॥ सुन्दर अक्षरन की शुद्धि सूं कि मधुर स्वरासू, कि प्रकार की शुद्धि सूं तो गुरुन के हू गुरु है ॥ सुनवे वारेन को तो हर्ष सागर में कि विस्मय समुद्रन में निमग्न ही कर रहे हैं ॥३६॥ और जे ब्राह्मण वेद मंत्र पढ़े है वामे यदि स्वरा में कि मात्रा में कि विसर्ग में कि दीर्घ में कि गुरु हू स्व लघु में हू भंग पढे है -- अशुद्ध पढे है वाकू सुनके विन ब्राह्मणन कूं समजावे है -- शिक्षा करे हैं ॥ यदि वे नहीं माने है कि हठी होय है, बारंबार अशुद्ध पढे है तो विनमें क्रोध हू दिखावे है ॥ दक्षिण के ब्राह्मण होय तो विनको दक्षिणी अपनी भाषा बोल के दोय वार प्यार सूं विनको निषेध करे हैं ॥ वे यदि बहुत वृथा जल्पवाद करे हैं, तो आप जाने है कि यह तो दंड योग्य है ॥ वृथा अपने को वैदिक कहावे है ॥ ताके अशुद्ध वाणीन के मंत्र अक्षर कि अशुद्धि को दिखावे है ॥ विनको तिरस्कार हू करे हैं ॥ पठन के समय में ही दंड योग्यन को स्वरा की अशुद्धि दिखावे है ॥ विनमें यदि कोई शुद्ध होय कि कोई और होय सो झूठो कहे, कि मैं ब्राह्मण हू ऐसे कहे कर द्रव्य के लोभ सूं आपके आगे वेद मंत्र को पढ़े है -- वा पर हू अत्यंत क्रोध करे हैं ॥ वामे दूर ठहर रहे कि पास ठहर रहे जे सुन्दर भक्ति सूं शुद्ध होय रहे आपके जे भक्त स्त्री कि पुरुष है जे अपने सगे संबंधी समाज के सहित है कि जे चिरपर्यंत देह आत्मा घर आदि को हू विस्मरण कर यहां ठहर रहे हैं ॥ वे सगरे ही टक टकी लगायके आपके श्री मुख की, स्वरूप की मनोहर शोभा को निरख रहे हैं ॥ तथा अपार कि निस्तुष शुद्ध उच्छलित सुधा के समुद्रन कूं वर्षा कर रही अपनी दृष्टि सूं जो वा कमल नयनीन को कटाक्षवारो कर रहे हैं ॥ तथा -- जिनको और कोई जान न सके ऐसे गंभीर भावन कूं जे धारण करे हैं ॥ कि और के अर्थ ही प्रगट करी अपनी वाणी सूं और सूं न होयवे वारे समाधान कूं जो करे हैं वाकूं अपने चित्त में जे

ब्रज सुन्दरी आछी रीत सों अपनो समाधान ही जाने है ।। ऐसे वा कमलनयनीन में श्री मुख की देह स्वरूप वा वा अपने अंगन सूं कि नयन कमलन सूं कि मनोहर वा उर्ध्वपुंड तिलक सूं कि श्री मस्तक में शोभायमान होय रही स्वभाविक श्याम रेखा सूं कि गुंजामाला सूं कि तुलसी माला सूं कि माणेक जटित कुंडलन सूं कि सुन्दर चमक रही है किरणा जाकी ऐसे सुन्दर रत्न जटित सोना की मुद्रिका वारे श्री हस्तकमल सूं ऐसे इन साधनन सूं कि श्रृंगार रस सार सिंधु के सार सागर सूं जटित होय रहे अत्यंत कि अनिर्वचनीय अकुंठित कि केवल अनुभव सूं जानवे योग्य ऐसे निर्दोष वा रस राज श्रृंगार रस को जो प्राप्त कर रहे हैं ।। तथा जो स्वभाविक मनोहर सदा विराजमान कि कोई कारण सूं हू प्रगट भये मंद हास्य सूं कि अमृत को विजय करवे वारे वचन विशेष सूं कि श्रृंगार रस के हजारन सार सागर कूं वर्षा कर रहे कि वा वा आशय को कहे रहे गुप्त ऐसे कटाक्षन सूं कि तीनों लोकन में बाहिर कि भीतर वेग ही क्षण क्षण में ही उज्ज्वल कोई अनिर्वचनीय मधुरता को प्राप्त कर रहे जे वा वा श्री अंग सूं प्रकट होय रहे अपार मधुरता के हजारन लाखन अर्बन करोडन समूह सागर है -- जे क्षण क्षण में अनुभव कराये रहे हैं ।। विन सूं अदेय दानों में अपनी सुन्दर दक्षता को जो प्रगट कर रहयो है ।। तथा श्रीराज के चारों और जे आपकूं घेरके बैठ रही हरिणबाल नयना सुन्दरी है -- विनमें आपके प्रथम कहे वा वा अंगन ने कि वा वा अद्‌भुत चरित्रन ने प्रगट किये जे अनंत अगाध अपार सुन्दरता के समुद्र है कि वैसे वे वे महात्म्य के समुद्र समूह है कि बड़े वैसे ऊंचे अनंत अपार गंभीर विस्मय के सागर है विनमें श्रीराज के अपने स्वरूप को परस करवे लिये दौड़ रहे दासो के मन को आछी रीत सो रोक के जो राख रहे हैं ।। तथा सर्वात्म भाव नाम वारे सुतार राज ने हजारन यत्नन सूं सिद्ध कियो जो कृपारूप दृढ़ पोत है कि जहाज है वा जहाज कि बड़े नाव पर सदा विराज रही जे कितनी ऐक सावधान मनोहर नयनवारी चंद्रवदनी ब्रज सुन्दरी है वे ब्रज सुन्दरी हू अपने में उदय होय रहे वा प्रिय के महासुन्दरता के कि महात्म्य के कि विस्मय के महासागरन कूं बड़े यत्न सूं उल्लंघन करके कि उतर के उज्वल मनोहर उज्वल अंगन सूं कि हृदय सुं जा श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप को वैसे वैसे प्राप्य भयी है कि जाने है ऐसे सो श्री प्राणनाथ जी अपने कितने भक्तन सूं मिले, के अपने

बड़े भैया श्री गिरिधर जी के घर में पधारे हैं ।। वहां सर्व मार्ग के रक्षक प्रभुजी अपने श्री गोस्वामी श्री विट्ठलनाथ जी के सेव्य श्री गिरिधारी जी के नवनीत प्रीय नाम को अत्यंत सुन्दर स्वरूप को प्रणाम करे हैं ।। ऐसे श्री गोकुल के प्राणवल्लभ श्री वल्लभ जी वहां के सबन को अपनो दर्शनदान देकर सगरे लोक स्तुती कर रहे हैं ।। ऐसे में अमूल्य भूषणरूप मनोहर अपने स्वरूप सूं अपनी श्री बैठक जी में अपने चटायी रूप आसन को शोभायमान करे हैं ।।५८।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे अष्टबीस तरंगः ।।२८।।

**दशम कल्लोलजी**

# उनतीस स्तरंगः ।।२९।।

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ।। अथ उनतीसमो तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **कदाचिदास्मिन समये सारंगी वादयत्पलं**
**भक्तवर्ये ध्यानदासे तथा तत्र विद्येः ।।१।।**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि कबहू या समय में वैसे भक्त प्रवर ध्यानदास जी मनोहर प्रकार सूं सारंगी कूं अत्यंत बजाय रहे हैं ।।१।। तब कोई वेद मंत्र अशुद्ध पढ़े है, तब महाप्रभुजी वाकूं समझावे है, तोहू बड़ो हठ करे हैं ।। अशुद्ध ही पढ़े है ।। वा पर महाप्रभुजी बड़ो क्रोध कियो ।।२।। तब ध्यानदास जी तो महाप्रभुन के वा दुर्बुद्धि ब्राह्मण सो प्रगट होय रहे वैसे क्रोध कि प्रयत्न को सहन करवे में समर्थ न होयके प्रभुन में बाछल्य सूं की भक्ति विशेष सूं कि प्रेम समूह सूं वा वा ब्राह्मण कूं सब प्रकार सूं असहय गारीन सूं तर्ज्जना करत भयो है ।। "अरे पापी उठ या स्थान सूं वेग जा नहीं तो तू प्रभुन को दुःख दायक है तासूं तेरे कूं वेग ही मारूंगो" यह कहत भयो है ।। यह ध्यानदास के ऐसे क्रोध भरे वचन को सुनके भगवान ब्रहम्य शिरोमणि श्री महाप्रभुजी ध्यानदास के प्रति कह्यो कि काहे को तू या ब्राह्मण को ऐसे निमर्याद बोले है ।। यामे ऐसे कहवे वारे तेरे को कोई कार्य नहीं देखे है ।। तासूं तू चुप होयके बैठ जा ।।" प्रभुन के या प्रकार

के वचन को सुनके क्षोभ को प्राप्त होयके भारी क्रोध के वश होयके सो ध्यानदास प्रभुन ने बढ़ाये वैसे सौभाग्य मद सूं उठके आपको यह कहनो योग्य है कि अयोग्य है यह विचार न करत ही प्रभुन को विना जताये, आपके वचन को न मानके ही वा सारंगी को बांध के अपने ही घर में चल्यो गयो ॥१०॥ वहां मन के खेद सूं भोजन हू न करके सगरो ही दिन क्रोध सूं जरत ही सोय के शय्या में ही पडयो रहयो ॥११॥ रात्री समय में हू जब श्री महाप्रभुजी गादि तकिया को अलंक्रत कर विराजे है वा सयम में हू श्री प्राणनाथजी को निरखवे लिये श्री बैठक जी में नहीं आयो है ॥ जासूं क्रोध सूं मन याको अत्यंत ही कठिन होय गयो है ॥ श्री महाप्रभुजी तैल शय्या पर पधारे, आधो अभ्यंग हू होय गयो तबहु सो नहीं आयो ॥ कृपासिंधु प्राणनाथ जी तो याकूं बहुत ही स्मरण कियो और कह्यो हू "अब यहां ध्यानदास नहीं देख्यो है" तब आपके सदा निकटवर्ती जनोंने विनय करी कि हां राज सत्य है सो अभी तक हू घर सूं नहीं आयो है ॥ "कोऊ वाके पास जायके, काहे को नहीं आयो है यह जान के वेग आवे" ऐसे प्राणनाथ जी सो आज्ञा कियो कोई भाग्यवान वैष्णव दौड़के वाके पास गयो ॥ जायके देखे तो सोय रह्यो है ॥ खेद को प्राप्त होय रहयो है ॥ विलक्षण वाको देख के तब भाग्यवान वैष्णव ने कह्यो "ध्यानदास जी तुमको श्री महाप्रभुजी बुलामें है ॥ सो ध्यानदास जी तो क्रोध के भार सूं भर्यो है ॥ प्रभुन ने बढ़ाये सौभाग्य भार सूं गर्वित है, तासूं सुनके उत्तर हू नहीं देवे है ॥ सो भाग्यवान वैष्णव तो बढ़ रही कृपा सूं प्रेरणा कियो फिर फिर ही याकूं नम्रता पूर्वक ईर्ष्या क्रोध रहित होयके समजावे है, ठहरयो है या प्रकार वाके आयवे में विलंब भयो ॥ दयानिधि श्री भगवान महाप्रभुजी तो उत्साह सूं निकटवर्तीन सो फिर फिर पूछे है "कि ध्यानदास जी यहां आयो है कि नहीं ? जो कोई गयो है सोहू आयो है कि नहीं ॥ यह सुनके तब तो पांच कि छे वैष्णव वाके बुलायवे कूं वाके निकट गये हैं ॥ जाय के देखे तो क्रोध सूं भर्यो है ॥ खाट पर सोय रहयो है ॥ पहले आयो जो भाग्यवान है सो तो सब प्रकार सूं याकू समझाय रहयो है ॥ प्यार प्रेम सो मनाय रहयो है ॥ यह ध्यानदास तो मौन गहे रह्यो है, उत्तर हू नहीं देवे है ॥ याके निकट ठाड़ो होयके भैया चतुरदास तो क्रोध सूं गारी देके कहे रहयो है "अरे तू तो बड़ो मूढ़ है, महाप्रभुजी बुलावे है तोहू वहां

वेग नहीं चले है तोकूं हौं का कहू'' तब ध्यानदास वैसे क्रोध के साथ ही उठके हाथ सूं लठिया उठायके अपने घर सूं निकस्यो है ॥ तामें स्थूल वस्त्र की बत्ति बनाय के वाकू जगाय के दंड दीपरूप सूं एक कोऊ बड़ो भाग्यवान वैष्णव लेके आगे मार्ग दिखायवे चल रहयो है -- यह चित्त सूं अयोग्य है ऐसे विचार के सो ध्यानदास अपने साथ आय रहे अपने दास को तीनचार वार लठिया सूं ताडन करत भयो है ॥ कि कहेत हू भयो है ''कि अरे यह बड़ो वैष्णव मेरे मार्ग को दिखायवे लिये बत्ती उठायके मेरे आगे चले है-- अरे पापी दुष्ट तू तो यह देखके हू खाली हाथ ऐसे आवे है का'' यह सुनत सो दास हू डरपके वेग ही वा वैष्णव के हाथ सो वा बत्ती को लेके चलवे लग्यो है ॥ सो ध्यानदास तो निज मंदिर में प्रवेश करके तैल शैय्या के पास जायके मौन ही गहिके बैठ गयो ॥ महाप्रभु के आगे दंडवत प्रणाम हू नहीं करत भयो है ॥ तब कोऊ सेवक नम्रता सूं प्रभुन को सुरत करायी की महाप्रभो यह ध्यानदास जी आयो है ॥ यह सुनत ही महाप्रभुजी शय्या पर पोढे है सो वेग ही उठके बैठ गये हैं ॥ और प्रेम कृपा सूं कोमल मधुर वचन हू कह्यो कि ''ध्यानदास तुमको मैंने कछु कड़वो वचन तो कह्यो नहीं है ॥'' सो ध्यानदास जी तो अपने प्रियवर के मधुर ऐसे कहे अक्षरन सूं अत्यंत ही आर्द्र होय गयो ॥ चिर पर्यंत बिना शब्द के रुदन कर रहे या ध्यानदास के नैनन सों निमर्याद जल की धारा ही वरस रही है ॥ बड़े यत्न सूं हू रहे नहीं है ॥ तब श्री प्राणनाथ जी को स्वरूप हू केवल कृपा समूह के विवश होयके कोऊ विलक्षण ही होय रहयो है ॥ सो सर्वोपर विराजमान महाकृपालु वा स्वरूप कू सगरे बड़भागी वैष्णव अनुभव करत भये हैं ॥ ध्यानदास जी तो क्षण सूं क्रोधावेश सूं रहित होयके, प्रगट भये महाप्रेम दीनता उत्कंठा सूं शोभायमान होय के सारंगी सूं कान्हरा राग में -- भाषा के -- ''श्री वल्लभ लाल कृपाल प्रभु अब कृपा करिये -- ऐसे अर्थवारे एक ध्रुव पद को प्रगट करत गान करत भयो है ॥ रसिकन के शिरोमणी प्राणनाथ जी हू कृपा समूह सूं बहुत प्रकार सूं याके संग गान करत भये हैं ॥४२॥ ऐसे दोय घड़ी पर्यंत नयनन सूं जलधारा को वर्षा करत सो ध्यानदास जी कि श्री प्राणप्रिय जी हू मिलके ही वा ध्रुवपद को गान करत ही रहे हैं ॥४३॥ तबको सो कान्हरो राग, और सो सारंगी, कि सो वैसो समय कि सो ध्रुव पद, कि यह दोनों

श्री प्राणप्रिय जी ध्यानदास जी यह सब ही वहां बिराज रहे या प्रभु के सगरे ही भक्तन को वैसे वैसे सेवन करते भये हैं ॥ कि प्रसन्न कर देते भये हैं ॥ फिर प्राणनाथ जी ऐकांत घर में जायके फिर आयके वा ध्यानदास जी को महाप्रसाद लिवायो ॥४५॥ सदा सर्वोपर विराजमान कि सब लोकन के नियंता श्री महाप्रभुजी कि जो यह महामधुर लीला है सो नीच जाति वारो हू अपनो दास होय सो अपराध हू करे तो हू या प्रभु को अंगीकार नित्य ही है, द्रढ है ॥ यह सब भक्तन के आगे प्रगट कर दिखावे है ॥ और वैसे अपने जनन पर महाप्रभुजी की दयाहू सर्वोपर बड़ी ही है ॥ यह लीला प्रगट दिखावे है ॥ अहो प्रभुन की जा प्रबल दया ने -- जात -- डोम हतो सो ध्यानदास वाकू श्री महाप्रभुजी ने अपनो अंगरूप ही बनायो है -- ऐसी आपकी दया है ॥ या प्रकार महाप्रभुजी के गुण मेरे हृदय में प्रवेश करके अपने वर्णन लिये प्रेरणा करत भये हैं ॥ तासूं यह प्रसंगोपांत प्रसंग मैंने कह्यो है ॥५०॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे उनत्तीस तरंगः ॥२९॥

### दशम कल्लोलजी

## त्रीस तरंगः ॥३०॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ त्रीसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **अथ प्रकांत मेवाहं वक्ष्ये श्रृणुतसद्धियः**
**ज्ञातयः केचिदागत्य समये उत्रैवतंनताः ॥१॥**

अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं -- हे सुधियः सुन्दर बुद्धिवारे जन अब हौं चलतो प्रसंग कहू हू सो सुनिये ॥ या समय में कितनेक जन तिवारीन में आयके आपके आगे प्रणाम करे हैं ॥ अपने संग लाये अपने पुत्र वा भैया कि भाणेज कि कोऊ और हू होय वाकूं आपके आगे वारंवार प्रणाम करायके विज्ञापना करे हैं ॥ कि महाप्रभो आज याकूं जन्मदिन है, कृपासागर श्री महाप्रभुजी वाके प्रति महाप्रसाद देवे है ॥३॥ श्रीराज को पुत्रवर श्री गोपालजी रसोयीघर में जायके यहां सगरे भट्ट भाणेजन को कि जमाईयन को बैठायके कि औरन को, कि वैष्णव भृत्य भीतरिया कि और गाम सूं आये सेवकन को

कि जिनने आज आत्म निवेदन कियो है विनको हू सो चतुरवर यथा योग्य स्थानन में बैठावे है ।। फिर भोजन की तिवारी में दक्षिण भाग में सन्मुख ही ॥६॥ पूर्ण परमेश्वर श्री महाप्रभुजी के अर्थ अमूल्य रत्नन सूं जटित सुवर्ण को कि चंदन को कि पीतल को सुन्दर पीढ़ा धरे हैं ।। यहां घोंटू के आधार अर्थ बाये भाग में उपधान छोटा तकिया धरे हैं ।। पीतल कि पड़गी धरे हैं ।। वाके ऊपर सोना को, कि चांदी को विशाल बड़ो सुन्दर भोजन को थार हू धरे हैं ।। मनोहर अद्भुत सोना के कि चांदि के सिद्ध किये १४ चौदह, १२ बारह के १७ सत्रह १६ सोलह पात्र कटोरा हू धरे हैं ।। ताते भोजन पान में उपयोगी मनोहर चमचाहू भोजन के पात्रन पर धरे हैं ।। बाये भाग में शीतल जलसुं भरे तथा लाल वस्त्र सूं कंचुक वारे नेवरा वारे जलपात्र झारी जी कोहू धरे हैं ।। शीतकाल होय तो सुन्दर बुद्धिवारो सो श्री गोपाल जी हंसंती यहां धरे हैं ॥१३॥ अपने बैठवे को स्थान श्री महाप्रभुजी के सन्मुख ही करे हैं ।। छोटे भैया को स्थान अपने पास ही करे हैं ॥१४॥ चारो और भाणेज कि जमाई तथा और सगरे भट्टन को हू यहां श्रेष्ठ बुद्धि बैठवे को स्थान सिद्ध करे हैं ॥१५॥ ऐसे वैष्णवन की पातर आछी रीत सो परोस के यथा योग्य स्थान पर स्वयं हू सिद्ध राखे है ।। ऐसे यामे उपयोगी बाकी सगरे कार्यन को वेग ही सिद्ध करके वा रसोई घर सूं वा श्री महाप्रभुन के घर में पधारे हैं ।। वहां जायके कोई मनोहर थंभ को सहारा लेके कछुक क्षणही बड़ो नम्र होयके प्रभुन के सन्मुख ही मौन गहिके रहे हैं ।। पीछे प्राणनाथ जी के उठवे की सूचना करवे वारी महा मधुर "लेचेडी" ऐसे तीलंगी भाषा को कहें हैं ।। श्री प्राणनाथ जी तब प्रिय पुत्र रत्न कि वा पुत्र रत्न की वा मधुर भाषा को कान रूप हाथ सो पान करके विखरे वारन को दोनों श्री हस्त कमलन सूं जूरा बनायके या हस्त कमल को जल सूं पखार के गुण सागर प्राणनाथ जी उठे है ।। तब भक्त, जन समूह जय जय शब्द को प्रगट करे हैं ।। प्राणनाथ जी हू या सब भक्तन के नयन कमलन में पद पद में ही उज्वल हर्ष सागरन को असंख्यात समूहन को वरसावत ही अत्यंत मनोहर विलास समूहन सूं मृगनयना गणन के हृदय समूह को बिना यत्न अपने वश करत ही रस भरी ब्रज सुन्दरी जन आपको चारो ओर सूं घेर रही है ।। वैसे विनके संग ही मंद मुसकान सूं प्रफुल्लित मुख कमलवारे राज रसोई घरमें पधारे हैं ॥२०॥

तामें प्राणनाथ जी अत्यंत मनोहर जगमोहन नाम वा घर को अपने स्वरूप सूं अत्यंत शोभायमान करत ही विलास पूर्वक वा भोजन तिवारी में पधारे हैं ॥ वामें दक्षिण श्रीमुख होयके पहले रचना किये सुन्दर आसन पर विराजमान होय है ॥२१॥ तब अपनी मनोहर अटारी के ऊपर विराजमान अपने छोटे भैया विट्ठलराय जी को बुलाय के सो प्रियतम जी को अत्यंत प्यारो पुत्रवर चतुर गोपालजी बिलंब न होय जाय यासूं अपने संग ही वाकूं लगाय के तत्काल आय जाय है ॥२२॥ तब प्रभुवर पितृचरण श्री राजाधिराज के पास ठहर के पहले रचना किये सुन्दर अपने आसन पर बैठ जाय है ॥ वैसे सुजान श्री विट्ठलराय जी हू अपने आसन पर बैठ जाय है ॥२३॥ तब वहां सगरे भाणेज आदि भट्टवर हू वैसे पहले कहे और हू सब हर्ष सूं महाप्रभुजी के चारों और अपने अपने आसन में बैठ जाय है ॥२४॥ तब बड़ी निर्मल कुल में प्रगटी पार्वती बहुजी हू सगरे बड़े मोलवारे भूषणन को धरे हैं ॥ मनोहर विलास के समूहवारे जिनके वस्त्र है कि उच्छलित होय रही निरूपम जिनके नूपुरन की ध्वनी है ऐसी सो सुन्दर सुजान अपने श्री मुख को घूंघट सूं ढांप के परोसवे लिये श्री हस्त में सुन्दर अनेक प्रकार के पकवान समूह सूं मिले थार को धरके प्रथम ही पधारे हैं सो अहो अत्यंत प्यारे प्राणनाथ जी के श्रीमुख कमल के अत्यंत उच्छलित होय रहे मधुर रसन कूं पान कर रही है ॥ औरन सूं गुप्त प्रकार सूं श्री प्राणनाथ जी हू कटाक्ष समूहन सूं याके श्रीमुख चंद्रमा की शोभा को आलिंगन कर रहे हैं ॥२७॥ या समय में उच्छलित मंद मुसकान वारे प्राणप्रिय के श्रीमुख कमल को निरख रही यह श्री बहुजी अपने उदय होय रहे मुसकानवारे श्रीमुख को जो छिपायवे में समर्थ नहीं भयी है ॥ यह श्री प्राणनाथ जी निरख के केवल मंद मुसकान नहीं करी है, किंतु आपको सो मंद मुसकान और सो परम हर्ष तथा नयन कमल हू बड़े विशालरूप वारे होय गये हैं ॥२८॥ ऐसी सो श्री बहुजी आपके भोजन पात्र थार में परोस के औरन के भोजन पात्रन में हू वे वे परोसे है ॥२९॥ वैसे सगरी बेटी तथा बेटान की बहू की वैसी और हू सगरी परोसवे वारी स्त्रीजन वेगि अनेक प्रकार के शाकन को परोस के सुन्दर भात कि मूंग कि गाय को घृत कि कढ़ी हू परोसे है ॥३०॥ सुन्दर मिरची को चूर्ण कि लोन कि जीरा कि वैसे और और सामग्री हू परोसे है ॥ यामें श्री बहूजी की सहायता और चंचलनयना

हू करे हैं ।। तब कृपा सागर प्रियवर अपने प्रियपुत्र को आज्ञा करे हैं कि पुत्र इन सबन सूं सबन के भोजन पात्रन में हर्ष सूं आदर सूं वेग ही परोसनो कराय ले ।।३२।। तब श्री गोपाल जी ''हाँ जो आज्ञा'' ऐसे कहे कर सो वैसे ही करामें है ।। तब श्री प्राणनाथ जी मंत्र उच्चारण करके घृत सहित भात को सिंचन करके चित्रमुखो के लिये छोड़ कर देकर वेगा आचमन करके वेगि प्राणाहुती को करे हैं ।।३३।। तब सर्वेश्वरेश्वर श्री महाप्रभुजी भोजन करे हैं ।। कमल दल जैसे शीतल सुखदायक प्रफुल्लित आपके नयन है कि आपको श्रीमुख कमल राज प्रफुल्लित प्रफुल्लित है ।। कि तब अत्यंत नम्रता भरे मनोहर वा श्री गोपाल पुत्र के संग-सुनवे वारेन के हृदय को अत्यंत हरवेवारी अपनी बाल लीला के विलास सूं भरी अनेक अमृत वाणीन को आज्ञा करे हैं ।।३५।। प्रथम भोजन के समय श्री गोस्वामी जी के दक्षिण भाग में हौं बैठ रह्यो हू -- अग्रज दादाजी तो बायी ओर बैठ रहे हैं ।। श्री पितृ चरण श्री गोस्वामीजी तो जो जो रुचिदायक सुन्दर निर्दोष वस्तु होय तो वा दादा कूं छोड़के वाकूं न देके मेरे को ही सो सो दे देके अत्यंत ही मोकूं प्रसन्न करते ।।३६।। तब यह श्री गोपाल जी सुनके पूर्ण हर्ष सूं भरे होवत ही कहें हैं कि ''श्री गोस्वामीजी आपमें अत्यंत वाछल्य भरे हैं अपने थार सूं केवल आपकूं परोसे कि अपने और पुत्र को हू परोसे'' यह सुनके स्वयं श्री प्राणनाथ जी आज्ञा करे हैं कि मेरे में हू वाछल्य भरे मेरे कूं हू श्री गोस्वामी जी देते, और को नहीं देते ।।३८।। कबहू तो यह महाप्रभुजी यह चर्चा करे हैं कि मेरे मामा गोविंद भट्ट जी की स्त्री मामी जी बहुत सुजान हती, निष्कपट स्वभाव की हती अत्यंत बालक भाववारे मेरे में ही निमर्याद प्रेम राखती ।।३९।। यह मैं हू खेलवे लिये वाके घर वारवार जातो यह सुजान तो अपने घर में श्री गोस्वामी जी के संग भोजन करके गये मोकूं कहती कि -- ''वत्स पुत्र मेरे घर में भोजन करोगे का'' ।।४०।। ''ऐसे मोकूं कहे ही कहे सो उच्छलित प्रेम को धारण कर रही वाकूं नाहीं कहवे में तो हौं समर्थ नहीं होयके सदैव ही हां हां आरोगेगे ऐसे ही कह देवुं ।।४१।। तब गुण समूह सूं भरी यह मामी जी मेरे पास सामग्री रुचती लायके सुख सों बैठ जाय ।। कोमल सुखदायक अनेक पकवान मोकूं देती जाय ।। मैं हू सदा याके वश होयके सुन्दर स्वाद भरी वा वा सामग्री को आरोगतो जावू ।। तृप्ति तो होय नहीं फिर फिर ही वा वाको चाहना करतो

जावुं'' ऐसे श्री गोकुल के नाथ ईश्वरन के ईश्वर श्री महाप्रभुजी प्रसन्न होयके अनेक प्रकार की महास्वादु सामग्री के करवे वारी श्री काकीजी हू वैसे भोजन की चर्चा को करे हैं ।। श्री गोपाल जी आदि सब जनतो या वार्ता को सुनत जो अत्यंत दुर्ल्लभ है ऐसे हर्ष को प्राप्त होय है ।। या समय में ही मंद मुसकान सूं मनोहर मुख कमल है सुन्दर मधुरूप महामीठो जाकूं ऐसे ब्रज युवतीन के पति श्री गोकुलप्रभुजी श्री गिरिधारीजी की वार्ता को मधुर प्रकार सो चलावे है तथा रोम हर्ष पूर्वक अपने कि श्री गिरिधारी जी के महाप्रसाद के रस समूह की कथा को हू निरंतर चलावे है ।। कि श्री गिरिधरण प्रभु के महाप्रसाद के तुल्य जगत में और कछु हू वस्तु नहीं प्रतीत होय है ।। स्वर्ग में कि भूतल में कि वा वा सगरे लोकन में हू ऐसी वस्तु नहीं है ।। यह महाप्रसाद तो अमृत के समुद्रन को हू तुच्छ करे हैं ।।४६।। और घरन में हू होय है ।। परंतु हमारे घर में श्री भगवान गिरिधारी जी के दान योग्य मनोहर अनेक प्रकार के सुन्दर रस मिले फल दल समूह भरी सामग्री कि विधि जो निरंतर मनोहर ही होय है ।।४७।। जगत में ऐसो मनोहर शाकादि को संभार तो कछु नहीं होय है ।। ऐसी शिखरन कहु नहीं होय है ।। ऐसे पकवान जात हू कहू नहीं होय है ।। जो श्री गोकुल में मिले है ऐसे अनेक प्रकार के फल समूह हू अनत नहीं होय है ।। यह हमारो स्थल सबन सूं ही निर्दोष है, श्रेष्ठ है ।।४८।। दूध कि, वे वे पकवान, छाछ की जल की मूल की, सुन्दर घृत की केला की आंब की नींबू बैंगन की टेटी की कंद की भोज्य लेहय चूष्य की पान योग्य कि फूल पत्ता कि कंकोडा कि बथुआ कि मीठो नींबू श्री नाथ जी के श्री गोवर्द्धन में हू होय है, यहां हू होय है ऐसो अनत कहू नहीं है ।।४९।। ऐसे श्री महाप्रभुजी को विविध प्रकार को मधुर वचन अमृत के समुद्रन को वर्षा करे हैं ।। यहां वे सुनवे वारे सगरे हू जन बड़े प्रसन्न होय जाय है ।। हर्ष कि आंसून को वरसावे है ।। कि सब प्रकार सूं प्रफुल्लित रोमावली सूं शोभायमान होय जाय है ।।५०।। श्री गोपाल जी तो अत्यंत प्रसन्न होवत ही महाप्रभुजी को ऐसी वा वा वाणीन को आदर विशेष सूं सुने है ।। और वा वा वार्ता के अमृत रसपान में लोभी होयके प्रभुन सूं पूछे हू है ।। वामें आपके भाणेज मधुसूदन भटजी कि गोवर्द्धन भट्ट जी की कृष्णराय भट्टजी ईश्वरेश्वर महाप्रभुजी सो वा वा मधुर प्रकार सूं स्नेह भर सूं पूछे है ।। यह निर्दोष गुण

सागर प्रभुजी वैसे मधुरता पूर्वक कहें हैं ।।५३।। तथा कृपा समूह के सिंधु श्री महाप्रभुजी प्रफुल्लित कपोल मंडलन सूं हर्ष को अनुभव करावत ही पुरातन श्रेष्ठ बुद्धिवारे श्री गोस्वामी जी के सेवकन को कि श्री आचार्य जी के सेवकन को कि वैसे अपने श्री चरण कमलन के सेवकन को हू वैसे वैसे प्रसंग चलाय के सराहना करे हैं ।।५४।। तथा बड़ी सुजान श्री पार्वती बहुजी हू नूपुरन की ध्वनि आदि भूषणन के झनकारन सूं श्री अंग के चमत्कारन सूं कि मंद मुस्कान कि शोभा समूहन सूं कि नैनों के चपलता समूहन सूं की अनेक प्रकार के भाव प्रकाशन सूं कि अनेक लीलान सूं कि हंसन के विजय करवे वारी गति सूं या प्राणनाथ जी के आनंद के समूह को बढ़ावे है ।।५५।। सो श्री बहुजी अत्यंत चतुर है ।। प्राणनाथ जी के भोजन पात्र में कि वैसे औरन के हू भोजन पात्र में भात कि आखें मूंग, कि रोटी खीर, सेव वड़ा कि दूध कि दही कि छाछ कि सुन्दर मिसरी मिली शिखरन की समय अनुसार आंब आदि पक्व फल कि शीतकाल होय तो बहु प्रकार के पकवान की श्रेष्ठ घृत बूरा की उष्णकाल होय तो सो सो शीतल स्वाद सुगंधी सामग्री आदर सूं बारंबार परोसे है ।। श्री प्राणनाथ जी के आनंद समूह को बढ़ावे है ।।५८।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे त्रीस तरंगः ।।३०।।

दशम कल्लोलजी

## एकत्रीस रुतरंगः ।।३१।।

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ।। अथ एकत्रीसमो तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **श्री मदगात्र स्यालं सेवायां सदा वर्तमानो**
**भृत्यो योसावेन स्मिन्काल गहेऽस्पेशितुङ्गकी ।।**
**ऊर्जा दौ मासेतः कोष्टं साधु सच्यादिमासे**
**श्रीमत्पात्री द्वार्या शय्यामास्तुणोति प्रमादया: ।।१।।**

अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि -- श्री गोकुलराज के श्री अंग की सेवा में सदा वर्तमान जो सेवक खवास जी है सो या समय में कार्तिक आदि महिना होय तो श्री महाप्रभुजी के घर के कोठा के भीतर ज्येष्ठ आदि

महिना होय तो श्रीमती तिवारी में शोभा प्रभा भरी शय्या जी को विछावे है ॥१॥ जब यह सुजान खवास जी कोठा के भीतर सेज बिछावे है ॥ तब तो यह कोण के आगे दक्षिण दिशा में अनेकान चित्रवारो मनोहर निर्मल वस्त्र पिछाबाई को भीत में पहले बांधे है ॥ फिर भूतल में जाजम नामवारे तृणासन कूं विछावे है ॥ वा पर कुसुम रंग की छः (६) के सात कोमल विचित्र तूल विछावे है ॥४॥ तामे श्री चरणन के धारण अर्थ कोमल सुन्दर चरणोपधान की पाय तकिया रूईदार पधरावे है ॥ फिर शय्या के ऊपर बड़े मोलवारो कोमल चादर वस्त्र विछावे है ॥ फिर बड़ो सिराहनो पधरावे है ॥ यह सिराहनो अमूल्य है ॥ बहूत ही सुन्दर है ॥ श्री गिरिधारी जी के गादी जी सूं भयो है ॥ प्रसादी अमूल्य लाल मखमल को है ॥ श्री गिरिधारी जी के प्रसादी मंगलमय पवित्रा वस्त्रमय फूलन की मनोहर मालान सूं शोभायमान है ॥ वैसे प्रसादी रूई सूं भर्यो है ॥ पीरे पाट के डोरा वारे मनोहर सोना की हरड झबीयान सूं सुन्दर है ॥ वैसे चमकने मनोहर अद्‌भुत श्याम पाट के फोदनान सूं शोभायमान है ॥ ऊपर कोमल सूक्ष्म श्वेत वस्त्र सूं ढांप्यो है ऐसो सिराहनो धरे हैं ॥ देशांतर के कोमल पंखन सूं भरे कपोलन के तकिया हू सिराहने के दोनों ओर धरे हैं ॥११॥ याके ऊपर सों श्री खवास जी कसुंभी रंग की चित्र विचित्र की अति सूक्ष्म वस्त्र सूं ढांपी ऐसी चादर तूल को पधरावे है ॥ शीतकाल होय तो दोय तूल और धरावे है ॥ ताके ऊपर लोकन की दृष्टि न परे कि रज हू न परे यासूं वा सेज्जा कूं बड़े मोल वारे सेज पोस चादर सूं ढांपे है ॥ वाके आगे श्री चरण पोंछवे को उनको बड़े मोलवारो मनोहर कंबल जुलीचा बिछावे है ॥ वाके ऊपर सुंदर गुणवारो कोमल श्वेत चरण वस्त्र कि चरण पोछवे को वस्त्र धरे हैं ॥१५॥ सिराहने के पास भूमि में पानी पात्र के योग्य पीढ़ा धरे हैं ॥ ता पर सुन्दर लाल वस्त्र सूं ढांप्यो जलपान पात्र झारी जी धरे हैं ॥१६॥ बीडा धरे हैं तथा और जो उपयोगी होय सोहू सो बुद्धिमान खवास जी धरे हैं ॥१७॥ तथा सिराहने की गेंदुवा के पास ही नीचे पड़गी धरे हैं ॥ कि ताते जल की भरी ऐक पीतल की कलशी हू धरे हैं ॥ वाके पास दर्प्पण हू धरे हैं ॥ गरमी ऋतु होय तो तूल दोय कि तीन होय है ॥ चादर वस्त्र हू गरमी के तारतम्य घटती बढ़ती को देखके धरे हैं ॥ बडो गरम पवन चले है ॥ तो बिछोना के वस्त्र ऊपर गीले वस्त्र के स्पर्श

सूं अत्यंत शीतल होय रही कोमल तृणन की मनोहर चटायी शीतल पाटी बिछावे है ।। वर्षा ऋतु होय तो केवल चादर वस्त्र धरे हैं और तो सावधान तो खवासजी पहिले कहे अनुसार धीरे-धीरे करें हैं ।। अषाढ़ादि महीना में तो सेजा को भीतर जैसे तिवारी में ही बिछावे है ।। वैसे बिछायत करे हैं ।। बाये देश भीत में तो भक्ति सूं भक्त जनों ने अर्प्पण करी कर्णाट देश को चित्र वारी पीछवायी को बांधे है ।। अथवा मनोहर चित्रित रेशमी बाँधे है ।। कि अनेक रंग की, कि केवल सुफेद ही बांधे है ।। वैसे भक्ति सूं भक्तन के लाये चंदवा हू वैसो बांधे है ।। अथवा सोना की तंतु सूं बनाये कि सोना झरी के चंदवा को बांधे है ।। पीढ़ा के ऊपर कर्पूरदानी तथा चूनादानी धरे हैं ।। चार कि पांच बीड़ा हू धरे हैं ।। ता पाछे शीतकाल होय तो प्रभुन के विराजबे लिये धूप पर आंगण में चोकी बिछावे है ।। वाके ऊपर आसन शोभायमान धरे हैं ।। याके पास चरण पोंछवे को आसन हू धरे हैं ।।२८।। रूईदार बड़ो नीमा धरे हैं ।। सो सुजान खवास जी गरम रहवे लिये ताते जल सूं भर्यो बड़ो जल पात्र हू यहां धरे हैं ।। पनही जोड़ा हू यहां धरे हैं ।। कबहू प्रभुन कू यह चहिये ऐसे मन की भावना करके सब वस्तु यहां धरे हैं ।। अब श्री महाप्रभुजी भोजन लीला कर रहे हैं ।। आपके श्री हस्त कमल पखारवे की इच्छा सूं यह खवास जी ताते जल सूं भर्यो पीतल को बड़ो पात्र करवा कि ताते जल सूं भरी कोगलान के करवे लिये ऐक कलशी की बहुत महीन चूर्ण करी सरसों की खली कि दंत तथा नखन के शुद्ध करवे लिये टूक-टूक किये सींक तथा सुन्दर तृणन सु भर्यो मनोहर पड़गा यह सब वस्तु स्वयं तथा और सेवकन सूं लिवाय के रसोई घर में जाय है ।। वहां उत्तर दिशा में स्थित जलधर के तिवारी में प्रवेश करके वहां सब धरे हैं ।। कबहू यहां पीढा पश्चिम मुख धरे हैं ।। कबहू आंगण में प्राणनाथ जी के विराजवे लिये उत्तर मुख चौकी धरे हैं ।। अब यहां सो सुजान खवास जी श्रीराज के पधारवे की बाट निहारे हैं ।। श्री कल्याम भट्ट जी कहें हैं -- अब भक्तन के अमृतरूप वृत्तांत को पान करिये ।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे एकत्रीस तरंगः ।।३१।।

दशम कल्लोलजी

# द्वेत्रीस स्तरंगः ॥३२॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ द्वैत्रीसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **यदा प्रभु भोजनार्थ प्रयाति समहान**

**संतदाकति पये तत्रासते सेवार्थमस्यतेः ॥१॥**

अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि जब श्री महाप्रभुजी भोजन अर्थ रसोयी घर में पधारे हैं तब कितनेक वे भक्त तो आपकी सेवा अर्थ वहां ही रहे हैं ॥१॥ वहां गरमी के दिनन में श्रृंगार आर्ती के अवसर में आंगण में पहले बांध्यो जो चंदुवा है वाके ऊपर ही कितने भक्तजन बड़ो चंदवा शमीयाना बांधे है -- जो छाया सघन होय जाय ॥ सो हू श्री प्राणनाथ जी के मुख्य मंदिर के आगण में और श्रीनाथ जी के आंगण में हू वे चंदवा बांधे है ॥ तिवारी में कि द्वार भूमि में कितनेक भक्त जलन सूं सिंचन करे हैं ॥ वैसे और भक्त तो शीतलता की चाहना वारे हैं तासूं बहुत खस के पंखान सूं वा वा स्थल को पंखा करे हैं ॥ भोजन करके श्री प्राणनाथ जी जब पधारे हैं तब तो श्री प्राणनाथजी में स्नेह विशेष सूं विशेष शीतलता को इच्छा करत बड़े आदर सूं फिर वहां वहां जल छिरके है ॥ पंखा हू अत्यंत अधिकवार करे हैं ॥ कितने भक्त तो सुगंधी समूहन सो भरे यंत्र द्वारा निकारे गुलाब के जलन सूं शय्या कूं की पिछवाई को फिर फिर हर्ष सूं सिंचन करके राखे है -- जासूं भीतर बाहिर सों मंदिर सगरो ही सुगंधित होय जाय है ॥७॥ बड़ो तातो पवन चलतो होय तो तब कितने भक्तजन सुन्दर श्वेत चंदन को गुलाब के जलन सूं शिला में घसावे है ॥ जामें कर्पूर कस्तूरी आदि सगरी सुगंधी मिलावे है ॥ या प्रकार के अंगराज को पात्र सूं लेकर बड़े आदर सूं लगायवे लिये वहां ठहरे हैं ॥ और कितने तो सगरी सुगंधिन सूं मिले अनुलेप को लेकर ठाड़े है ॥ और कितने तो अगरु चंदन के रस चोवा को लेके ठाड़े है और पधार रहे श्री प्राणनाथ जी को जानके वा गुलाब जल सूं सेज्या कूं तथा पिछवायी को फिर हू सिंचन करे हैं ॥ कितनेक श्रेष्ठ भक्तजन तो सिराहने में अगरु रस को चोवा को चतुरता सूं लगावे है ॥ कितने भक्तजन

अंगराज की अनुलेप कि लोक में प्रसिद्ध मेद जवाद की सुगंधी अत्तर हू लेके ठाड़े है ॥ सिराहने में हू लगावे है ॥ कितनेक भक्त तो पंखा लेके अत्यंत सावधान होयके ठाड़े है ॥ और सुन्दर बड़े भक्त तो प्रभुन की कोई सेवा को वैसे और भक्त कोई सेवा को आदर सूं करवे लिये ठाड़े है ॥१५॥ वैसे और भक्त तो महाप्रभुन के कोमल चरणन को श्रम न होय या विचार सूं सावधान नयन कमल वारे होयके श्रीराज के पधारवे के मार्ग में तिनका कि कंकरादि के दूर करवे सूं वा मार्ग को शुद्ध स्वच्छ करे हैं ॥ वर्षा के दिन होय तो वर्षा के निवारण करवे वारे सकलात नाम की पट्टेनाम चादर छत्र आदि को हाथ में लेके कितने भक्त ठाड़े हैं ॥ या प्रकार सूं श्री महाप्रभुजी के असंख्यात ही सेवक भक्तजन महाप्रभुजी की सेवा में आसक्त चित्तवारे हैं ॥ तासूं अपनी अपनी वा वा सेवा में सावधान होयके वहां वहां ठाड़े है ॥२१॥ वामें कितने भक्त तो आदर सूं प्रभू की धनन सूं सेवा करे हैं ॥ और तो वाछल्य सूं सेवा करे हैं ॥ और दीनता सूं सेवा करे हैं ॥ और तो रसन सूं सेवा करे हैं ॥ कितने तो प्रसाद की अपेक्षा सूं सेवा करे हैं ॥ और कितने अपने स्वार्थ की सिद्धि लिये सेवा करे हैं ॥ और कितने तो वा वा कार्यन की सिद्धि लिये सेवा करे हैं ॥ श्री गोकुलपती महाप्रभुजी हू वा सबन के मनोरथन को वैसे वैसे पूरण करे हैं ॥ विनके मनोरथन सूं हू विशेष विशेष हू विनको बिना यत्न के ही देवे है ॥२२॥ श्री प्राणनाथ जी भोजन लीला करवे कूं जब पधारे हैं प्रायः सगरे ही जन अपने अपने घरन कूं जाय है ॥ जे वेग ही फिर आयवे कूं समर्थ नहीं है ॥ वे तो प्रभु की सेवा अर्थ आपके घर बैठ के जीमें ही रहे हैं ॥२३॥ कितने तो वेगी अपने घर में जाय के वहां रसोई करे हैं ॥ कितने तो तेल लगाय के घर में न्हावे है ॥ और कितने तो तेल लगाय के श्री यमुनाजी में ही न्हावे है ॥२५॥ और कितने तो घर में न्हाय है ॥ वेगी भोजन करके महाप्रभुन की बैठक जी में जायके ठहरे हैं ॥ जो भोजन करके श्री प्राणनाथ जी पधारेंगे आपकी सेवा करवे कूं चाहना करे हैं ॥ और कितने तो आपको दर्शन लिये लोभी है -- तासूं भोजन किये बिना ही वा वा आवश्यक कार्य को छोड़के ही आवे है ॥ वे सगरे ही या राज के दर्शन वियोग सूकाय रहे विकल है ॥ प्रेम के समुद्र रूप है ॥ अपने घर सूं दौडत ही प्राणनाथ जी के मंदिर में आवे है ॥२८॥ श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि भोजन

करके आरोग के पधार रहे श्री प्राण वल्लभ जी को जो दर्शन है सो अर्बन अमृत हू जासूं वार डारे हैं ऐसो सगरे मधुरन के चक्रवर्तीन के ईश्वरन को हू ईश्वर है कि महा महा मधुर वर है ॥२९॥ अहो सवन को हू चित्त या प्राणवल्लभ जी के दर्शन की उत्कंठा समूहरूप बाण समूहन सूं सदा विध्यो भयो ही देख्यो है ॥३०॥ श्री कल्याण भट्ट जी कहें हैं कि प्राणन सो प्यारे श्रीराज के दर्शन अर्थ बड़े चंचल नयनवारी जे ब्रज सुन्दरी है वे मार्ग में मिल रहे अनेक समूहन को अत्यंत मधुर स्पष्ट वेग यों पूंछे हैं कि जगतो के पती ब्रज के रत्न गुणन के सागर चतुरवर श्री वल्लभ जी, अब कहा करे हैं ? भोजन कर चुके के नहीं ? आरोग के अपनी बैठक जी को अलंकृत कियो कि नहीं ? या प्रिय को दर्शन मोकूं होयगो कि नहीं ? ऐसे कहती जाय है ॥ सुन्दर गुण समूहवारे कि हास्य सूं मनोहर श्री मुख कमलवारे तिहारे प्राणप्रिय को यहां दर्शन करवे की इच्छा करत अत्यंत वेग सूं ही दौड़ रही है ॥ पूर्ण चंद्रमा को विजय करवे वारे जिनके मुख कमल है, मनोहर जिनकी बुद्धि है वेग सूं दौड़वे में गिर रहे हैं बड़े सुन्दर चंचल होय रहे वस्त्र की भूषण मणी हू जिनकी, कि ऊंच श्वासन कूं जे भर रही है, कांप रहे हैं हृदय कि दोनों स्तन जिनके, कि प्रिय के वियोग सूं जे विह्वल है, अपनी सखी सहेली कि बहेन कि छोटे छोटे पुत्रन को हू छोड़ के अपने आवश्यक कार्य को हू छोड़के वा प्रिय को हम कैसे प्राप्त होय या विचार सूं अत्यंत उत्कंठा भरी है ॥३४॥ अब तो सो प्राण प्यारे जी भोजन करके उठेगे ही आचमन करके वेग ही उछलित मधुर विलास समूह पूर्वक अपनी रस भरी दृष्टि सूं सगरी अपनी भक्त सुन्दरीन को प्रसन्न करत ही अपनी सुन्दर श्री बैठक जी में पधारेंगे ही ॥३५॥ अहो या प्राणनाथ के अमृत के समुद्रन को विजय करवे वारे प्यारे रसमय दर्शन को हम मार्ग में प्राप्त न भयी तो बड़ो ही खेद ही होयगो ॥ तब तो हम मर ही गयी, या प्रकार सूं वारंबार अत्यंत विचार करत ही प्राण प्रभु की लीला सूं हू हर लीनी जिनकी बुद्धि है, ऐसी वे ब्रज सुन्दरी या प्राण प्रभु की श्री बैठक जी में पधारे हैं ॥३६॥ श्री प्राण प्रभुन के संग भोजन को करके फिर उठके मुखको जल सूं पखार रहे भीतर वारे भक्तन को वेगी कोमलता सूं वा श्रीराज के उठवे के वृत्तांत को वे कमल नयनी सुन्दरी पूछे है ॥ वे भक्तजन हू वा सबन को प्रसन्न हृदयवारी ही कर देवे

है ॥३७॥ तब अत्यंत सुहावनी भावना श्री बैठक जी मे जाय के सगरे सुन्दर मनुष्यगण जिनके गुणन की सराहना करे हैं ॥ ऐसी वे अत्यंत मधुर वाणी कि कृति, लीला सूं मिली वे चन्द्रमुखी सुन्दरी अबलागण वेगावेगी वहां ठाड़क सुहृदय की कोमल विचार वारे हृदयवारी और ब्रजसुन्दरी जनो के संग ही ठहरे हैं ॥ कितनी अटारी में कितनी आंगण भूमि में कितनी हर्ष सूं वाके द्वार में और कितनी जलघर कि होम घर में, कि प्रसादी भंडार में कि लदाव नाम स्थान में कि वाके ऊपर की गली में कि सींहद्वार में कि रसोई के घर के मार्ग में कि वाके द्वार में कि प्राणनाथ जी के आचमन की योग्यता सूं मधुर स्थल में वैसे वैसे भक्ति सूं भरी वे वे कमलदल लोचना कि रस भरे मृगनयना सगरी ही वा वा स्थल में स्थिति को करे हैं कि बिराजमान होय है ॥४०॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे द्वौत्रीस तरंगः ॥३२॥

### दशम कल्लोलजी

## त्रयस्त्रिंश स्तरंगः ॥३३॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ त्रयतीसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **बुढ़ान परतः परेनगर तत्रथैवा परात्परे च विविधाकृती जुषः प्रयागादपि । स्मरारि नगरादकब्बर पुरात्र थैवा गरा भिधादपि मुगेरितः सहसरामतो गोडतः ॥१॥**

अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं कि अनेक प्रकार के नाम के आकारवारे कितने भक्त स्त्री पुरुष बुढ़ान पुर सूं आये हैं ॥ वैसे और नगर सूं आये हैं ॥ कि कितने प्रयाग सूं कि काशी सूं अकबरपुर सूं कि आगरासूं कि मुगेरी सूं कि सहसराम सूं कि गौड़ सूं आये हैं ॥१॥ कितने वैसे फतेपुर सूं कि करेटी सूं कि पट्टी अंबीयाला सूं कि मकसुदावाद सूं कि राजमहल सूं कि पुरुषोत्तम क्षेत्र सूं कि दरभंगा सूं नवद्वीप सूं कि सुतारी गाम सूं कितने तो बहादरपुर सूं कि चंपारण्य सूं कि चौरागढ़ सूं कि गढ़ा सूं कि कटंगा सूं तथा वीवपुर सूं कि करासूं खटोला सूं मुकुंदपुर सूं कि हस्तीगाम सूं

सहिजादापुर कि माणिकपुर सूं कालंजर सूं कि ऐकडला सूं कि गाजीपुर सूं समसावाद सूं कि कोर्रासूं कि घाटीमपुर सूं कि फिरोजाबाद सूं कान्यकुब्ज सूं कि भोगीपुर सूं हू आये है ॥५॥ और कितने भक्त तो कलापु गाम सूं कि क्वहमपुर सूं गौडा सू कि कामरूप सूं मिथीला सूं कि अंग सूं बंगदेशन सूं कि कलिंग देशन सूं वैसे पूर्व दिशा सूं जे आये हैं कि हिंडोली सूं कि करी गाम सूं उजीरपुर सूं कि विछोदा सूं कि तोरण स्तंभ सूं कि रामपुर सूं कि मेवाड़ सूं उज्जैन सूं कि कूकड़ेश्वर सूं कि उदयपुर सूं कि नाजीगाम सूं कि झांडोल सूं पनोरा सूं कि बडाली सूं कि बीजानगर सूं कि दुधालीया सादरड्ढ मोढ़ासा गाम सूं कि ईडर सूं खल्हेणा सूं कि सावली सूं असोंग सूं कि कितने गोलारीया सूं कि वीसलनगर सूं कि वसई बड़नगर सूं कि माणसा सूं समयू कि लाधणज सूं कि धणियोर बाबरा गाम सूं कि खेरोल भादर ड्ढ गाम सूं कि तथा धोल का सूं कि स्तंभ तीर्थ खंभात सूं कि अहमदाबाद सूं कि सिकंदरपुर सूं कि असारवा कि राजपुर कि सारंगपुर सूं आये है ॥ कितने तो खाडीया रूपपुर सूं पंचसरा सूं कि छीकरी नाम गाम सूं कि हालार देश सूं कि गटका सूं कि धारीका सूं कि महाखंभालीयापुर सूं कि खंभालीया सूं कि सोढ़ाणा सूं कि राजकोट सूं कि नयगाम सूं कि सैद्पुर सूं झेर सूं कि उवारस सूं कि गतराडया सूं कि वीरपुर सूं कि बड़ोद सूं कि कपड़वणज सूं कि साकरिया गाम सूं कि नवानगर सूं कि धरोला गाम सूं कि कैयाणा सूं बावरा सूं कि काठीयाबाड़ सूं कि कूड़ानाम गाम सूं कि बलवद सूं कि राजपाटन सूं कि सिद्धपुर सूं कि हालार सूं आये हैं ॥ झालारा कि डंढाय सूं कि मिहसाणुपुर सूं कि नडीयाद सूं कि गोधरा सूं सोजंत्रा गाम सूं महीसागर तीर्थ सूं कि भरूअच सूं कि बड़ोदरा सूं कि वैलु गाम सूं कि सूरती सूं कि कितने लीवोदर सूं कि राजपीपला सुं कि राणापुर सूं कि कोढ़ीया गाम सूं ॥२०॥ प्यारा गाम सूं कि अंकलेश्वर सूं कि नंदरबार सूं कौसुंभ सूं कि मुलेर सूं कि बड़गाम सूं रावेल सूं कि सिधखेड सूं धरणी गाम सूं कि बेटावाद सूं कि भामगढ़ सूं कि देयाल पुर सूं कि नालधा सूं कि ॥२२॥ चौर नारायण सूं कि सुनीहरा सूं कि सारंगपुर सूं आंतरी गाम सूं ॥२३॥ कि गोपाचल सूं कि बटगाम सूं कि बडोखरा सूं कि ईन्द्र प्रस्थ दिल्ली सूं कि मधुपुर मथुरा सूं कि पानीपथ सूं कि सोनपथ सूं कि कितल पथ सूं कि हस्तिनापुर सूं कि कुरूक्षेत्र सूं सिंहनंद

सूं कि लाहोर सूं पृथुदक सूं कि ठट्ठा सूं मुलतान सूं कि समाना सूं वैसे और और हू अनेक प्रकार के पुर, गाम, नगर, देश सूं वैसे पश्चिम दिशा सूं कि दक्षिण दिशा सूं कि उत्तर दिशा सूं अनेकान स्त्री पुरुष भक्तजन श्री प्राणनाथजी के श्रीमुख कमल के दर्शन करवे लिये आये हैं । सो सब ही उछलित दीनता पूर्वक अपने अपने योग्य स्थान में बैठे हैं ॥ कितने भाग्यवान अब आये हैं ॥ और कितने भाग्यवान तो प्रातःकाल आये हैं और कितने सायंकाल आये हैं ॥ कितने भक्त तो विश्राम किये पीछे आये हैं कितने बुद्धिवारे तो और और हू समय में आये हैं ॥२९॥ प्रेम के हजारन निमर्याद सर्वोपर समुद्र जिनमें उछल रहे हैं ऐसे भक्तजन जा जा देशन सूं आये हैं वे वे सब आय आयके आपके श्रीमुख कमल को निरखे है ॥ एसे वा भक्तवरन के जे स्थान है -- हौं तो विनको हू वंदना करू हू जासूं वे वे स्थान हू साक्षात कि परंपरा सूं हू जिनको या स्थानन को सबंध भयो है कि जे वा स्थानन के दर्शन करवे वारे हैं कि वा स्थान के आधीन है वहां रहे हैं वा सबन को हूं निरंतर पावन करे है ॥३२॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे त्रयस्त्रिश तरंगः ॥३३॥

### दशम कल्लोलजी

## चतुस्त्रिंश स्तरंगः ॥३४॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ चतुस्त्रिसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **अथ सविभू जानस्तत्र भूत्काकृपा जलधीः दुग्धां पिबती सहसितं तत्पाने वाक्यंमपिठति ॥१॥**

अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी कहे हैं कि कृपासागर श्री महाप्रभु जी भोजन कर रहे हैं ॥ ता ता सामग्री को भोजन करके सबके पीछे हास्य सहित सुन्दर दुग्ध को पान करे है ॥ वाके पानमें श्लोक हू पढ़े है ॥ **विदाही-की बहुत गरम तीखे अन्न कि पानन कू जो ईहां मनुष्य खाय है विनसूं विशेष ही दाह होय है वा दाह कि निवृत्ती अर्थ अत्यंत शांति अर्थ भोजन के अंतमें हू दूध को पान करे** ॥२॥ या समय सहभोजी जनो के अर्थ कितनेक क्षण श्री महाप्रभु

जी वा वा वार्ता को करत कि सुनत ही विराजमान होय है ।।३।। फिर श्री महाप्रभु जी दक्षिण हस्त कमल सूं विलास पूर्वक जल को लेके **अमृतापिधान मंत्र को पढ़त आचमन करे है ।। शैख नश्क में कि पुण्यण्य स्थान में पद्मन अर्बन वर्ष निवास करवे वारे अर्था जनन को यह जल नित्य** अक्षयरूप सूं **प्राप्त होय ।। ऐसे मंत्र पढ़ के जगदीश श्री प्रभुजी आचमन के शेष जल को चित्रादी के ऊपर डारे है** ।। फिर बाये श्री हस्त कमल सूं जलपान योग्य जल पात्र को धारण करत उठे है ।। श्री मुख कमल कि हस्त कमलादि के पखारवे की लीला करवे की इच्छा सूं भोजन घर सूं बाहिर तिवारी में विलास पूर्वक प्रियवर जी पधारे है जहां खवास ने पीड़ा कि पड़गी आदि धरी है ।। वहाँ पधारके वहां रत्न जटीत सोना के पीड़ा पर राज विराजमान होय है ।। सुन्दर रत्न मोती सो मिले निमर्याद रस सूं भरे अनुपम सोना के कुंडलन को धारण करे है ।। शोभायमान हास्य सूं शोभायमान आपको श्री मुख है ।। प्रसन्न होय रहे है अत्यंत चंचल दृष्टि सूं कमल नयनी सुन्दरीन के मुखकमल की परम शोभा को पान करे है ।।७।। सुन्दर प्रकाश भरे पीड़ा के पास भूतल में वा पानी के पात्र को धरके सुन्दर जूरा की मधुरता सूं सगरे जगत को चमत्कार वारो करत ही प्रसन्न श्रीमुख चंद्रमा वारे रससागर श्री महाप्रभुजी कमल नयना सुन्दरीन को अपने श्री मुख चंद्रमा के अमृत समुद्र समुहन को पान करामें है ।।८।। इहां बाये भाग में ताते सुहाते जल सूं भरी पीतल कि कलशी धरी है, वाको बाये श्री हस्त सूं लेकर प्रसन्न मन श्री प्रभुजी दक्षिण हस्त कमल को पखार के नव वार कोगला करे है ।।९।। फिर आपके पसारे श्री हस्तकमल में खवास जी सरसों कि खली के कोमल चूर्ण को धरे है कछुक जल हू धरे है ।। तब जगत्पत्ति श्री महाप्रभुजी अत्यंत रुखो करवेवारो कि चिकनाई को हरवे वारे वा खली को चूर्ण को दोनों श्री हस्त कमलन सूं अत्यंत मर्दन करे है ।।१०।। फिर श्री हस्त कि अंगुली में धरे वा गीले चूर्ण को अधर के बाहिर हू लगावे है कि ऊपरवारे ओष्ट पर हू लगावे है ।। फिर खवास जी लांबे जलपात्र सूं श्री राज के दोनों श्री हस्त कमलों में सुन्दर सुहाते जल को डारे है ।। श्री महाप्रभु जी के पास विराजमान एक ब्राह्मण हस्त कमल में माखी निवारण वस्त्र को लेकर माखी निवारण करवे कि सेवा करे है ।। वैसे दूसरो एक ब्राह्मण गरमी के दिनन में धीरे धीरे पंखा करे

है ।। शीत समय होय तो अंगीठी में अग्नी प्रज्वलित होय रही है वासूं शीत कूं निवारण करवे सूं प्रसन्न होवत ही श्री प्राणनाथ जी श्री हस्त कमलन को कि श्री मुख कमल को मर्दन करके बहुत प्रकार सूं भली-भाँति सो पखारे है ।। बारंबार रसभरी कृपा दृष्टि सूं कृपा अमृत की वर्षा करके अपने सेवक जनन को सिंचन कर रहे है ।।१३।। या समय में बेटी के बेटा की बहु आदि सूं मिली श्री पार्वती बहुजी भोजन की तिवारी में छिपके विराजमान होयके टेरा सूं अपने को छिपाय के उच्छलित प्रेम प्रवाह सूं उच्छलित रोम हर्ष पूर्वक अपने अत्यंत प्यारे पति के श्री मुख चन्द्रमा को निरखे है ।।१४।। या समय में उच्छलित रस समुह कृपासागर प्रियवर जी बेटी जी कि बेटा आदिकन सो कि औरन सूं हू मधुर मधुरकथा करत ही अपने जनन को कृतार्थ करत ही अमृत के करोडन महासमुद्रन में सुन्दर जोबन वारी सुन्दरीन को चिर पर्यंत निमग्न करत ही वहाँ शोभायमान होय है ।।१५।। इहां मनोहर जिनको मुखकमल है कि भ्रु संबंधी तरंग के लवलेश सूं हू करोडन कामदेव के समुह को जिनने विजय कियो है ऐसे प्रियवर या प्राणनाथ जी को भलीबाई जी कि राजबाई जी अंग अंग समूह में उछल रहे परम रस के करोडन महासागर जामें ऐसी होवत ही अत्यंत चंचल दृष्टि सूं बारंबार निरखे है ।।१६।। सुन्दरता के समुद्र यह श्री महाप्रभु जी श्री हस्त कमल तथा श्रीमुख कमल को इहां पखार के सावधान चित्तवारे कि उछलित विलास भरे सो प्रिय जी वेगा सीकन के टूक लेके दंतन कि शुद्धी हू करे है ।।१७।। वाकूं पडगी में डारके फिर जल के बड़े पात्र सूं नमाय के अनेकवार जल लेके कोगला बहुत करे है ।। फिर श्री हस्त में धारण किये सीकन के बहुत टूकन सूं दंत पंक्ती को शोधन फिर करे है ।।१८।। फिर हू प्राणनाथ जी बहुत कोगला करे है ।। फिर पीतल की कलशी सूं दक्षिण चरण में जल डारे है वाकूं पखार के दूसरो चरण हस्त कमल सूं पखारे है ।। या समय में खवास जी पात्रन में आपके श्री चरणामृत को लेवे है ।। वा पात्री से हस्त में चरणामृत लेके आदर सूं पान करे है ।। फिर सो चरणामृत वारी पात्री को वेग भीतर श्री बहुजी बेटी बेटान कि बहुन के पास पठाय के प्राणनाथ जी को श्री चरण पखारत निरख के पान योग्य जल पात्र को आपके पास धरे है ।। तब श्री प्राणप्रभु जी तो तासूं दक्षिण हस्त कमल सूं जल लेके विधी अनुसार तीन बेर आचमन करे है ।। फिर

विलास पूर्वक सागर सों नाभि कमल में अंगुष्ट को राखके विस्तार सूं वाके ऊपर जल को डारे है ॥ अमृत के समुद्रन को वरसावत श्लोक को पढ़े है **अगस्ती कुंभकर्ण च शनि च वडवानलं आहार परिणामार्थ स्मरामि च वृकोदरम्** ॥१॥ भोजन के परिणाम पचन अर्थ अगस्त कुंभकर्ण कि शनि कि वडवाग्नि कि वृकोदर-भीमसेन को स्मरण करू हूँ ॥२२॥ फिर रस सागर श्री प्राणनाथ जी हस्त कमल को वेगा पखार के रंच जल लेके दोनों श्री हस्त कमलन को मर्द्दन करके श्री मुखारविंद को नीचे करके हस्तकमल कि अंगुलीन सूं निकरे बूंदन को नेनन पर डारे है ॥ यामें बहुत गुण है ॥ फिर पूर्ण प्रसन्न चित्त श्री प्राणनाथ जी हस्तकमल को दोनो नयन कमलन पर पूर्ण भ्रमाय के उपरना लेके श्रीमुख कमल को कि हस्त कमलन को पोछे है ॥ तब खवास जी वेगा उठे है ॥ जलपान के पात्र को लेके आगे बाहिर जाय है ॥ वाकूं ध्यान कर रही बाहिर बैठ रही जो भक्त जनता है भक्त समूह है हर्ष सूं प्रफुल्लित रोमावली वारी होय के चारों ओर जय-जय शब्द को करत ही उठके ठाड़े होय जाय है ॥ सुन्दर गजराज के विजय करवेवारी अपनी गती को स्पष्ट करत कि रसिकवर प्रिय जी प्रगट होय है ॥२५॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे चतुस्त्रिंश तरंगः ॥३४॥

### दशम कल्लोलजी

## पंचस्त्रिंश स्तरंगः ॥३५॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ पंचस्त्रिसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **सविध स्थितैः सह भक्तराज वरैर्महान सगेह तो निज मंदिरं प्रति सुंदरा सुनिरीक्ष्यमाण मुखांबुजः युवती भिरुल्लसित मुखेंदु महोल्लसत्पुलंक ब्रजदधति भिरार्द्र तममनश्वर साद्विभिर्भृश मुग्दतैः ॥१॥**

अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहे है कि तब पास ठहरे भक्तराज वरन के संग रसिकवर श्री प्राणनाथजी रसोई घर सूं सुन्दर अपने मंदिर में पधारे है ॥ उछलित होय रहे रस सागरन सूं उल्लसित प्रफुल्लित मुखचंद्रमावारी कि अत्यंत प्रफुल्लित रोमावली को धारण कर रही कि उछल्लित रस सागरन

सूं अत्यंत आर्द्र होय रहे मनको धारण कर रही जोवनभरी सुंदरी श्री आपके सुन्दर मुखारविंद को निरख रही है ॥१॥ श्री पार्वती बहुजी जिनमें मुख्य है ऐसी स्त्रीजन तो वा रसोई घर में ही अभिलाषा सूं ही रहे हैं ॥ वहां महाप्रभु जी के भोजन पात्र में विराजमान महाप्रसाद भोज्य है वाकू उछलित हृदय सूं सिद्ध किये अपने पातर कि पात्रन में धरे है ॥ बाकी हू सेवक समाज के लिये ही राखे है ॥२॥ तब कमल वदनी जो महाभाग्यराशी जो नाद्वारी नाम ब्राह्मणी है सो श्री महाप्रभुजी के भोजन थार की भरी सरस जोवनवारी सुंदरी जन प्रसन्न होय के इहां आय आय के पूर्ण चंद्रमा को विजय करवे वारो जाको श्रीमुख है ऐसे कमल नयन की मंदहास्य सूं मनोहर विलास समुह भरे कि उछलित हर्ष वारे अनुपम करुणाभरे भगवान गोकुल भूपति प्यारे को बड़े रसभाव सूं निरखे है ॥७॥ तामें भाग्यवती हरीदासी राजबायी, भलीबाई आदि जे प्राणनाथ में भक्तिभरी सरस अनेक भाववारी स्त्रीजन हैं वे तो उछलित रोमावली वारी होवत कि उच्छलित हर्ष सूं वा प्राणप्रिय को निरखत ही अपने मन में यों कहे हैं कि ॥९॥ अहो श्री गोकुलप्रभु के श्रीमुख कमल संबंधी उछल रह्यो जो अधिक कांतीरूप सागर है सो जय कूं प्राप्त होय रहयो है ॥ कि सबन सुं विशेष उत्कृष्ट है जामें बड़ी चतुर रस सुन्दरी जनन कि दृष्टि वेग ही डूब के शीतलता को प्राप्त भयी है ॥ जामें वे दृष्टि वियोग दुःख समुह कूँ हू विशेष सूं कंपायमान करत भयी है कि निवर्त कर रही है तथा अमृत को हू विषम कठोर विषरूप हू जाने है ॥१०॥ अहो प्राणनाथ जी के झूल रहे लंबे दोनों भुज दंड तो बहुत ही सुन्दर है जासूं मनोहर रस मय चंचल नयना सुंदरीन को गाढ़ आलिंगन में वेग ही यामें अत्यंत परम सुख के देने वारे हैं ॥ तथा अनुपम निर्मल महाशोभा भर्यो अत्यंत ही दृढ़ प्राणनाथ जी को वक्ष स्थल हू आलिंगन में महा सुख समूह के दायक है ॥ अहो ब्रज सुन्दरीन के हृदय को निरंतर हरवे वारे उछलित शोभावारे श्रीमुख को धारण करत श्री गोकुलनाथ जी मधुर लीलावारे है जासूं इहां अपनो नाम कहे कर कि नामदान देके सगरे ही लोक को सिद्ध होय गये सुंदर मंगल फल समुहवारो ही कर देवे है ॥ श्रेष्ट रसभरी दृष्टि सूं कि दयालु मनसूं अपनायत सूं अंगीकार करके यह गुण सागर महाप्रभुजी परम अत्यंत मधुर फल राज अपनो स्वरूप ही दान कर देवे है ॥१२॥ अहो पद्म के दल जैसे जाके नयन है कि मदभरे

गजराज के गमनको जो जय करे है कि मदभरे गजराज सूं सुंदर चाल वारो है कि प्रफुल्लित कमल पंक्ती सूं हू सुन्दर श्री मुखवारे है कि चंचल नेत्रा सुंदरीन के चित्त को हरवे वारी जाकी चेष्टा है कि वे ब्रज सुंदरी जाके निर्दोष गुण समुह कि लीलान को गान करे है -- कुंडल जिनमें शोभायमान है ऐसे कान और कपोल जिनके सुन्दर हैं परम रस भरे अपने सगरे सेवक भक्तन सूं मिल्यो है ऐसे श्री गोकुलनाथ जी सबन सूं उत्कृष्ट जय वारे हैं ।।१३।। अहो केसर के आछे पिसे कि छाने अतुल मनोहर रस में चतुरता पूर्वक वारंबार रंगी महामनोहर वा धोती को यह धारण करे है कि जो वैसी धोती हू शोभाभरी मनोहर श्री गोकुल की युवतिन के मनके हरवे वारी है ऐसो सब लोकन को ईश्वर हरिण लोचना सुंदरीन को निरंतर प्यारो श्री प्राणनाथ जी ब्रजभूमी में शोभायमान होय रह्यो है -- कि विलास कर रह्यो है ।।१४।। अहो प्राणप्रभु को जो हस्तकमल है सोहू सर्वोपर मनोहर शोभायमान है जासूं जो हस्तकमल मांगवे वारेन में निधी समूह को वरसावे है कि दान करे है, कि भक्तन के मस्तक पर चंदन रस को वरसावे है ।। कि परस सूं शीतलता करे है ।। कि मृगनयनी के हू कुचन में अमृत के समुद्र को वरसावे है ।।१५।। अहो प्राण प्रभुन कि जो यह दृष्टि है अपने किरण समुहन सूं मृगनयना ब्रज सुन्दरीन के श्रीमुख कमल को प्रफुल्लित जो करे है -- यह योग्य है जासूं पलकन सूं बढ़ायी है सूर्य कि शोभा जामें ऐसी कांती को धारण करे है ।।१६।। अहो महाप्रभुन को सो कृपा को कटाक्ष सर्वोपर विराजमान है जो अपने जनन में इहां अत्यंत मधुर अनुपम अखंडित फलन के समूहन को निरंतर ही दान करे है ।।१७।। हे गोकुल प्राणनाथ महाप्रभो राज कि जय होय ।। अहो प्रभो श्री राज अपने सगरे जनन कि दृष्टि को आपके चरणन में प्रणाम कर रहे सगरे अवतार कि अवतारीन के जे मुकुटमणी है विनकी कांति सूं लाल होय रहे राज के श्री चरण कमल सूं निकस रहे माधुरी के समुद्रन कि विशेष उछल रही लहरीन सूं ताप समुह सूं रहित ही करो हो कि सगरे अवतार अवतारी आपके चरणन में प्रणाम करे है ।। वा चरण कमलन कि माधुरी सूं अपने सगरे जनन कि दृष्टि के सगरे ताप को निवृत्त करो हो ।। वेसे अपने जनन के मनको हू सदैव सिद्ध सकल वांछित मनोरथन वारो करो हो वैसे अब अपने श्री अंग कि सेवा रूप आनंद समूहन सूं अपने जनन के हस्त कमलन को

हू वेग पूर्ण करिये कि विनके हस्त कमलन को हू अपने श्री अंग की सेवा रसदान करिये ॥१८॥ अहो या प्राणनाथ को उच्छलित किरणवारो जो केश कलाप रूप कि जशरूप है सो सर्वोपर विराजमान है जासूं अंधकार समूह को जो श्यामता को मदरूप सूर्य है वाके सर्व ग्रास में जो लंपट है -- बड़ो बली है -- कि आपको जुरा महाश्याम है ॥ तथा **या प्राणप्रभुन को अधर रूप जो अगस्त है सोहू सर्वोपर विराजमान है जासूं कल्पवृक्ष के नवीन पल्लवन की शोभारूप जो समुद्र है वाकूं तो एक चुल्लू बनाय के पान कर जाय है अगस्त समुद्र को एक चुल्लू कर पान कियो है तासूं वह हू वैसो है ॥ कि कल्पवृक्ष के नवीन पल्लव सूं हू आपको अधर कोमल है लाल है मनोहर रेखावारो है तथा स्त्रीन के धैर्य कि मान रूप जे वा तापी कि अतापी है विनके हू भक्षण करवे वारो है ॥ अगस्त ने वा तापी आतापी है विनको हू भक्षण कियो वैसे आपको अधर हू स्त्रीन के धैर्यमान को पान करे है, धैर्यमान हर लेवे है ॥२०॥ अहो या प्राणनाथ के श्रीमुख चंद्रमा को करोडन अर्बन पूर्ण चंद्रमान के विजय सूं प्रगट भयो निरंतर दर्प्प है । अभिमान है सो आपके मस्तक को ऊंचो होवनो है कि आपको श्रीमस्तक जो मनोहर ऊंचो है सो करोड़न पूर्ण चंद्रमान के विजय के आगे मान सूं ही है कि विनसूं हू महासुन्दर है ॥२१॥ अहो हम सवन के सुख को कारण जो या प्रिय को मनोहर नासावंश है सो या श्री प्राणनाथ के लावण्य रूप अमृत समुद्र के अत्यंत सुन्दर बुद्‌बुद कि फेन की शोभा को धारण करे है तासूं सर्वोत्कृष्ट है** ॥२२॥ अहो या प्राणनाथ के जे कटाक्षरूप बाण है वे बड़े तीक्ष्ण है जासूं कमलनयनी सुंदरीन को जो मनरूप लक्ष्य है सो अत्यंत विस्तारवारे सुंदर कांती समूह रूप कोट के भीतर हू लसे है ॥ के अत्यंत कठिन कठोर कुचनाम दोय पर्वतन के पीछे कि विनकी ओट में छिपके हू रहे है कि धैर्य समुहरूप बड़े चर्म के वस्तर को पहीर रहयोहै तोहू ऐसे प्रबल बली मन को हू यह प्रिय के कटाक्ष रूप बाण निरंतर ही भेद कर डारे है ॥ कि चीर फार डारे है कि विवस कर डारे है ॥२३॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे पंचत्रीश तरंगः ॥३५॥

## दशम कल्लोलजी

# षटत्रीश स्तरंगः ॥३६॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ षटत्रीसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **अथेश्वरो गुणनिधी रुच्छलद्र सां बुधिः प्रियः सकरुण मध्येवर्तिनः । दशासुधो दधि शतकोटी वर्षणादी हाद्रयन्निज्जन तां प्रसर्पतिः ॥१॥**

अर्थ -- श्री कल्याण भट्‌ट जी कहे है कि ता पाछे ईश्वर गुण निधान भक्त वत्सल भगवान उच्छलित रस सागर सो हमारेप्यारे मार्ग में विराजमान होवत कृपा सहित दृष्टि सूं करोडान अमृत के समुद्रन की वर्षा सूं अपने जन समूह को आर्द्र करत अपने भक्तन के अनेक प्रकार के भाव को विचार करत और विचार सूं हू रहित होयके मार्ग में धीरे-धीरे पधारे है ॥ आपके ही स्वरूप में आसक्त जिनको चित्त है ऐसे जे आपके वैसे रसभरे भक्त हैं, कि आपने जिनको रसमार्ग में वरण अंगीकार कियो है, ऐसी जे रसात्मक कमल नयनी असंख्यात ब्रज सुंदरी है, जे सदा सर्व प्रकार सूं सर्वोपर विराजमान है ॥ स्वरूप रसकी जे अत्यंत प्यासी है वे सुंदरी हू अपने घर देह संबंधी बंधु जनन को हू भूल के अपने प्रफुल्लित नयन कमलन सूं प्राणनाथ के प्यारे श्रीमुख कमल को संकोच रहित ही पान करे है ॥ या अवसर में कितनेक भक्तजन या श्री प्राण प्रभु में अत्यंत वात्सल्य भरे है ॥ तासूं श्री राज के श्री चरण कमलन कूं सावधानता सूं टक टकी लगाय के निरखे है ॥ और भावना हूं करे है ॥६॥ कि अहो या हमारे प्राणप्रिय के चरण कमल दोनों अत्यंत ही सुंदर है, अत्यंत ही कोमल है -- मार्ग की रेती सूं दुःखी होयगे कि मार्ग के तिनकान सूं सब प्रकार सूं विकल होय जायगे कि धूप सूं तपायी भूमी पर धरवे सूं हू विकल होय जायगे कि अत्यंत शीतल भूमि के परस सूं हू दुखी होयगे कि कीच वारी भूमि में विराजवे सू हू दुःखी होय जायगे अहो इहां पधार रहे या हमारे प्यारे को जो श्री अंग है अत्यंत शोभा भर्यो है परंतु निरावरण है ॥ तासूं शीत पवन धूप आदि सूं क्लेश को ही प्राप्त होयगो ॥ हा हत प्रभ सी हम का करे ॥ ऐसे विचारे है ॥। प्राण मन देह आत्मा इनके अत्यंत कांपे है तासूं अत्यंत ही कायर होय है ॥१०॥ श्री प्राणनाथ जी मंद मुसकान

पूर्वक या भक्तन को कि भक्त सुदर्शन को हू वैसे वैसे निरखत ही बिना वचन के ही समाधान करे है, नैनन सूं आपके श्री मुखारविंद की सुंदरता के सागरन को भक्तजन पान कर रहे है ॥ वहां ठहरे भक्तन के मुख सो प्रगटी जय जय ध्वनी को सुनत ही अपार विलास सागर पूर्वक राज अपने श्री मंदिर में पधारे है ॥१३॥ शीतकाल होय तो. आंगण में धूप पर सेवक चौकी बिछावे है वाके ऊपर श्रीराज विराजे है ॥ आपके सेवक भक्तजन ता चारो ओर सूं ठाड़े होयके ही आपको निरखे है ॥ कितने बैठके निरखे है ॥ आंगण में बहुत ही स्त्री पुरुष भक्त है ॥ कितने जल घर में ठहर के कि अटारी में कि और ठौर में हू ठहर के सावधान होयके निरखे है ॥ तब खवास जी तांबुल बीड़ा श्रीराज के आगे धरे है ॥१६॥ श्री गोकुलाधीशजी श्री हस्त सूं वा बीड़ा को उठाय के वासू सींकन को निकार के डार देवे है ॥ वेगि वाके ढांपवे वारे ढाक के पत्ता को खोले है ॥ वामें सूं उत्तम प्रसर रही सुगंधीवारे सुंदर कोमल तांबुल को दक्षिण हस्त सूं लेके श्रीमुख को ऊंचो पसार के वामें दूर सूं डारे है ॥ श्री हस्त को परस मुख सूं नहीं करामें है ॥ सुंदर प्रिय प्राणनाथ जी विलास पूर्वक श्री हस्त सू ढाक के पत्ता कूं गोद में ही धर राखे है ॥ तब खवास जी अपने हाथ में राखी कपूरदानी को ढकना दूर करवे सूं खुले मुखवारी करके दक्षिण हाथ सूं आपके आगे करे हैं ॥ श्री प्राणनाथ जी वेगि वासूं बरास के टूक लेके विलास पूर्वक अपने श्रीमुख कमल में डारे है ॥२२॥ मधुर लीलावारे श्री प्रभुजी इच्छा होय तो खवास जी सूं चूनो मांग के लेवे है, श्री मुखारविंद में डारे है ॥२३॥ जे जे भक्त या प्रभु के जा जा अंग में प्रेम आशक्ति वारे है जहां जहां ठैहरवे सूं वा वा अंग को निरखे है ॥२५॥ सो श्री प्राणनाथ जी उच्छलित रस सिंधु भरे भक्तन सूं मिले है ॥ वैसे वैसे शोभा सूं उछल रही मृगनयनी सुंदरीन को कटाक्षरूप हस्त कमलन सूं पकर पकर के जबर सूं ही श्रृंगार रस के लाखन करोडन समुद्रन में निमग्न कराय रहे है ॥२७॥ वहां चतुरन के शिरोमणि श्री प्राणनाथ जी उच्छलित होय रही मंद हास्य रूप चांदनी के उज्वल विलास पूर्वक गोद में धरे वा ढाक के पत्ता को हस्त कमल में लेके वेग ही अंगुली पर चक्र जैसे अत्यंत भ्रमावे है, फिरावे है ॥२९॥ तब आपकी कृपासूं परवश होयके नम्रता पूर्वक आपको कोऊ कृपापात्र भक्त विस्मय सागर में मग्न होयके आपके वचनामृत

धारान सूं अत्यंत आर्द्र होय रही आपकी या लीला को पसारे दोनों कानो सूं पान करवे कि इच्छा करत दोनों हाथ बांध के आपके आगे प्रणाम करके प्रेम सूं पूछे है कि हे महाराजाधिराज हे प्रभो यह बडो आश्चर्य और कौतुक अत्यंत प्रतीत होय है ॥ आप जो अंगुली सूं ऐसे चिर पर्यंत पत्र को मनोहर रीती सूं भ्रमावो हो और तो कोऊ ऐसे रंच हू नहीं कर सके है ॥ आप श्री तो विना यत्न के ही कैसे यह भ्रमावो हो ॥३४॥ तब उदय होय रहे मंद मुसकान कि महाचांदनी सूं दिनको हू बादर रहित पूर्णमासी कि रात्री बनावत ही सुंदरवर प्रिय जी वाके प्रति आज्ञा करे है कि ''हम बालपने में ऐसे बहुत प्रकार सूं चिर पर्यंत खेलते सो अभ्यास ही अबहु वैसे कबहू कछू करावे है ॥'' तब यह सुनके सो विनय करे है कि ॥३७॥ ''प्राणनाथ जी वा बाल समय में आप का का क्रीडा करते'' तब प्राणनाथ जी आज्ञा करी कि ''मेरी क्रीड़ा एक दोय होय तो कहु, परंतु वे तो अनंत ही है सो कैसे कहू -- वे तो अत्यंत ही मधुर है ॥ बालपने में तो मेरे मन को जोर सूं हरती ही वे मेरी क्रीडा जब मेरी स्मृती में आवे है तब वैसे ही क्रीडा करू हूं, यह मेरो मन होय है ॥ अहो बालपने में जो जो कियो है सो अब का, का स्मरण करे'' ॥ फिर यह भक्त नम्रता आदर पूर्वक विज्ञापना करे है कि ''तथापि प्राणप्रभो विनमें कितनीक कछुक तो या क्रीडा को सुनाईये'' तब तो श्री महाप्रभुजी वा भक्त को अपनी बड़ी सभा के संग ही अपने मंद हास्यरूप महामुक्ता राशी समुद्र के मध्य में प्रवेश कराय के संकोच को करत ''अब बिन कथा सूं का है'' ऐसे अमृत सागर के मंथन सूं सगरी सभा को कि वा भक्त को हू भीतर कि बाहिर अत्यंत ही सिंचन करे है ॥ तब यह भक्त विज्ञापना करे है ॥ ''कि प्राणनाथ आंख मिचोनी लीला को हू आपने आदर कियो होयगो'' तब मंद हास्य करके श्री राज आज्ञा करे हैं कि ''केवल आंख मिचोनी लीला को आदर नहीं कियो किंतु ओर हू अनेक लीलान को बारंबार बहुत ही आदर कियो है'' ॥४६॥ फिर भक्त पूछे हैं ''कि प्रभोराज श्री अपने घर में ही विराज के खेलते कि बाहिर हू पधारके खेलते तब प्राणनाथ जी अक्षर अक्षर में चिंतामणि के समूहन को वर्षा करत याकूं कहे हैं कि ''बाहिर हू पधारके हर्ष देनेवारी लीला करी है'' ॥ तब फिर भक्त कहे है कि ''हे कौतुकीन बड़े खेलवारे महाप्रभो बाहिर कोई के घर में पधारते कि कोई बाग में खेलवे कूं पधारते''

॥४९॥ तब याके प्रति प्राण प्रिय जी आज्ञा करे है कि अपने संबधी सेवकन के घर में हू पधारके चिर पर्यंत खेल करतो वैसे बगीचान में हू कि बड़े बनन में हू पधारतो कि सगरे स्थानन में हू पधारतो कि गंगाजी में कि श्री यमुनाजी में कि त्रिवेणी में हू पधार के सब प्रकार सूं खेल करतो'' ॥ तब सो भक्त विज्ञापना करे है कि ''महाप्रभो श्री राजके संग मधुर लीलान में प्रायः बालक हू बहुत होयगे ही'' तब मंद हास्य करके प्रभु जी आज्ञा करेहैं कि ''मेरे संग बिहार में बालक हू रहेते, बालिका हू रहती ॥ मेरे संग बिहार, खेल में बालभाव में कोई हू कछू हू बुरो नहीं कहतो'' ॥ तब सो भक्त प्रभुन सूं पूछे है कि ''श्रीराज कि तब अवस्था कितनी हती'' ॥५३॥ तब श्रीराज भीतर के ओर भावसूं आज्ञा करे हैं ''हमारी अवस्था कि कथा करवे में तू योग्य नहीं है ॥'' तब फिर सो भक्त पूछे है ''राज के खेल बिहार के जे संगी बाल कि बालिका हते वे कितने वर्ष के हते'' तब मंद हास्यकर श्री आप आज्ञा करे है कि ''यह प्रसंग हू करवे योग्य नहीं है'' यह हमारो सुखतो अपने अनुभव सूंही जानवे योग्य है'' ॥ तब फिर सो पूछे है कि हे रससागर प्रभो कोन-सी कोन-सी क्रीड़ा कैसे कैसे आपने करी, कछुक तो प्रगट करिये, प्रभो हमकूं सुनवे कि बड़ी उत्कंठा है आतुरता है ॥'' ऐसे याके वचन को सुनके सुंदरवर जी मंद हास्य करके ठहर जाय है -- कछुक विनको कहवे कि ईच्छा हू करे है परंतु मन में उच्छलित कछुक प्रकार को भावना करत वेग ही वा कहवे सूं निवर्त होय जाय है ॥ तब सो भक्त आपके अमृत सो हू अधिक मीठे वा वचनामृत कोपान करवे कि इच्छावारो होयके ऐसे विज्ञापना करत उच्छलित रससो या प्रसंग को अत्यंत बढ़ावे है ॥ हे कृपासिंधो महाप्रभो वा बगीचान में कि वनमें हू प्रायः सुंदर ही अनेक स्थल होयगे, वृक्ष हू मनोहर होयगे, कुंज गुल्मलता हू कोमल मनोहर होयगे, नवीन पल्लव कि सुगंधी हू मनोहर अनेक रंगन के पराग को वर्षा कर रहे मनोहर फूले अनेक फूल होयगे, सुंदर सुगंधित मधुर अनेक प्रकारके फल होयगे ॥ विनमें सुगंधी की माधुरी सूं परवश चित्त होयके भ्रमर हू मधुर गुंजार करत होयगे ॥ विचार आवे है कि मोर कोकिल, पोपट, मैना, कि चाष कि और हू सुन्दर पक्षीगण राजके हर्ष बढ़ायवे वारे सुन्दर शब्द करते होयगे ॥ तथा यह हू जानूं हू कि मधुर मंद गर्ज्जना कर रहे कि मंद मंद वर्षा कर रहे ऐसे बादरन की हू उन्नति होती होयगी ॥

तथा वैसे वा स्थानादि में कि वैसे वैसे समय में हे प्रभो वैसे बालकन के संग कि वैसी बालिकान के संग वैसे वैसे बिहार कर रहे आपको का सुख कैसो सुख कितनो ही सुख कैसे कहा सूं उदय भयो होयगो, कैसी शोभा होयगी कि का गोष्टी भयी होयगी कि कैसे कोन से रस प्रगटे होयगे, कब कब कहां-कहां कैसे-कैसे आपने विनके संग बिहार कियो होयगो, कि बे बालक कि बालिका हू आपकू रमण करावते होयगे ।। कि विनके संग रमण कर आपने कौनसे रस अनुभव किये होयगे सो हों नहीं जानूं हूं ।। हे प्रभो यह यद्यपि हमारे आगे कोई संकोच सूं कि कोई कारण सूं प्रगट नहीं करो हो तोहू श्री प्राणनाथ जी के मंद मुसकान को कि विलक्षण होय रहे नयनन को कि राज के अंग अंग कि रोम रोम को हू देखके हम सब अनुमान करे है किंतु यह श्रीराज के मंद हास्य कि दृष्टि कि अंग कि रोम रोम ही उच्छलित रसके वश होयके श्री राजसूं हू नहीं डरेहै यह स्पष्ट ही सब प्रकार कहे रहे है ।। सो महाप्रभो अपने अनुभव सूं कि श्रीराज के अंगन के कहवे सूं हमहूं वा रससागर में अब निमग्न होय रहे है ।। जो आपने हमकूं दिखायो हू नहीं है ।।७६।। हे प्राणनाथ सांच कहिये ।। प्रभो राज के जा रस सागर में हम अब निमग्न भये है कि अत्यंत ही निमग्न होय रहे है ।।७७।। सो का सत्य है ।। हमकूं तो सांचो ही प्रतीत होय है ।। तब सुंदर वर श्री प्राणनाथ जी कटाक्षरूप श्री हस्त कमलन सूं सगरी ब्रज सुंदरीन को पकर के अपने स्वरूप सूं प्रगट भये श्रृंगार रसके सार के करोड़न रस के समुद्रन में निमग्न करत ही वा ब्रज सुंदरीन सू हूं रस सागर में स्वयं हू निमग्न होवत ही रोम हर्ष कि स्तंभ जड़ता कंप कि गद्‌गद् कंठ हर्ष कि आंसू स्वरूप को बदलनो ऐसे उत्कृष्ट सात्विक भावना सूं आनंद रोम हर्षादि पूर्वक ही आलिंगन कियो भयो ही सो भगवान सुंदरवर जी अपने सूं अपने को रोक के वाके प्रति आज्ञा करे है "कि जो तुमने कहयो है सो सत्य ही सब कहयो है वामें रंच हू अन्यथा नही है ।। जासूं आप जैसे महात्मा भगवदीयन को विचार सत्य ही होय है" ।। श्री कल्याण भट्‌ट जी कहे है कि या समय में प्राणनाथ के भक्तन को कि भक्त सुन्दरीन को सगरी सभा को कि या प्राणनाथ को हू जो सघन हर्ष भयो है तासूं जो सबन को मुख और चित्त प्रसन्न भयो है ।। सो मन और वाणी सो अतीत है ।। वाकूं वर्णन करवे में बुद्धिमान हू कौन समर्थ होय

सके है ? अपितु कोई हू वर्णन नहीं कर सके है ॥८५॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे षटस्त्रिश तरंगः ॥३६॥

## दशम कल्लोलजी

# सेंतीस त्तरंगः ॥३७॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ सेंतीसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **अध्यासी नस्यतामस्य चतुक्कीमंगणे प्रभोः**

**आत प्रेमुक्त चूडस्य चिकुराणां प्रचेचतां ॥१॥**

अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहे है कि आंगण में धूप में चौकी पर श्री महाप्रभुजी विराज रहे है ॥ जुरा खूल्यो है तामें श्रीराज के श्री केश है वे बड़े ही सुन्दर है ॥ श्याम है अत्यंत दीर्घ है कि अत्यंत सरल है कि स्निग्ध है सुन्दर है ॥ श्रृंगार रस के तो प्रवाहरूप है ॥ कि कछुक गीले है तासूं श्रीराज विनको श्री हस्त कमल सूं विलास पूर्वक पसार के अंगुली पल्लवन सूं हर्ष सूं वारंवार विनको न्यारो न्यारो कर रहे है ॥ वे केश हू ऐसे लांबे है ॥ जे धरणी को परस करवे कि इच्छा करे है ॥ ऐसे केशन के सुखायवे लिये राज इच्छावारे है ॥ ऐसे श्री प्रभुन के निकट अद्भुत सौभाग्य राशी कल्याण गुण समुहन सो मिल्यो कि स्वर जाती को जानवे वारो कि राग तान को विशेष जानवे वारो बड़ो बुद्धिमान श्री ध्यानदासजी हू बैठ रह्यो है ॥ सारंगी को बजावत प्रभुन को अत्यंत प्रसन्न कर रहयो है ॥५॥ सो ध्यानदास जी वा सारंगी सो चतुराई सो अनेक प्रकार के चित्त को हरवे वारे राग तरंगन को प्रगट करत ही वा प्राणनाथ जी को कि आपके वा भक्तन को कि कमल वदनीन को वा सगरी सभा को हू अत्यंत ही आर्द्र कर देवे है ॥ **भगवान् कृपासिंधु श्री महाप्रभु जी सगरी विद्यारूप नदीन के पति सिंधु है ॥ कि मधुर राग ताल तानों में गुण के दोषन को जानवे वारे है ॥ वा ध्यानदास जी के भक्तिसूं कि गुणन सूं प्रेम सूं प्रसन्न होय रहे है ॥ वा ध्यानदास को सिखावे हू है ॥९॥ ऐसे में कोई समय में कोई ब्राह्मण मांगवे आयो ॥ वाकूं कछु देयवे लिये श्री राज ने भंडार घर के अधिकारी जगन्नाथदास सो मांग्यो ॥**

जब सो जगन्नाथदास हू वेग ही लायके आपको दियो ।। वासूं लेके वा ब्राह्मण को दियो ।। यह प्रकार ध्यानदास जी निरख के आश्चर्य मनवारो होयके श्री महाप्रभुजी के आगे प्रणाम करके विज्ञापना करे है कि महाराजाधिराज -- महाप्रभो आप श्री जब जो जो मांगो हो यह श्री राज के भंडार घर को अधिकारी जगन्नाथदास जी वा समय में वेग ही लायके आपको देवे है ।। प्रिय महाप्रभो इतनो धन याकूं कहा सूं कैसे वेग ही मिल जाय है, या संशय को आप काटीये ।। कृपासिंधो यह बड़ो आश्चर्य है ।। हमारे मनको कबहु छांडे नहीं है ।। ऐसे कोई भीतर के अभिप्राय वारे पूछ रहे वा ध्यानदास के प्रति श्री प्राणनाथ जी हू मंद हास्य सूं कि मनोहर दृष्टि सूं कि श्री मुख सूं कि कपोल युगल सूं कि दोनों भ्रू सूं कि अपने विलासन सूं अपनी प्रसन्नता को सूचना करत ही भीतर के कोई और भाव सूं ही आज्ञा करत भये है ।।१६।। ''कि ध्यानदास जी हमको हू हृदय में यह बड़ो संशय रहे है कि आश्चर्य हू अत्यंत प्रतीत होय है कि तुम हू इतने राग कि तान वेगावेगी कहां सूं कैसे कर लावो हो ।। सारंगी तुमारी तो यह बड़ी है नहीं यह हमारो संशय हू तुम निवारण करिये ।।'' प्राणनाथ जी के ऐसे या वचनामृत को सुनकर अत्यंत प्रसन्न होयके श्रीराज के आगे अनेक वार प्रणाम करत आपके चरणन के सन्निधान में चिर पर्यंत वारंवार लोट पोट होय जातो भयो है ।। चित्त में कि वैसे श्रीमुख कमल में हू अत्यंत प्रसन्न होय गयो ।। रोमावली खिल गई है आनंद के आंसुन कों वरसाय रहयो है ।।२१।। इतने सूं हू जानवे योग्य अर्थ को जानके यह बड़ो सुजान ध्यानदास जी करुणा के महासागर श्री गोकुलाधीश जी महाप्रभु के आगे अहो श्रीराज के विना और कौन मेरे को ऐसे समझावे कि लालन हू करे ऐसे कंप कि गद्‌गद् कंठपूर्वक वारंवार कहे रहयो है ।।२३।। ऐसे श्री गोकुलेश प्रभुन में अनुरागी कि आपको कृपापात्र कि आपको प्रसन्न कर रहे या भाग्य निधान श्री ध्यानदास जी के गुणन को कहिवे में कौन ईश्वर हू करोडन वर्षन सूं हू समर्थ होय सके है -- अपितु कोई हू समर्थ नहीं होय सके है ।।२४।। जब श्री गोकुलाधीश भगवान चौकी पर विराजमान होय है सदैव श्री राजके सन्मुख भूमी पर बिछोना बिछो रहे है ।। वा पर आपके निकट श्री गोपाल जी आपको पुत्र वहां बैठे है ।। श्री विट्ठलराय जी हू बैठे है ।। विनमें प्रथम कहयो जो श्री गोपाल जी है सो महाप्रभुन को अत्यंत

प्रसन्न देखके कछुक विज्ञापना करे है ।। कि कोऊ समय में योग्य प्रसंग हू करे है ।। कि श्री भागवत को कि और ग्रंथ को हू सो सो श्लोक पूछे है ।। कि सो सो विनोद हू करावे है ।। महाप्रभुन को सुख देवेवारो यह पुत्र रत्न बड़ो सुजान है तासूं प्रभुन को सदैव अत्यंत प्रसन्न ही करे है ।। कोऊ और देश सूं कि कोऊ गामांतर सूं भक्तजन आयके प्रभुन के आगे प्रणाम करे है ।। विनको प्रिय महाप्रभुजी कुशल प्रश्नादि सूं समाधान करे है ।। **श्रीराज के चरण निकट दर्शन को वैष्णव आवे है कि राजसी जन कि राजा राणा अनेक प्रकार की स्त्री आवे है ।। धनी कितने प्रतिष्ठित कि निर्धन कि विरक्त कि यवन मलेच्छ हू कितने आवे है ।। कितने शैवी, स्मार्त कि कर्म्मठ कि वैदिक पंडित कायस्थ, क्षत्रीय कि अनेक प्रकार के व्यापारी हू अनेक आवे है ।। भगवान कृपासिंधु सबको समाधान यथा योग्य ही करे है ।।** अहो श्री प्राणनाथ जी को श्रीमुख कमल अत्यंत प्रसन्न है ।। मंद मंद हांसी कर रहे है ।। परम कोमल प्यारे है ।। वैसे समाधान करे है ।। जैसे सबही अत्यंत प्रसन्न होय जाय है ।। आप सूं प्राप्त भये समाधान सूं उच्छलित हर्ष समूह सुं प्रकाशमान वे सगरे ही जन अपने जन्म को कि नयन को हू अत्यंत, सफल ही माने है ।। वा उच्छलित समाधान सूं वे सगरे हू लोकन में समाय नही सके है ।। **कितनेक तो या समय में ही अपने देशांतर कि गामांतर में प्रियवर के कार्य करवे कूं कि अपने ही कार्य करवे कूं जायवे कि इच्छा को निकटवासी जनों के मुख सूं कि अधिकारी के मुख सूं विज्ञापना करामे है ।। तब कृपासिंधु श्री प्राणनाथ जी विनके शुभ अर्थ कि अनेक कार्यन कि सिद्धि अर्थ हू विनके प्रति महाप्रसाद तांबुल बीड़ा दिवावे है कि अपने श्री हस्त सूं स्वयं हूं देवे है ।। कृपा सिंधु जी प्रसादी वस्त्र हू देवे है** ।।३६।। अत्यंत प्रसन्न मनवारे वे जन हू दंडवत् प्रणाम बहुतवार करके श्रीराज के चरणन में अपने सिर को धरके पड़ जाय है ।। प्राणनाथ जी कोई को कछु कोई को कछु यथा योग्य ही देवे है ।। कोई को रूयीदार नीमा डगला देवे है ।। कि कोई को पामरी ऐसे प्रसिद्ध वस्त्र कू देवे है ।। अत्यंत नम्रता सूं शोभायमान वे जन हाथन कूं बांध के आज्ञा मांगे है ।। सो श्री महाप्रभुजी तो अपनी कृपा रस की वर्षा कर रहे दोनों नयनन सूं विनको सिंचन करत ही आज्ञा देवे है ।।४३।। कितनेक जनतो अपनो नाम कि अपने संबंधीन को नाम प्रभुन को कियो नहीं है तासूं

वा नाम में अत्यंत अरुचि वारे है सो प्रेम समुह प्रभुजी को विनय करके निकटवासी के मुख सूं कि अधिकारी के मुख सो विज्ञापना करामें है ।। भगवान श्री महाप्रभु जी हू विनकी वा प्रार्थना को अंगीकार करके वा नामन के आदिवारे अक्षर को लेके वा आदिवारे दास अंतवारे भगवत्संबंध वारे नाम को हरिदास, कृष्णदास इत्यादि नाम कृपासिंधु स्वयं धरे है ।। कितनेक बालकन के नाम धराये नहीं है विनके पिता आदिजन प्रभुन को विज्ञापना करके वा प्रभु सूं नामको धरावे है ।। महाप्रभु जी हू विनको वांछित नाम धरे है ।। प्रभुजी जाकूं जो नाम धरे है सो यह प्रसिद्ध होय जाय है ।। इनके सगरे शुभन को अत्यंत ही करे है ।। श्री प्रभुजी जिनको नाम धर्यो है वेहू श्रीराज के चरणन में भाव कि धन अनुसार अनेक ही वा वा भेटान कू करे है ।। वा नाम सूं ही वाकूं सगरे ही जन चारों ओर सूं बुलावे है ।।५०।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे सप्तस्त्रिश तरंगः ।।३७।।

**दशम कल्लोलजी**

## अड़तीस स्तरंगः ।।३८।।

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ।। अथ अड़तीसमो तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **विश्राम सुख शय्या तागंतुंय समयः प्रभो तं**
**समा लक्ष्य संजातं श्री गोपाला प्रिय सुतः ।।१।।**

अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहे है कि विश्राम सुखसेज पर प्रभुन के पधारवे को जो समय है वाकू भयो जानके प्रभुको प्रिय पुत्र श्री गोपाल जी प्राणनाथ के आगे "अब उठिये" ऐसे विज्ञापना करे है ।। प्राणनाथ जी वा चोकी सो उठे है ।। महद् भक्तजन चारो ओर सूं मिले है ।। जय जयकार कर रहे है ।। विन भक्तन को भक्त सुंदरीन को दृष्टिरूप मेघन सों वरसाये कृपा के बड़े समुद्रन सो सिंचन करत ही ईश्वरेश्वर प्रियवर जी विलास पूर्वक गजराज जैसे चले है ।। कितनेक भक्तन सूं मिले भये है ।। अपने श्री मुख्य मंदिर में पधारे है ।।४।। कितनेक भक्त तिवारी में और बहुत भक्त बाहिर ही बैठ जाय है ।। बहुत भक्त तो प्रभुन के आगे प्रणाम करके तब अपने घर

को जाय है ॥५॥ तब श्री प्राणनाथ जी श्री चरण कमल के धारण करवे योग्य रत्न कंबल के ऊपर विश्राम सेज के निकट खवास जी ने धारण किये चरण कमल के पोंछन वस्त्र के पास ही क्षणेक विराजे है ॥ तब नम्रता समूहन सूं उछलित रोम हर्ष पूर्वक कोऊ भक्त प्रभुन के चरण कमलन को पोंछे है ॥७॥ तब श्री प्राणनाथ जी सिराहने के आगे पास ही विराजवे कि लीला सूं वा सुख सेजा कू अलंकृत करे है ॥ इहां खवासजी ने अर्प्पण किये तांबुल बीड़ी को आप आरोगे है ॥ सुन्दर मनोहर केश समूह आपको खूल्यो है ॥ कमल जैसे मनोहर प्रफुल्लित आपके लोचन है ॥ श्री मस्तक में कुमकुम को तिलक धरे है कि कानों में मनोहर रत्न जटित कुंडल धरे है कि लाल अधर पल्लव सूं आप शोभायमान है ॥ प्रसन्न आपको श्रीमुख कमल है ॥ सुंदर निर्मल धोती धरे है ॥ कि कंधा में उच्छलित रस सूं प्रकाशमान उपरना धरे है ॥ अपने मनोहर श्री अंग की कांती समूहन सूं जगत को मधुर ही कर रहे है ॥ कि कल्लोल की आवर्त समूह वारे रस समूद्रन को वर्षा कर रही तुलसी माला को कि गुंजा माला को हू श्री कंठ में धारण करे है ॥ जे रत्न जटित सोना कि दोय मुद्रिका जनेउ में बांधी हती चौकी में पहले कि अथवा अब विनको वासूं छाड़ के अंगुलीन में धर रहे है ॥ सुन्दर मनोहर सकन सूं आपको अधर बड़ो शोभायमान है ॥ दोनों चरण कमलन को पसारे है तासूं माधुरी के समुद्र उछल रहे है ॥१५॥ चपल कि अत्यंत सुन्दर कि कृपारस सूं भरे ऐसे कटाक्षन सूं बाल हरिण लोचना सुंदरीन के धैर्य को हर रहे है ॥१६॥ तथा उत्साह समूह सूं कि प्रेम सूं बहुत मान पूर्वक व्रजसुंदरी जाकूं वैसे-वैसे निरख रही है -- ऐसे अपने श्री मुख कमल को अत्यंत मनोहर दर्प्पण सो प्रेम मान पूर्वक देख रहे है ॥ या बहाने सूं वितने समाज में हू चाहना विशेष सूं मनोहर वा ब्रज सुन्दरीन के श्री मुख को हूं प्रेम कि बहुत मान पूर्वक विलास पूर्वक वा दर्प्पण सो देख रहे है कि मंद हास्यरूप हस्त कमलन सो विनके हृदय को विलास पूर्वक खेंच रहे है ॥१९॥ कि अमृत के समुद्रन को विजय करवे वारे महामधुर कृपासिंधु भगवान यह प्रियवरजी पान समुह को आरोग रहे है ॥ वाके रस को श्री मुख कमल सूं निगल के वामें याके परागको राखे है ॥ उच्छलित अनुराग वारे भक्तन को पान करायवे सूं कृतार्थ करवे लिये वा सिद्ध पराग को आगे धरी पड़गी में श्रीमुख सो

पधरावे है ।। भक्तजन हू अत्यंत बढ़ रहे आदर कि उत्कंठा सूं बड़ी उतावल सूं वाकूं उठाय लेवे है ।। प्राणनाथ जी तो और बीड़ी को आपके खवास जी ने पधराई है वाकूं प्रथम जैसे आरोगे है ।। संग बरास हू लेवे है ।। फिर हू दक्षिण हस्त की अंगुली सूं विलास पूर्वक चूनो हू थोड़ो लेवे है ।। निकटवर्ती खवास जी जलकी कलसी के जल सूं वा अंगुली कूं पखरवावे है ।। तब श्री राज के प्यारे वे दोनों पुत्र तो प्रभुन के आगे शिरसूं प्रणाम करके वेग ही वहां सूं अपनी अटारी में जाय है ।। वहां सुन्दर पुस्तकन को निरखे है ।। कि आये गये कोई बालक कू पढ़ावे है ।। कि अथवा हर्ष निद्रा कूं करे है ।। प्राणनाथजी तो बीरी को आरोग के अपने उपरना को शिर में धरके वासूं सगरे वारन कूं लपेट के वाकूं पीछे धर के अधिक हर्ष सूं सुन्दर तूल के अग्र सूं श्री मुख कमल को ढांप के निद्रा नायिका को अनुमोदन करे है ।।२८।। हृदय में वा कमल नैन प्रिय को कि आपकी वैसी मनोहर लीलान को भावना करत ही सगरे भक्त कि हरिण लोचना सुंदरीजन हू अपने अपने घर में जाय है ।। तब श्री अंग सेवक खवासजी वेगि वहाँ सूं टेरा लगाय देवे है ।। भगवान प्रियवर जी कछुक क्षण उत्तानौ पोढ़े है ।। फिर दक्षिण करवट ले पोढ़े है ।। फिर वा बाये करवट सूं माधुर्य सागर के सार सिंधु हमारे प्रियवर जी निद्रा हू करे है ।।२९।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे अष्टत्रिस तरंगः ।।३८।।

### दशम कल्लोलजी

## उनचालीस तरंगः ।।३९।।

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ।। अथ उनचालीसमो तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **अथ प्रभातेथखिलेषु भक्ते धरालकेशीषु च तासुवेरम**
**व्याजेन केनपिनिलीय बालं कथंचिद त्रांगनिषेव कस्य ।।१।।**

अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहे है कि -- सगरे भक्तजन कि बांके केशनवारी सुंदरीजन हू जब घर कूं चली जाय है तब कोई बहाना सूं कि बड़े यत्न कर खवास जी कि आज्ञा सूं इहां छिपके ठहर्यो जो कोऊ महाप्रभुन

को अंतरंग भक्त है सो कोई निमर्याद रस के सागर कि प्राणनाथ के वियोग दुःखको भोग रही कि अनेक प्रकार के ऊंचे मनोरथ वारी कि महारसमय प्राणनाथ के संयोग को जो अत्यंत दुर्ल्लभ रूप ही जाने है कि जाके प्राणप्रिय के वियोगरूप अग्नि सूं प्राण हृदय इन्द्रिय कि अंग समुह हू अत्यंत जर रहे है ॥ कि जो हृदय में अत्यंत उच्छल रही लाज सूं कि भय सूं अपने हृदय के मनोरथ को अपने स्वजन में हू कहवे में समर्थ नहीं है -- ऐसी कोई भाग्यवती कोमल स्वरूपवारी सुंदरी के जे भाव कि ताप कि सुंदर स्वभाव सुंदर चतुरतादि जे गुण है जे प्राणप्रिय की प्रसन्नता विशेष करवे में समर्थारूप चंबेली के फूल समुहन सूं सुगंधित है ऐसे वा वा गुणन सूं अत्यंत विवश होयके वा सुंदरी के अनेक प्रकार के मनोरथ समुहन को प्राणनाथ के आगे प्रगट करवे की इच्छा करत धीरे-धीरे प्राणप्रिय की शय्याजी के निकट जाय है ॥ प्राणनाथ जी मेरी या विज्ञापना को मानेगे कि नहीं मानेगे या प्रकार सूं मनमें संदेह भर्यो होय के आपके श्रीमुख के वचनामृत के पान करवे की अभिलाषा सूं कृपा सागर श्री राजके उजागरे की अपेक्षा सूं वहां बैठ जाय है ॥७॥ श्री प्राणनाथजी हू रात्रि में सर्वोपर शोभायमान गुणन की सागर हरिणनयनी श्री गोकुल कि पट्टरानी श्री मुख्य स्वामिनीजी पधारेगी ही, यह विचार के अब तो या प्रिया के प्रेमवश होयके नींद को त्याग कर देवे है ॥८॥ तब वा समय की एकांतता को तथा वा प्राणनाथ को वैसे रससागर भाव को हू दया भर्यो स्वभाव कोहू देखके तथा सर्वज्ञ प्रभुवर या प्रभु के कछुक करवट लेवे सूं निद्रा के शिथिलता को हू देखके तब यह भक्त प्रभुन के चरणन में प्रणाम को करके वा चंद्रवदनी के मनोरथन को उच्छलित होय रही नम्रता सूं कोमल प्रेम प्यार सूं जनावे है ॥१०॥ तब धर्म मार्ग कि रक्षा लिये कियो है अवतार जाने ऐसे सो प्राणनाथ जी तो वैसे वैसे वा वा प्रकार के लौकिक तथा धर्म के भय को दिखावत ही वा बातन को माने नहीं है ॥११॥ वा भक्त के पीछे छिपके आयके ठहर रही कि या प्रिय के वचनामृतन को पान कर रही वा प्रिया कि तो प्रिय के वैसे वचनन को सुनके उत्साह अधिक बढे है ॥१२॥ वा सुंदरी सो प्रेरणा कियो सो अंतरंग भक्त तो सो सो विज्ञापना करके या प्रभु के आगे वा चंचल नयना के मनोरथ समुहन को फिर फिर सुनावे है ॥ रस सागर श्री प्राणनाथजी तो वा प्रिया के हृदयवारे भाव की विशेषता कि

दृढ़ता आदि रसके स्वाद लेवे लिये ईश्वरेश्वर प्रियजी परलोक संबंधी तथा या लोक संबंधी बड़े भयन को वारंवार दिखावत ही वैसे वैसे अनेक वचन कहे के या भक्त की विज्ञापना को निवर्त करे है ।। कि नहीं माने है ।। अहो निवारण कियो हू सो अंतरंग भक्तवर जैसे जैसे प्रथम कहे मनोरथन को फिर फिर विज्ञापना करे है ।। श्री गोकुल के चंद्रमा प्रियवर हू वा प्रिया के भाव कि दृढतारूप अमृत के सागर में निमग्न होयके वैसे वैसे प्रसन्न ही होय है ।। तब प्रफुल्लित है सुन्दर श्रीमुख कमल जिनको, ऐसो यह महाप्रभुजी कृपा रूप मंजीठे रंग सूं लाल होय रहे श्रृंगार रस सर्वस्व सागर के प्रवाहन सूं मनमें बहुत प्रकार सूं नाचत ही मंद मुसकान सू शोभायमान मुख चंद्रमा सूं कोमल कोमल यों कहे है कि तुम बड़े ही आग्रह सो वारंवार ऐसो मनोरथ विज्ञापना करो हो तो आज मैं मानू हूं ।। परंतु अबतो हौं नींद के वश हूं ।। तासूं तुमारे वा मनोरथ को कोई और समय में अवश्य ही पूरण करूगों, सो अब तो जावो ।। या प्रकार श्री प्राणप्रिय के श्री मुख क्षीर सागर सूं प्रगटे ऐसे वचनामृत सार समूहन सूं सिंचन कियो हू सो यह भक्तराज संदेह सूं बढ़ गयी अग्नि कि ज्वाला सूं भर्यो होयके फिर धीरे धीरे विज्ञापना करे हैं कि "प्रभो, सुंदरता के सागर, कि करूणा के सिंधु आप है, आपमें तो कठिनता को लेश हू नहीं है परंतु हमारे ही अभाग्य अत्यंत प्रवल है जो ऐसो यामें बिलंब करामें है ।। अहो बड़े यत्न सूं कैसे कर यह हमारो मनोरथ सिद्ध होयवे को अंकुरवारो होय है जो यह कोन झंझो हा हा कैसे वाको मूल सूं निकार डारे हैं यह नहीं जाने है ।। तासूं अहो उदार बुद्धिवारे प्यारे प्रभो हमारे कार्य में विघ्न करवे लिये विना यत्न के उदय होय रहे या आलस को छांड़िये ।। अपनी कृपारूप दोहद सूं वांछित रसपान करायवे सूं हमारे मनोरथ रूप कल्पवृक्ष को फलवारो सिद्ध करिये ।। प्रभो आपकी कृपारूप रसपान कराये विना मनोरथरूप कल्पवृक्ष के सफल सिद्ध करवे में उपयोगवारी सगरी ही सामग्री अत्यंत व्यर्थ ही होय है ।। प्रभो यामें आप प्रसन्न होय" ।। या प्रकार या भक्तवर के वचनामृत को कानरूप अंजुलीन सूं निरंतर पान करके ।।२४।। स्वभाव सूं ही भक्तन में वाछल्य समूह को दिन रैन ही धारण करत कि मंद हास्य सूं प्रफुल्लित मुखवारी सुंदरीन के रोम रोम में निरंतर उच्छलित होय रहे हजारन लाखन अर्ब्बन रस सागरन के आस्वादरूप महासागर रूप जो हमारे अधिपति

महाप्रभु जी है सो मंद मुसकान सूं कि विलास के प्रवाह कूं धारण कर रही मनोहर भ्रु सु कि वांछित कमल नयनी सुंदरीन के श्री अंग की माधुरी के पान करवे में अत्यंत उत्साह कूं धारण कर रहे दोनों नयनों के मनोहर हर्ष के नृत्य सूं उच्छलित प्रेम समूह सूं प्रगटी मंद हास्य सूं आर्द्र होय रहे रोम हर्ष वारे अंगन सूं कि प्रफुल्लित कपोलन सूं करोडन अमृत के समुद्रन को वर्षा कर रहे वचनामृत सूं हू वा अंतरंग भक्त के वचन को अंगीकार कर लेवे है कि मान लेवे है ॥ तब सो भक्त तो या प्रकार के सुख समाचार के सुनायवे सूं वा मृगनयनी के कान और हृदय को अत्यंत ही प्रसन्न करे है ॥२९॥ तब सो मृगनयनी उच्छलित होय रहे आनंद सागर के प्रवाह सूं कि विलास समुहन सूं स्तंभ कि रोम हर्ष कि कंप पसीना कि विवर्णता रंग बदलनो कि स्वर भंग ऐसे सात्विक भाव प्रगट होय रहे है ॥ विनसूं पद पद में ही मोदरूप सहेली सूं मानो आलिंगन करी ही है ॥ अहो श्री प्राणनाथजी ने विनय मान लीनी है, तासूं प्राप्त भयी वधायी सूं तो सगरे हू लोक में समाय नहीं शके है ॥३१॥ नम्रता कि प्रेम को समूह कि आदर कि मनोहर वैसी उत्कंठा विशेष हू बढ़ गई है ॥ तासूं वरस रहे उच्छलित रसके सागर समूह हू बढ़ गये है ॥ यह सब ही अहं-पूर्विका सूं कि ऐक ऐक ही उतावल सूं या मृगनयनी को केशन सूं लेकर नख पर्यंत ही अत्यंत शोभायमान कर रहे हैं -- अलंकृत कर रहे है ॥ तब पसर रही सुगंधी समुह सूं मनोहर वस्त्र को श्री अंग सूं शोभायमान कर रही है ॥ कि भूषण समुह सूं शोभा के देने लेने रूप व्यवहार समूह को अत्यंत बढ़ाय रही है ॥ काम के हजारन विलासन सूं भरे अंगन सूं मिली है श्री प्राणनाथ जी के अर्थ पहिरामनी को सब साज तैयार कर ले चले है सो कहे है ॥ कि तामें सूक्ष्म मोतीन के उज्वल हार है कि सोना की माला है, कि कर सांकल है, सोना को मनोहर हार है, जो अमूल्य अनेक प्रकार के मनोहर चमक दमकवारे रत्नन सूं जडयो है ॥ तथा मोती हीरा समूह कि माणिक की पंक्ति वारो सुंदर अमुल्य सोना के मणिकान को हार है, जामें अनेक प्रकार के रत्न जटित है ॥ निर्मल कारे पाटके जाके फोंदना लसे है ॥ मनोहर करोडन रस सागरन को जो वर्षा करवे वारो है ऐसो सोना को प्रकोष्टाभरण है ॥ कि पहुंची है तथा सुंदर जिनमें हीरा है ॥ कि सुन्दर जिनमें मोती लसे है कि जिनको चतुर सोनी ने निरंतर प्रेम सूं बनायो है ॥

कि जे उच्छलित शोभाभरे प्रियवर के मनोहर श्री मुख कमल को निरंतर अलंकृत करवे लिये कमर कस रहे है ॥ कि जे निरंतर उत्साह समूह सूं तो प्राणनाथ हमको शोभायमान करे ऐसे अपने में अत्यंत दुर्ल्लभ भाव कूं ही चाहना करे है ॥ जे अनेक प्रकार कि कांती के दंडन सूं प्रकाशमान है ऐसे जे सुन्दर माणिकवारे सुन्दर कुंडल है ॥३९॥ तथा सुन्दर रत्न जटित अनेक प्रकार के बड़े मोलवारी जे सोना कि मुद्रिका है जे वचन में न आवे ऐसे कोऊ रसात्मक भाव सूं अपनी प्रिया गणन के गूढ़ आशय को जानवेवारे चतुरता के सागर रसिकराय प्रिय श्री प्राणनाथ के कोमल मनोहर अंगुलीन में उच्छलित अनुराग सूं पहिरायवे लिये है -- वे मुद्रिका है ॥४१॥ सुंदर सुवर्ण सूत्रवारे जे उज्वल सुंदर स्थूल मुक्ताफल युगल है जे ईश्वरेश्वर कि महेश्वरन को हू दुर्ल्लभ प्रिय के कर्णाभरण रूप को प्राप्त होयके अपनी कांती के प्रवाहन सूं सगरे हू भूषणन के ऊपर अत्यंत हंसवे वारे है ऐसे दोय मुक्ताफल है ॥ सुन्दर रत्न सूं जटित सोना को जो पदक है कि वैसे और और हू जे बड़े मोलवारे भूषण है वे सगरे ही सिद्ध कर लिये है तथा वे वे बड़े मोलवारे अत्यंत सुगंधी चूर्ण बूकान सूं भरी प्रकाशवारी कि प्रसर रही सुगंधीन सूं मनोहर अनेक सुंदर रंग रंग के फूलन की जे मनोहर माला है ॥४४॥ कि सुन्दर सुगंधी समुहन सो भर्यो मनोहर जो सुन्दर जामा, नीमा, पाग, कमर पटका, धोती, उपरनादि उत्तम वस्त्र है कि धूम रहित जो कृष्णागरू को रस चोवा है ॥ सुन्दर सुगंधी समूह सूं सिद्ध भयो सुन्दर चंदन को जो मनोहर अंगलेपन है, सुन्दर चूना कि सुपारी के चूर्ण की सुन्दर काथे की सुगंधी गोली कि सोना जैसे पीरे निर्मल पानी सूं सिद्ध मनोहर वरासवारे बहुत बीड़ा है कि अनेक प्रकार के सुगंधी कोमल सुंदर घृत बूरा सू मिले अनेक प्रकार के गेहूँ के निस्तुष चून सूं सिद्ध किये पकवान है या प्रकार सूं कहे, सगरे साज को श्रीराज के आगे समर्प्पण करवे लिये जो हाथ में धरे है वामें अत्यंत बढ़ रहे वियोग अग्नि के ज्वाला समूहन सूं विकल होय रहे अपने अंगन को जो उच्छलित वेग सूं प्रिय के आलिंगन करवे की उतावल कि अहं पूर्विका है -- पहले में आलिंगन करूगो पहले में ऐसो जो साहस है वाकूं उत्साह हर्ष कि उत्कंठा भर सूं रोकवे में जो समर्थ नहीं होय रही है ॥ कि फेनरूप है झागरूप है -- प्रिय संगम कि इच्छा विशेष जामे ऐसे दूध के समुद्रन सूं

शोभायमान सो कोमल अंगवारी प्रियाजी परम पुरुष प्राणनाथ श्री गोकुल के चंद्ररूप प्रिय के निकट पधारे है ॥५०॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे उनचालीस तरंगः ॥३९॥

### दशम कल्लोलजी

## चत्वारीस स्तरंगः ॥४०॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ चौंतीसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **तामायती पंकज सुदरास्यां निरीक्ष्य सुस्मेर मुखारवींद**

**सर्वात्म भावेन मृगे क्षणाया स्तस्या भृरां तुष्यति वल्लभोयम्** ॥१॥

अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहे है -- कमल सूं हू सुन्दर मुखवारी पधार रही वा प्रियाजी को निरख के सुन्दर मंद हास्य सूं प्रफुल्लित श्री मुखारविंद वारे यह श्री प्राणवल्लभ जो वा मृगनयना के सर्वात्म भाव सूं अत्यंत प्रसन्न होय है ॥१॥ अहो या सर्वात्म भावने या मृगनयनी को जो रूप कि नवीन जोबन, कि गुण समूह कि और और हू रंग्यो है कि आर्द्र कियो है कि श्रृंगार्यो है, कि प्रफुल्लित कियो है, कि ऊंचो चढ़ायो है कि कोमल कियो है कि सुगंधीत कियो है कि उत्साहवारो कियो है, कि बढ़ायो है कि शुद्ध कियो है कि अत्यंत उज्ज्वल कियो है, कि अत्यंत प्रसन्न कियो है कि नचायो है कि बढ़ायो है कि प्रफुल्लित कियो है कि अत्यंत स्वाद कियो है सुन्दर कियो है कि तीखो कि पेंनो कियो है ऐसो जो प्रिया जी को रूप जोबनादि है सो या प्रिय चक्रवर्ती महाप्यारे श्री गोकुल वल्लभ प्रभु को अत्यंत ही प्रसन्न कर रहयो है ॥ तब यह प्राणनाथ जी वा प्रियाजी के नयनों के सन्मुख विलास समूहन सूं सेवा किये अनिर्वचनी स्वरूप को प्रगट करत भये है ॥ पाछे सो मृगनयनी कोमलांगी प्राणनाथ के लिये जे भूषण कि सुगंधी वस्तु कि और हू जो लायी है सो सब ही या प्राणनाथ के आगे वैसे वैसे प्रेम विशेषसों अर्प्पण करे है ॥ प्राणनाथ जी हू उच्छलित प्रसन्नता सूं हंसत सगरे प्रफुल्लित होवत ही वा सब वस्तु को अंगीकार करे है ॥ वा प्रियाजी के प्रति रससिंधु समुहन सूं भरे वा वा मनोरथांत फल कूं देवे हैं ॥ वा वा सुन्दर वस्तुन को देवे है

।। तब हमारे भूषण रूप सुंदरवर प्रिय जी वा प्रियाजी ने जे भूषण अर्प्पण किये है -- सूक्ष्म हार कि मोटे मोतीन को हार, सुन्दर विशाल सोना की माला-कि श्री हस्तकमल को अलंकार कि सांकल कि सोना की शोभायमान कोंधनी कि मोतीहार सूं अमोलक माणीक कि सोना मणीन सूं सिद्ध भयी उज्वल अमृत के समुद्र जासूं झरे है ऐसी जो चन्द्रमुखीन के नयन और चरणन कि सांकल रूप है -- देखते देखते जामे नैन बंध होय जाय है चरण आगे नहीं चल सके है ऐसी दिव्य माला है ।।४८।। सुन्दर अनुपम जो प्रकोष्ट को भूषण पहोंची है जामें श्याम पाट के सुन्दर गुछा है कि सुन्दर रत्न समूह सू जटित जो अनुपम रस भर्यो कुंडल युगल है कि नाना प्रकार की माणिक जटित मुद्रिका है कि पदक श्रेष्ठ है वैसे वैसे और हू जो मनोहर भूषण है वा सब भूषणन को अत्यंत ही प्रसन्न करे है ।।४९।। रसभरे वा वा वचनामृतन को हू वाके कानों के भूषणरूप बनायके वा प्रियाजी को अपने घर में पधारवे लिये आज्ञा करे है ।।५०।। तब सो प्रियाजी विलासपूर्वक या प्रिय के शोभायमान माधुरी समुह भरे चरण कमलन को प्रणाम करके ही गिर रहे हैं अमृत के अर्बन सिंधु प्रवाह जासूं ऐसे श्रीमुख कमल को मुरक मुरक के निहारत ही अनेक प्रकार के हर्ष को तथा विषाद उदासी को हू धारण करत या गुणसागर प्रियवर को हू अपने वा वा रस प्रकारन सूं उत्कंठा वारो अत्यंत करत ही अपने घर में चले है ।।५१।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे चत्वारीस तरंगः ।।४०।।

### दशम कल्लोलजी

## एकचात्वारीस स्तरंगः ।।४१।।

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ।। अथ एकतालीसमो तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **विज्ञाप्त्या कृतथायेन प्राप्ता प्राणेश्वरं प्रियासोऽनूभुप**
**भृशंतस्या सौभाग्यं तन्मुखादपि ।।१।।**

अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी कहे है कि जाकी करी विज्ञापना सूं यह सुन्दरी प्राणनाथ जी को मिली है सो भाग्यवान भक्तवर वा भाग्यवती के सौभाग्य

को अनुभव करके वा भाग्यवती के मुख सूं हू सुनके हर्ष के परम काष्टा कूं प्राप्त होय के भक्ति प्रेम के बढ़वे सूं प्रिय के सुख देवेवारी या भाग्यवती के चरणन में प्रणाम करे है ॥२॥ तब सो भाग्यवती हू वा प्राणनाथ जी ने प्रसन्न होयके अपने अधरामृत सो भर्यो चर्वित तांबूल जो अपने को दियो है वाकूं अपने घर में ले चली है ॥ सो महाप्रसाद रूप है वाके प्राणन सो हू अत्यंत प्यारो है ॥ सो कछुक वा उपकार करवे वारे भक्तवर कूं प्रेम सूं देवे है ॥ तब सो भक्तवर हू मन शरीर कि वाणी सूं प्रभुन को कि वा भक्त सुंदरी को प्रणाम करत अपने जन्म को हू स्तुति करत ब्रह्मादिकन को हू जाको किणका हू दुर्ल्लभ है ऐसे वा अधरामृत भरे चर्वित तांबुल को उच्छलित रोम हर्ष पूर्वक बहुमान पूर्वक लेवे है ॥ अहो सो भाग्यवती गजगामिनी ही आभरण कि वस्त्र जाके शिथिल होय रहे है, कि सगरे अंग हू जाके शिथिल होय रहे है तासूं जो शोभा भरी है कि जाने श्रृंगार रस के सार सर्वस्व को निरंतर पान कियो है तासूं प्रकाश भरी है कि जो धूर्णित होय रही है ॥ कि सो मनोहर चादर को ओढ़े है विलास स्यं मंद मंद चले है ॥ अहो प्राणनाथ के अलौकिक रस स्वाद सूं जाकी मूर्ती विलक्षण होय रही है ऐसी वा सौभाग्यवती को देखके मार्ग में चतुरजन है सो यह प्राणनाथ को सुखदेवे वारी है श्रीराज कि कृपा समूह सूं पुष्ट है -- धन्य है -- ऐसे जानके वाकूं अत्यंत प्रणाम करे है ॥ अहो वा सौभाग्यवती के दर्शनरूप बरास कि बत्ती सूं वा दर्शन करवे वारेन की दृष्टि अत्यंत आंजी होयके कि वेसो बरास को काजर आंज के जो शीतलता को प्राप्त भयी है वाकूं कहवे में कौन समर्थ होय सके ॥ अपितु कोई हू नहीं है ॥१०॥ जब यह सौभाग्यवती अपने घर में पधारे है वाकूं अपने अंतरंग जन कि स्त्री हू निरख के प्रणाम करे है ॥ कि बहुमान देवे है ॥ उत्साह वारी हू होय है ॥११॥ तब एकांत में विजातीजन को जामे प्रवेश नहीं है ऐसो रसरूप महासुन्दर महोत्सव बढ़े है कि जामें सुन्दर नाच हींच गान बाजा बजे है ॥ कि अनेक प्रकार के भक्ष्य भोज्य पकवानादि मनोहर महाप्रसाद बटे है ॥ कि श्रेष्ट भक्त समुहन कि पूजा होय है ॥१३॥ वा भाग्यवती के जे संबंधीजन है वे प्रेम सूं बड़े मान सूं वाकी आर्तीवारे है कि बांको सखीजन अत्यंत आलिंगन करे है ॥ सब रीतिसूं वाकी स्तुति हू करे है ॥ ऐसे महाप्रभुन

के गुणन सूं यामे जे मृगनयनी जन आसक्त भयी है वे यामें बड़े प्रसन्न होय है ।। सदैव ही याके अनुकूल चले है ।।१५।। श्री कल्याण भट्टजी कहे है कि कोई एक भाग्यवती को मनोहर निर्मल कछुक चरित्र तथा यामे प्रभुन को कोऊ अनुग्रह को प्रकार मैंने जैसे सुन्यो है कि जैसी बुद्धि है कि जैसो अनुभव है कि जैसी वाकी कृपा है वैसो ही कछुक मैंने वर्णन कियो है ।। या रीतिसूं और सोभाग्यवतीन को चरित्र हू प्रेमवारे भक्तजन स्वयं हूं विचार करवे लगे ।। बड़ो बुद्धिवारो हू जन यामें विस्तार नहीं कर सके है ।।१७।। श्री कल्याण भट्टजी कहे है कि महाभाग्यभरी कितनी रस भक्त सुंदरीन के सर्वोपर विराजमान जे गुण है जे प्राणनाथ के हृदय में गढ़े है तासूं निकस नहीं सके है ।। ऐसे वा गुणन सूं वैसी वा सुंदरीन में जो प्रीति है वांकी परमकाष्टा में प्रिय जी चढ़ गये हैं ।। कि बिनमें अत्यंत प्रीतिवारे होय रहे है ।। तासूं वा प्रीति की परम दशा सूं उतरवे में समर्थ नहीं है ।। तथा सो कृपासागर प्रियवर अपने जे वैसे सर्वोपर विराजमान गुण है विनसूं वा सुंदरीन को अपने अर्थ प्रीति की परमकाष्टा पर कि ऊंची अवस्था पर चढ़ायवे की चेष्टा करे है ।। तासूं वाम भाव के समूह के आलस भरी वा सुंदरीन को अपने निकट बुलायवे कूं नित्य ही यत्न करे है ।। परंतु नीरस विजाती खल दुष्टन सूं कि वाके जनन सूं उदय होय रहयो जो संकोच है सो महा रसिक मुकुटमणि प्राणनाथ जी कूं रोक ही देवे है ।। यह प्रकार को कैसे कर कितने उच्छलित प्रेम समुद्र भरे चतुर जन वैसी वा सुन्दरीन को वैसे वैसे समझाय के एकांत में विनको प्राणनाथ के निकट ले जाय है ।। प्रिय की अत्यंत सेवा करे है ।। चतुरता के समूह सूं शोभायमान कितने भाग्यवंत बड़े भक्त कि भक्तिमार्ग में चतुर कितनी भाग्यवती वृद्ध स्त्री हू वा पुरुषोत्तम प्राणनाथ की ऐसी सेवा करे है ।। वा प्राणनाथ जी सू जिनकूं महारस लाभ भयो है वे निर्दोष मृगनयनी हू वा सखीन में स्नेह कृपा के समूह सूं अपने प्रिय ने पठाये मनोहर दूतीरूप को सूचना करत ।।२७।। विनको प्राणनाथ के निकट ले जाय है ।। या प्रिय कि प्रीति सूं गाढ़ आलिंगन हू करी जाय है ।। कबहु तो बड़ी उत्कंठा विशेष के प्रबल होयवे पर रस सागर श्री महाप्रभु जी कहू एकांत में कोऊ भक्त को, कि कोऊ भक्त सुन्दरी को मंद हास्य सूं कि भ्रू के विलास सूं कि श्री

हस्त कमल की लीला सूं कि दृष्टि के विलास विशेष सूं कि श्री अंग सेवक सूं कि और के बहाने और वाक्य सूं टोक सूं कि स्पष्ट कथन सूं स्वयं हू आज्ञा करे है ॥ स्वयं अनेक प्रकार सूं मनावे हू है ॥ समझावत कि चाटुकार प्यार हू करत स्वयं हू प्रार्थना करे है ॥ हठ सूं यामें उतावल हू करे है ॥३१॥ तथा कितने भक्त जन कि भक्त सुंदरी हू अपने प्राणप्रिय में भक्तिवारी कोई सुन्दरी के वेष सुन्दरता कि अवस्था स्वभाव कि गुणन की हृदय अंग देह की दृष्टि की माधुरी को देखके वामें उच्छलित कृपा प्रवाहवारे होय है ॥ कि प्राणनाथ के हर्ष को प्रगट करवे की इच्छावारे होय है तासूं वा सुंदरी के प्रति महा रसिक राज प्रिय के सुखदायक वा गुणलीला स्वभाव रस कहि के वा सुन्दरी को समझाय के वा प्रिया में वा प्रिय को हू उत्कंठा वारो बनाय के वा प्रिय सूं वा प्रिया कूं मिलाय देवे है ॥ इश्वरेश्वर तो प्राणनाथ जी तो एकांत में प्राप्त भयी वा सुंदरीन में श्रृंगार रस के सार सर्वस्व कि माधुरी सूं शोभायमान पुष्टिमार्ग के परमफल को वा सुंदरीन के भाव के अनुसार कि अपनी उदारता के अनुसार जे प्रकार कहे है कि जे नहीं कहे है वा सब प्रकारन सूं ही दान करे है ॥३७॥ तथा रस के कल्पवृक्ष या प्रिय सूं वे सुंदरी प्राण प्रिय ने जो फल नहीं दियो है वा वा फल कूं हू अपनी चतुराई सू हू स्वयं हू ले लेवे हैं वाकूं निरंतर स्वाद लेवे है अपनी सखीन के आगे अत्यंत सराहना करे है ॥ वा प्राणनाथ की वैसी उदारता सूं भरी सो निस्तुष शुद्ध स्वच्छ कीर्ति मुख कमल सूं मृगनयनी के मुख कमलन को शोभायमान करत वैसे मृगनयनी के मंडलो में चलती विनको वैसे शोभायमान करत तथा विनको आर्द्र हू अत्यंत करत कि निरंतर उत्साहवारो करत कि कोई को जड़ करत कि स्वेदवारो करत कि अत्यंत रोम हर्ष वारो करत कि गद्गद् कंठ करत कि कंपावत कि नचावत कि हंसावत कि आसूं वरसावत कि सुंदररूप बदलावत कि आश्चर्य के सागरन में निरंतर लीन करत कि बारंबार निमग्न करत कि बिना यत्न के चारों ओर बढ़ जाय है ॥ या प्रिय के भक्तन को हू अत्यंत अनुराग वारो करत स्मरण करवे सूं कि कीर्तन करवे सूं कि आदर करवे सूं भक्त त्रिलोकी को भली-भांति सूं पावन करत निरंतर सरस करत कि मंगलन को अत्यंत दान करत अपनी श्वेतता सूं कि शुद्धता सूं हार कि

**हीरा की शरद ऋतु की चांदनी कि सरस्वती कि नारद आदि को हू जय करे है ।। कि सबन सूं हू यह स्वेत शुद्ध है ।।**

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे एकचात्वारीस तरंगः ।।४१।।

**दशम कल्लोलजी**

## द्विचत्वारीस तरंगः ।।४२।।

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ।। अथ वयालीसमो तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **शीततो शयन स्यैषा विधाकाचन सूचिता**
**अक्षमेणा मयात्पर्थ विस्तरे स्वा रसात्मनः ।।१।।**

अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहे है कि शीतऋतु में श्री महाप्रभुजी के शयन की यह कोई विधि मैंने सूचना करी है ।। परंतु यह शयन को प्रकार रसरूप है ।। याके विस्तार सूं कहवे में मेरी समर्था नहीं है ।।१।। शीतऋतु के गुजरने पर यह श्री महाप्रभु जी चौकी को शोभायमान नहीं करे है ।। आंगण में चौकी पर नहीं विराजे हैं ।। किंतु सुंदरता के सार सर्वस्व के सागर गुणनिधान सो जगतपती श्री महाप्रभु जी विलास समूह पूर्वक मत्त गजराज जैसे अपनी इच्छानुसार धीरे-धीरे चलित भक्तन के तथा मृगनयनी सुंदरीन के अनेक प्रकार के भाव को हृदय में विचार करत तथा प्रसन्नता कृपा विशेष कि रस विशेष पूर्वक वा भक्तन को निरखत कि गुप्त रीति सूं वा मृगनयनीन को कटाक्षवारो करत ।।४।। अत्यंत शोभायमान करके अपनी तिवारी को हू शोभायमान करके त्रिलोकी के मणिरूप अपने स्वरूप सूं वा अपने घर को शोभायमान करे है ।। वहां शोभायमान भूमि शय्या के पास रत्न जटीत कंबल विछ्यो है वाके ऊपर श्वेत वस्त्र विराजमान है ।। वा पर श्री महाप्रभु जी विराजमान होय है ।। कोई भक्त आयके श्रीचरण कमलन को पोंछे है ।। फिर वा भूमि सिज्जाको अलंकृत करे है ।। तामें तकिया के सहारे विराजमान होयके आपके आगे खवास जी बीड़ी संवार के राखे है ।। प्रथम जैसे वा बीड़ी को प्रिय जी आरोगे है ।। ऊपर बरास हू आरोगे है ।। रत्न जटित सुन्दर जे मुद्रिका पहले जनेउ में बाँधी ही विनको खोल के दक्षिण श्री हस्त कमल में प्रियवर

जी पहिरे है ।। भक्तन के तथा मृगनयना सुंदरीन के मनोहर समाज सूं मिले श्री प्राणनाथ जी वहां सब प्रकार सूं शोभा सूं विराजमान होय है ।।११।। श्रीराज को जूरा खूल्यो है ।। वारन को अंगुलीन सो पसार रहे है ।। कि कछुक गीले है तासूं विलास प्रकाशपूर्वक विनको आनंद सूं सुखाय रहे है ।। मृगनयना सुंदरीन के मुख कमलो के जामें प्रतिबिंब समूह है ऐसे शरद ऋतु के कमल रूप अपने श्रीमुख को प्रतिबिंब देखवे के बहाने सूं प्रथम जैसे दर्प्पण में देखे है ।। तथा सुंदर मनोहर श्री महाप्रभु जी बड़े दीर्घ जे अपने श्रीमुख चंद्र तथा कटाक्ष कि अंग समूहन सूं निकस रहे रस के सागर है विनसूं कमल वदनी सुंदरी रूप पात्रन कूं भरे है ।।१५।। या श्री प्राणनाथ जी को जो प्रियपुत्र गुणसागर श्री गोपाल जी है सो छोटे भैया श्री विट्‌टलराय जी के संग ही नम्रतासूं इहां आयके मोदसूं कृपासिंधु श्री महाप्रभुजी के सन्मुख नीचे बैठे है ।। श्री महाप्रभु जी हू याके संग हास्य कौतुक सूं मनोहर विविध प्रकार की श्रेष्ट कथा प्रेम सूं करे है ।।१७।। श्री मुख सूं विलास पूर्वक तांबुल को तष्टी में डार के और बीड़ी को प्रथम कही रीत सो अंगीकार करे है ।। प्रथम कहे प्रकार सूं पोढ़े है तब प्रायः सगरे ही भक्तजन अपने अपने घर में जाय है ।। दोनों पुत्र हू इहां सूं अपने स्थान में जाय के तब विश्राम करे है ।।१९।। थोड़े शीत में सुंदरवर जी अत्यंत मनोहर छोटी तूल को ऊपर पहिर के निद्रा करे है ।। शीत न होय तो प्राणप्रिय जी मलमल वस्त्र की अमूल्य मनोहर छोटी चादर ओढ़े है ।। अथवा तनसुख कि मनोहर चादर ओढ़े है ।। सिराहने के निकट धरी जे गुलाब की कि मालती की कि विचकिल की कि चंपक की माला है ।। वांकी जे भवरान को खेंचवेवारी और प्रसर रही सुगंधी है सो आपकी सेवा करे है ।।२३।। मेद (गोरोचन) जवादि शाखादि तथा कृष्णागरू चोवा के सुंदर कीच सो मिल्यो गुलाब के जल सो घिस्यो अत्तर सूं मिल्यो कि कपूर कस्तूरी सूं मिल्यो जो श्रेष्ठ चंदन है सो चतुर पुरुषन ने घिसके सुन्दर अनुलेपन बनायो है ।। वा अनुलेपन को कितने भक्त जन अत्यंत प्रेम सूं कि नम्रता सूं तकिया में कि गेंदुवा में कि चादर उपरनादि में कि श्री अंगन में हू लगावे है ।। तब सो अनुलेपन हू जो ठिंगणी किकावाई है सो कि कोऊ और भाग्यवान हू मोर पंखन सूं सिद्ध किये मनोहर पंखा सूं वा श्री महाप्रभुजी की सेवा करे है ।। वा पंखासूं प्रगट भयो जो मनोहर शीतल मंद सुगंधी पवन है सो भाग्यवान

सुन्दर प्रकार सूं चले है ।। श्री कल्याण भट्टजी कहे है या प्रकार या प्राणनाथ जी को चैत्र वैशाख कि ज्येष्ठ महीना को कछुक नित्य कृत्य को प्रकार कहयो है ।।२९।। ज्येष्ठ मास कि अषाढ़ मास में जब सूर्य कि किरणे अत्यंत प्रचंड तपे है तब प्रचंड अत्यंत गरम पवन चले है तब श्रीमद् गोकुल ब्रज सुन्दरीन के हृदयो के भूषण रूप अपने स्वरूप सूं भूमि शय्या कूं शोभायमान करके तांबुल को आरोग के जब सुख सो विराजमान होय है ।। श्री राजको जो प्रिय श्री गोपाल पुत्र है सो कोमल शीतल मधुरता के समूह सूं भरी सुगंधीवारे सुंदर गुलाब जल सूं मनोहर घिसायो जो चंदन को अनुलेपन है जामें कपूर कस्तूरी कुंकुमादि मिल्यो है ।। कि सुगंधी सूं भवरान कूं हू जो खेंचे है ।। जामें सुयोग्य सुगंधी जल डार के गाढ़ोपनो दूर कराय के कोमल कियो है ऐसे सुखदायक उत्कृष्ट चंदन के अनुलेपन को लायके राजके पास आगे-पांव पीछे कर घोंटुन को आगे करके बैठे है ।। श्रीराज हू भ्रु पल्लव के उल्लास सो आज्ञा करे है ।। तासूं उच्छलित विलास कि मधुर शोभावारो सो होय रहयो है तब श्री राज बाकूं आदर करे है ।। तब यह सुजान श्री गोपाल जी ऐक बांये हाथ में वा अनुलेपन के पात्र को लेकर दक्षिण हाथ सूं वा पात्र सूं आदर पूर्वक अनुलेपन लेके सिराहने को छांड के कछुक आगे स्वयं होय रहे वा श्री महाप्रभु जी को प्रथम हृदय में लगावे है ।।३८।। तब श्री महाप्रभु जी प्रेम कृपा रस के प्रवाह सूं अत्यंत उछलित होय रहे है ।। तांबुल बीरी को आरोग रहे है ।। तब कल्पवृक्ष के नवीन पल्लव को विजय करवे वारो वा बीरी के रस सो लाल होय रहे आपके अधर में विराजमान जो मनोहर परम शोभा प्रगट होय है ।। सो भक्तन में अविछिन्न धार ही निरंतर ही आनंद के समुद्रन को वर्षा करे है ।। श्री प्राणनाथ जी को जो मनोहर वैसो श्रीमुख कमल है सो प्रसन्नता सूं परम चांदनी के प्रवाह समूहन सूं वा भक्तन में वैसी शीतलता प्राप्तकरे है जो चंदन कि चंद्रमान सूं हू नहीं होय सकेहै ।। तब पुत्र रत्न श्री गोपाल जी प्रभुन के हृदय में चंदन समर्प्य के या प्रकार सूं आपके उदर पर कि दोनों पसवाड़े में कि सुन्दर हर्ष के दंडरूप दोनों भुज दंडन में कि हस्त पल्लव पर्यंत ही लगावे है ।। सो सुबुद्धि पीठ में कि और और अंगन में हू लगावे है ।। दोनों ओर श्रेष्ठ भक्तजन ठाड़े होयके प्रभुन को पंखा करे है ।।४४।। श्रेष्ठ पुत्र श्री गोपाल जी तो अनुलेपन को सुख तो देखके आदर

सूं वहां वहां फिर ही लगावे है ।। तब वहां उच्छलित भक्ति कि प्रेम कि नम्रता सूं प्रकाशवारो मालजी पंचोली नाम जो भक्ति भर्यो आपको दास है सो तो प्रफुल्लित नयनन सूं टक टकी लगाय के या समय में सगरे भक्तन के सुनत ही श्री गोकुल प्रभुन के आगे विज्ञापना करे है ।। हे महाराजाधिराज, हे कृपासागर प्रभो, श्री गोस्वामी जी दिव्य चंदनादि अनुलेपन के कैसे अंगीकार करत हते -- प्राणनाथ यह मेरे आगे प्रगट करिये'' ।। प्रियवर सुंदर श्री महाप्रभु जी यह सुनके अत्यंत प्रफुल्लित अपने श्रीमुख कमल सूं अमृत के समुद्रन को वर्षा करत यों आज्ञा करत भये हैं ।। कि **''तात चरण जी पित्त प्रकृतिवारे हते तासूं ज्येष्ठ अषाढ़ में चारों ओर सूं ताप को अधिक होय रहयो देखके वाके निवारण अर्थ वैसे ही सघन अनुलेप अंगीकार करते ।। जैसे यह पंखा के पवन सूं हू सब प्रकार सूं सूखे नहीं है ।। हौं तो यह सघन अंगीकार नहीं करतो किंतु पतरो ही अंगीकार करतो'' या प्रकार श्री प्राणनाथ जी के श्री मुख कमल संबंधी अमृत के पान करके फिर विज्ञापना करत भयो है ।। ''कि हे कृपासिंधो राज श्री आपके श्री अंगन में चंदनादि अनुलेपन स्वयं श्री गोस्वामी सदा समर्प्पण करते कि कोऊ और सेवक हू समर्प्पण करतो'' यह सुनके श्री प्राणनाथ जी ने आज्ञा करी कि प्रायः श्री गोस्वामीजी ही स्वयं सदा मेरे अंगन में चंदनादि अनुलेपन को अर्प्पण करते ।। और कोई हू पुत्र को चंदन नहीं लगावते ।। मैं तो सदैव ही आपके निकट रहतो ।। और पुत्र पास हू नहीं रहते तासूं वे मेरे स्वभाव को सदा जानते ।। वैसे मैं हू आपके स्वभाव को जानतो तासूं प्रायः सदैव ही वे श्री गोस्वामीजी मेरे को ही परम प्रेम सूं अनुलेपन लगावते ।। कोई कोई दिन सुजान सो चाचा हरिवंश जी हू लगावते और कोऊ नहीं ।। जब श्री गिरिधारी जी को उथापन को समय भयो तब आमरे के सघन रस को सगरे अंगन में लगाय के या अनुलेपन को मिटाय के प्रायः सदा श्री यमुनाजी में हो स्नान करतो ।। कोई कोई दिन अपने घर में ही स्नान करतो ।। पहले बालपन में हौं ऐसे करतो तासूं अबहु बालभाव कूं अत्यंत स्मरण करू हूं ।। अहो बालभाव में कोई रोक टोक नहीं होय है ।। महा आनंदमय रसलीला सूं सो भर्यो होय है''** ।।६२।। या प्रकार या महाप्रभुजी क वैसे वचनामृत को पान करके मालजी अत्यंत नम्र होयके फिर विज्ञापना करत भयो है ।। कि श्री महाप्रभो ''आमरा के रससू

स्नान करवे में का होय है ।। हे पुरुषोत्तम शिरोमुकुट मणि मोकू यह आज्ञा करिये ।। या प्रकार प्रेम नम्रता सूं प्रकाशवारी याकी विज्ञापना को सुनके चौदह लोकन के नियामक पति श्री प्राणनाथ जी याके प्रति आज्ञा करत भये है कि ''**वा आमरा के रस सूं सब प्रकार सूं ताप भरे अंग हू शीतल होय जाय है ।। वैसे नेत्र हू शीतल होय है ।। बल हू अत्यंत होय है ।। यह श्री अंग हू शीतल होय है ।। अत्यंत सुख होय है ।। श्रम में हू अंग बलवारे होय जाय है ।। ताप हू नहीं होय है ।। और हू वासूं बहुत ही श्रेष्ठ गुण उदय होय है ।।**'' या प्रकार वा प्राणनाथ जी के करोडन अमृत को विजय करवे वारे वचन को सुनकर वाणि हू जाकूं वर्णन नहीं कर सके है ऐसे कोऊ हर्ष के सागर में अत्यंत निमग्न होय गयो है ।।६८।। श्री कल्याण भट्टजी कहे है कि अपि चतुर रसिक भक्तजना यह बीचको प्रसंग कहयो है ।। अब मैं चालू प्रसंग कहू हूं वाकूं आप पान करिये ।।६९।। या प्रकार चंदन अनुलेपन लगायके ठहर रहे श्री गोपालजी कि वाके छोंटे भैया विट्ठलराय जी को प्रसादी बाकी बचे चंदन अनुलेपन सूं कृपानाथ जी विनके अंगन में प्रेम सूं लगावे है ।।७०।। तब भाग्यन सूं शोभायमान कोई भक्त श्रेष्ठ नम्रता पूर्वक दोनों हाथन सूं चंदन अनुलेपन कि पात्री तष्टी को लेके ठाड़ो होय है ।। दोनों पसवाड़े में ठहरे भक्तजन जो पंखा सूं पवन करे है ।। तासूं पसर्यो जो यांको सुगन्ध भर जाय है ।।७३।। जब सो अनुलेपन सूख जाय है तब महाराजाधिराज प्रियवर जी गुलाब के फूलन के जल सूं सिचंन करी सुगंधित होय रही सुंदर देशांतर की जो नवीन बड़े धनवारी शीतल पाटी बीछी है वा पर विराजमान होय है ।। सुंदरता के सागर श्री प्राणनाथ जी गुलाब के जल सूं सिंचन करी मनोहर चादर सूं सगरे अंगन कूं ढांप के विराजमान है ।। महात्मा भाग्यवारे भक्त श्रेष्ठ तो गुलाब के जल सूं गीले किये श्रेष्ठ वस्त्र के पंखा सूं निरंतर पंखा कर रहे है ।। वा गुलाब जल के सूक्ष्म बूदन को धारण कर रह्यो अत्यंत सुगंधित मंद शीतल अत्यंत मनोहर मधुर उदय होय रह्यो पवन हू राज की सेवा कर रह्यो है ।। तब आप पोढ़े है ।। तब शीतल पाटी पर विराजमान नहीं होय है ।। जब अषाढ़ मास कि गरमी मुख्य मंदिर में प्रसर जाय है तब तो मुख्य मंदिर को छांड तिवारी में विछायत होय है ।। बास्ता नाम के गाढ़ वस्त्र कि सुंदर चादर बहुत वा पर बिछे है ।। तकिया हू वासू लपेटयो जाय

है ।। अत्यंत मनोहर और हू गेंदुवा तकिया सब बास्ता गाढ़े वस्त्र सूं लपेट के वहां धरे जाय है ।। टेराहूं बास्ता के वैसे वस्त्र सूं सिद्ध होय है ।। दक्षिण दिशा में कि पश्चिम दिशा में वैसो मनोहर सिराहनो धर्यो जाय है ।। प्रायः कार्तिक मास पर्यंत दिन में महाप्रभुन कि निद्रा कि स्थिति यह सूचन करी है ।। याके पीछे मुख्य मंदिर में सो निद्रा स्थिति होय है ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे द्विचत्वारीस तरंगः ।।४२।।

### दशम कल्लोलजी

## त्रयश्चत्वारीस स्तरंगः ।।४३।।

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ।। अथ तेतालीसमो तरंगः लिख्यते ।।

श्लोक -- **प्रभो सुप्तेस्य सृच स्वगेहं व्रजंत्परंस श्रीमानं**
**गसेवी वा वत्यात्री द्वारिकां विभोः ।।१।।**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट कहें हैं कि श्री महाप्रभु जब पोढ़े हैं तब सगरे ही आपके भक्त वेग ही अपने घर में जायं हैं ।। तथा सो श्री अंग सेवक खवासजी तो प्रभुन कि तिवारी में टेरा लगायके द्वार में किवाड़ देके बाहिर निकसे है ।। न्हायके रसोयी घर में प्रभुन के प्रसाद को भोजन करवे लिये जाय है ।। प्राणप्रिय के निकट वा वा सेवा के करवे अर्थ दोय कि तीन भक्त रहें हैं ।। तथा सो श्रेष्ठ वुद्धि वारी भलीबाई के राजबाई जी हू क्षणमात्र हू वा अपने प्रभु को त्याग करवे में समर्थ नहीं होय सकें हैं ।। तासूं वेहू दोनों वहां रहें हैं ।। भक्तन के घर में जाने पर जाकूं महाप्रसाद इहां वेगा मिल गयो है वेहू महाप्रसाद लेके वा भूमितल में बनायी शय्या पर विश्राम करें हैं ।। यह महाप्रभुजी को दर्शनादि ही इनको है तासूं श्री प्राणप्रभु जी जागेंगे आपके दर्शन अर्थ इनको बड़ो ही उत्साह है ।। तथा उत्थापन समे श्री राज के जागरण सूं पहले ही वा द्वार में प्रवेश करवे कि चाहना सूं भरे हैं ।।६।। तासूं इहां विश्राम करें हैं ।। तथा श्री पुरुषोत्तम के मुकुटमणी श्री प्राणनाथजी अपने घर में विश्राम कर रहे या भक्तन सूं सेवा किये वैसे वैसे भक्तन सूं कि वैसी वैसी मृगनयना सुन्दरीन सूं चारों ओर मिले मंद हास्य सूं प्रफुल्लित

जाको श्रीमुख कमल है, कि उच्छलित विलासन सूं जो प्रकाशमान है ऐसे अपने सुन्दर स्वरूप को अपने घर में वा भक्तन को दर्शन करावे है ।। **विनके ब्रह्मादिकन को न मिलवे वारे मनोरथन को हू पूर्ण करे है ।। या सगरे रहस्य को हू सब प्रकार सूं स्वप्न रूप हू सिद्ध कर देवे है ।। यह तो स्वप्न को अनुभव है ऐसे सिद्ध करे है यह भाव है** ।। श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि कितनेक जन तो बड़े श्रेष्ठ गृहस्थ वारे हैं कि स्वजन परिवार हू जिनके बहुत हैं कि प्रभुन कि कृपा सूं धन धान्य सूं मिले हैं कि बहुत ही आछी रीति सूं न्हाये हैं ।। अंग पौंछे हैं ।। शुद्ध स्वच्छ धोये धोती उपरना हू पहिरे हैं ।। कितने तो श्री यमुनाजी में जायके न्हावे हैं ।। अपरस में ही होयके अपने घर में फिर वेग आवे हैं ।। वहां प्रभुन के भक्तन को प्रेम सूं प्रिय के महाप्रसाद लिवायवे लिये बुलावे हैं ।। **ता पाछे अपने घर में प्रीति सूं जब वे आवें हैं विनको आदर सूं बैठायके वे भक्तजन प्रेम भरे कोमल वचनन को कहत प्रथम प्रसाद लिवावें हैं जैसे विनको भली भांति सूं महाप्रसाद लिवायके स्वयं आप तो पीछे ही प्रसाद लेवे हैं** ।।१५।। श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि **और प्रभु के भक्तन के घर में जे ऐसे महात्मा भक्तन सूं बुलाये कि बिना बुलाये हू आवें हैं, सुन्दर प्रसन्न हृदय कि मुखवारे वा भक्तन की ऐसी भावना विशेष होय है कि हम अत्यन्त भाग्यवान हैं, धन्य हैं कि कृत्य कृत्य हैं जो ऐसे महात्मा श्रेष्ठ भक्तन के अत्यन्त उच्छलित प्रेम सूं समर्प्पण कियो है विनमें अत्यन्त प्रसन्न होय रहे श्री गोकुलाधीश प्रभु ने परम प्रीति सूं आरोग्यो है ।। कि श्री प्राणनाथ के भोजन पात्र में स्थित प्रसादी सूं शोभायमान है ।। कि साक्षात या प्रभु के श्री चरण कमल सूं गिरे अत्यंत मनोहर मकरंद सूं परम मधुरता कूं प्राप्त होय रहयो है ।। कि या श्री वल्लभ जी के श्रीमुख चंद्र के भीतर उदय होय रहे अधरामृत सूं जो अमृत रूप कियो ऐसो जो चर्बित तांबुल है जो या श्री प्राणनाथ जी ने भाग्यवारे पडगे में कि तष्टी में पधरायो है ।। वासूं बड़े हर्ष सूं लेकर इन भक्तन ने प्राण जैसे अपने पास जो राख्यो हतो वा अधरामृत प्रसादी तांबुल सूं यह भोजन सामग्री अब दुर्ल्लभ सर्वोपर विराजमान भाव को प्राप्त कियो सो महाप्रसाद को यह भक्त आप तथा अपने मिलापी जनन सूं परम प्रीति सूं हमकूं परोसेंगे ।। ऐसे या श्री महाराजाधिराज श्री गोकुलेश प्रभु के परभ उत्तम महाप्रसाद को हम आज लेवेंगे ।। तासूं हम**

प्रसन्न होयगें ।। सो प्रभु हू प्रसन्न होयगे कि हमारे ऊपर कृपासिंधु यह भक्त हू चिरपर्यंत प्रसन्न होयगे ।। या प्रकार सूं भावना विचार करे है ।। तथा श्री गोकुल प्रभु के भक्तजन वैसे भक्तन को भोजन करावे है ।। विनको यह विचार होय है कि भगवान यह श्री गोकुलेश जी कि या प्रभु के भक्तजन यह आपस में समान है ।। आपस में प्रसन्न होय रहे इनमें भेद नहीं है ।। यह भक्त प्रसन्न होयगे तो यह प्रभु प्रसन्न होय जायगो ।। यह रुसेगे तो प्रभु जी अत्यंत रूस जायगो तासूं हमकूं यह भक्त ही सब प्रकार सूं प्रसन्न किये चहिये ।। सो सर्वोपर परात्पर इन भक्तन को हम का करके प्रसन्न करे ।। सो हम तो सब रीत सो असमर्थ है ।। दीन है, गुणन सो हीन है, दोष भरे है ।। दुष्ट विषयरूप गढ़ा में गिरे हैं ।। लौकिक में आशक्त है ।। अहो हमारे घर में तो कछु है नहीं ।। है जो अणुमात्र हू इनके योग्य होय ऐसो हू नहीं है ।। हां या प्रभु को प्रसादान्नतो कछुक वैसो है सो तो या प्रभु के कृपापात्र इनको ही है ।। वामें तो हमारो स्वत्व अपनो पनो रंच हू कबहु नहीं है ।। सो इनको यह प्रसाद इनको ही निवेदन करके सुखपूर्वक इनको लिवाय के, इनके बाकी रहे महाप्रसाद को इनकी आज्ञा को पायके ही हम लेवेंगे तो चोर न होयगे ।। नहीं तो हम चोर ही होयगे ।। यह भाग्यवान भक्त तो अपने ही वा प्रसाद को हमारे घर में कृपा समूह सूं भोजन करके सर्व समर्था के समुद्र यह दासन के संग हमको अपने प्रभु के कृपा दृष्टि के पात्र ही बिना यत्न के वेग ही करेंगे ।। इनकी बड़ी उदारता है ।। याकूं हजार मुखवारो हू कौन सराहना करने में समर्थ होय सके है ।। जासूं अपने ही वा प्रसाद को लेकर अहो ब्रह्मादिकन को तो जाके चरण कमल संबंधी रज कि किणका कि शोभा हू दुर्ल्लभ है ऐसे स्वतंत्र सर्वोपर विराजमान महाप्रभु जी गोकुल रत्न कि कृपा समूह सागरन सूं हम सरीखे अधम नीचन को निरंतर ही सिंचन करे है ।। तथा या कृपा समूह सागरन सूं वैसे वा सर्वोपर श्री गोकुल रत्न को प्रसन्न करके हम जैसेन के प्रति दान कर देवे है ।।३८।। सो कृपा के सागर ऐसे या भक्तन के भोजन कर रहे हम सबन को यह बड़ो सौभाग्य है ।। कि सर्वोपर विराजमानता है ।। कि यासूं हम सर्वोपर विराजमान होय जायगे ।।३८।।

श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं कि सो ऐसे भोजन करवे वारे कि भोजन करायवे वारे वैसे भक्तन को विचार मैंने संक्षेप सूं कहयो है ।। अब प्रसंग चालू कहयो

जाय है ॥३९॥ भोजन करायवे वारे जे भक्तजन है वे अपने घर में प्रेम सूं स्वयंतथः सगे संबंधीन सूं मिलके वा वा भक्ष्य भोज्यादि अनेक सामग्री को समर्पण करके या प्रभु के भक्तन को महाप्रसाद लिवावे है ॥ विनके संग मिलके स्वयं हूं लेवे है ॥ ता पाछे भोजन करायवे वारे भक्तजन उठ के आचमन करायके ॥४२॥ विनको बीड़ी अर्पण करे है ॥ विनके मस्तक में उच्छलित प्रेम सूं महा सुगंधी श्रेष्ठ फुलेल को डारे है ॥४३॥ **अत्यंत दीन होय के वा महाप्रसाद लेवेवारे भक्तजनन कूं नम्रता पूर्वक बारंबार दंडवत प्रणाम करके घरन में जायवे लिये बड़े यत्न सूं ही माने है ॥ कछुक पीछे चलके विदा करे है** ॥ या प्रभु जी के कितने भक्तजन तो अपने घर में प्रभु के भक्तन को महाप्रसाद लिवायवे की चाहना करत ही तासूं प्रथम दिन में जब प्राणनाथ जी भोजन लीला करके जब भूमि सेज पर पधारे है तब आपके योग्य बहुत भेट हू ले जाय है ॥ नम्रता सूं मिलके आपके कृपापात्र जनों के द्वारा आपके भक्तन के भोजन लिवायवे के अर्थ श्री आपकी आज्ञा वे लेवे हैं ॥४७॥ तब प्रसन्न हृदय श्रीमुख कमल सूं प्रकाश भरे सुंदरवर प्रिय जी -- वा भक्तन कूं मेघ जैसे गंभीरवाणी सूं आज्ञा करे है कि "हां इनके घर में प्रसाद को लेवे लिये जावो" ॥ यह श्री महाप्रभुजी के वचनामृत को दोनों कानरूप दोनान सूं पान करके प्रसन्न होय के जय जयकार सूं अपने मुख कमलन को प्रसन्न करत राज के आगे अनेक प्रकार कि अमूल्य बहुत भेट धरे है ॥ प्राणनाथ जी प्रसन्न हृदय सूं वाकूं अंगीकार करे है ॥ तब वे भक्तजन प्रेम नम्रता सूं रंगे भये होयके आज्ञा किये भक्तजन तो प्रेम सूं या प्रभु को प्रणाम करके आदर सूं वा भक्तन के घर में भोजन लेवे लिये जायवे कूं प्रसन्न होयके मनकूं बांधे है -- निश्चय करे है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे त्रयश्चत्वारीस तरंगः ॥४३॥

## दशम कल्लोलजी

# चतुश्चत्वारीस स्तरंगः ॥४४॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ चवालीसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **अपरे पूर्व दिवसे रात्रौ शय्या स्थितं प्रियं**
**विज्ञापयंति भक्तानां मुखेनास्य कृपा जुषां ॥१॥**

अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहे है कि और कितने भक्त तो प्रथम दिन कि रात्री समय जब श्री श्री प्राणनाथ जी बड़ी सेज्या पर विराजमान होय है तब या प्रभु के कृपापात्र भक्तन के मुख सो विज्ञापना करावे है ॥ "कि हे श्री महाप्रभो कृपासिंधो यह आपको कृपापात्र भक्त आपके मुख्य रसोई घर में कल रसोई के उपयोगी सामग्री को पठायवे कि इच्छा करे है ॥ तामें साक्षात् श्री आपके श्री मुखारविंद के स्पर्श सूं शोभायमान आपके भोजन संबंधी पात्रन में स्थित आपके भोजन को शेष प्रसाद् को श्री आपके भक्तन को लिवाय के विनके हस्त द्वारा किणका स्वयं हू लेवे कि इच्छा करे है ॥ हे प्राणनाथ कृपासिंधो जहाँ अधिकारी, भंडारी, जलघरिया कि रथवाही कि गाड़ीवान वैसे और हू वे वे सेवक सब आपको प्रसाद लेवे है वा आपके दूसरे हू रसोयी घर में भोजन योग्य सामग्री को पठायवे कि इच्छा करे है ॥ वामें श्री आप आज्ञा देवे ॥ यह सुनके श्री महाप्रभु जी विलास सूं मनोहर भ्रू सूं विनकी विज्ञापना को माने है ॥ आज्ञा हू देवे हैं ॥ फिर हू यह भक्त प्रथम कहे प्रकार सूं महाप्रभुन सूं श्री राज के भक्तन के भोजन लिवायवे कि आज्ञा मांगे है ॥ सो प्राणनाथ जी प्रसन्न होयके वा आज्ञा कूं हू आप देवे हैं ॥ तब तो वे अनेक प्रकार के रूपवारी अनेक प्रकार कि भोजन के उपयोगी निर्दोष गुणन सूं भरी बहुत ही सामग्री पठावे है ॥ फिर दूसरे दिन प्रातः समय में ही उठके वे भक्तजन भक्तन के अपने घर घर में ही अपने जनन के संग प्रेम पूर्वक विनय सूं नम्र होयके वा सबन को नोता दे देकर अपने घर में आवे है ॥ अपने सगे संबंधी मिलापीन सूं मिलके रीति सूं सखरी अन सखरी सब प्रकार की सब रसोई को सिद्ध करे है ॥ जब श्री प्राणनाथ जी अपने निज मंदिर सूं उठके भोजन घर में पधारे है तब यह भक्त नम्रता कि प्रेम सूं शोभायमान

होयके वा निमंत्रण किये कि नोता दिये भक्तन को बुलायवे लिये विनके घर घर में जाय है ।। विनको प्रणाम करके विज्ञापना करे है ।। कि कृपालु आप सब वेगा स्नान करके भोजन लेवे लिये वेगा पधारिये फिर श्री महाप्रभुजी जब पोढ़े है ।।१४।। तब फिर वा सबन कूं हर्ष सूं कि बारंबार उच्छल रहे प्रेम सूं वेग ही लायवे लिये घर घर में जाय है ।। वे भक्त हू वेगा वेगी न्हाय के अपरस के सुन्दर स्वच्छ वस्त्र धोती उपरना को पहिर पहिर के हाथ में जलपान के मनोहर करवान को ले लेके आयके इनके घरन में यथा योग्य ही बैठ जाय है ।।१७।। वा वैष्णवन के आगे वाके जन वेगा वेगी पातर धरे है ।। वैसे बैठे रहे वा सबन के आगे विनके संबंधी जन पातरन में चतुरता सूं वा वा भोजन वस्तु को परोसे है ।। कितनेन के पातरन में केवल घृत पक्व अनसखरी पूरी लड़वा आदि परोसे है ।। दार भात सखरी नही परोसे है ।। कितनेक सुजान मर्यादि उच्छलित हर्ष सूं जिनने परस्पर सखरी को व्यवहार आदर कियो है विनकूं तो सखरी अन सखरी सब परोसे है ।। जिन भगवदियन ने परस्पर सखरी को व्यवहार नहीं राख्यो है वे श्रेष्ठ भक्त प्रसन्न होय के भोजन में सखरी को नयो व्यवहार हू उच्छलित भक्ति सूं अब करे है ।। तामें सखरी अन सखरी रूप सूं परोसवे लायक अनेक वस्तु है तासूं परोसवे वारेन को अत्यंत विलंब होय जाय है ।।२३।। तब वैसे महाउत्सव के बढ़वे में अपनी अपनी पातरन के ही निकट बैठ रहे वे भक्तजन हर्ष के समूह सूं सुन्दर स्वरा सूं गान करे है ।। **तामे दादा नारायणजी के किये, कि बड़े माधवदास जी के किये कि भक्त हरीदास भाईजी के किये, कि मावजी भाई के किये वैसे और हू वा वा भक्तन ने किये महाप्रभुजी के गुणन को वर्णन करवे वारे धौल गीतन को गान करे है ।। विनको उच्छलित रोम हर्ष पूर्वक हर्ष सूं उच्छल रहयो जो गान है सो माधुरी समूह सूं अमृत को जय करवे कूं स्वर्गन सूं ऊंचो जाय है ।। जब सिद्ध भई सब वस्तुन को परोसनो पूर्ण होय जाय है तब स्त्री पुरुष भक्तन के शोभावारे वा समाज में बढ़ रहे उत्साह समूह सूं मिले जे भोजन करायवे वारे भक्तजन है वे पुत्र स्त्री बहु बेटी आदि परिवार के संग ही निष्कपट ही आयके विनको दंडवत प्रणाम करे है ।। हर्ष के बढ़वे सूं नाचे है ।। कि अपने प्यारे श्री गोकुलपति के अर्थ बढ़ रहे प्रेम सूं सोना रूपा की मोहरे, सुन्दर आभरण कि वे वे वस्त्र कि घर की घर**

**में स्थित सब सर्वस्व को हू बड़ी नम्रता पूर्वक भेंट करे है ।। या प्रकार सूं सगरे सर्वस्व कूं भेंट करके यह भक्तवर धोती मात्र शेष ही विराजमान होय है तासूं सर्वोपर सदा सराहना योग्य है** ।।३३।। वहां विनके संबंधीजन उच्छलित करोडन लाखन आनंद के समुद्रवारे होवत प्रभुन के महाप्रसाद भक्ष्य भोज्य लेहय चूष्य पेय ऐसे पकवान अनसखरी सखरी चाटाचूटी पान खान सब परोस रहे है ।। वे बड़े आनंद सूं वा वा महाप्रसाद को ले रहे है ।। कितने कछु कितने जाचे है ।।३४।। कितने घृत जाचे है और कितने शाक जाचे है कि दूध जाचे है और दहीं मागे है और सेव मांगे है वैसे कितने आंब कितने नींबू कितने जलेबी और तो विशेष घी मांगे है ।। और कितने लड्डवा मांगे है ।। वहां विनोद प्रेम हास्य नकल टोकवारो आनंद के हजारन लहरीवारो मधुर कोलाहल होय है ।। इहां कितने कौतुक खेल परायण है तासूं युक्ति सूं कोई मित्र सूं निश्चय कर लेवे है कि आज सिद्ध भयी वस्तु में यह वस्तु बहुत नहीं है तासूं सगरे ही वा वस्तु को विनसूं फिर फिर ही मांगे है ।।३९।। वेहू हमारे घर में यह तो बहुत ही है ।। यह बाहिर अंगीकार किये गंभीर भाव सूं तो कहे है ।। भीतर तो होयवेवारी उदासी सूं डरपे हू है ।। परन्तु इच्छानुसार बारंबार वा वस्तु को परोसे हू है ।। भीतर के समाचार को जानवे वारे तो वा वस्तु की ही सराहना करे है, बारंबार वाकूं ही मांगे है ।। और वस्तु बहुत गुणवारी हू होय स्वाद होय कि सुन्दर हू होय परोसवे लिये फिर फिर हू अपने पास लावे है ।। वाकूं तो लेवे हू नहीं है ।।४३।। तब बहुतवार परोस रही वा वस्तु की जब समाप्ती होय है तब तो परोसवे वारे कछुक उदास होवे है ।। तो अपनी उदासी को वेगा छिपावत ही प्रेम विनोद सूं प्रसन्न हृदयवारे हंस रहे विनको यह हंसत ही दंडवत प्रणाम करे हैं हर्ष सू पूर्ण कि आनन्द के दीर्घ समुद्र में मग्न होयके नाचे है कि अपने कूं कि अपने सगरे सर्वस्व को हू विनके आगे समर्पण करके निष्कपट ही नम्रता सो दोनों हाथन को बांध के ही आगे ठाड़े होय है ।। यह समय हास्य कौतुक गान प्रेम कि अत्यंत हर्ष सूं भर्यो कि सखाभाव कि नम्रता नकल टोक प्रणाम कि आदर सूं सुन्दर ही विराजमान होय है ।। या प्रकार सूं प्रभुन के महाप्रसाद को भोजन करके वे सगरे उछल रहे अतुल आनंद सूं भरे होयके उठके मुख हस्त चरण कमलन को पखार के या भाग्यवानो ने दिये पान बीड़ान को

लेवे हैं ॥४९॥ इन सबन के सिरन में वे भाग्यवान चंबेली गुलाब केसुरादि के फुलेलन को डारे है, छिरके है ॥ इन सबन कूं बारंबार प्रणाम हू करे है ॥ तब यह सगरे प्रेम सूं विनकी आज्ञा ले लेके अपने घर कूं जाय है ॥ वे भक्त तो वा सबन कूं प्रणाम करके हर्ष सूं विनकूं पहुचायवे कूं पीछे संग हू चले है ॥ भोजन करायवे वारेन की ऐसी सगरी ही वार्ता को वे वे श्री राजके कृपापात्र श्री राजको जायके सुनावे है ॥ यह वार्ता सब आपके आगे चले है ॥ भक्त वत्सल श्री प्राणनाथ जी या वार्ता को सुनके अत्यंत प्रसन्न होय है ॥५३॥ ऐसे कितने भक्त तो ऐसे है ॥ और कितने तो इन सूं विलक्षण है ॥ वैसे और तो और प्रकार के है ॥ और तो विन सबन सूं ही विलक्षण है ॥ किन किन को प्रकार कहां तक कहयो जाय यह भाव है ॥५४॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे चतुश्चत्वारीस तरंगः ॥४४॥

**दशम कल्लोलजी**

# पंचचत्वारीस स्तरंगः ॥४५॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ पेंतालीसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **को चिद्लात्कास्वगृहे विश्राम्यं तीतरे तस्य**

**चर्चाविदपति बहुधा भगवत इश्वरे रास्यमुहुः ॥१॥**

अर्थ -- श्री कल्याण भट्ट जी कहे है कि कितने भक्त तो भोजन करके अपने घर में विश्राम करे है ॥ और कितने तो ईश्वरेश्वर भगवान श्री गोकुलपती की बारंबार बहुत प्रकार की चर्चा करे हैं ॥१॥ कितने भक्त तो भंडार में जायके उच्छलित प्रेमसूं भंडार संबंधी वहां के वा वा कार्यको करे है ॥२॥ और कितने तो फूलबाग में फूलन के लेवे लिये जाय है ॥ कितने भक्त तो श्री राजके गुण वर्णन सूं सराहना योग्य पुस्तक को लिखे है ॥३॥ कितने तो ग्रंथ रचना करे है ॥ और कितने तो श्लोक कि गीत रचना करे है ॥ और कितने तो गीत समूहन की भाषा करे है ॥ या प्रकार श्री प्राणनाथजी के करोडन अर्बन संख्यावारे श्रेष्ठ भक्त हैं ॥ श्री राजके सदा वा वा सेवा कार्य को करे है ॥

विनके लिखवे में कौंन समर्थ होय सके ॥५॥ श्री प्राणनाथजी की कृपापात्र श्री भलीबाई जी कि राजबाई जी तो प्रभुन सूं प्रथम ही प्रसाद ले लेवे है ॥ कबहू तो श्री गिरिधारी जी के उत्थापन होयवे पर श्री प्राणनाथजी न्हाय के जब श्री गिरिधारीजी के मंदिर में पधारे है तब प्रसाद लेवे है ॥७॥ कोई दिन तो बिना लिये ही रहे है ॥ जासूं इनको मन श्री प्राणप्रिय में आसक्त रहे है ॥ कि प्राणनाथ के श्रीमुख चन्द्रमा के क्षण वियोग सूं हू डरे है ॥ कि या प्राणनाथ के श्रीमुख चंद्रमा को दर्शन याको पुरुषार्थ है ॥ अहो बड़े यत्नसूं ऐक दिन खीचरी सिद्ध करे है -- छे कि सात दिन वाकू राखे है ॥ प्रभुन के दर्शन के अनोसर समय में ही जल सूं मिलायके छाछ सूं मिलायके वाकूं लेवे है ॥ फिर श्री महाप्रभुन के निकट वेग ही जाय है ॥ याको चित्त अत्यन्त ही कोमल है ॥ दीनता कि प्रेम सूं सदा शोभा भरी रहे है ॥ कि प्राणप्रिय के सगरे भक्तन में कृपावारी है ॥ सदा स्नेहभरी रहे है ॥ प्रभु के भक्तन सूं अपने को कछु ही नहीं जाने है ऐसी उत्तम है ॥ कि प्रभु के कृपापात्र भक्तन के हू चरण कमलन की सदा सेवा करती रहे है ॥ तथा भक्तिमार्ग संबंधी सब अर्थन में समजवारी निपुण है ॥ वा वा श्लोकन के भावन को हू आछी रीतसूं जाने है ॥१४॥ वा वा गुणन सूं कि रसन सूं पूर्ण है ॥ चातुरी समूह सूं शोभायमान है ॥ ऐसी यह दोनों भाग्यवती है ॥ तामें कोई समय में महाप्रभुन के आगे आपको कृपापात्र पंचोली माल जी नाम भक्त श्रेष्ठ यों विज्ञापना करत भयो है कि हे महाप्रभो कृपासिंधो आपकी भक्ति भरी श्री भलीबाई जी श्री राजबाई जी यह दोनों प्रसिद्ध है ॥ तामें यह दोनों समान है कि दोनों में कोई न्यून कोई विशेष है ॥ या भक्त के ऐसे या वचन को सुनकर भगवान श्री प्राणनाथ जी आज्ञा करे है कि -- अय सुमते, हे सुजान, समता तो सब प्रकार सूं कहू हू कोऊ के संग हू नहीं होय है ॥ बड़े सुजानन की हू यहां कहां न्यूनाधिक्य होय ही है ॥ सो इन दोनो को ही आपस में सब रीति सूं समानता नहीं है ॥ न्यूनता कि विशेषता है ॥ सो बहुत प्रकार सूं भलीबाई विशेष है ॥ राजबायी तो याके संग सूं श्रेष्ठ है ॥ श्री कल्याणभट्ट जी कहे है कि या प्रकार सुंदर श्री प्राणनाथजी तब या वचन सूं या भलीबाई कि राजबाई के न्यूनाधिक को प्रकट कियो है ॥ सर्वज्ञन के मुकुटमणी

**महाप्रभुजी और हू सगरे अपने भक्तन के या न्यूनता कि विशेषता को जाने है ।। या राजके भक्त हू या भगवान की कृपा सूं कि याके कृपापात्र भक्तिवारे भक्त कृपासूं जाने हैं ।।** यह बीच को प्रसंग कछुक कह्यो है ।। हे श्री गोकुलपति के बड़भागी भक्तजन सावधान होयके चालूं प्रसंग को सुनिये ।। श्री गोकुलेश प्रभुके जे भक्त है वे प्रभुन के मंदिर सूं अपने-अपने घर में गये हैं ।। कितने तो वहां कछुक काल विश्राम करके कि और तो प्राणनाथ के गुणगान करके और विनको सुनके और कितने तो श्री प्रभु के महाप्रसाद को आदर विशेष सूं लेके और कितने तो सेवा योग्य वा वा कार्यन को करके श्री प्राणनाथ जी के उत्थापन के समय को हृदय में विचार करत ही अनेक प्रकार के अमूल्य मनोहर शुद्ध शोभायमान वस्त्र कि भूषणन को पहिर के प्रभुन के मंदिर में जाय है ।।२७।। चंद्रवदना जे सुंदरी है वेहू उत्तम सुगंधी उबटनान सूं श्री अंग रूप लतान को उबटना करके मनोहर सुगंधी जलन सूं न्हाय के फूलेलन सूं वारन कूं शोभायमान करके मस्तक में तिलक बेंदी शोभित करके नैनों में काजर भरके हिंगुल के कि चौवा के कि कस्तुरी के कि कुमकुम मिले चंदन के मनोहर बेंदी कूं लगाय के कि मनोहर जड़ाव के तिलक बेना को लगाय के तांबुल रंग सूं अधर रंग के सब प्रभुन के मंदिर में जाय है ।। तामें कितने तो लदाव नाम सूं प्रसिद्ध स्थान में ठहरे है ।। और कितने तो वाके द्वार में बैठे हैं और कितने तो वासूं बाहिर बैठे हैं कितने तो दर्शन अर्थ उत्साह भरे चित्त वारे होवत सिंहद्वार में ही जायके ठहरे हैं ।। और कितने श्रेष्ठ बुद्धिवारे सुजान जन जगमोहन में ठहरे हैं ।। और कितने तो श्रीनाथ जी के मंदिर की अटारी में सुख सों बैठे हैं ।। कितने तो प्रभुन के जलघर में ठहरे हैं ।। और कितने भाग्यवान तो जलघरा के मार्ग सूं भीतर प्रवेश करके छिपके बैठे हैं ।। सबन के बड़े भाग्य है ।। सबन के मन और नयन सावधान है ।। प्राणनाथ की जागरण की वार्तान में कान दे रहे है ।। कितनी भाग्यभरी सुंदरी तो आपके मंदिर संबंधी द्वार के सांकल के छेदन में दृष्टि बारंबार लगाय लगायके आपके जागरण को आश्चर्य सूं भावना कर रही है ।। कि कब खवास जी सांकल खोले कब हम भीतर घुसे कब हम प्राणनाथ के करोड़न परार्द्धन शरदऋतु के पूर्ण चंद्रमान के विजय करवे वारे श्रीमुख को निरखे या प्रकार

सघन उत्कंठा सूं आलिंगन करी है, मृग जैसे जिनके नयन हैं कि पुष्ट ऊंचे जिनके पयोधर है, कि पूर्ण चंद्रमा को विजय करवे वारे जिनके मुख कमल हैं कि विलास सूं मनोहर जिनकी भ्रू है ऐसी सुन्दर हों पहले हों पहले निरखूं या प्रकार की उतावल सूं भरी ही वहां ठहर रही है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो दिन विश्रामावधि विनोदमये दशम कल्लोले भाषानुवादे पंचचत्वारीश स्तरंगः ॥४५॥

### दशम कल्लोलजी

## षट्चत्वारीस स्तरंगः ॥४६॥

श्री श्री गोकुलेशो जयतिः ॥ अथ छयालीसमो तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **दिन विश्रमावधि विनोदमये दशमेत्र कल्लोले**

**प्रथमेहंत तरंगे ग्रंथ श्रोतृ प्रशंसन पूर्वम् ॥१॥**

अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी कहे है कि यह दशमो कल्लोल है ॥ यामें पहले तरंग में या ग्रंथ के श्रोता की सराहना पहेले कही है ॥ प्राणनाथ जी के तथा आपके भक्तन के दिन कि रात्रि के कृत्यन के संक्षेप सूं कहवे निमित्त प्रतिज्ञा करी है ॥ रात्रि में भक्त जैसे प्रभु के गुणगान कीर्तन करे हैं ॥ स्वप्न आदि आवे है सो कहयो है ॥ तथा दर्शन अर्थ विनको उत्साह कि रत्न चौक आदि स्थानन में आयवो कि विनकी प्रार्थना कि भावना आदि हू कही है ॥३॥ दूसरे तरंग में तो प्राणनाथ जी को जागनो कि श्री मुख्य प्रिया जी को जागनो तथा श्रीमुख्य प्रियाजी को निज मंदिर में पहुचावनो तामें प्रेम सूं भलीबाई जी को दीपक लेके आगे चलनो प्रभुन को फिर के अपने मंदिर में आवनो तथा प्रभात समय संबंधी प्रभुन को स्वरूप को स्मरण करनो कि भलीबाई जी के आगे प्रणाम करनी कि श्री गोपाल जी को भलीबाई जी के निकट आवनो कि वाके संग संवाद कि खवास जी के कार्य कि लदाव द्वार को उघारनो प्रभुन को निद्रा के त्याग सूं सिंहद्वार में भक्तन की भीर को होनों कि प्राणप्रभुन को उठनो आदि यह सब कहयो है ॥७॥ तीसरे तरंग में सिंहद्वार के किवाड़ को उघाड़नो या मार्ग सूं भक्तन को भीतर प्रवेश करनो कि प्रभुन को दर्शन

कि और हू कि कृष्णराय को कियो रुचिराष्टक कि सुंदरीन के जो श्रीमुख की माधुरी को गान है कि खवास जी को जो कार्य है कि प्रभुन ने जो कोगला आदि कियो है कि एकांत घरमें जो पधारनो है सो सब कह्यो है ॥ चोथे तरंग में भक्तजनों के कार्य की भाव की प्रभुन के एकांत घर सूं पधारनो कि आपको कार्य कि भक्त ध्यानदास के संगवार्ता कि वाकी विज्ञापना को माननो कि चरण कमल को उत्सव यह सब कह्यो है ॥ मनोहर पांचमें तरंग में तो श्री महाप्रभुन के अभ्यंग की लीला कही है ॥ छट्ठे तरंग में खवास को कार्यादि कि प्रभुन को स्नान विलास कि चरणामृत को पान हर्षादि कि प्राणनाथ के लिये भक्तन की शुभ मंगल की इच्छा यह सब कह्यो है ॥ सातवे तरंग में श्री अंग पोंछवे की शोभा कि सुन्दर धोती आदि को पहिरनों कि आचमन तिलक लीला कि श्री नाथजी के मंदिर में पधारवे की लीला कि वहां के कार्यन की लीला हू कही है ॥ ऐसे आठवे तरंग में प्रभुन के श्रीनाथजी के मंदिर में कार्य कि श्री गोपालजी की प्रभुन सूं पहले स्नान के लिये भाव समूह सूं विज्ञापना कि श्री गोपाल के संग कथा कि भीतरिया को कार्य यह सब कह्यो है ॥ नवमें तरंग में प्रबोध को पाठ कहयो है ॥ दसमे तरंग में श्री गिरिधारी जी को सिंहासन पर पधरामनो कि प्रेम समूह सूं बालभोग को अर्प्पण करनो कि प्रातः संध्या वंदन की लीला यह सब कही है ॥१८॥ ग्यारहवे तरंग में जलघरियान के कार्य तथा भीतरिया आदि सेवकन के कार्य कहे है ॥ बारहवे तरंग में श्री नाथजी के स्नान को, सामग्री को प्रकार कछुक कहयो है ॥ महाप्रसाद को प्रकार कह्यो है ॥ मंगल आर्ती कही है ॥ तेरहवे तरंग में श्री गिरिधारी जी को स्नान तथा वस्त्र श्रृंगार की शोभादि कही है ॥२०॥ प्रेम सूं गोपी वल्लभ भोग को समर्पण हू कहयो है ॥ चौदहवे तंरग में श्री गिरिधारी जी के मंदिर सूं प्रभुन को बाहिर पधारनो कहयो है तथा खवासजी के कार्य कहे है ॥ छोटे भैयान के घरन में प्रभुन को पधारनो कहयो है ॥१५॥ पंच दशमे तरंग में प्रभुन को यमुना स्नानादि कि तिलकादि कि मध्यान्ह संध्या को करनो कहयो है ॥ सोलहवे तरंग में तो श्री यमुनाजी सो अपने मंदिर में पधारनो, होम करनो इष्ट करनी कही है ॥ सप्तदशमे तरंग में मुद्रान को धारण करनो कहयो है ॥ अष्टदशमें तरंग में बालभोग श्रृंगार भोग हू कहयो है ॥ उन्नीसवें तरंग में श्रृंगार आर्ती की माधुरी कही है ॥

बीसमें तरंग में खिलोनान सूं खेल कह्यो है ।। एक बीस में तरंग में श्री गोवर्द्धन धारी जी के वस्त्र कूं कि ट्रंक पेटी में स्थित वस्त्रन को मनोहर समारनो कहयो है ।। बावीसमें तरंग में राजभोग को धरानो तथा विनकी संक्षेप सो वस्तु कही है ।। तेबीस में तरंग में औषधी को अंगीकार कि भलीबाई जी को अनुभव कि श्री बहु जी को बाहिर पधारनो कि जलघरिया को कार्य कि अधिकारीजी ने नामादि के दान में विज्ञापना यह सब कहयो है ।।२८।। चौबीस में तरंग मे प्रभुन को नामदान की विधी कही है ।। देवजी की स्त्री को वृत्तांत कह्यो है ।। आत्म समर्पण को प्रकार कहयो है ।।२९।। पंचबीस में तरंग में गुप्त रहस्य अर्थ के कहवे लिये बारंबार स्फुर रही कि फरक रही कि इच्छा कर रही अपनी रसना को निवारण कियो है ।। षटवीस में तरंग में श्री भागवत को पढ़नो कि भक्तन को आमनो कि आचमनादि करनो कि श्री गिरिधारी जी को राजभोग सरानो तथा बीड़ा आदि को अर्प्पण करनो सांकल उघाड़नो आदि कह्यो है ।।३२।। सत्तावीस में तरंग में अद्भुत राजभोग की आर्ती कही है ।। प्रभुन को अपनी श्री बैठक जी में पधारनो कि दानपात्र ब्राह्मणन को आवनो कह्यो है ।।३३।। अष्टवीसमे तरंग में चटाई बिछोना को प्रकार श्री भागवत को पाठ कि दानादि को विधान कि वेद पाठादि की लीला संबंधी सुंदरीन में कृपा समूह यह सब कह्यो है ।। तथा उनतीसमें तरंग में ध्यानदास को समाधान कहयो है ।। तीसमें तरंग में प्रभुन की भोजन लीला कही है ।। तथा श्री राज को वचनामृत कहयो है ।। एकतीसमें तरंग में भूमि शय्या के बिछोने की माधुरी कही है ।। खवासजी ने राज को श्री मुखादि को क्षालन करायो है वाकूं वर्णन है ।। बत्तीसमे तरंग में भक्तन की कि भक्त सुंदरीन की अनेक प्रकार की सेवा कि विनके भाव हू अनेक प्रकार के कहे हैं ।। तेतीसमें तरंग में अनेक स्थानन सूं प्रेम सूं भर्यो भक्तन को आवनो कहयो है ।। चोंतीसमें तरंग में श्री हस्तकमल कि श्री मुखकमल के पखारने आदि की माधुरी कही है ।। पैंतीसमें तरंग में अपनी श्री बैठक जी में पधारवे को प्रकार कहयो है ।।३९।। हरीदासी आदि सुन्दरीन के अनेक प्रकार के रसवचन कहे है ।। छेंतीसमें तरंग में प्रभुन को पधारनो भक्तन की भाव की कृती कही है ।।४०।। आंगण में प्रभुन को विराजनो तांबुल को आरोगनो ।। पत्र भ्रमायवे की लीला कि कोई भाग्यवान ने उछलित रस सागर पूर्वक बाल लीला को

संवाद कह्यो है ॥ सेंतीसमे तरंग में ध्यानदास के संग सुंदर संवाद कि ज्येष्ट पुत्र श्री गोपाल के संग वार्ता कि यथायोग्य समाधान की अनेक प्रकार के लोकन के नाम धरवे की माधुरी कही है ॥४३॥ अड़त्रीसमे तरंग में प्रभुन को भूमी सेज्या पर विराजवो कह्यो है ॥ बीड़ा प्रसादि को तष्टी में डारवो कि सुख निद्रा को अंगीकार कह्यो है ॥४४॥ एक उगनचालीसमे तरंग में रसचंद्र वदना के मनोरथ को वारंवार विज्ञापना कर रहे कोई श्रेष्ठ भक्त के प्रेम भरे वचन कहे है ॥ कि विनमें रस सागर प्रभुन के वैसे रस भरे उत्तर कहे है ॥ कि वा सुंदरी को पधारनो कह्यो है ॥४६॥ चालीसमे तरंग में वाके घरमें बड़ो उत्सव कह्यो है ॥ तथा और सुंदरीन में हु प्रभून को यत्न कि यामे भक्तन को उद्यम तथा विनके प्रति प्रभुनने जो मनोहर फलदान कियो है कि वैसे यश को जो पसरनो है सो कहयो है ॥ बयालीसमे तरंग में उष्णकाल में प्रभुन के भूमि सेज्या को प्रकार कहयो है ॥ चंदन लेप की लीला कि लाल चंदन की कथा कही है ॥ सघन आमरा के रस सूं प्रभुन को स्नान कह्यो है ॥ वाके गुणन की कथा कही है ॥ प्रभुन ने जो पुत्र श्री गोपाल तथा रायजी को चंदन लगायो है सो कहयो है ॥ तामें पंखा को सुख कह्यो है ॥ शीतल पट्टी को कहयो है ॥५२॥ तेंतालीसमे तरंग में भक्तन को कृत्य कहै है ॥ कि भक्तन ने प्रभु के भक्तन को जो प्रभु को प्रसाद लिवायो है सो कह्यो है ॥५३॥ चौवालीसमे तरंग में और भक्तन की विशेषता कही है ॥ पेंतालीसमे तरंग में भक्तन को कृत्य कि प्रभुन को कृत्य कहयो है ॥ कि भलीबाई कि राजबाई के प्रसाद लेवे को प्रकार कहयो है ॥ इन दोनों को तारतम्य कहयो है ॥ भक्तन को प्रभु के मंदिर में फिर वेग सूं आवनो कहयो है ॥ वहां रस हरिणलोचना सुंदरीन के प्रेम सूं प्राणनाथ के श्री मुखचंद्र के दर्शन की इच्छा सू ठहरनो कहयो है ॥ छेयालीसमे तरंग में सगरे तरंगन को अर्थ संक्षेप सू कहयो है ॥५६॥ यह श्री गोकुलपती की प्राप्ति को करे है ॥ सुंदर फल रूप है ॥ सबन के सगरे मनोरथन को देवेवारो है ॥ कि सगरे अनिष्ट उपद्रव को निवारण करे है ॥ अब हे रसीकजना ऐसे आगे जाको वर्णन आवेगो ऐसे ग्यारहवे श्री कल्लोलजी को आदर सों निरंतर पान करोगे ॥५८॥

इति श्री रमणेशानां करुणाबल तो मया लोकनाथेन दशमः कल्लोलान् दितोमुद्रा ॥१॥ समर्पितस्तत्पदि याग्रेतत एव मम प्रभुः प्रसन्नो भवतान्नीत्यं सस्वकिय कृपाबुद्धि ॥ इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो दिन विश्रमावधि विनोद मये दशम कल्लोले भाषानुवादे षटचत्वारीश स्तरंग ॥४६॥ संवत १९९८ श्रावणे शुक्ले उरवो --

***मेरे पिता देसाई हिम्मतलाल ओवरसीयर ने छः कल्लोल जी उतारे थे। बाकी मिले नही थे सो वाकी के नौ कल्लोल जी वैष्णवों की कृपा से हमें प्राप्त हुआ उनमें से यह दशवा कल्लोलजी जो आखीर में सुभद्रामाजी कड़ीवाले से प्राप्त हुआ सो असल पंडीत लोकनाथ जी के हस्ताक्षर में थे उसी में से श्री रमणप्रभु की कृपा से संवत २०३४ के अषाढ़ वदी-६ गुजराती रविवार ता. १५-७-७९ को प्रति करी ॥ उनकी हिन्दी लिपी में प्रति करी संवत २०५७ चैत्र सुद ३ ता. २८-३-२००१ सब सुजाती श्री रमण अनन्य समाज को गोकुलदास के सादर जय जय श्री गोकुलेश ॥***